



नेपास की कहानी

## हमारे कुछ अनुपम प्रकाशन

मांसा देना कम	सन्देशनाथ मजूमदार	२)
मूरगा	देवेश दास	३)
गङ्गा (सचित्र)	देवेश दास	५)
पृथ्वी परिक्रमा (सचित्र)	सेठ गोविन्ददास	१२)
साहित्य शिक्षा और सम्पत्ति	डा० राजेन्द्र प्रसाद	५)
भारतीय शिक्षा	डा० राजेन्द्र प्रसाद	३)
अम्पारन में महात्मा गांधी (सचित्र)	डा० राजेन्द्र प्रसाद	५)
अभी जालि के अग्रदूत (सचित्र)	राजेश्वर प्रसाद मारायणसिंह	४)
भारत का सांस्कृतिक इतिहास (सचित्र)	हरिबल बेदासकार	६)
भारत का भिन्नमय इतिहास	महावीर अधिकारी	९)
भारत का वैज्ञानिक एवं राष्ट्रीय विकास	गुदमुख निहालसिंह	१)
भारतीय राजनीति और शासन	प्रो० के० आर० बम्हाल	८॥)
प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास	डा० रामेय रायच	१२)
समा-आप्त	न बि गाडसिंह	९)
सचित्र-सचिपान	डब्ल्यू एम ए	१॥)
अपने पात्र छात्र (राजनीतिक)	जी एम पब्लिक	५)
साम-साहित्य (भाग १ और २)	रामनरेख तियाठी	१०)
आपका मुद्रा (तीन भाग सचित्र)	सावित्री बेबी वर्मा	१३॥)
बालक का भाव-विज्ञान (सचित्र)	एच पी कमल	५)
आधुनिक शिक्षा-मनोविज्ञान	ईश्वरचन्द्र शर्मा	५)
मन की बात	मुत्तावराय	२॥)
जीवन-स्मृतियां	श्रीमन्मन् 'मुमन'	३)
मे इनग मित्र (दो भाग)	पद्मसिंह शर्मा 'क्रमसेन'	९)
सम्पत्तासीन शिक्षा कक्षविधिपति	डा० सावित्री सिन्हा	८)
साहित्यानुशीलन	धिरवानसिंह चौहान	५)
अनुत्पन्न का स्वकष	मं० डा० सावित्री सिन्हा	३)
हिन्दी वाप्यान्कार मृगवृत्ति	आचार्य बिस्वेश्वर	१२)
वत्रास्तिजीविनम्	आचार्य बिस्वेश्वर	१५)
बीजगोविन्द (सचित्र)	विजयभाइर शर्मा	५)
विद्यालय की बाटिया में (सचित्र)	श्री निधि सिन्हातारकार	५)
सचित्र मृह-स्नान (सचित्र)	आरुण एम ए	८)
रेडियो-नाटक (सचित्र)	हरिदचन्द्र लाला	९)







महाराजाधिराज विष्णुधन और विष्णु राय रैव

# नेपाल की कहानी

( सचित्र )

लेखक

काशी प्रसाद श्रीवास्तव, एम ए

सहस्य, सहायकार सभा

नेपाल

प्रकाशक

महापण्डित रामुल साहस्रपायन

१९५७

मात्माराम एण्ड सन

प्रकाशक तथा पुस्तक-विप्रेता

काशी-गोड

दिल्ली-१

प्रकाशक  
रामकान्त पुरी  
बालभाराम एण्ड सेन्स  
कावमीरी रोड, बिस्फी-६

सर्वाधिकार सुरक्षित  
मूल्य आठ रुपये

मुद्रक  
मैत्रेयल प्रिंटिंग वर्क्स  
बिस्फी

शात-अज्ञात उन दाहीदों को  
जिन्होंने  
नेपाली जनता की भलाई  
तथा  
दश में प्रजातन्त्र लाने के  
निमित्त अपन प्राणों की  
आहुति दी



## प्राक्कथन

नेपाल हमारा पड़ोसी देश ही नहीं हमारे हिमालय का एक महत्वपूर्ण और विघातक है पर पिछले सौ सालों में हमारा नेपाल-विषयक ज्ञान पहिले से भी कम हो गया था। हमारे लोग उसे एक रहस्यपूर्ण अज्ञात देश समझने लगे थे। राणाशाही ने इसमें सहमति की थी। सिद्धार्थ के समय कुछ सीमावर्ती स्त्री-पुंस्य बाबा पद्मपतिनाथ का बर्णन करते समय नेपाल के एक कोड़े से भाग की झाँकी कर पाते और वह उससे भी अधिक वहाँ की हर चीज को एक बाबू की सी समझकर लौटकर उसकी अतिशयोक्तिपूर्ण कथामें दुहराते। हम भारतीयों के लिए नेपाल का अर्थ यही कम था, पर अंग्रेज इससे भली भाँति परिचित थे। राणाशाही उनके रास्ते में उतनी बकाबट नहीं डालती थी, जितनी भारतीय विज्ञानियों के लिए। यह प्रसन्नता की बात है, कि अब वह अज्ञान का परदा हट रहा है। नये नेपाल में अब हरेक भारतीय किसी भी मजिस्ट्रेट के हस्ताक्षरित अपने फोटोग्राफ के साथ प्रवेश कर सकता है। लेकिन इतने से वह नेपाल का परिचय नहीं प्राप्त कर सकता। परिचय बनाने वाले कुछ अंग्रेजों के लिखे ग्रंथ हैं जो तेजी से दुर्लभ होते जा रहे हैं। वह भी, उनकी दृष्टि से अतीत काल में लिखे गये होने से उतने उपयोगी नहीं हैं। हमें एक लाभोपाय इशारेतम ग्रंथ की आवश्यकता थी, जिसे श्री काशी प्रसाद श्रीवास्तवजी की 'नेपाल की कहानी' पूरी करेगी, इसमें भुले बरत भी सम्मिलित नहीं हैं। लेखक का उस देश से परिचय किसी बाहरी व्यक्ति जैसा नहीं है। बल्कि वह वहाँ के जीवन में सहभागिता तथा नये नेपाल के निर्माण के लिए हुए संघर्ष में सहकारी रहे। उन्होंने अपने वैयक्तिक अनुभव और ज्ञान के साथ इस बात की पूरी कोशिश की कि नेपाल सम्बन्धी कोई भी अज्ञात बात छूटने न पाये। इस बुस्तक को देख कर ही पाठक जान पायेंगे कि अपनी सामग्री को जमा करने में लेखक ने कितना परिश्रम किया है। 'नेपाल की कहानी' इस बात का सबूत है कि हिन्दी वाले जितनी धीघ्रता से पंथीर पंथों के प्रथम में अग्रसर हो रहे हैं।

नेपाल का भूमिगत ज्ञान हमारे लिए इष्टकर नहीं हो सकता। हमारे दोनों देश निरन्तर-जगत घमल हैं। हमारी आज की अधिक प्रगति एक-दूसरे के ऊपर बहुत हद तक निर्भर करती है। सिन्धु और बिजनी के अंत हिमालय की सहायिका नदियों में से कितनों ही के उद्गम या प्रथम स्थान भूभाग नेपाल में है। भारत की सबसे बड़ी समस्या तथा सबसे अधिक लामबा—सिन्धु और बिजनी दोनों में—कोसी, अपनी दो बारों के रूप में सिन्धु से निकल महुान् हिमालय की छोड़ नेपाल के रास्ते भारत में प्रवेश करती है। यही नहीं उस पर काबू पान के लिए जो बांध बनाया जा सकता है वह नेपाल की सीमा के भीतर ही तैयार किया जा सकता है। हमारे दोनों राष्ट्रों ने अपनी मलाई समझकर इसके बारे में

समझता भी कर लिया है। आधा करना चाहिये कि कोसी-योखना अब बहुत दिनों तक सिर्फ कापची योजना नहीं रहेगी। कोसी की तरह ही पंडक और घाघरा (सरजू) सिक्किम से हिमालय कोड़कर आने वाली नदियाँ भी नेपाल के भीतर से आकर नेपाल के भीतर ही योखना (तराई) में प्रवेश करती हैं। उनके अपार बल और विद्युत के बल को हम मिलाकर ही सड़भीनी बन सकते हैं। राष्ट्रीय सेती कितनी ही और नदियों के बारे में तो कहना ही क्या है। ये नदियाँ जिनकी भूमि में भारत में प्रवेश करती हैं और इनसे जिनको सबसे अधिक हानि-नाश उठाना पड़ता है वह हिन्दी बोलते ही लोग हैं। उन्हीं की जाया में किसी यह पुस्तक उन्हीं के लिए और भी अधिक जानकारीपूर्ण और मार्ग-दर्शक होगी इसमें लगे हुए नहीं। यह भी स्मरण रखने की बात है, कि नेपाल के नागरिकों में सबसे अधिक संख्या हिन्दी बोलते तराई प्रवेश के हैं जो ही नेपाल सरकार के राजस्व को सबसे अधिक देने के लिए सज्जूर हैं। तराई की हिन्दी-भाषी जनता नेपाल की एक अत्यंत बहिरंग समस्या हो सकती है, यदि नेपाल के वर्तमान शासकों ने भी उसके साथ सही वर्तन रखा, जिसे पोरण-आसक अपने शासन के आरंभ से करते आ रहे हैं। पाकिस्तान में सेता पूर्वी पाकिस्तान के साथ वार्ता करने की प्रवृत्ति देखी जाती है। उससे भी सही अधिक हीन मनोवृत्ति नेपाली शासकों की तराई के प्रति सामूहिक होती है। वह नहीं चाहते कि तराई की जनता कभी भी अपनी संख्याबल के अनुसार शासन में अधिकार पाये। वह निश्चय ही है कि स्वाभाविक बहुमत रखने वाले इसमें नागरिकों को उनके उचित अधिकार से वंचित नहीं रखा जा सकता। न उनके ऊपर सबसे अधिक कर-भार लाया जा सकता है। नेपाल के हर हिस्से की यही कामना होगी कि अब से तराई-निवासीयों को बिजित प्रजा नहीं, बल्कि स्वतंत्र नागरिक बना जाये। शासन और प्रशासन केवल पर्वतवासियों की इच्छाकारी न बानी जाये, और तराई वासियों की सम्पूर्णतात्मकता को प्रवृत्ति को कभी से कभी छोड़ दिया जाये। इतिहास ने यदि हमारे इन लक्ष्यों प्राप्ति को नेपाल के भीतर रहने के लिए सज्जूर किया, तो उससे तब तक लगे उठाने की कोशिश करना आज बुद्धिमानी नहीं माननी जा सकती। आखिर जोर से लेकर काली घाट के किनारे तक बसे ये हिन्दी-भाषी तराई-निवासी उन्हीं लोगों के रक्त और मांस हैं जो उनके बलिष्ठ में बुनियाद से पीलीभीत तक के जिलों में बसते हैं। तराई वाली नेपाल में होकर किसी विदेशी शासित के गुलाम नहीं हैं, नेपाल भारत का सहोदर है उनके भीतर रहने में उन्हें अर्ध-निर्धन ही लगती यदि वह वहाँ समान नागरिक बने जाये। यदि ऐसा करने में नेपाल के आज के तब अधिकार के शासक अपने प्रभुत्व को सतरे में समझे, तो यह उनकी अत्यंत अहुरक्षिता होगी। यदि नेपाल में निहित स्वार्थों की रक्षा करना आवश्यक न तब कम अनिवार्य की शासन का ध्येय बना जाये और तबनुसार काम किया जाये तो अब करने की कोई बाधा नहीं। वर्तमान भाग अपने बहुमुख्य कमिजों, तथा औद्योगिक कच्चे माल से वहाँ देश की कच्चा को समृद्ध और सुखी बना सकता है, वहाँ तराई काष्ठ और दूसरी औद्योगिक वस्तुओं से बालामाल कर सकती है।

नेपाल के नये शासकों की मनोवृत्ति अभी भी किसी भी बातों में बदली नहीं है, यह इस पुस्तक में दिये नेपाल और ब्रिटेन के उस समझौते से मालूम होगा, जिसके अनुसार नेपाल अपने पुर्बों को अंग्रेजी साम्राज्य के अंतर्गत समाज की जिम्मेदारी दिये हुए है। उसके शासकों की यह किताबी लज्जा बलीक है, कि ऐसा न करने पर बहुत से नेपालियों के बेकार होने की संभावना है। क्या बेकारी दूर करने का उनके पास यही रास्ता रह गया है कि नेपाली नागरिक अपने ऐशियाई भाइयों तथा जिनसे कोई सम्बन्ध नहीं, उन मसाई बेमजदूरों को—सड़नेवालों ही नहीं गिराई सभी-पुष्पों को भी—साम्राज्यी शक्ति के दिये टुकड़ों के लिए निष्प्रेततापूर्वक भुग्डा लें। यह कोई भीरता नहीं, स्वाभिमानी है जिसके लिए नेपाल के शासकों को शर्म आनी चाहिए। भारत ने जब अपना भूमि से अंग्रेजी रंगरूटी मर्दों को हटाया तो नेपाल ने उन्हें अपने यहाँ स्वागत दिया। बहुत दिनों तक जनता की आँखों में धूल नहीं झाँकी जा सकती। कुछ हजार घोरला तबलों की अंग्रेजों की न तुष्ट होसे वाली मोलफता की भेड़ करने से नेपाल की बेकारी नहीं हट सकती। वहाँ तो माफी पहाड़ी प्रजा मूखी मर रही है।

भी काशी प्रसाद भीवास्तव जी की यह पुस्तक बड़ी सामयिक और उपयोगी है। उन्होंने हमारी जानकारी बहुत बढ़ाई है और नेपाल की समस्या का लोका दिया है।

मसूरी  
२३ मार्च १९५५

राहुल सांकृत्यायन

२७७८



## लेखक-परिचय

प्रस्तुत पुस्तक एक ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखी गयी है, जो नेपाल के एक नागरिक है और वहाँ की राजनीति में उनका एक महत्वपूर्ण स्थान है। लेखक एक राजनीतिक संस्था का सदस्य है तथापि उसने एक इतिहास के लेखक के कर्तव्य का पालन बहुत ही सख्त रूप से किया है।

'नेपाल की कहानी' के लेखक श्री काशी प्रसाद श्रीवास्तव का जन्म १ फरवरी सन् १९२५ ई० में मगवान् गौतम बुद्ध के जन्म-स्थान लुम्बिनी उपवन के समीप वैलिगा नाम में हुआ। बाल्यकाल ही में आपके महा-पिता की मृत्यु हो गयी थी, जिससे आपका लालन-पालन अपनी तमिहास उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में हुआ।

आपकी शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में भारतीय नेता श्री प्रकाशजी, जो आज़-कल महात्मा के समकक्ष हैं की संरक्षता में हुई। वहाँ से आपने सन् १९४८ ई० में हिन्दी-साहित्य में एम. ए की डिग्री प्राप्त की और वही आप ज्ञान-विज्ञान में अनुसंधान की करने लगे। वर्ष तथा वर्षों में भी आपने कई बरीक्षाएँ पास कीं जिनमें आप बराबर सर्व-श्रेष्ठ रहे। इस बीच पंडित नरन मोहन मास्कीय तथा सर्वश्रेष्ठ डा. रामानुजन् के विशेष संबंध में रहे।

सन् १९४२ ई० के भारतीय आन्दोलन में आपको काशी विश्वविद्यालय में पिरकदार करके उत्तर प्रदेश में गजरबन्ध भी किया गया था। इसके बाद ही से आप राजनीति में सक्रिय भाग लेने लगे।

नेपाल की विप्लव सरकार क्रांति में आपने सक्रिय भाग लिया। क्रांति पर आप पच्छिमी नेपाल की विद्रोही सरकार के प्रधानमंत्री भी रहे।

श्री काशी प्रसाद श्रीवास्तव एक अच्छे पत्रकार तथा साहित्यिक व्यक्ति भी हैं। कर्तुनियाँ तथा कविताएँ लिखने में आपकी विशेष अभिरुचि है।

इस समय जब नेपाल तत्कालीन राजा के सदस्य तथा एक प्रतिष्ठित राजनीतिक कार्यकर्ता हैं।

नेपाल के सम्बन्ध में हमारी सामग्री हिन्दी में अब तक उपलब्ध नहीं थी, जिसकी पूर्ति लेखक ने 'नेपाल की कहानी' लिखकर कर दी है। नेपाल के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए इस पुस्तक का अध्ययन परम आवश्यक है। आज तक भारत और नेपाल के सम्बन्ध में जितने कमज़ोरी, संविदा तथा संबंधों हुई हैं वह सब पुस्तक के परिशिष्ट भाग में दिये गये हैं जो भारत तथा नेपाल सरकार के अधिकारियों के लिए भी उपयोगी हैं।

रामलाल पुरी

## दो शब्द

नवम्बर सन् १९५० ई० में नेपाल में एक क्रान्ति छिड़ी। यह अपने ढंग की एक मिराली ही क्रान्ति थी—जिसमें नेपाल के सम्राट् ने अपने ही शासकों के विरुद्ध बिद्राह किया और समस्त देश में जनता ने शासन-कर्त्ताओं का विरोध तथा अपने नरेश का समर्थन किया। उस समय देश की जनता को ऐसा प्रतीत हुआ कि क्रान्ति के फलस्वरूप उस पर किये गये विगत एक सौ चार वर्षों के निरंकुश अत्याचारों का अन्त हो जायगा और उनकी मातृभूमि भी ससार के अन्य स्वतन्त्र देशों की भाँति ही एक सम्पन्न राष्ट्र बन जायगी। यही एक प्रेरणा थी जिसके धल पर क्रान्ति की ज्वालाएँ ममक उठीं और सारे देश की जनता एकजुट हो शासन-पद्धति को समाप्त करके प्रजातन्त्र के लिए कटिबद्ध हुई।

क्रान्ति का बिस्फोट दशव्यापी हुआ किन्तु जब वह सफलता की पूर्ण-वस्था में पहुँच चुकी तब उस बीच ही में जनता की इच्छा के विपरीत रोक दिया गया और शासकों से समझौता कर लिया गया। इस प्रकार नरेश, वेश तथा आन्दोलन को सहयोग देने वाली भारतीय जनता की इच्छा पूरी होने में बाधा डाल दी गई। यही कारण है जो क्रान्ति के पश्चात् भी देश में व्यापक असन्तोष बना ही रहा और चार वर्ष का अमूल्य समय भी जनतन्त्र की नींव डालने में बर्बाद हो साबित हुआ। इस बीच कई सरकारें बनीं-बिभर्ती किन्तु प्रत्येक सरकार जनता की भलाई करने की अपेक्षा अपनी ही स्थिति समझने में लगी रही। इससे देश में अहाँ एक ओर आर्थिक परिस्थिति और निराशा की सृष्टि हुई वहाँ दूसरी ओर अनुदार तत्त्वा को संगठित होने का भी पूरा मौका मिलता गया जो जनता की एकता का छिन्न-भिन्न करके उसे गुमराह भी करता रहे। व नेपाल की मोली जनता को अपने अभिन्न पड़ोसी तथा घनिष्ठ मित्र—भारत और चीन के विरुद्ध भी महकान से बाँध नहीं आते—जो अपनी नतिवृत्ता के बल पर बिस्व की जनता को शान्ति के प्रयास में नियोजित करके राष्ट्रा के बीच की तनावनी को काफी हद तक कम करने में विशेष सफलता भी प्राप्त कर चुके हैं।

एक बात नेपाल का एक राष्ट्रीय होने का सीमास्य प्राप्त है। उसे इस बात का भी गव है जो वह अपनी शीघ्र शक्ति के अनुसार नेपाल की शान्ति में सक्रिय भाग भी ले सका। उसने नेपाल के इतिहास का अध्ययन

करके ही सशस्त्र क्रान्ति में अपना हाथ डाला था—यद्यपि वह गौतम बुद्ध तथा महात्मा गांधी को अपना आदर्श मानकर शुरू ही से हिंसा छद्म-नीति का विरोधी और शांति एवं स्पष्ट कूटनीति का कटर अनुयायी रहा।

पुस्तक का नाम 'नेपाल की कहानी' है। कहानियाँ प्रायः कपोल-कल्पित और मनगढ़न्त हुआ करती हैं—किन्तु 'नेपाल की कहानी' वास्तव में नेपाल का इतिहास है जिसमें असत्य को लक्षमात्र भी स्थान नहीं दिया गया है। वस्तुतः लेखक ने अपनी ओर से नेपाल की इस बृहद् कहानी में कुछ भी नहीं लिखा है।

एक नेपाली होत हुए भी लेखक ने यह पुस्तक हिन्दी भाषा में लिखी है। यह कबल इसलिए जिससे नेपाल और भारत दोनों देशों की जनता नेपाल के सम्बन्ध में पूरी जानकारी हासिल कर सके—जिसका आधार पर ही नेपाल का भविष्य निर्भर करता है। नेपाल की जनता और भारतीय जनता एक ही आदर्शों पर प्राचीन काल से चरखी आ रही है। दोनों देशों के परिस्थिति उद्देश्य एवं समस्याएँ एक-से तथा समान हैं जिन्हें नेपाल और भारत परस्पर सहयोग तथा शान्ति के सिद्धान्त द्वारा बहुत आसानी से हल कर सकते हैं।

नेपाली जनता भारतीय जनता की भाँति उच्चादर्शों एवं नैतिकता पर आधारित राजनीति को ही निश्चय रूप से सफल कूटनीति मानती है। उसकी दृष्टि में वर्तमान समय की भारत की नीति एवं कार्यों में जो एकरूपता पायी जाती है वही नेपाली जनता के भी हृदय से अभिव्यक्त होती हुई प्रतिभासित होती है।

लेखक की गिरफ्तारी के साथ पुस्तक की पाण्डुलिपि भी मई सन् १९५२ ई० में बिहार पुलिस के हाथ लग गयी जो जो पूरे ढाई साल के बाद काठमाण्डूस्थित भारतीय दूतावास के कठिन प्रयत्न से वापस मिल सकी। इसके लिए लेखक उन सभी व्यक्तियों का विशेष आभारी हैं जिनकी दोड़-धूप से पुस्तक की पाण्डुलिपि उसे साक्षित रूप में प्राप्त हो सकी।

'नेपाल की कहानी' को प्रकाश में लाने का ध्येय श्री रामलाल पुरी तथा डाक्टर होरीलाल सक्सेना को है, जिनकी प्रेरणा और सहयोग से लेखक सतत प्रोत्साहित होता रहा। मेरे मित्र श्री गौरव नाथ बर्मा भी कम धन्यवाद के पात्र नहीं हैं जिनकी अभिरूचि से यह पुस्तक इस रूप में प्रकाशित हो सकी। अस्तु !

# विषय-सूची

## प्रथम खण्ड ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

१ एक निराला देश	१
२ एक प्राचीन देश	८
३ मुसलमानों का आक्रमण	१६
४ अंग्रेजों का हस्तक्षेप	२४
५ आधुनिक काल	३०
६ राणाओं का शासन-काल	५८

## द्वितीय खण्ड प्राकृतिक तथा राष्ट्रीय रूपरेखा

७ प्राकृति की रचना	८२
८ पुरुष तीर्थ-भूमि	८८
९ कला और संस्कृति	९५
१० भाषा और साहित्य	१७
११ पहाड़ और तराई	१०२
१२ शिक्षा	१०७
१३ मनुष्यता का बर्णन	११०
१४ जलियाँ बहाल तथा धर्मिक	११२
१५ किसानों की स्थिति	११७

## तृतीय खण्ड राजनीतिक स्थिति

१६ जन-आन्दोलन	१२५
१७ सार्वजनिक शांति	१४८
१८ प्रजातन्त्र की ओर	१५४
१९ संसदीय	२१३
२० अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध	२१९
२१ नेपाल अन्तरिम शासन-विभाग	२२३
२२ संसद्धार समा का विधान	२३३

## परिशिष्ट

१ नेपाल के साथ बर्माणिया संबंध—१ मार्च १७९२ ई०	२३९
२ नेपाल राजा के साथ संबंध—१८०१ ई०	२४०

३	राष्ट्र की संविधि—२ दिसम्बर, १८१५ ई०	२४५
४	स्मरण पत्र—८ दिसम्बर १८१६ ई०	२४६
५	दलों के आत्म-समर्पण सम्बन्धी कागज—२० जनवरी १८२० ई०	२४८
६	नेपाल के गद्दाराना का रेजीडेन्स को पत्र—६ नवम्बर, १८३९ ई०	२४९
७	हकरारनामा—२ जनवरी, १८४१ ई०	२४९
८	गद्दाराना तथा ईस्ट इण्डिया में संविधि—१० फरवरी १८५५ ई०	२५०
९	नेपाल से संविधि—१ नवम्बर १८६० ई०	२५१
१०	स्मरण-पत्र—२३ जुलाई, १८६६ ई०	२५२
११	नेपाल के साथ संविधि—७ जनवरी १८७५ ई०	२५३
१२	स्मरण-पत्र—२४ जून १८८१ ई०	२५३
१३	ग्रेट ब्रिटेन से मैत्री संविधि—२१ दिसम्बर १९२३ ई०	२५४
१४	छात्र और मैत्री की संविधि—३१ जुलाई १९५० ई०	२५५
१५	व्यापार और वाणिज्य की संविधि—३१ जुलाई १९५०	२५७
१६	शासन पत्र	२५९
१७	शासन पत्र	२६१
१८	संयुक्त राज्य सरकार और नेपाल सरकार के मध्य सन्धि— ३० अक्टूबर, १९५० ई०	२६३
१९	नेपाल-अमरीकी सम्बन्ध—दिसम्बर १९५१ ई०	२६५
२०	अतुर्भूमी सामान्य संविधि—२३ जनवरी १९५२ ई० (नेपाल और अमरीका में औद्योगिक सहकार्य के लिए)	२६६
२१	औद्योगिक सहकारिता में नेपाल और सिन्धुदरलैण्ड के सम्बन्ध— १ फरवरी, १९५२ ई०	२६८
२२	ब्रिटिश सेना में भर्ती—११ जुलाई १९५३ ई०	२७०
२३	प्रत्यक्ष की संविधि—२ अक्टूबर, १९५३ ई०	२७०
२४	कोशी योजना—२५ अप्रैल १९५४ ई०	२७३
२५	कोशी योजना के लिए सरकार समिति	२७८
२६	समुदाय योजना—१४ जुलाई १९५४ ई०	२७८
२७	कोलम्बो योजना	२७९

## चित्र-सूची

	पृष्ठ
१ स्वर्गीय सम्राट त्रिभुवन वीर विक्रम शाह (मुक्तपुष्प)	
२ एक प्राचीन झरना	१८
३ काष्ठ-मण्डप	२०
४ तानसेन नगर	२१
५ पुष्पी नारायण शाह	३४
६ श्रीराम मुक्त विक्रम शाह	३९
७ राजेश्वर वीर विक्रम शाह	४४
८ भीमसेन थापा	४६
९ रानी राज्य लक्ष्मी देवी	४७
१० माणिक्य सिंह	४८
११ कोट-हाथकाष्ठ-स्वस्त	४९
१२ पुष्पी वीर विक्रम शाह	५१
१३ त्रिभुवन वीर विक्रम शाह	५५
१४ सम्राट महेश्वर वीर विक्रम शाह	५६
१५ महाराज जंग बहादुर	६८
१६ जंग रामेश्वर	७२
१७ लोक राजा प्रभुत संजी	७५
१८ पद्म रामेश्वर	७८
१९ भारत के प्रधान मंत्री तथा मोहन रामेश्वर	७९
२० नेपाल का प्राकृतिक मानचित्र	८१
२१ काठमाण्डू की झरनी	८४
२२ स्वर्णचू-चैत्य	८८
२३ पद्मपतिनाथ का मन्दिर	९१
२४ मुलजा मन्दिर, कास्तिपुर	९२
२५ महाबोड मन्दिर, ललितपुर	९३
२६ कुछ किस्तान कार्यकर्ता	१२१
२७ दाहोद बर्मजस्त	१३०
२८ दाहोद गंगाताल	१३०
२९ दाहोद बरमजस्त	१३१

# नेपाल की कहानी

३० सहोदर शुक्रराज शास्त्री	१३१
३१ नेपाली कांग्रेस के कुछ बिरोधी नेता	१५०
३२ भारत के प्रधान-मंत्री तथा महापद्मविराज विभुवन वीर बिष्णु शाह	१५१
३३ पश्चिमी नेपाल का बिरोधी मंत्रिमण्डल	१५४
३४ राणा सैनिकों की गोली से घायल प्रो० धिष्णनलाल तपसेना	१५५
३५ ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ पोचर हवाई जहाज पर	१५६
३६ प्रदर्शनकारियों पर लाठी-प्रहार	१५७
३७ राजबाली में महिलाओं का प्रदर्शन	१५८
३८ विद्यार्थियों का प्रदर्शन	१५९
३९ श्रमकों का प्रदर्शन	१६०
४० मद्रकाली मिथ	१६१
४१ बिन्नेश्वर प्रसाद कोइराला	१६२
४२ जनरल मुखर्ष शाहपोर	१६३
४३ मन्तुका प्रसाद कोइराला	१६४
४४ जनरल महापोर शमशेर	१६५
४५ लक्ष्मण सिंह	१६६
४६ डा. कुंवर इन्द्रसिंह तथा कर्मल लक्ष्मणहाथुर सिंह	१६७
४७ डा० के. जार्ज० सिंह	१६८
४८ नारायण सिंह शाही नवल	१६९
४९ टंक प्रसाद आचार्य	१७०
५० दिल्ली रमण शैली	१७१
५१ सिंह बरबार	१७२
५२ सम्राट ज्ञानेश वीर बिष्णु शाह	१७३
५३ प्रधान न्यायालय	१७४
५४ तरवार पुरबीसिंह मजौलिया	१७५
५५ सिंह शमशेर	१७६
५६ ज्ञानेश्वरप्रसाद नारायणसिंह	१७७
५७ विजय शमशेर	१७८
५८ धामराज कुण्ड मोजले	१७९
५९ महेश्वर बिष्णु शाह	१८०
६० जगज्जन सहान	१८१
६१ जयन शमशेर	१८२

# नेपाल की कहानी

१

## एक निराला देश

नेपाल एक निराला देश है। आज बीसवीं शताब्दी में जब कि समस्त संसार नाम् यानों मोटरों तथा रेलों को अपने जीवन का साधारण अंग अनुभव करता है इस बीहड़ तथा एकान्त देश के सारों नर-नारियों में इन वस्तुओं के वर्णन करने तो दूर बर्फी नाम तक नहीं सुने हैं। आधुनिक सभ्यता ने तो इस देश में वहाँ की राजधानी काठमाण्डू तथा तीन बार अन्य नगरों को छोड़कर कहीं भी अपना घर नहीं बनाया है और अर्धजों में भी कभी इस देश को उन्नत करने का प्रयत्न नहीं किया क्योंकि उन्हें तो नेपाल के बीर बोरजा ऐतिहासिकों की ही आवश्यकता थी और उन्हें मम था कि यदि नेपाल मिश्रित सभ्यता जायस्कृत हो गया तो यह बीर मनुष्यों की धातु सदा के लिए समाप्त हो जायगी और एतिसा में उनका ब्रिटिश साम्राज्य अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकता।

नेपाल के वास्तव में दो भाग हैं—उत्तर में पहाड़ी प्रदेश तथा दक्षिण में तराई। नेपाल का सैनिक बल पहाड़ी प्रदेश पर आधारित है और उसका आर्थिक बल तराई की उपजाऊ भूमि पर।

## सरल तथा सत्यवादी

पहाड़ के निवासी अर्थात् 'पहाड़ी' सरल तथा सत्यवादी होते हैं। उनकी बाझी न समझ सकने के कारण साग उनके हृदय की निष्पटता की मराहता मुक्त बंध में नहीं कर पाते परन्तु पूरी बात समझने वाले उनकी सरलता पर नमस्कार हुए बिना नहीं रहते। यहाँ की गैन्-कुमारियाँ मरों के साथ कब से कंधा मिलाकर पुण्यों की अमिश्र चिरमंथिनी होती हैं। उनकी माननाई सात्विक होती है। वे अद्व-जन्म अवस्था में बन-यात्रा में वह निष्ठ काम करती हैं। वे हविमत्ता में अछूती रहती हैं। इनमें बहुत सी गर्मा होती हैं जो मर्दों पुण्या के साथ काम ला करती रहती हैं किन्तु वह यह जानती ही नहीं कि कामुकता क्या होती है। वे महज मात्र में अपने महारों के साथ चलती-बूझती बिचरती और मानी हैं। कहा जाता है कि मरों के आधिक्य से उनकी कामनाओं अधिक काम तक जागृत नहीं होती और अधिक बयस्त हो जाते हैं और उनकी कामनामा जागृत होता है किन्तु इसका मुख्य कारण वनों का निर्मल प्रभाव बतावरेण है। पुण्यों की ओरों नेपाल की स्थियों में बम-बराबरता नहीं अधिक कटकूट कर मरी हुई है। नारियाँ जब स्वस्वमा-धर्म का पाण्डु



## नेपाल की कहानी

करती है तो वह किसी भी पुराण से अपना स्पर्श नहीं होने देती। बिचबायें तो अपना अधिकार समय प्रतिदिन पूजा-पाठ में ही बिताया करती है। पुराणों में चमत्त सन्धानों का बहुत चरन है। नेपाल में ऐसे बहुत ही कम ब्राह्मण दिखाई पड़ेंगे जिनके सन्काट चरन-अचित्त न हों।

## आतिथ्य-सत्कार

नेपाली अपने परिवार की सुरक्षा बचवा सेवा-सुभूषण तो करते ही हैं परन्तु सबसे अधिक अतिथि की आश्रयण करते हैं। इस बीमबी सारी में भी वे अतिथि देना सब' का चिर वैदिक मंत्र अपने रहन ह। यह सब है कि अधिकार पहाड़ी पाने-पाने को मुहताज रहन ह उनका समस्त जीवन पट को बिता म ही व्यतीत होता है, तब भी वह अपने द्वार पर आम हूए अतिथि अपना सामु-सन्धानी का प्रमपूर्वक स्वागत करते हैं। वे उन्हें बेबता मानकर अपने परिवार की स्थिति के बीच में रखते हैं और उनकी सेवा-सुभूषण तन-मन-बल से तत्परता के साथ करते हैं। पहाड़ी समाज में जो व्यक्ति अतिथियों की पूजा हृदय कोमलकर नहीं करता वह बहुत नीच और पापी माना जाता है। मुर तथा ईश्वर में वे भ्रम नहीं मानते। जो गुरु का मंत्र नहीं छेला उस पहाड़ी निगुण कहते हैं। उनका पुरातन विश्वास है कि निगुण बाहे बिना विज्ञान और चरित्रवान् न हो तब भी यदि उसने अपने गुरु से काम नहीं पकड़ाये तो वह अन्त में तरफ ही पावपा। कभी-कभी तो ऐसा हुआ गया है कि पंचत्न को प्राप्त हुए निगुणों को समतात-पाठ पर भी बिता से उत्तरकर मंत्र से मंत्र दिसवा दिया जाता है। उनकी चारबा है कि जो गुरु की सेवा नहीं करते वे अपना अशुभ पुण्य तीव्र करके एक दिन अवश्य ही महा काल हो जाने हैं। वे सोच गुरु को केवल सेवा ही नहीं करन बरन् उन्हें बिदाई के रूप में अधिक से अधिक द्रव्य मो दन हैं। चलने समय उनका चरमामृत तथा जूझ परिवार के बाल-बुढ़ सभी बड़े प्रम से पान करके अपने जीवन का चम मानते हैं।

## धर्म-प्रचारणता

नेपाल बहुत धार्मिक का देश है। महा के पुराने शासक धर्म का डर बिनाकर मोली वाली जनता को सदिया से धर्ममीक बनाने रहे हैं। नेपाली धार्मिकों के लिए धर्म अने ही पंजाब की बलु रही ह। परन्तु उनका सामाजिक जीवन पर धर्म का कुछ भी प्रभाव बुष्टि गोचर नहीं हुना। धार्मिक म धार्मिकों और बुद्धियों का भी रक्खा जा सन्ता पा। यही कारण है कि उन बग के धार्मिक धर्मों पलिया रहने व। अधिकृत लोक बाल राणा परिवार में कुछ ही प्रमुख व्यक्ति हाज व परन्तु बहु बिबाह क कलस्त्रम्य जब उनकी मर्या पाय-पुन गदुग मूक बड गई है। रत्नियों की मनामा को छोटे-छाटे पद व दिय जाने व। बिना रूप म अगम क छोटे-छाटे दुकड भी नतिपम एगे राणाओं को मिक जाने व।

नेपाल में सम्मिलित कटुम्ब प्रजाती की बहुलता है। जो माग अपनी पत्नी को लेकर मो-बाप से अपना स्वतंत्र जीवन व्यतीत करता चाहते हैं व समाज में अनादर की दृष्टि से दंडित होते हैं। इनर जातियों में इस नियम का उल्लंघन पाया जाता है। वे अन्तर्जातीय मगाई भी कर लेते हैं। कम जातियाँ म बहुपत्नी प्रथा खूब प्रचलित है। इस-मध्यह् रम्य मासिक कमाने वाला मिपाही जलवा मजदूर भी दो जलवा अधिक पत्नियाँ रख लेता है।

नेपाल के उच्च पदाधिकारी पहले केवल राणावर्गीय ही हो सकने से। भारतवर्ष में जैसे अंग्रेज किसी काक जादमी का कोई ऊँचा पद नहीं देते व उसी प्रकार नेपाल में अफसर हान की योग्यता केवल राणावर्ग में ही मानी जाती थी। हमने शब्दा म यही कहा आ सकता है कि राणावर्ग की स्त्रियाँ बच्चे नहीं 'हाकिम' जतरी थी और नेपाल राज्य व अन्तर्गत रहने वाली अन्य जातियों केवल गुलाम ही गुलाम।

### जातियों का अजायबघर

नेपाल महा म ही जातियों का एक अजायबघर-ना रह है। इसमें अधिकांश जातियाँ असंस्कृत ही हैं। मुन्ताय-मनाय क्षेत्रों में कबल कम-जातियाँ ही बसती हैं। ये जातियाँ तिब्बत के निवासियों से बहुत निम्नी दुम्नी हैं। काल्माङ्ग के पश्चिम मोल पश्चिम में गोरखा नगर बना हुआ है जहाँ प्राचीन काल म मेकमत के प्रचारक मुब गोरखनाथ उपस्था करते व उन्ही क नाम पर यही के रहने वाले गारल कहे जाते हैं। गारला जाति छप्पा का प्रचलन बारहूनी पलायनी में हुआ म्हा जाति ब्रह्मानुवासी मनातनधर्मी हिन्दुओं की छाया है। इसम शाहजाओं के अनिरुद्ध ठकुरी तथा लस जाति के क्षत्रिय अधिक प्रसिद्ध हैं।

ठकुरी क्षत्रियों में साह साही मेत भन्क लान और चन उप-जातियाँ तथा लस जातियों म पांड सापा बस्नेठ बिष्ट और कंबर उप-जातियाँ विशेष प्रसिद्ध हैं। तामाग गुरुंग तथा मपर जातियाँ भी गारला जाति क हो अन्तर्गत आती हैं। लस और ठकुरी मुद्ध हिन्दू समर्पितम्बी हैं। गोरला जाति क लोग अपनी ही जाति में विवाह करते हैं और इस प्रकार अपना एक मुद्ध रतन पर रब करते हैं परन्तु तामाग गुरुंग और मपर जातियाँ केवल माव-माव के लिए ही हिन्दू हैं। वह मुन्त बीछ हैं और आपस में विवाह भी करती हैं किन्तु इसमें भी अनेक उप-जातियाँ हैं। इनकी मंपनी में बर-रग की आर मे कन्या को खोने या मोल की बुझियाँ री जाती हैं। और विवाह निम्नित हा जाने पर कन्या को माल की 'मही मुदर' री जाती है। इस जाति म यह किसी मुक्क तथा मुक्नी में प्रम हो जाने और वह मुक्क मुक्नी को मगा ले जाये ता वह बानों ठमी मुक्नी के पर आते हैं अब दसमुर उनकी आर्धभिल बरे। मुक्नी का पिता जब दाना को बही तथा असल का टीका लगा देता है तब ही वह पति-पत्नी मान जाते हैं। गारल इस विधि को 'धाव-दिनु' बज्ज है। मपर तथा गुरुग जातियाँ में हिन्दू-अपा के अनुसार ही विवाह-मेम्पान मम्पान होता है उन्हीं की तरह वह विवाह को 'फर' ( सत्यपरी ) कहते हैं और विवाह के पश्चात् बर तथा

बधू का बत्न घाट देकर बांधा जाता है जिसे 'बंजलगाठ' कहा जाता है।

गुरुम तथा ममर जातियो में तलाक की भी प्रथा है। तलाक देने के पूर्व 'मिको वामो' या 'सिको पमरा' की प्रथा पूरी करनी पड़ती है। तलाक में पति-पत्नी दोनों की ही स्वीकृति आवश्यक है और यह ठानी पूर्ण समझा जाता है जब दोनों एक बाघ की पिटाई दो सटी हुई मट्टी की कच्ची दीवारों पर रख देते हैं। दोनों को कुछ-कुछ रुपये भी पिटाईयों के पाम रखने पड़त है और जब उन दोनों में कोई एक दोनों पिटाईयों को तोड़कर खज स लेता है तो दूसरा व्यक्ति तुरन्त ही चला जाता है और भविष्य में कहीं भी दूसरा विवाह कर सकता है। इन जातियों में विधवा-विवाह अपराध माना जाता है। राजा शासन में पत्नी यदि अपने किसी प्रेमी से व्यभिचार करती हुई पकड़ ली जाती थी तो पति उसे आजीवन कारावास का दण्ड दिला सकता था और उसके प्रेमी की जमता के सामने अपनी मुकदमी खर्चवा भुजाली से काट सकता था। पत्नी यह कहकर अपने प्रेमी की प्राण-रक्षा करा सकती थी कि यह पड़ना ही व्यक्ति नहीं था जिसके साथ उसने प्रेम किया था। प्रेमी भी अपने प्राणों की रक्षा करा सकता था यदि वह अपने को जाति-व्युत्पन्न मान से खर्चवा उस स्त्री के पति को आत्म-समर्पण कर दे।

### वन-जातियाँ

गोरको में कुछ वन-जातिवा ऐसी भी हैं जिनमें तीन चार स्त्रियाँ रखी जाती है। विदेश में लीज्जत पर योग्या की तीन रचना प्रति व्यक्ति कर राजा सरकार को देना पड़ता था जिसे नपास में 'पानी पनिया बहुत ब' जिसे न देने पर उन्हें जाति एवं अधिकारों से वंचित होना पड़ता था।

मुझ मरने पर फंके नहीं जाने बरन् पाई जाने हैं। पीछे में रहने वाले तो अपनी हड्डानुसार ही पाई जाने हैं या फंके जाने ह। मृत्यु के पश्चात् पाव को कपड़ों में लपेटकर कब्र में रख दिया जाता है और मिट्टी से ढककर ऊपर में एक बड़ा पत्थर रख दिया जाता है।

गोरानों में ब्राह्मण व बाह्य टाकुर पूज्य माने जाते हैं। टाकुरों में एक जाति 'शाही' की जाती है। नपास के महाराजाधिराज की पाव सरकार इसी जाति के होते हैं। शाही मन्त्र मन्त्र मान इत्यादि टाकुरों की उप-जातियाँ में यज्ञशील पहिनाता अभिचार्य होता है। नपास की जाति प्राचीन जाति 'मम' है जो ब्राह्मणों और क्षत्रियों के मिश्रित रक्त से उत्पन्न हुई एक वधमरर जाति है जो पशुम अपने को हिनू नहीं कहती थी।

महार और मबाद शर्पा में क्या सम्बन्ध है यह विवादास्पद है। 'नेवार' शब्द 'नेवा' के अपभ्रंस 'नेवा' से बना हुआ मानकर इसी के आधार पर कुछ लोग मबादी वा अधिप्राय मगामी से नपास है। कुछ विद्वानों की यह धारणा है कि वर्तमान के राजा त्रिभुवन देव के मावी मुजराण के 'नेवार' क रहने वाले से जो नपास में आकर सब बाग्यान्तर 'नेवार' कहलान लय। नेवार जाति की वास्तव्यता घाटबाण्ड भार बाह बादन कीर्तिपुर बाणकाट तथा मुवाकाट है। धार्मिक दृष्टि में नेवार जाति शैव

मठा-कमन्दी है, कुछ बीड़ भी है। यह व्यापार-कुशल इपि-बीवी बिद्या तथा कमागुपगी एवं मिष्टमापी होते हैं। इनकी भाषा 'नबारी' है जो तिब्बती भाषा से बहुत-कुछ मेल खाती है। नबार जाति की प्रत्येक कन्या का दो बार विवाह होता है बास्याबस्या में कन्या नाचयन से व्याहरी जाती है। कतिपय नबार जाति में बिधवा-विवाह प्रचलित है और तमाक भी होता है।

### लिम्बू जाति

लिम्बू जाति का याकचुम्बा जाति भी कहते हैं। इसमें वय उपजातियाँ हैं जिनमें पाच कायी मार्च और पाच 'काछा योत्र' की है। कायी योत्र में चयर, हुबेरिया, येबर, पेंगोष्ट और चोबिसा तथा मासा योत्र में चरसाभा मियाबोला, माईबोला फरप और तम्बरसोमा है। "च जाति के लोग बीड़ तथा हिम्बू बर्मे दोनों के ही प्रतीकों को सामान्य रूप से पूजते हैं। इस जाति में प्रायः प्रेम विवाह होता है। प्रेमी-प्रमिका एक-दूसरे को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए माना प्रकार के नशीकरण मंत्रों का प्रयोग करते हैं। बोना या ना कर तथा कबिता सुना-सुना कर एक-दूसरे को रिझाने का प्रयत्न करते हैं। इनमें नायिका रम्य प्रेम ही आदर्श माना जाता है। जहाँ बर तथा बचू में पक्षे से कोई परिचय नहीं होता जहाँ बर बचू के पिता के पास अपने किसी निकट सम्बन्धी द्वारा एक मारा हुआ सूअर भेजता है और इस प्रथा को लिम्बू लोग 'चुरंग' कहते हैं। विवाह के समय बर एक प्रेमा या सूअर भारकर और उसके मस्तक पर एक मोहर अथवा रपया रखकर देता है। इसके पश्चात् बर और बचू एक-दूसरे की हथेली पर हथेली रखकर कड़ हो जाते हैं और दूम्मे हाथ में बर एक मुर्गा और बचू एक मुर्गी लिये रहने ह जिन्हें बिजुआ (पुरोहित) से सेता है और मन्त्रीकरण के पश्चात् विवाह-मंस्कार सम्पन्न हो जाता है। इसके बाद बर एक पत्नी को बांटता है और उसका रक्त एक केल के पत्त पर रोप दिया जाता है। दूम्मे पत्त पर सिंदूर या माल रंग रक्ता जाता है। तब बर इस रंग से अपनी रंगकर पुरोहित के फण्ट पर लगाता है और बाद में बचू का स्पर्श करता है और यह कहकर कि "आज मैं तुम में ही पत्नी हूँ" सिंदूर उसकी औं पर असाकर मुख पथी का फेंक देता है इसके पश्चात् लिम्बू लोग माना प्रकार के नवर तथा मार्गजो इत्यादि भी करते हैं। यह साथ साथ को जमीन में गाड़कर मूलर भी भजाने हैं।

राई अथवा राय साथ अपने को लिम्बू मानते हैं। यह लिम्बू तथा लिम की पूजा करते हैं। विवाह के पूर्व इनमें पूर्ण 'वीन स्वतंत्रता' रहती है परन्तु विगम वर्म रह जाता है उसमें अनिवार्य विवाह करना पड़ता है। इनमें विवाह की बातचीत बर-नाच की आर में चलाई जाती है। बर किसी शुभ दिन कन्या के घर जाकर 'मियामबुनी' अथवा बचू का मुख पकाला है और उसी रात्रि में विवाह हो जाता है। विवाह के समय बर बचू की मांग सिंदूर से भरता है। पत्नी के ध्वनिचारिणी हो जान पर 'मियामबुनी' करके उसकी तमाक भी दिया जा सकता है। इनमें बिधवा-विवाह तथा पुनर्विवाह का भी चाल है। इसके

गृहदेवता घरमग पशुपति से तथा सिद्ध देवता दुग्ध और दूर्वादि से प्रसन्न होते माने जाते हैं। महत्त्वसे 'सब' का गात्र भी बने हैं और फूल भी सज्जे हैं। कभी-कभी तो सब का 'जलप्रवाह' भी बर दिया जाता है।

'किरात' जाति का इतिहास महाभारत काल से प्रसिद्ध है। परन्तु नेपाल के किरात मयास बालो में अधिक मिश्रण हुआ है। यह काब प्रायः बीड़ नक्षत्राण मत्तावल्ली है। इनके सम पर शबमत का भी विषय प्रभाव परिलक्षित होता है और इसीलिए यह लोग ब्रह्म मित्रा तथा भूत-भक्त का पूजक हैं तथा प्रह्वामस्त्र आहार करते हैं। नेपाल में किरातों को लोग बरबोम्बा भी कहते हैं। किरातों में जाति-परिवर्तन बड़ी सुप्रचलित है।

### अन्य जातियाँ

इनके अतिरिक्त दुग्ध लकड़े धीरियास बौली और सभी इत्यादि जातियाँ भी नेपाल में पाई जाती हैं। किमुली और बच्छक प्रदेश में नेपाली और कुमुन्डा जातियाँ रहती हैं। ये वनचरों की जातियाँ की जाति प्रायः हरबस भूमा करती हैं। कठमाण्डू के आसपास च्यामे साकी मुत्तार साइन भालरे, इमाई आगरी कुमाळे पोर्ने कुनरा कनादी च्यामे की भूमी जवाले बाली लाऊ, तड़ी गे छिया बिर्मी बकमी इत्यादि कर्मनुसार जातियाँ बनी हुई हैं।

मगर और पुरन जातियों की अपनी-अपनी लोकियाँ हैं। मुख्य तत्कार जाति के हैं और इनमें 'बार जाति वाले' कुसीन माने जाते हैं तथा 'सोमर जाति वाले' साधारण मान जाते हैं। मगर, सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी दोनों ही होते हैं। यह मज्जोपवीत धारण करने हैं। इनकी बुझाबोकी धरती पुन राणा और बापा उप-जातियाँ हैं। यह दोनों जातियाँ माहूनी और स्वामि मस्त होती हैं। मठवाक-जग' के लोग मज्जोपवीत नहीं पहिने। वह सम और मगर की स्त्रियों की सम्पन्न हैं। सब जाति की बीसियों उप-जातियाँ हैं। प्रायः ये सब एक ही वंश के हैं। प्रायः जाति में पन्ध्र बिराहा होता है। ये लोग लैर की लकड़ी का पानी में उबालकर पीने लगे बैठे हैं और जो के लगे क साब बिताकर खाते हैं। ये आज बचका सराव भी पीने हैं।

मुनवार और मुनमार जाति का मुनकोनी नदी के पूर्व तथा पश्चिम में बनी है। मुनवार की जग बौला तथा लखा तीन उप-जातियाँ हैं। जेठा इस जातियों में विभक्त है जिन्हें 'बगवारे' कहा है। जेठा बीड़ मत्तावल्ली है। मैमा जाति का मुनकोनी नदी के पूर्वी तट पर बनी हुई है। ये अपने को हिन्दु मानती हैं। परन्तु मज्जोपवीत धारण नहीं करती। तथा जाति का विभिन्न-पूर्व में रहती है। इनके रीति-रिवाज मुख्य मगर तथा राय जातियों से मिलन करते हैं।

मुरभी अपने को गिब की मताम मानते हैं। यह सब भी मने बौली का नाम मज्जोपवीत करने हैं। इनकी दो उपजातियाँ हैं। बर्बम तथा बरबवाल। मगर-जग के लोग पोषर,

तथा तथा मंदी कुलों में बिमल है। बर्बतग बारह कुलों में तितर-बितर हुआ गई है। स्वर्पा जातियां गौरीघर की जागी के समीप तक बसी है। स्वर्पा जाति हम्मू शव में तथा मल्वा जाति सिन्धुम और बाब्रिलग प्रदेश के पश्चिम में भी फैली हुई है। स्वर्पा-स्त्रियां बहुत सम्भर होती हैं किन्तु मल्वा जाति की स्त्रियां वैसी नहीं हानी। माने जाति के लोग निरात प्रदेश के उत्तर में अधिक निम्न है। ये सब अनार्य बौद्ध मतामन्त्री है। यह लोग पहाड़ों में झूठ जाति नामा को रुपये देकर खरीद मते हैं और जब तक वे रुपये जुटा नहीं दत्त तब तक बैच ही रहते हैं।

### देवी-देवताओं में विद्वाम

पहाड़ी नाम देवी-देवताओं में अधिक विद्वाम करते हैं। और जब कोई राग अच्छा नहीं होना तब साध्वी करात है और देवी-देवताओं को प्रमद करने के लिए किसी निर्मम की मदद की लरीकर मंदिर में अर्पण कर देते हैं और वह 'देवदेवी' (देवदामी) कहमाने समती है। यथावस्था प्राप्त होने पर उस विषय होकर वेद-वृत्ति धारण करती पड़ती है, जिसमें पर्वतो में नामा प्रकार के समंकर रोम फैला रहते हैं।

नपाल की तराई सबका मध्य में ग्राम हिन्दू ही पाये जाते हैं। ये समस्त बर्मासम्भवी हैं। नेपाल में इन्हें 'मधेगिवा' कहा जाता है। ये उत्तर प्रदेश तथा बिहार में आकर अरम में नेपाल में बग गये हैं। इनकी बोली भी यही है जो बिहार तथा उत्तर प्रदेश के पांच भागों में बोली है। नेपाल में मध्याह्न और भारतीयों की संख्या पचास साल से भी अधिक है।

तराई में एक पाक जाति भी बसती है। 'बाक' नाम 'स्वविर' का अपभ्रंस है। इस जाति के लोग हथि करते हैं। ये कभी बौद्ध भले ही रहें परन्तु अब तो वे अपने को हिन्दू ही कहते हैं। इनका प्रत्येक कार्य पंचायतों द्वारा होता है। बाक जादू-टोने और भूत प्रेत में बहुत विद्वाम करते हैं।

नपाल के बाक लोको को छोड़कर कोई दूसरा वेगा पसन्द नहीं करते। यह जाति भारत में भी पायी जाती है। कुछ भाग बाक नाम 'बर' अथवा 'धर' में बना हुआ बन् मान लगाते हैं। बर उस भूमि को कहते हैं जो पहाड़ और समतल के बीच में पड़ता है। बर में बने हुए के कारण 'बाक' कहलान लगे।

बाक जाति में शास्त्र, मनुष्य का विद्या तथा संवत्सरी तथा रजतार आदि अधिक प्रसिद्ध है। शास्त्र शास्त्रोपयोग धारण करते हैं और पुनर्विवाह नहीं करते किन्तु कोविदा यज्ञोपयोग और पुनर्विवाह वातां नहीं करते। मनुष्य नाम्य जाति मानी जाती है। राजा जंगमी जाति है जो अपने का महायुगा प्रताप की वंशज मानती है।

पहाड़ी संवत्सरी भारतीय चित्तवर्तिया तथा कंचनपुरिया आदि जातियों से विशेष में बसने के कारण कहलान लगी है।

[illegible]

प्रारम्भिक इतिहास

प्रारम्भिक इतिहास  
न्याय का प्रारम्भिक इतिहास बौद्ध शास्त्रों तथा स्तूपों पुराण में मिलता है।  
यह बातें बहुत ही प्राचीन हैं। केवल प्रारम्भिक ही अपनी अपनी पुस्तक 'गोर्खा' में

लिखा है कि बीठमार्गी मंजुरी तथा सनातन भर्मावलम्बी बिष्णु न 'नामहृद' के जल को पहाड़ काटकर बाहर निकाला और मनुष्यों के रहने के लिए सुन्दर प्रदम बनाया। इसलिए नपाक का नाम प्राचीन काल में 'नामहृद' था। सतपुग म बिपरिब नाम के प्रथम बुद्ध न नागहृद म आयमन किया और चंद्र शुक्ल पुनिमा के दिन नामहृद के मध्य में एक कमल का बीज लगाया। उस कमल से वास्तिव शुक्ल पुनिमा के दिन एक पृथिव्य पूर्ण कमल खिसा जिसके मध्य में बीठ-मार्गी मठ के मानव बाला के लिए स्वयंभूनाथ और पिबमार्गी मठ के मानव बालों के लिए पद्मपतिनाथ की ज्योतिर्मयी मूर्तियों का प्रादुर्भाव हुआ। इसके पश्चात् तृतीय बुद्ध भगवान की ज्योतिर्मयी मूर्ति का दर्शन करने के लिए पम्मावगिरि म आसन धिसिनाम बावकर अवतरित हुए।

इसके पश्चात् त्रेतायुग में बिस्वभू नाम के तृतीय बुद्ध न अपनी शिष्यमण्डली सहित कुम्भीपगिरि में आकर एक स्रष्टा पुष्पादारा ज्योतिर्मय भगवान् की पूजा की और नामहृद का पवित्र जल बाहर निकालने का प्रयास किया। उसी समय चाल दश के मंजुषी श्री बाधिमल ने ज्योतिस्वरूप भगवान की आराधना करने के निमित्त महाछोपावरि मगरकण (महामण्डप विरी) में बसकर तीन रात अमिसेप वृष्टि रखकर ज्योतिस्वरूप भगवान् का स्तवन किया। मंजुषी ने 'बरदा' और 'मोसदा' नाम की शक्तियों की अनुकम्पा प्राप्त करके नामहृद के एक हुए जल को बाहर निकालकर उस मनुष्यों के रहने योग्य बनाया। मंजुषी न महामण्पगिरि को शुक्ला की तलहटी पम्पोब (कृष्णोब) और ध्वानोब में 'बरदा' और 'मोसदा' का स्थापित किया। उसी शुक्ला व मध्य को काटकर नामहृद का जल बाहर बहने लगा और इसीलिए उस स्थान का नाम कटुनाथ वह पड़ गया। आजकल वह स्थान तीर्थ कहलाता है। नामहृद का जब सब जल बाहर निकल गया तब मंजुषी न पक्षम काम्पगिरि म श्री गुह्येश्वरी के बीजमन्त्र की स्थापना की। मंजुषी न उस गिरि में मंजुपत्तन नाम का ग्राम बसाकर अपने शिष्यों को वही बसने के लिए आदेश दिया और व काम्पान्तर में अपन शिष्य धर्माकर को उस ग्राम का राज्याधिकार औरकर स्वयं चीन भेज गया।

इसके पश्चात् मंजुपत्तन में बहुच्छन्द नाम के बहुधर्म बुद्ध अवतरित हुए और नपाक में जल का अन्नाद्य देकर भगवती गङ्गादेवी की प्रार्थना करने लगे। उन्हीं की प्रार्थना म द्रवामुन हाकर स्वयं गुह्येश्वरी माता पिबपुषी पर्वत के उत्तर म बागमनी मना के तप में प्रवृत्त हुई। बुद्ध बहुच्छन्द ने धर्माकर राजा का निम्नजात पाकर उसकी मृत्तु के पश्चात् धर्मनाथ नामक शिष्य का मंजुपत्तन का राजा बनाया। इसी धर्मनाथ के बग का राजा सुपम्बा धर्माशुभ्रयात्तम भगवान् राम का मयकापीन था। राजा सुपम्बा म मांकादय मात का नगर बनाया और बाद में उसी को अपनी राजधानी बनाया। यही सुपम्बा जपन जपनी मीना की कम्बप्पर में जलबपुर मो गया था और वही महाराजा बिदर के गाला बुगप्परज द्वारा मारा गया था जिसके कटस्वरूप मांकादय नगर राजा बुमप्परज के शासक में बना गया। राजा बुगप्परज का बग महत्तो बर्षों तक आकाश नगर में राज्य करता रहा।



हापर युग के अन्त में काश्यप नाम के पंचम ब्रह्म ने जाकर ज्योतिर्मूर्ति और गृहेश्वरी के दर्शन करके पञ्चात् यौड देश की राहु की और यौड देश के तत्कालीन राजा प्रचण्डदेव से ज्योतिर्मूर्ति तथा मूर्ध्निधारी देवी का माहात्म्य वर्णन किया। इससे प्रभावित होकर राजा प्रचण्ड देव नेपाल नाम और उन्होंने महारत्ना गुप्ताकर को अपना वीरता ब्रह्म बनाया। यही शालिन्धी के नाम से प्रसिद्ध हुए।

इसके पश्चात् ही कमिष्ण का कृष्णमास चारों ओर फैल गया और कलिपुत्र के मनुष्य प्रत्यक्ष दर्शन का सह सकने में असमर्थ हो गये। इसलिये ज्योतिर्मूर्ति को इन करके स्वान स्वान पर रत्नों का निर्माण हुआ। राजा कुचध्वज के निर्वास हो जाने पर शालिन्धी ने यौड राज्य के एक वृत्त को नेपाल का राज्य-धामन दिया। इसी यौड राजवंश के अन्तिम राजा सिद्धदेव परमपोषी सिद्ध हुए। राजा सिद्धदेव के साधन-काश में नेपाल का शालिन्ध्र तथा व्यापार सिद्ध हो पक फल गया था। इस राजा ने अपने अन्तिम काश में निश्चय समाधि ले ली थी और इसी की स्मृति में आज तक ठाकुर गुरु में प्रतिवर्ष जाता हुआ करती है। राजा सिद्धदेव का दूसरा नाम राजा सिद्ध भी पड़ गया था और उसी के राज्यकाश में नेपाल में एकबार भयंकर भूचाल आया था जिसके फलस्वरूप अनेक देवस्वाम तथा भक्तों का विध्वंस हो गया और शालिन्धी तथा गौडस्वर प्रचण्डदेव की भी चौर के साथ ही स्वप्न हो गये।

इसके अधिक कामोपरान्त नेपाल में महर्षि 'ने' नाम के मुनि प्रकट हुए। उस समय सीमा पुरोहित भयान् कृष्ण के साथ आया हुआ स्वातन्त्रियों की संस्था अधिक थी। शास्त्रम में 'ने' नाम की एक पुत्री मरु भी जो प्रतिदिन निर्धारित समय पर जंगल में घास चराने जाती होती थी और एक एकान्त स्थान पर पहुँचते ही उसके स्तनों में महंगा दूध की धार निकलने लगती थी। एक दिन उसके ने उस माद का पीछा किया और वह जानने की चपटा की कि माद दुपारी है। चरन्तु क्या कारण है कि हम लोगों को दूध नहीं देती। चरन्तु ने जब यह देखा कि अमुक स्थान पर पैर रखत ही उसके स्तनों से दूध की धार निकल पड़ी है तो उसने दुष्-ज्वाबित उस स्थान की मिट्टी हटानी प्रारम्भ की। ज्योंही उस ज्वाले में बोड़ी नी मिट्टी हटाई कि भयान् ज्योतिर्मूर्ति प्रकट हो गये। वह ज्योतिर्मूर्ति पशुपतिनाथ का ज्योतिर्मूर्ति था। इस समाचार को सुनते ही 'ने' मुनि ने उस पशुपतिनाथ ज्योतिर्मूर्ति के दर्शन विधि और ज्योतिर्मूर्ति की प्रतिष्ठा की। ज्योतिर्मूर्ति के दर्शन करत ही शीतल मुनिवा भक्त हो गया और उसके पुत्र मुनिमान पत्त नेपाल का शासक बनाया गया।

### श्रीपाल वंश

इस प्रकार नेपाल की राज्यवर्धनी में प्रथम योगदान ही में करवाना बताया। मोरान्धरीय प्रथम राजा ने ८८ वर्ष तक राज्य किया। इसी के राजवंश में ही पशुपति

नाथ के प्रादुर्भाव तथा देवत का निर्माण हुआ। इसका पुत्र जयगुप्त ७२ वर्ष तक तथा क्रमशः परमगुप्त ८० वर्ष भीमगुप्त ९३ वर्ष मणिगुप्त ३६ वर्ष विष्णुगुप्त ४२ वर्ष यशगुप्त ७१ वर्षों तक राज्य करते रहे। सबको मिलाकर आठ पुत्रों तथा ५२१ वर्ष गणपतिवंशीय राजाओं ने राज्य किया। गोपालवंशीय राजाओं का निवास-स्थल कीर्तिपुर के दक्षिण में मातातीर्थ नामक स्थान के पास था। गोपाल वंश के अन्तिम राजा यशगुप्त निबन्धीय इसलिये उन्होंने अपना अन्तिम काल में भारतवर्ष आकर बरसिंह नामक एक अहीर वंशी व्यक्ति को राज्याधिकार दे दिया।

### अहीर वंश

बरसिंह के पीछे क्रमशः उनके पुत्र जयमतिरसिंह और उनके पुत्र मुचनसिंह राजा बने। इसी काल में किरातों के सरदार यमम्बर ने पूर्व की ओर से नेपाल पर आक्रमण किया। इस संघाम में मुचनसिंह मारे गये और किरातवंशीय राजाओं के हाथ में राज्य की बागडोर चली गई।

### किरात वंश

किरात वंश के प्रथम राजा यमम्बर द्वार युग के अन्त तथा कलियुग के प्रारम्भ में थे। इस वंश का राज्य २९ पुत्रों तक अविच्छिन्न रूप में चलता रहा। यमम्बर की मृत्यु के पश्चात् पति स्कन्द, यमम्बर हृति तथा हुमती के राज्यकाल में पाण्डवों का वनवास आग और अर्जुन तथा शिशुपति किरात के साथ युद्ध हुआ और परमपितामह भी प्राण्य हुए। इनके मातुल्य राजा जिनदत्तो महाभारत के कौरव-पाण्डव युद्ध में सम्मिलित हुए थे और इसमें उन्होंने बड़ा पराक्रम दिखाया था। इन्होंने अपनी मुखावस्था ही में अश्वमेध यज्ञ किया। इसके पश्चात् आठों और नव राजा यमों और पुत्रों के राज्यकाल में शाक्यसिंह वंश नेपाल में पधारे।

इनके बाद पूर्वमा पूर्व बुद्ध स्वतन्त्र तथा बुद्धों आदि ने धामन किया। इसी समय में सम्राट् अशोक नेपाल जावे और उन्होंने सभितपत्तन में बौद्ध-धर्म का प्रचार किया। सम्राट् अशोक ने एक स्तूप पत्तन में और दूसरा कीर्तिपुर में बनवाया। सम्राट् अशोक के डर से लुद्ध के पीछे किरातवंशीय राजाओं ने पोरुष के जंगल में एक दुर्ग बनाकर वहाँ छिपकर शरण ले ली। सम्राट् अशोक की पुत्री आस्मती ने शशबल नाम बनाया। इनके पश्चात् नाने पोर, पाका धर्मा गुह पुष्प कगु मुग मंग जयन लिम्बु तथा पन्थ आदि ने राज्य किया। इनके अन्तकाल में मायवमाय राजाओं ने पश्चिम की ओर से आक्रमण किया और किरातवंशीय राजाओं की मातातीर्थ छोड़कर दक्षिण तीर्थ के पश्चिम एक दुर्ग बनाकर बसाकर शरण ले ली। किरात वंश के अन्तिममें राजा यश अन्तिम राजा हुए। यह चौदहवीं राजा निर्मल द्वारा बरखित हुए और इन्हें मायता पड़ा। इस प्रकार ५२९

बर्षों के पश्चात् किछ्ठवंशीय राजाओं के हाथ से नेपाल का राज्याधिकार सोमवंशीय राजाओं के हाथ में चला गया।

### सोमवंशीय राजा

राजा विमिय न राज्याधिकार प्राप्त करके पुस्तान्त पर्वत में मोवाबरी तीर्थ के निकट अपना दरबार बतवाया। राजा विमिय के पश्चात् कमरा मठागढ़, काकमरा तथा पम्पुप्रशवेन मपाक के राजा हुए। राजा पम्पुप्रशवेन न कर्म के १२२४ वर्ष में श्री पशु पतिनाथ के मन्दिर का जीर्णोद्धार किया और चारों बगों के हिन्दुओं को बताया। इसके पश्चात् मास्कर बर्षा राजा हुए। इसकी विनास मंग्यवाहिनी सेना देश-विदेश भ्रमण करके नेतुबन्ध रामेश्वर तक पहुँची। अन्ततः दैवपाटन का नाम स्वयंपुरी रक्खा। मास्कर बर्षा सोमवंशीय राजाओं से पावन और अन्तिम राजा हुए। यह निश्चय है कि इससे पूर्व इससे अधिक शासक यज्ञ के साथ जाय हुए मीतम मोनोत्पन्न सूर्यवंश किछ्ठवीं शती भूमिबर्षा को अपना उत्तराधिकारी बताया। इस प्रकार सोमवंशीय राजाओं के बाद किछ्ठवीं शती के राजाओं के हाथ में राज्याधिकार चला गया।

### किछ्ठवीं शती

मपाक में प्राप्त असोक-लिपि द्वारा यह पता चलता है कि शाक्यवंशीय राजा काफी समय तक राज्य करते रहे। बासुपुराण और ब्रह्मवैवर्तपुराण में शाक्यवंशीय राजाओं की नामावलि मिलती है। इन प्रकार यह अनुमान किया जाता है कि शाक्यसिंह भगवान बुद्ध के बाद पाच-सात राजाओं ने राज्य किया। मास्कर बर्षा के पश्चात् बैपामी से जाय हुए किछ्ठवीं शती का प्रादुर्भाव हुआ। पन्था के गण मगध द्वारा पराजित होकर प्रमिष्ठ किछ्ठवीं शती में पुनः नेपाल की तरफ में जा बसे। किछ्ठवीं शती में मगध महामुखा से बर्षदेव मानदेव राजा शाक्यवंशी महिदेव गिबदेव शत्रुदेव भीमदेव अशुवर्षत आदि नामों के नाम विनाश प्रमिष्ठ है। प्रमाकरबर्षत किछ्ठवीं शती में मगध महामुखा प्रतापी राजा हुए। कौमुदी महोत्पन्न न स्पष्ट होता है कि साकेत किछ्ठवीं शती की ही तरफ बिम्बुद राजतन्त्र स्थापित किया वा जिनका प्रभाव आज भी नेपाल के राजनीतिक बासु मगध पर परिलम्बित होता है।

गणतन्त्र में शासन एक राज्यपति द्वारा हुआ करता था। उस गणतन्त्र की प्रमाणा चीनी यात्री यम्यान्त्सांग न भी की है। अशुवर्षत गणतन्त्र के ही प्रवक्तृ थे जो बाद में 'ठुली' नाम से प्रमिष्ठ हुए। इनके उत्तराधिकारी बिम्बुद गणतन्त्र को मल करके नुन शासन स्थापित करना चाहते थे किन्तु निज्जल गया भीतवाके उदयदेव को राज्य स्थापना चाहते थे। इसलिए दार्जा देना में संयुक्त रूप से शासन किया जिनके पदस्थान उदयदेव को राज्य मिला गया किन्तु नेपाल पश्चीम बर्ष के मिल् परतन्त्र हो गया। इस

राज्यकाय में नेपाल तिब्बत तथा चीन का सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुआ। ताई इतिहासकारों के अनुसार चीन का एक गिण्टमंडल राजा ह्युबर्बैन से मिला था। इस प्रकार बर्बैन द्वारा तिब्बत की विजय के पश्चात् स्थापित लिच्छवी शासन समाप्त हो गया। काश्मीरी कवि कन्हन की 'राजतरंगिणी' से यह सिद्ध होता है कि लिच्छवियों ने नेपाल को मज्झी तराई समेटित करके काश्मीर पर भी आक्रमण किया था और वही के राजा जयपीड को पराजित करके अपना शक्ति का विस्तार किया था।

काश्मीरी समस्तत्रय राज्य मुजफ्फरपुर जिले में वर्तमान बसाइ म था। बंगालियों के पतन के बाद लिच्छवी राजपुत्र मुपुष्य न पुष्पपुर में अपना नाम-स्वान बनाया। इसके पश्चात् तर्जिन पुर्जा तक राजाओं का नाम लिच्छवियों में नहीं मिलता। बीबीमारी पुत्र में राजपुत्र जयदेव न मानमूह म लिच्छवी बंस का राज्य स्थापित किया। राजा जयदेव के पीछे बाहू राजाओं का नाम भी घिसाईखों म नहीं मिलता। बीबीमारी लिच्छवी राजा जयदेव बहुत ही प्रतापी निकले। राजा जयदेव न गुण संवत्-अवर्तक मन्नाट अन्धगुप्त विजयान्त्य की सहायता करने के लिए नवालो मना मिच्छर के मनापति सेस्यूजम के बिहल भंडी। इसी माने मन्नाट अन्धगुप्त विजयान्त्य नवाक भी मय। राजा जयदेव ने अपनी पुत्री कुमारकी का विवाह अन्धगुप्त के साथ कर दिया। राजा जयदेव न नेपाली मिच्छ म अपन नाम न साथ लिच्छवी राज्य भी अधिकृत करवाया। कुमारकी के पति से एक विजया मन्नाट समुद्रगुप्त का जन्म हुआ। एक युद्ध में नेपाली सेना ने विशेष पराक्रम का परिचय दिया। राजा जयदेव के समय में बेरय ठकुरी बंस के पराक्रमी याज्ञा अंगुवर्मा हुए।

गुप्त मन्व ३५ मन् ३५६ में अंगुवर्मा के पद म वृद्धि हुई। पत्रहूँ महाराज निबरेव द्वारा कैलाशकट भवन राज्य का नामताधिकार ताम्रपत्र द्वारा अंगुवर्मा का दिया गया। इसी समय में अंगुवर्मा को महामामल का पदवी मिली। अंगुवर्मा बहुत ही प्रतापी निकले। उन्होंने नेपाल राज्य की बहुत उपजि की। लिच्छवी राज मनापति हिन्दू धर्म तथा बौद्ध मतावलम्बि या दार्मा का समान ही दुष्टि म दखने व। महामामल अंगुवर्मा दार्मा धर्मों के प्रति बराबर भक्ति रखत व। राजा भुवदव और राजा मन्तरेव के बाद मानदेव मन्तरेव राजा हुए। राजा मानदेव बहुत ही पराक्रमी व। इसी के राज्यकाल में महामामल अंगुवर्मा के बंस से ठकुरी राजाओं न लिच्छवी वरग को आजीतता त्यागकर स्वतन्त्र होना चाहा परन्तु पराजयों राजा मानदेव न ठकुरिया का मान-मदन कर दिया। इसी समय में अकल जयवर्मा न पमुपनिनाथ के मंदिर में जयम्बर नाम की मिय मूर्ति की स्थापना की परन्तु पाइ ही दिनों के बाद यह मूर्ति मल्ट हो गई। इसलिये राजा मानदेव के पिता राजा मन्तरेव ने बहुत लक बीरह हाथ का विग्रह स्थापित किया। लिच्छवी राजा मानदेव ने गाना रंग्य और बक बिहार बनवाया। इसके बाद राजा मानदेव राजा मन्तरेव तथा राजा बल्लदेव मानव हुए। मन्तरेव न नेपाल में जयमोक्तिनगर की

प्रधानता और पूजन का प्रचलन किया। इनका प्रभाव ऐसा बढ़ा कि जबसोकितेश्वर (मत्स्येन्द्रनाथ) नेपाल के अभिषेकता इच्छा मान लिये गये। जयदेव द्वितीय ने सिलासेन म तर्कम राजा जयदेव और चौबीसवें राजा नरेन्द्रदेव के पराक्रम की प्रशंसा की गई है।

जायकुम्भ राजा हुपथर्षेन की प्रथम अभिसाया थी कि वह नेपाल की विजय करके अपना राज्य में मिला खे। किन्तु वह ऐसा कर नहीं सके। इसी समय चीनी यात्री ह्वानसांग नेपाल आय। ह्वानसांग ने नेपाल-यात्रा का वर्णन बहुत ही मर्मस्पर्शी शब्दों में किया है। उन्होंने लिखा है कि नेपाल पर्वतमाला से आवृत है और नेपाल के बिस्वासी (बीड़) तथा अभिष्वासी (सनातन हिन्दू धर्मावलम्बी) एक ही साथ प्रेमपूर्वक बिना किसी धार्मिक तदभाव के रहते हैं। उन्होंने यह भी लिखा है कि नेपाल हिमाच्छादित एक बहुत ही पवित्र देश है जहाँ का निष्कषी राजा सुन्दर, आचरन्वान तथा उदार और विद्वान् है। उसके राज्य में महायान और हीनयान दोनों मतावलम्बी पाय पाते हैं। पञ्चीसवें राजा गिबदेव द्वितीय ने अपना विवाह मगध-मगध आश्रित्यसेन की पौत्री बत्पावनी से किया। छष्ठीसवें राजा जयदेव द्वितीय ने अपना विवाह कलिय और कौणस के राजा हर्षदेव की पुत्री राज्यमति से किया। पर्वती 'बंजावली' से स्पष्ट होता है कि राजा शंकरदेव से चौबे पौड़ी में उत्पन्न जयदेव पुष्काम म सन् ७१३ ई० में काठमाण्डौ नगर बसाया। राजा जयदेव युनराम संतान-हीन होकर मरे। इसलिए मुवाकोट के महासामन्तों ने अपना कुल में श्रेष्ठ श्रीमास्कर बर्मा को राजा बना। श्रीमास्कर बर्मा के पदग्रहण जयस बामदेव पद्मदेव मन्नाजुन देव तथा शंकरदेव पाच राजा हुए। शंकरदेव बहुत ही कट्टर धर्मप्रिय थे। इसलिए उन्होंने पाटन में एक सुन्दर मन्दिर बनवाया। यह काल धार्मिक दृष्टि से नेपाल के इतिहास में बड़ा ही महत्वपूर्ण कहा जा सकता है, क्योंकि इस काल में शंकराचार्य का धर्म-प्रचार व्यापकता के साथ हो रहा था। सनातन हिन्दू धर्म के इस प्रचार को रोककर विनायकनगर के बीड़ मतावलम्बीयों ने मान गी बाहुना को जाग म मारकर मार डाला जिसके फलस्वरूप इन बाहुनों की स्थिति भी मनी होगई और इसी पाप के कारण बीड़ों का भी ध्वज हो गया। इससे मान के राहियों का भी धाप का भागी होना पड़ा। इसकी शान्ति के निमित्त राजा शंकरदेव ने पाटेश्वर महादेव की स्थापना की। इसके बाद राजपुत्र बामदेव ने पाटन और शान्तिपुर के मारदार बाबा की सहायता से नेपाल में अपना राज्य स्थापित किया।

### सूर्यवंशी राजा

बामदेव के सूर्यवंश में कई पुत्रों तक नेपाल में राज्य किया। हरिदेव और महागिह ने बसि सन ३८५१ में पद्मपतिनाथ के मन्दिर का छत्र बनवाया। इसी समय कीर्तिपुर नाम भी बनाया गया। नेपाल में इसी ने पदमेन्द्रनाथ 'मुनि' नामक महा का प्रचलन किया जिसमें कथाम लाम्बा इत्यादि धार्मिकों का सम्मिश्रण था। इस वंश के राजामान देव नन्देन्द्रदेव नन्देन्द्रदेव पदमेन्द्र देवदेव इत्यादि सभी धम्ममुद्र के विशेष प्रेमी थे। एक समय

हरिदेव जब मत्स्ययुद्ध में जल रहे थे तभी उनको पुत्र-वन्धन की वध भूषता दी गई। इसी वाने हरिदेव के पश्चात् जितने भी सूर्यवंशी राजा हुए सब अपने अपने नामों के अन्त में 'मत्स्य' शब्द मिलाते लगे। अन्त में मत्स्य और जयदेव मत्स्य इनके बाद सामक हुए। जयदेव मत्स्य ने अपने छोटा भाग्य मत्स्य का भाग्य का राज्य दिया। राजा आनन्द मत्स्य की आज्ञा लेकर साबवाल नामक एक बूढ़ बलिहारी ने नेपाली सैन्य भेजाया। नेपाली सैन्य अन्तर्गत सन् ८८० ई० से प्रारम्भ होता है।

### कर्णाट वंश

कर्णाट देश के पराक्रमी राजा नान्यदेव ने नानरा स्यामबासी ब्रह्मपुत्र नदियों के सहित एक विशाल समा लेकर नेपाल पर आक्रमण किया और जय मत्स्य तथा आनन्द मत्स्य को तिरहुत मगाकर स्वयं मकतपुर की अपनी राजधानी बनाया। यही नेपाल लक्ष्मि नगर कहलाते लगे।

नान्यदेव के पश्चात् कर्णाट जयदेव हरिसिद्धदेव शक्तिदेव रामदेव तथा हरिदेव कर्णाटवंशी राजा नेपाल में शासन करते रहे। राजा गंगदेव और मरसिद्ध देव ने चम्पापुरी नाम का गांव बसाया। हरिदेव इस वंश के अन्तिम राजा थे। इनके शासनकाल में नेपाल में प्रजा का बिद्रोह हुआ और एक विफल बिद्रोही मगर ने पाप्वा के तत्कालीन राजा मुकुन्दसेन को नेपाल पर आक्रमण करने का लिए प्रोत्साहित किया। मरसिद्ध सन् १९८ ई० लक्ष और मगर सेना को लेकर राजा मुकुन्दसेन ने भीषण वध से आक्रमण किया। इस युद्ध में राजा मुकुन्दसेन की विजय हुई और उनकी समा ने नेपाल की जनक देवमूर्तियों की मूर्ति प्रणत किया और मूर्ति-पाट भी बहुत की। बिजयोपरान्त राजा मुकुन्दसेन ने मत्स्यवंशीय के सामने की विशाल मूर्ति पाप्वा मज दी। नान्य-विजय से राजा मुकुन्दसेन की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई और इसी वर्ष में उन्होंने मत्स्यवंशीय की मन्त्र-विद्या मूर्ति को एक स्वयं-हार पहनाया। राजा मुकुन्दसेन ने लक्ष और मगर सैनिकों का विशेष प्रशस्ति दिया और सभी से लक्ष और मगर वापिस नेपाल में विस्तृत रूप में फैलती गई। राजा मुकुन्दसेन की शासनार विजय तो हुई परन्तु यहाँही उन्होंने राज्याधिकार अपने हाथों में लिया और ही पाप्वा में बिकराल महामारी का रोग फैल गया जिससे बिकराल हादरा राजा मुकुन्दसेन को सम्पादी और कारण करके नुबाकोट की ओर भाग जाना पड़ा। इतना ही नहीं अन्तिम इसी महामारी से पाप्वा की समस्त सेना का नाश हो गया। राजा मुकुन्दसेन की मृत्यु नुबाकोट में दक्षिण पर हुई।

### वैश्य ठकुरी वंश

इनके पश्चात् आठ वर्ष तक राजनही पाली रही। उत्तरार्ध वैश्य ठकुरी वंश के जनक राजाओं ने राज्य किया। इस काल में कर्णाटपुर में बाह्य राज पाटन के एक मुख्से में एक-एक राजा और मकतपुर में तीन राजाओं ने राज्य किया। इन्हीं राजाओं की पीढ़ियों से भी वन्धीय वर्षों तक नेपाल में राज्य करती रहीं।

## मुसलमानों का आक्रमण

ग्यारहवीं शताब्दी में भारत में यवनों के आक्रमण होने लगे और यवनों की बढ़ती हुई शक्ति देखकर भारतीय भाग राज अत्यधिक विकल हो उठे। सन् १११२ ई. में अयोध्या के सूर्यवर्गी राजा हरिर्मह देव न महम्मद तुगलक के आक्रमण से बाध्य होकर अपने मन्त्री कुत्ब और धन-मन्थन सहित उधरी भारत में बिबला प्रदेश आकर सिमरीन गढ़ को अपनी राजधानी बनाया परन्तु सन् ११३४ ई. में दिल्ली के बाबघाह मुहम्मद तुगलक ने सिमरीन गढ़ पर भी बाधा बोल दिया। इस आपत्तिकाल में भगवती तुम्बावानी ने राजा हरिर्मह देव का स्वप्न दिलाया कि तुम तुरन्त नेपाल की ओर भाग जाओ। ईसी स्वप्न में बिबला करके राजा ने पीप मास में नेपाल की राह ली और इसी मास में अगस्त तक वह मादगाव पहुंच गया। इस समय बरम ठकुरियों का शासन सङ्गड़ रहा था। इनमें प्रजा न राजा हरिर्मह देव का हृदय से स्वागत किया और उन्हें नेपाल का राजा स्वीकार कर दिया। नेपाल राज्य प्राप्त करके राजा हरिसिंह ने मूलशोक में तुम्बावानी कीर्तन की प्रतिष्ठा की। सन् १३१७ ई. में तुगलक बाबघाह ने अपने बहनों मलिक गुमर की देव देव में एक बाल पुत्रधार सैनिकों की एक मुखियत सेना चीन के रास्ते से नेपाल पर आक्रमण करने के लिए भेजी। मुगल सेना को इस आक्रमण में सफलता मिली और मुगल ने नेपाल की मूर्तियों तथा मंदिरों को विध्वंस रूप से ध्वस्त किया। काठमाण्डू के एक शासक ने मित्र हाता है कि मुगलों ने काठमाण्डू को बुरी तरह ध्वस्त किया था और भयवत् अनुपनिवास की मूर्ति को भी तोड़ा था। यवनों ने चीन के सम्राट को भी पछाड़ना चाहा था किन्तु चीनियों ने इसका बटोर प्रतिरोध किया। मुगलों के दिल्ली भाग जाने के बाद राजा हरिर्मह देव न नेपाल का पुनर्निर्माण किया और वह बहटाईन वर्षों तक राज्य करने रहे। उनके बाद मोतीसिंह राजा हुए। सन् ११८४ ई. में चीन के सम्राट हेन उ न राजा मोतीसिंह के पास अपनी मुद्रा के साथ अपना राजपुत्र भेजा और राजा मोती सिंह का नेपाल का राजा बाना। इस पर राजा मोतीसिंह ने प्रत्युत्तर में एक स्वर्ण-मूर्ति तथा धार्मिक पुस्तकें चीन भेजी। राजा गविर्मह ने बनेपा को अपनी राजधानी बनाया और बाँग बरम तक नेपाल का धामन किया। इस काल में चीनी संवत् ५३५ में नेपाल और चीन में प्रतिनिधिमन्त्रियों का आदान प्रदान होता रहा। चीन की 'बकन' में मित्र हाता है कि राजा हरिर्मह के बाद के अन्तिम राजा स्वामिह सन् १३८७ ई. में १४१८ ई. तक नेपाल राज्य की बागदार संभाल गए थे। इसी समय काठमाण्डू और पाटन में अर्पाग्यनमन्त्र भी थे। राजा स्वामिह के शासन-काल में नेपाल संवत् ५२ मात्र बुदी हाइपी के दिन नेपाल में बहामुख्य आया था।

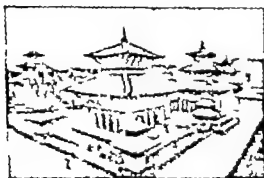
### मस्जिद मद्रा

राजा अयम मस्जिद तान्यदेव द्वारा पराजित होकर तिरहुत की ओर भाग गये थे लेकिन उनके पुत्र जयमद्र मस्जिद बहुत ही मायबानू थे। सूर्यवंशी राजा ध्यामनिह ने अपनी पुत्री का विवाह जयमद्र मस्जिद से किया और उनका अपना उत्तराधिकारी बनाया। इस सम्बन्ध से नेपाल में फिर मस्जिद का राज्य स्थापित हो गया। नेपाली संवत् ५२९ में जयमद्र मस्जिद ने नेपाल के स्वस्त मंदिर इत्यादि का जीर्णोद्धार किया। जयमद्र मस्जिद न पन्द्रह वर्षों तक बहुत ही दूरवर्षितापूर्वक नेपाल में राज्य किया। उनका वध नेपाली संवत् ५२९ से ८८८ तक नेपाल को सुदृढ़ तथा संयुक्त बनाये रहा। इस वध के अन्तिम काम में माधवाब पाटन और कान्तिपुर का राज्याधिकार स्थिर रहा। हमारे राजा नाग मस्जिद ने चौदह वर्षों तक तथा तीसरे राजा जयजयत मस्जिद ने पन्द्रह वर्षों तक राज्य किया। चौथे राजा जगन्नाथ मस्जिद ने प्यारह वर्ष और पाँचवें राजा उग्र मस्जिद ने पंद्रह वर्ष तक राज्य किया। छठे राजा अशोक मस्जिद बहुत ही शास्त्र प्रवृत्ति तथा धार्मिक स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्होंने बिष्णुमती तथा ब्रह्मती नदियों के मध्य में श्वेतकाली और रक्तकाली के मन्दिरों की स्थापना की और उम स्थान की पवित्र बनाम के लिए उत्तरकाली अथवा काशीपुर नाम से प्रसिद्ध किया। अशोक मस्जिद ने पाटन के ठकुरी राजाओं को परास्त करके पाटन में भी अपना आधिपत्य जमाया। सातवें राजा जयस्थित मस्जिद न जयमद्रिह की अति सुन्दरी कन्या राजस्वदेवी से विवाह करके मस्जिद तथा कर्नाटक वधों को एक प्रेम-युग्म में बांध दिया। जयस्थित मस्जिद बड़े ही निपुण तथा दूरदर्शी शासक थे। उन्होंने नेपाल के लिए एक-एक-एक-एक निष्पत्ति की और विधिया भी बनवाईं। इन्होंने नेपाली संवत् ५४२ में श्री रामचन्द्र सन-हुग गुरु गारुलनाथ कुम्भारकर, उमल भैरव और अयम देवी इत्यादि की मूर्तिया स्थापित कीं। यह पत्थरार्थक वर्षों तक बर्मिण्ड हाकर नेपाल पर निबिम्ब शासन करते रहे। जयस्थित मस्जिद तथा उनके पुत्र ज्योतिर्वेन न हिन्दू धर्म की उन्हें मजबूत करके बौद्ध धर्म की उन्हें हिला दी। जयस्थित मस्जिद के तीन पुत्र थे। इनमें सबसे कमिष्ठ पुत्र ज्योतिर्मस्जिद ने सन् १४१३ ई० में पूष मत्ता अपने हाथों में ले ली। उन्होंने बीछों के पवित्र मंदिर स्वयंभूनाथ का जीर्णोद्धार किया। ज्योतिर्मस्जिद की मृत्यु सन् १४२७ ई० में हुई और उनके पुत्र यश मस्जिद जबका जय मस्जिद राजगद्दी के धार्मिक बने। यश मस्जिद राजनैतिक दृष्टि में बड़े ही अदूरदर्शी व यद्यपि उन्होंने राज्य-मत्ता के साथ ही साथ धार्मिक मत्ता भी अपना हाथ में ले ली और अखिल भारत में महाप्राण्योय शासकों को आभिव्रज करके श्री पद्मपतिनाथ का पूजन का अधिकार लिया और जयभूमि संकराचार्य के मार्ग का प्रचार करवाया। यश मस्जिद ने बर्मनाथ मीननाथ लाके-वरका मंदिर निर्माण करवाकर सामन्तमद्र बोधिमत्त पद्ममती बोधिमत्त और जय बोधिमत्तों के साथ अनक देवी-देवताओं की पवित्र मूर्तियों की भी स्थापना की। इन्होंने जयदेव गुणकाम द्वारा स्थापित लाके-वर की मूर्ति को कान्तिपुर में स्थापित करवाया। वहीं मूर्ति आज यमनोकेसर कहलाती है। इनमें सन् १४५३ ई० में भक्तपुर के मध्य में दलाकय मगवान् का मंदिर



बनवाया और नेपाली सन् ५९२ बर्ष ई. सन् १४७२ ई० तक ५३ वर्षों तक राज्य किया। यश मल्ल ने अपने राज्य का विस्तार तिरहुत गोरखा तिब्बत में घिसलै तथा कुछ गया तक कर दिया। सन् १४८० ई० में उन्होंने नेपाल राज्य को अपने तीनों पुत्रों में विभाजित कर दिया। अपने ज्येष्ठ पुत्र राम मल्ल को मकलपुर मध्यम पुत्र रत्न मल्ल को बनेपा (बाबेपा) तथा कमिष्ठ पुत्र राम मल्ल को काठमाण्डू मीप दिया और अपनी कन्या धर्मवती को सम्मि-पतन (पाटन) का राज्य दिया। इस विभाजन से यश मल्ल की कीर्ति बिगड़ हो गई और नेपाल की कड़ीय दक्षिण सिद्ध-मिद्ध हो गई जिसके फलस्वरूप गोरखा जाति के लोग बलशाली होते गये। कुछ समय के पश्चात् कमिष्ठपतन काठमाण्डू में सम्मिलित हो गया। यश मल्ल ने उपत्यका के बाहरी नयकोट के ठाकुरी द्वारा देवी राजेश्वरी पर रंग चढ़ाया जाना सुनकर सन् १४९१ ई० में नयकोट पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में यश मल्ल की विजय मिली और यश मल्ल ने विजयोल्लास में धनवान् पशुपतिनाथ का विद्यामन्दिर पुष्पों तथा फलों से भरवा दिया। यश मल्ल के शासन-काल में ही तिब्बत तथा भूटान में कुछ तनातनी हुई थी। इसी समय में नेपाल में मुन्धों का पदार्पण विशेष रूप से होना लगा क्योंकि यश मल्ल ने ही सर्वप्रथम नेपाल में यमना की प्रवेश करने की आज्ञा दी थी।

यश मल्ल के बाद चौप राजा हरिहरसिंह के पुत्र सिद्धि नरसिंह मल्ल बहुत ही बर्बरता निरक्त। उन्होंने कमिष्ठपुर का विद्यामन्दिर तथा मकलसट बीड़ मठ और बिहार बनवाकर अनेक मठ्यागल मिया। दिल्ली के शासक हुमायूँ ने मितन नेपाल के राजा महेन्द्र दिल्ली जाय और उन्होंने बागदाह की उपहार में एक सफ़ेद हंस और कुछ बाज रिये। हुमायूँ ने प्रत्युत्तर में राजा महेन्द्र की चारों की मुहर (निका) बनाने का अधिकार दिया। बड़ी



एक प्राचीन दरबार

मुहर' राज्य नेपाल के निकले का नाम अभी तक प्रचलित है। राजा महेन्द्र ने काठमाण्डू में कुछवा बनानी का मन्दिर निर्माण कराया और नगर की समृद्धि की। उन्होंने माय-रिक्तों को ऊंची-ऊंची इमारत बनवाने का भी अधिकार दिया।

महेन्द्र के पुत्र मशानिध ने सक्तिनारायण में महा बार्पि का मन्दिर बनवाया

या बड़ बवा के महाबाप तथा जगान के नृगदाय क अनुरूप का। मशानिध बड़े ध्यधि

जारी तथा शम्पट स्वभाव के थे। वह अपने घाड़ों को मार-मार कर इतना दीड़सी ब कि वे उपत्यकाओं में मर जाया करते थे। उनके समय में किसी भी सुन्दर स्त्री का सहीदा मुसलमान नहीं माना जाता था। अंत में उन्हें मारकर राज्यभवन से बाहर निकाल दिया गया।

### सनवसी राजा

पाप्वा के राजा मुकुन्द सेन ने तब नेपाल पर आक्रमण किया। उस समय नेपाल प्रजा ने चावल भूमी इत्यादि काय-आमदी को पृथ्वी के गर्भ में छिपा दिया और बस नेपाल में धान्ति स्थापित हो गई तब उसने छिपाये हुए चावल भूमी इत्यादि को बाहर निकाला। अधिक दिनों तक भूमि में यह रहन के कारण उनमें एक विचित्र स्वाद आ गया और इसी के फलस्वरूप आज तक भी नेपाल में चावल और भूमी कृत्रिमरूप से गाढ़कर 'हुकुवा' चावल और 'छिन्नी' भूमी बनाया प्रचलित है।

राजा मुकुन्द सेन के कोई पुत्र नहीं था इसलिये सगोत्री माई धर्म सेन पाप्वा के राजा बनाये गये। राजा धर्म सेन और नेपाल तरेण हरिमिह देव में मित्रता थी। राजा धर्म सेन अपनी माता को लेकर लुम्बाबिहारी और धी पशुपतिनाथ के दर्शन करन नेपाल आये और एक संवत्सर श्रमिष की सुसील कन्या से पाणिग्रहण भी किया।

राजा धर्म सेन के दो पुत्र ब जिनके नाम राज सेन और अमर सेन थे। अमर सेन बहुत ही विपरीत तथा दुष्ट स्वभाव के थे। राजा धर्म सेन की मृत्यु के पश्चात् राजसेन पाप्वा की घड़ी पर बैठे। राजसेन ज्ञानुराज सेन के नाम से प्रख्यात हुए, किन्तु सहास अमर सेन की मृत्यु हो जान से ज्ञानुराज सेन को बहुत बेचना हुई। कुछ ही दिनों के पश्चात् मुबराज प्रेम सेन की भी मृत्यु हो गई। इन दोनों घटनाओं का प्रभाव ज्ञानुराज सेन के हृदय पर बहुत गहरा पड़ा और वह अपने कनिष्ठ पुत्र अमराज को लेकर तीर्नवाला करन निकल पड़े। सन् १३४९ ई० में ज्ञानुराज सेन हरिहार होकर यहाँ ही कुसुम पट्टे लौंही तैमूरलग की सुसज्जित सेना में उन पर आक्रमण कर दिया और ज्ञानुराज सेन सहित उनके अधिकांश सैनिकों को मार डाला। मुबराज अमराज सेन तैमूरलग की सेना से बचकर पाप्वा जा पहुँचे।

अमराज सेन ने जब यह देखा कि पाप्वा राज्य के मंत्री इत्यादि बहुत ही अधिपतमयी हो गये हैं तो उन्होंने मंत्री इत्यादि का मान-अवन कर दिया और अपने पिता के राज्य को अपना हाथ में ले लिया। उनका पुत्र चन्द्रयस्त सन बहुत ही मनस्वी तथा सतमंगी थे। चन्द्रयस्त सन ने मन्त्रालय, मीरकोट, महोकाट इत्यादि स्थानों को विजय करना चाहा किन्तु वह सफल नहीं हो सके। उनके पुत्र रत्न सन अरुणदसी तथा विष्णुमित्र ब इसलिये मोरलों ने महोकाट, मीरकोट इत्यादि स्थानों पर अपना प्रभुत्व जमा किया।

रत्न सेन के अष्ट पुत्र मुकुन्द सन द्वितीय न र्चिमि और राजपुर विजय किया और अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् पाप्वा के राजा बने। मुकुन्द सन द्वितीय बड़े ही नीति

परमेश तथा व्यवहारकुशल राजा हुए और प्रजा उनके स्वभाव तथा कार्य से इतनी प्रभावित हुई कि उन्हें 'मनि महाराज' कहने लगी। उनके पास पुत्र पृथ्वी सेन भूमि सेन सन्मन सेन चन्द्रचूड़ सेन तथा रामप्रताप सेन हुए। राजा मुकुन्द सेन न राजा यक्ष मल्ल की भानि अपने पार्श्वों पुत्रों में अपना राज्य बाँटकर सन्त्यास ले लिया। उन्होंने पृथ्वी सेन को पाल्पा सन्मन सेन का मकवानपुर, चन्द्रचूड़ सेन को राजपुर, भूमि सेन को ठमूँ तथा रामप्रताप सेन को रिसिंग का स्वतन्त्र राजा बना दिया और राज्य को छिन्न-भिन्न हो जाने दिया। उन्होंने अपना अंतिम समय विदेशों में बिताया।

सन् १५८५ ई. में शिवसिंह काठमाण्डू ने राजा बनाये सन् १९१४ ई. तक राज्य करते रहे। उनकी धर्मपत्नी गंगा रानी बड़े ही धार्मिक स्वभाव की थी और उन्होंने अपने पति से अनुमति लेकर स्वयंभूनाथ पद्मपतिनाथ तथा बांगुनाथनाथ इत्यादि पवित्र मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया। गंगा रानी को मृत्यु की घटना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। कहा जाता है कि जब साध्वी रानी ने अपना मन्दिर शरीर त्यागा तो भगवान् पद्मपतिनाथ के मन्दिर से एक हृदय-विहारक प्रकाश ध्वनि हुई जिसकी सुननेवाले सब बहरे हो गये।



काठ-मण्डप

शिवसिंह के परधान् मन्त्री नरसिंह राजा हुए। उन्होंने एक विद्यालय स्थापना की सकरी से एक मुद्रा 'काठ-मण्डप' जलवा 'काठ' का महत्त्व बतवाया जिसके आधार पर ही उस समय का नाम 'काठमाण्डू' पड़ गया।

मम्मरभूमि में भीम मल्ल काजी व्यवसायिक बुद्धि कर्म। उन्होंने तिब्बत में जाकर अपना खूब प्रमाण जमाया और कुली वर्ग का नाम में दिया दिया। जन्म म भीम मल्ल की दुर्गनागा समझकर राजा नवमी नरसिंह ने उनकी हत्या कर दी। उनकी धर्मपत्नी ने कही

हाने समय यह थाप दे दिया कि उनके दरबार में कभी न ता उचित ग्याय ही होगा और न कोई नियम ही बन सकेगा। कहा जाता है कि इसी के फलस्वरूप विश्रुम्प होकर राजा सधमी सरासिह पासण हा गय और अठारह वर्ष तक वह दर-दर की ठाकर आते रहे।

सन् १६३ ई० में प्रताप मल्ल मिहामन पर बट। वह बहुत ही भाग्य दामक थ। उन्होंने इनुमान होका की बाहरी दावार पर पन्द्रह मापाबा में सेन कुरुवाय।

सन् १६६० ई० में निम्नत बाकों न स्वयम्भू स्तूप के तारक कयम तथा मिलर का पुराना ताम्रपत्र बहककर मुनहरा ताम्रपत्र बनवा दिया। राजा प्रताप मल्ल न अपन जीवन काय ही में अपना राज्य अपन बाणों पुत्रा को एक-एक वर्ष तक दामन करन क मिय दिया। बाबुब पुत्र बाबुबर्षी बरस एक ही दिन दामन करके मृत्यु को प्राप्त हो गय और उनकी स्मृति में तुगीलम क ममिकट रानीपालरी नामक मुजल मापुरित सरावर बनवाया गया।



तामनेन मगर

मास्तर मल्ल दामिबारी स्वभाव थ थ। उन्होंने अपनी प्रजा का भी बाव न मानकर बिजयपामी एक समय मान में मनाव की प्रथा निकालनी बाजा। किन्तु स्व-काय न नपाव की उपयोगता में लाइन थीं बघकर महाभारी कय मर्न और मल्ल में उन्हें अपनी राजधानी कागमाष्ट की बाग भागता पडा। किन्तु एक मीक को दुरी पर ही उनकी मृत्यु हो गई। पलायनान् उनकी रातिपी आन लय सम्बाधा जगजय का राजा निर्वाचन करके मनो हो मड। जगजय न अपना नाम बदलकर महीपतीन्द्र रय दिया और राज्य का कार्य सन् १७३० ई० तक करन रह।

## पास्या के सेनवंशी

पास्या के राजा पुष्पी सेन की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र फिरोज सेन पास्या के राजा बने। इस समय पास्या राज की शक्ति बहुत ही क्षीण हो चुकी थी। किन्तु जयसीदवर सेन मय सेन अहिबर्ब सेन गन्धर्ब सेन उदित सेन मृदुन्व सेन तथा महाबल सेन राजाओं के राज्य का दक्षिणपट्टी बनाया और पास्या राज्य की सीमा मोरङपुर तक बढ़ा ली। राजा महाबल सेन ने नेपाल के महाराजाधिराज रणबहादुर शाह की अपनी सेना द्वारा जीबीसी राज्य विजय करने में बहुत बड़ी मदद की थी किन्तु बाद में रणबहादुर शाह और महाबल सेन में बैमनस्य हो गया और रणबहादुर शाह ने महाबल सेन को बन्दी बनाकर पास्या राज्य को नेपाल-साम्राज्य के अन्तर्गत कर लिया। महाबल सेन के पुत्र कुमार रत्न सेन को विजय होकर पास्या में भागना पड़ा और तराई प्रदेश में निचलीक नामक स्थान को अपनी राजधानी बनाकर भारत में सरण लेनी पड़ी। कुमार रत्न सेन के दो पुत्र लक्ष्मी सेन तथा राम कुर्मन सेन हुए परन्तु दोनों में से एक के भी कोई सन्तान नहीं रही। इसलिये निचलीक के राज्य का अन्त हो गया।

## तन्ही के सेनवंशी

सेनवंशी राजाओं में भुगिराज सेन और हम्मीर सेन राजा मृदुन्व सेन के ही वंशज थे। हम्मीर सेन तन्ही के राजा थे। राम प्रताप सेन की मृत्यु के पश्चात् रिसिय राज्य भी तन्ही में सम्मिलित कर लिया गया। इस समय बलिया के राजा पूर्वी तराई के क्षेत्रों में बहुत आतंक फैला रहे थे। बलिया के राजा का लगड़ा सीमा के प्रश्न को लेकर था। इसलिये अक्सर बादशाह ने बलिया तथा तन्ही की सीमाओं निर्धारित करा थीं किन्तु तब भी दोनों का मत-मुटाक बढ़ता ही गया। इसी संघर्ष-काल में हम्मीर सेन की मृत्यु हो गई और बलिया नरेश ने तन्ही के रामनगर के अन्तर्गत ग्यारह वर्षों का अपने राज्य में सिक्का मिया इसके पश्चात् तुला सेन तन्ही के राजा बनाये गये। तुला सेन बहुत ही प्रतिभेवादी विचार के थे किन्तु दुबारा प्रताप सेन की मृत्यु हो जाने से उन्हें बड़ी बेचता हुई।

तुला सेन के बाद रामोदर सेन तन्ही का तथा दया सेन रिसिय राज्य के अधिकारी हुए। राजपुर नरेश की मृत्यु हो जाने तथा कई उत्तराधिकारी न होने के कारण राजपुर भी तन्ही में मिला लिया गया।

सन् १६७३ ई. में शिखिञ्ज सेन तन्ही राज्य के अधिकारी बन। वह बड़े कुशल चरित्रातिथ तथा धीरे धीरे व्यक्ति थे। उन्होंने औरंगजेब बादशाह को प्रसन्न करने के लिए भोजन तथा शरीर चिकित्सा आदि विभिन्न भोजन। बादशाह औरंगजेब इस अमूल्य उपहार का प्राप्त कर कमा न लगाया और शिखिञ्ज सेन को प्रमाण-पत्र देकर उन्हें हरिद्वार का प्रमुख राजा मान लिया। कुछ ही दिनों के बाद राजा

विजय सेन ने बतिया नरेश से छीतकर रामनर के वशाय हुए ग्यान्हों त्यों को अपने राज्य में मिला लिया ।

सतबंस म राजा विजय सेन बहुत ही प्रतापशाली हुए और इन्हीं की अति सुगोस पृथी के गर्भ में नरमूपाक साह का जन्म हुआ । वही नरमूपाक साह भाग चयकर गोरला नरेश कहलाय । जिनके पुत्र पृथ्वीनारायण साह नेपाल के प्रथम योद्धाजी महाराजाधिराज हुए । सन् १७१४ ई० में अपने पिता राजा विजय सेन की मृत्यु के बाद कामराज सेन तन्हीं के राज्यधिकारी हुए । राजा कामराज सेन ने दिल्ली के बादशाह फर्रुख साह को प्रसन्न करने के लिए तयई प्राप्त के पत्रह तय छोड़ दिये और कामराज सेन के पुत्र विजय सेन तन्हीं के राजा बने । इन्होंने जब यह देखा कि मुगल साम्राज्य की क्षति साज होनी आ रही है और बंगाल का पठान सेनापति बतिया नरेश के पीछ पड़ गया है तो उन्होंने बतिया नरेश को शरण दी । विजय सेन को यह सभी भाति विदित था कि बतिया-नरेश के बंधा बासे उसके बंध के चिर प्रतिशुद्धी तथा धोर शत्रु रहे है किन्तु तब भी उन्होंने बतिया-नरेश का उचित सम्मान करके अपनी सज्जनता का परिचय दिया । सन् १७३४ ई० में विजय सेन की मृत्यु हो गई और मुबारज कामारिखत सेन तन्हीं के राजा हुए । इस प्रकार में नेपाल के मध्यभाग में भक्तपुर, कान्तिपुर तथा ललितपुर में मस्सबंसीय राजाओं की बंधावलि धीरे-धीरे लुप्त फलसी-फूप्पी रही और एक के बाद दूसरी पोड़ी कमरा उत्तराधिकार प्राप्त करके अपनी-अपनी राजधानी में राज्य करनी रही । इनके अतिरिक्त जो अन्य छोटे मोटे राज्य थे वे सब इन्हीं तीनों जबका गोरला राज्य में पहले ही मिल चुके थे ।

इन तीनों बंधों के इस समय सामक रजबोत मस्स भाववांश में तजनरमिह मस्स ललितपुर में तथा जयप्रभाज मस्स कान्तिपुर में राज्य कर रहे थे । इसी काल में पम्को मुवाकोट, सती तथा लम्पुग में चिनीङ्गाड में आय हुए भूपाल राज राजा की मर्तति गानबंसीय राजा राज्य कर रहे थे । शाहबंन के प्रबन्ध राजा इप्पसाह सम्मग नरेश राजा यदा ब्रह्मसाह के जनिष्ट पुत्र थे जिन्होंने छोटे-छोटे राजाओं की भयंकर आपमा फट से लाज उठाकर एक-एक करके सबका अपने 'भाग्या राज्य में मिलाता प्रारम्भ कर दिया और गोरला के इप्पेब महात्मा पारवनाथ का वरदान प्राप्त करके सकल भी शान मय ।

## अंग्रेजों का हस्तक्षेप

भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का विस्तार धीरे-धीरे बढ़ता ही जा रहा था और उसके द्वारा ब्रिटिश शक्ति अधिकारिक बढ़ती जा रही थी। इससे नपास के सासकों को भी भय प्रदीत होना लगा और उन्होंने भारत के राजाओं तथा मन्त्रियों से मिलकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी को उखाड़ फेंकने के लिए एक संयुक्त मोर्चा स्थापित करने का प्रयत्न किया किन्तु इसमें उन्हें अधिक सफलता नहीं मिल सकी और अंग्रेजों के पैर भारत में जमते ही गये।

अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक मराठों के आसपास काठमाण्डू और पाटन के टीनों राजा आपस में बिभक्त हो गये थे और सब आपस में एक दूसरे के विरोधी थे। आसपास के राजा न गोरखों के राजा पृथ्वीनारायण शाह से सहायता मांगी। पृथ्वीनारायण शाह उदयपुर के सिसीदिया राजपूत वंश के उत्तराधिकारी थे। पृथ्वीनारायण ने आसपास के राजा की सहायता ही नहीं की बल्कि बड़ ही काम में उन्होंने दोनों राज्यों को एक सूत्र में बांध दिया। सन् १७६७ ई. में राजा जयप्रकाश मल्ल ने ब्रिटिश सरकार से सहायता मांगी। इस पर ब्रिटिश सरकार ने कर्नल किनसाक के माध्यम से एक फौजी दुकड़ी बर्माखु न मध्य में भेजी किन्तु वह दुकड़ी तराई की गर्मी को सहन नहीं कर सकी और उसे वापस लौट जाना पड़ा। इसके पश्चात् गोरखों के प्रधान न राय्य की भीमा विस्तृत करके पश्चिम में काली नदी न लेकर पूरब में मेची नदी तक कर ली और गोरखों के शासक सम्पूर्ण नेपाल के महाराजा कहलाने लगे।

इसके पश्चात् गोरखा न मकवानपुर का पहाड़ी प्रदेश भी जीत लिया और बगिच की जीर्ण हुई भूमि को कर लेकर ब्रिटिश सरकार को देन के लिए स्वीकृति दी गई। अंग्रेज तीस वर्षों तक इस भूमि के लिए प्रतिवध एक हाथी भेंट में दिया करते थे और यह प्रथा सन् १८०१ ई. तक चलती रही। इसके पश्चात् ब्रिटिश दबनर-जनरल लार्ड कार्नवालिस के शासन-काल तक नेपाल से भारत सरकार के सम्बन्ध बहुत ही कम थे। उनके समय में नेपाली यौन जनरल म्यून रेजिडन्स में इन्कल द्वारा पुनः समझौते की बातचीत चलाई।

लार्ड कार्नवालिस न नेपाल और चीन के बीच सन्धि कराने का प्रयत्न किया और उन्होंने मेजर वर्कपैट्रिक को काठमाण्डू भेजना चाहा किन्तु मेजर वर्कपैट्रिक के नेपाल की भीमा तक पत्रचन ही नेपालियों का साम्य होकर चीनी जनरल न साथ सन्धि कर मैत्री पड़ी। इस सन्धि के अनुसार हर पाँचवें वर्ष नेपाल न चीन के सम्राट के पास भेंट केवर एक मित्र भेजना सन्धि जान का निश्चय हुआ और जब सन् १७९१ ई. में चीन में चान्ति के पक्षर न मायागुवाह मयागु हा गया और वहाँ की मयागु नहीं रहा ता यह प्रथा बंद हो गई।

मिस्टर कर्कपेट्रिक को नेपाल के साथ सन् १७९२ ई. में की गई व्यापारिक संधि को पुनः उल्लिखित बनाने का आदेश हुआ। इसी संदेश को लेकर वह काठमाण्डू गया—परन्तु नेपालियों ने उनके साथ अन्यमनस्कता प्रदर्शित की जिसके फलस्वरूप विवाद होकर मि० कर्कपेट्रिक को साथ सन् १७९३ ई. में काठमाण्डू से लौट जाना पड़ा।

### बहादुरशाह

अठारहवीं शताब्दी तक नेपाल और अंग्रेजों के बीच सम्बन्ध केवल पत्रा वचा मकान पुर के राजा द्वारा भेज हुए कभी-कभी उपहारों तक ही सीमित थे। सन् १७७४ ई० में पृथ्वी नारायण शाह की मृत्यु हुई। उनके सिंहप्रताप तथा बहादुर शाह नाम के दो पुत्र थे। ज्येष्ठ पुत्र सिंहप्रताप राज्य के उत्तराधिकारी हुए। उन्होंने बहुत लंबे दिन शासन किया क्योंकि उनकी मृत्यु सन् १७७७ ई० में ही हो गई। सिंहप्रताप के पदबाट उनका लड़का गिणु रणबहादुर शाह राज्य का उत्तराधिकारी हुआ। इस काल में उनके पिता बहादुर शाह संरक्षक हुए। पृथ्वीनारायण शाह की विजय पत्नी उनके बिरादरी थी। मरणांक बहादुर शाह और राजमाता के बीच इस वर्ष तक संघर्ष चलता रहा। इसी संघर्ष के फलस्वरूप बहादुर शाह को भारत में शरण लेनी पड़ी। सन् १७८६ ई. में राजमाता की मृत्यु के पश्चात् बहादुर शाह पुनः नेपाल लौट आये और वह फिर मरणांक का काम करने लगे। बहादुरशाह सन् १७९५ ई. तक संरक्षक-पद पर रहे। उन्हें रणबहादुर की अपन पक्ष से हटा कर स्वयं शासन की बागडोर सम्भालनी पड़ी। और बाद में उनकी हत्या महापद्म रण बहादुर शाह ने करा दी। रणबहादुर शाह बड़े ही अत्याचारी शासक सिद्ध हुए। पांच वर्षों के बाद इन्हें बाध्य होकर अपने गिणु गीर्वाण को उत्तराधिकारी बनाकर शासन की बागडोर छाड़ देनी पड़ी। उन्हें उत्तराधिकारी का काम सम्भालने के लिए राजधानी मरणांक सिपुलन हुई। रणबहादुर शाह को नेपाल छोड़कर बनारस में शरण लेनी पड़ी जहाँ कैप्टन माकम उसका राजनीतिक मुकदमा चलाया। रणबहादुरशाह का विद्रोह मरणांक ऊषा उषा के प्रयत्न करनी रही और ब्रिटिश सरकार उनकी आर्थिक सहायता भी करती रही।

ब्रिटिश सरकार ने रणबहादुर शाह के सहारे नेपाल में फिर मित्रता गठन का प्रयत्न किया और उस प्रयास में ब्रिटिश सरकार का सहयोग भी मिली। अक्टूबर सन् १८०१ ई० में उसकी नेपाल में एक और अभियान के विरुद्ध अनुसार सन् १८०२ ई० में कैप्टन डब्ल्यू. की० माकम काठमाण्डू में सर्वप्रथम ब्रिटिश रेजीडेंट नियुक्त हुए। राजधानी में मि० माकम का स्वागत किया। रणबहादुर शाह की बड़ी रानी या रणबहादुर शाह के साथ बहारस लगी लड़ी की मरणांक काठमाण्डू लगी आई और स्वयं राज्य का सर्वेक्षण करने गई। उन्होंने ब्रिटिश रेजीडेंट कैप्टन माकम को साथ सन् १८०३ ई० में नारायण मया दिया और २८ जनवरी सन् १८०४ ई० को लार्ड बेन्टल की नेपाल में सम्बन्ध गाड़ दिया। इसके पश्चात् रणबहादुर शाह ने मरणांक-दरबार में अपने बिरोधी की हत्या करवाकर शासन की बागडोर पुनः में ली



परन्तु जोड़ ही काट के परचास सन् १८०७ ई. में रणबहादुर शाह की मृत्यु हो गई। इस समय नेपाल में प्रधानमंत्री भीमसेन थापा ने जो बड़े कुशल कटनीतिज्ञ माने जाते थे। उन्होंने रणबहादुर शाह की बड़ी रानी की सहायता प्राप्त करके किम्वोर राजा गीर्वाण बुद्ध बिश्व को अपने अध में कर लिया। भीमसेन थापा न राज्य की सीमा काली नदी से सतलुज नदी तक विस्तृत की। इसके अन्तर्गत जितने भी पहाड़ के राजा थे सबने नेपाली शासन को मान लिया। सबको सैनिक पद स्थापित किये गये। सन् १८०४ ई. से १८१२ ई. तक नेपालियों और ब्रिटिश के बीच कोई विवाद सम्बन्ध नहीं रहा। विधाय इसके कि सीमा पर बन्दौती तथा लूटपाट के समय यह दोनों एक दूसरे की सहायता करते रहे। सन् १८४६ ई. में नेपालियों ने बटवल तथा सिवगज के परगना जो अन्न के बगीर द्वारा ब्रिटिश सरकार को दिये जा चुके थे हस्तगत किये। सन् १८०८ ई. में मोरंग के नेपाली गवर्नर न पूर्णिया सीमा स्थित भीमनगर की जमींदारी को अपने अधिकार में कर लिया। इसकी प्रतिक्रिया में पण हुई और जून सन् १८९६ ई. में ब्रिटिश न नेपाली सीमा पर आक्रमण करके इन्हें चीन के लिए फौज भेजी। फरवरी सन् १८९० ई. में नेपालियों ने ब्रिटिश इण्डिया की सीमा का पार कर बुटवल और बेतिया की सरहद को अपने अधिकार में कर लिया। इसी कारण नेपाल और ब्रिटिश में सीमा पर मुठभट्ट हुई जिसके फलस्वरूप ईस्ट इण्डिया कम्पनी और नेपाल सरकार की ओर से सीमा-बर्तों बाधा के शर्तों को खत्म करने के लिए कमिशनर की नियुक्ति हुई। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कमिशनरों ने नेपाल सरकार के विरुद्ध रिपोर्ट की जिसमें चिडकर लार्ड हेन्टिंग्स न मध्य अग्रेस सन १८९४ ई. में उन विसों पर अधिकार कर लिया जिनके सम्बन्ध में शर्तों का।

### नेपाल-ब्रिटिश युद्ध

नवम्बर, सन् १८१४ ई. में नेपाल और ब्रिटिश-सरकार के बीच लड़ाई छिड़ गई। अंग्रेजों की बाटुकड़ी फौज पूर्व में बड़ी परन्तु नेपालियों ने उनके हाथ लट्ट कर दिये और अंग्रेजों की हार मानकर पीछे हटना पना। अंग्रेजों की बाटुकड़िया पश्चिम में काशी नदी के पहाड़ी प्रान्तों की ओर बढ़ा परन्तु गोरखों ने बड़ी अनुरता तथा बीरता से हथकर उनका प्रतिरोध किया और अंग्रेजों की गता की परास्त करके वाली और मलमल के बीच का प्रान्त भी जीत लिया।

प्रधान मंत्री भीमसेन थापा ने सन् १८१३ ई. में चीनी गंगाद् में मिमकर भारत से अंग्रेजों को मान मानने की योजना बनायी। परन्तु इसमें उन्हें सफलता नहीं मिल सकी। सन् १८१४ ई. में अंग्रेजों ने चिडकर मंगलपुर की तराई पर अधिकार कर लिया। मैजर जनरल बिम्पनी ने अपने छ हजार सैनिकों को भजनर देशाद्रुन के देश विदेश पर हमला किया। इस युद्ध में पांच गौ बीम नेपाली मिलाही औरगति का प्राप्त

हुए और जनरल क्रिस्चो मी क्रिकेट फ़ायक पर मारा गया। २० दिसम्बर, मन् १८१५ ई० का जनरल मार्टिण्डेन एक बहुत बड़ी मना लेकर जयबक दुग पर आक्रमण किया किन्तु नेपाली सेना न बंदगी मना का पछाड़ दिया। इस पराजय के बाद मार्टिण्डेन पुन आक्रमण करने का साहस छाड़ दिया। इसका रायक बधन प्रा क्रिस्चो ने अपनी पुस्तक में किया है। साई हुस्तिम को भारत की समस्याओं में उलझा धनकर जनरल भीमसेन बापा न पुन चीनी सम्राट् म सम्बन्ध स्थापित किया। नेपाल का सम्बन्ध मित्रा न अच्छा था और दोनों में युद्ध म मंत्री ज्ञान की कारिग मी बस रहा थी परन्तु अंग्रेजों ने इस बात का समझकर मित्रो का मित्रन म को जान क लिए बाध्य किया और नेपाल भील तथा बग क बीच सम्बन्ध-बिच्छेद हुआ गया।

मराठों की सहाई के समय जनरल भीमसेन बापा न फिर एक बार बर्मी और तराई तथा गण्डक का भूभाग अंग्रेजों का दा लाभ रूप कर देकर नेपाल में सिपा मिमा। उन्होंने अपनी कटनारि से तराई के दो मी गावा का अंग्रेजों से लेकर जमना माल बपों में अपने राज्य में मिमा लिया। इन्हीं मम महान् कार्यों पर टौलकर नेपाली जनता न भीमसेन बापा का 'महात्मा' की उपाधि दी।

### मिगोमी की मधि

२ दिसम्बर, मन् १८१५ ई० का साइवानबापिन ने तराई क बन्ध में अपना सरकार को प्रिनसिप एक निश्चित भतराति तथा कुछ अन्य सुविधायें देन का प्रकामन लेकर नेपाल सरकार को छमा दिया और मिगोमी के मन्त्रिपर नेपाल सरकार म इत्याशर कर लिया। अंग्रेजी सरकार के गवर्नर जनरल न मन्त्रिपर का स्वाइति दी परन्तु नेपाली सरकार न उसे स्वाकार नहीं किया। ११ म पर फरवरी मन् १८१६ ई० में दोनों सरकारों में फिर लड़ाई आरम्भ हुआ मई। अंग्रेजी मना मर डविड बाचरकोली न अधिनायकत्व में बाठमाण्डू की ओर बढ़ी। नेपाली सैनिका न बड़ा भारता न साथ उनका सामना किया परन्तु अन्य में नेपाल सरकार का पराजित हुना पड़ा।

६ मार्च मन् १८१६ ई० का नेपाल सरकार न मिगोमी क प्रस्तावित मन्त्रिपर पर इत्याशर किया और उसे अंग्रेजी सरकार न भी स्वाइति दे दी। इसके अनुसार मची नदी के पूर्व का पहाड़ी भूमि तथा मचा नदी और तिप्पा क साथ की तराई का भूभाग मिक्चिम को द दिया गया। ११ दिसम्बर, मन् १८१६ ई० का अंग्रेजी सरकार न राप्ती और बाप्ती नदियों क बीच की भूमि के बड़क दो लाख दान प्रविष्ट मनाया मनाशायकों को पगन क रूप में देन के लिए बाध किया और बाका नदी क दक्षिम की तराई की भूमि बरध में लिख गई।

मिगोमी की मधि के उपरबन्ध मिन्त्र साइनर नेपाल म रेखाइन् निपुण किया गये। इस समय जनरल भीमसेन बापा का नेपाल पर पुन नियन्त्रण का और यह

नियंत्रण मन् १८३२ ई तक रहा। मन् १८३४ ई म भीमसेन बापा राजबूत बनाकर कसकत भेजे गये। सन् १९३६ में उनके स्थान पर माधवर सिंह राजबूत नियुक्त हुए और भीमसेन बापा नेपाल लौट आये।

सन् १८३३ ई म नेपाल और भारत के बीच एक अपराध सम्बन्धी तथा घुमरी व्यापार सम्बन्धी मन्त्रि बयानों ने प्रस्तावित की परन्तु नेपाल सरकार ने उन्हें अस्वीकार कर दिया। सन् १८३६ ई में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने नेपाल सरकार से अंग्रेजी मास के ऊपर न्याय कम कर देने के लिए प्रार्थना की परन्तु नेपाल सरकार ने उस पर भी ध्यान नहीं दिया। बाबुजी तथा हथारो को पकड़ने के लिए दोनों सरकारों के बीच बतबारी सन् १८३७ ई म एक समझौते पर हस्ताक्षर हुए जिसमें एक दूसरे की सहायता करने का बयान दिया गया।

२४ जुलाई, १८३७ ई में महाराजा के कनिष्ठ पुत्र का स्वर्णवास हो गया और भीमसेन बापा पर सिन्धु का बिप देव का अपराध मंड किया गया। इसी रात में महाराजा न भीमसेन तथा उनके सतीश माधवर सिंह को बन्दी बना लिया किन्तु कुछ दिन बाद वे दोनों मुक्त कर दिये गये। मुक्त होने पर भीमसेन बापा ने सार्वजनिक तथा शासन सम्बन्धी कार्यों में बिधाम ले लिया किन्तु माधवर सिंह न काहीर की राह ली और वह काहीर बरबार में काम करने आगे। महाराजा को इसमें संतोष नहीं हुआ और जबकाश प्राप्त हुए भीमसेन बापा को सन् १८३९ ई० में पुन बन्दी बनाकर मामा प्रकार की अमानुषिक यातनाय दी जाने लगी। भीमसेन बापा को एक छोटी-सी संघेरी काल-कोठरी म बन्ध करके उनके पास एक नयी लुकरी आत्महत्या करने के लिए छोड़ दी गई। कहा जाता है कि यह कार्यवाही ब्रिटिश कूटनीति के संकेत से गन्धर्वीत नामकों द्वारा कार्यान्वित कराई गई। भीमसेन बापा को अर्मपरायणा सती माधवी पतिव्रता पत्नी को मम करके काठमाण्डू की सड़कों तथा गलियों में बहर्षणी घुमाये जाने का शूरा प्रचार किया गया। इस घटना का समाचार सुनकर नेपाल-औरख स्वदेश-मन्त्र भीमसेन बापा का हृदय बिहर्ष हो गया। भीमसेन बापा ने अपने प्रयत्नों से नेपाल को एक समुन्नत गौरवान्वित राष्ट्र बनात तथा साम्राज्यवादी अंग्रेजों को न केवल भारत से अविशु एशिया के मण्डप्य महादीप में उन्माद फैलने का बीड़ा उठाना था जिसके पम्पस्वरूप ही उनकी यह अपमान महता पडा। अपन को अवहाय पाकर अपने पाम पडी हुई मगी लुकरी म उन्होंने अपनी गर्त पर बार कर मिया और बहु घायल अवस्था में मी दिन तक काल-काली में तड़पने रख। मृत्यु के पश्चात् उन क्षेत्र मेमानी के दाब की समंख्य शक्ति का बान कर गिरी तथा बुल्लो न मुचवाने के लिए राजधानी की सड़क पर फेंक दी गई।

अवस्था ने तपाम न अवता पर अमान के लिए तपाम न मानका द्वारा अध्यात्म अवराध करवाय किन्तु इसकी प्रतिविद्या पन्नीर रूप में हुई और अंग्रेजों का उन्माद फैलने के लिए तपाम म औरण कार्य जान ही रहे।

मध्यम, मन् १८१९ ई० में मिक्सम भूटान तथा बोवा क प्रान्त को लेकर मपाल तथा ब्रिटिश सरकारों में तनावनी हुई किन्तु अंग्रेजों की कड़ी नीति देखकर मपाल सरकार को अपनी नीति बदलनी पड़ी। मन् १८४० ई० में मपालियों ने रामनगर बगीचारी व अनक घासों का मपाल में मिला मिया और मन् १८४२ ई० में मपाल-सरकार ने इस सम्बन्ध में अंग्रेजों की स्वीकृति भी ली।

महात्मा भीमसेन बापा क बखान् जतरल माधवर मिहून राज्य की बागडोर संभाषी। उनके शासन-काल में जंग बहादुर एवं माधवारण मिवाही न सेना में बीरे-बीरे उभरि करके शासन की बागडार अपने हाथों में ली।

## आधुनिक काल

आधुनिक काल का इतिहास महाराजा पृथ्वीनारायण शाह के राज्यारोहण के शुभ महर्त से ही प्रारम्भ होता है। साह्रबंघ के प्रवर्तक महाराजा द्रव्यशाह के पूर्वज पन्ध्रहवीं शताब्दी में चित्तौड़ से नेपाल में छम्बुग जाकर राज्य करने लग गये थे। मन्नाहाधिपति महाराणा ज्योतिराज और गोरखाधिपति महाराजा द्रव्यशाह के बीच बलात्कृत पीड़ियों का अन्तर था। महाराजा द्रव्यशाह राजा यक्षोज्ञ शाह के द्वितीय पुत्र थे। उनकी माता का नाम महारानी बसन्ताबती तथा ज्येष्ठ भ्राता का नाम नरहरि शाह था। राजा नरहरि शाह अपने पिता के उत्तराधिकारी बनकर छम्बुग में राज्य करते थे किन्तु महाराजा द्रव्यशाह अपने पराक्रम से गोरखा राज्य को जीतकर उस पर शासन करने लगे। महाराजा द्रव्यशाह का अम्यदम लेलकर उनके ज्येष्ठ भ्राता राजा नरहरि शाह के मन में ईर्ष्या होने लगी और राजा नरहरि शाह न महाराजा द्रव्यशाह को पछाड़कर गोरखा राज्य को भी छम्बुग में मिला लेने का पक्ष्य ले लिया। इस पक्ष्य का पता जब बिजना महारानी बसन्ताबती को लगा तो उन्हें विशेष आक्रुष्टता हुई और उन्होंने अपने स्तन का दूध बेप नदी में गिराकर छम्बुग तथा गोरखा राज्यों की सीमा निर्धारित कर दी।

महाराजा द्रव्यशाह का जब यह स्पष्ट हो गया कि गोरखा राज्य के आसपास राजाओं में मयंकर फूट गई तो उन्होंने एक-एक करके क्रमशः गिहानचोक, ज्यौरीगढ, बरौरी तथा मुहन्चोक को जीतकर गोरखा राज्य में मिला लिया। इस महान् विजय के कुछ ही दिनों पश्चात् राजमाता बसन्ताबती का स्वयंवास हो गया और ज्येष्ठ भ्राता नरहरि शाह ने ईर्ष्या-वशात् गोरखा राज्य पर आक्रमण करने की तैयारी कर दी। महाराजा द्रव्यशाह आक्रमण के भय में अपने ज्येष्ठ भ्राता से मुठ करना अनुचित समझकर बार-बार बचते रहे। अन्त में राजा नरहरि शाह न गोरखा पर आक्रमण कर दिया किन्तु भीरु गोरखों ने बरौरी तथा मुहन्चोक में छम्बुग बाणों के बाट लट्टे कर दिए। महाराजा द्रव्यशाह ने मन् १५५९ से १५७ ई० अर्थात् प्यारह वर्ष तक गोरखा पर राज्य किया और मन् १५७ ई में अपना श्मशान घाटी परित्याग किया। पराक्रमी राजा द्रव्यशाह ने पश्चात् पुरन्दरगढ न पेंटीम बाणों तक राज्य किया और मन् १६०५ ई में उनकी मृत्यु हो जाने के बाद उनका पुत्र छत्रशाह राज्य-निहास पर बैठे। किन्तु जल्द ही माय में राजा छत्रशाह की भी मृत्यु हो गई। राजा छत्रशाह पुत्रहीन थे। इसलिए उनका भ्राता रामशाह मन् १९ ९ ई में निहास के अधिपति बनाये गये। राजा रामशाह बहुत ही प्रतापी शासक निकले। उन्होंने मन् १९०० में महान् विजय किया। इसी समय से नेपाल का राजा प्रतापि के नाम 'महाराजाधिराज' की उपाधि

से विभूषित किया जान लगा। रामसाह ने हम्बुंग के राजा को भीरकोट के युद्ध में पराजित करके उसे सब प्रकार से असमर्थ कर दिया। इसके बाद राजा रामसाह कई वर्षों तक संग्रामों में उलझे रहे और एक-एक करके उन्होंने केरट, कुकरबाग, रसुवा भाट, जरी मैदी, बरझ, निमारबाग तथा बाविझू इत्यादि इलाकों को जीतकर अपने 'गोरखा राज्य' में सम्मिलित करके महाप्रजापिछम की उपाधि सार्वक कर दी।

### सात विधियाँ

महाप्रजापिछम श्रीरामसाह प्रजा के कुछ-कुछ का बहुत ध्यान रखते थे। उन्होंने अपनी प्रजा के लिए निम्नलिखित विधियाँ बनाकर लागू की—

१ ग्राम-संचायकों द्वारा संचालित पानी नहर, बाग तथा कुला इत्यादि के संग्रह केन्द्रीय न्यायालयों में न भेजे जाकर स्थान के लिए ग्राम-संचायकों ही में भेजे जायें।

२ राज्य की समस्त भूमि का अधिकार राजा ही होगा और उसकी ही आज्ञा से किसी को भूमि दी जा सकेगी। बाह्य जौतरिया राज-परिवार तथा अंगरक्षक इत्यादि किसी को भूमि देने का अधिकारी नहीं माना जायगा तथा क्षेत्र की सीमा सम्बन्धी छोटे छोटे झगड़ों का निश्चय पंचों द्वारा ही हुआ करेगा।

३ मुकदमों के समाप्त्य का निर्णय जानने के लिए बादी तथा प्रतिवादी को वासिग्राम की मूर्ति स्पर्श करके अपना बयान देना होगा और पंच अथवा न्यायालय जिस स्त्री को कुटनी सिद्ध कर देगा उसे नाब से बाहर निकाल दिया जायगा और यदि कोई व्यक्ति उस स्त्री का पक्ष ग्रहण करके न्याय में बाधा डालेगा तो उसे पाँच वर्षों का दण्ड देना होगा और जो व्यक्ति मुकदमा जीतने के लिए हाकिम का अपन पक्ष में करने की कुबेला करेगा उस देश से निकाल दिया जायगा।

४ बाँस का डोंपा काठ की डोकरी तथा बँत की डलिया द्वारा पादबोलत का प्रचलन उठाकर उनके स्थान पर ताँबे का माना (भादा घेर) पापी (चार घेर) मुरी (दो मज) पानी (तीन घेर) इत्यादि का प्रचलित पैमाना माना जायगा।

५ जलकृषि को दस वर्ष के बाद अधिक से अधिक भूमिगत का दुग्गा (मूसल तथा प्याज सहित) महाजन को देना होगा और यदि किसी ने बनाइ जल में सिपा हो तो उस दस वर्ष के बाद विधुता देना पड़ेगा।

६ बग घोबर तथा मार्ग पर आरोपित दूध की जा शनि पशुचार्यमा उसे पाँच वर्षों का दण्ड देना पड़ेगा।

७ इत्या करन के समिबोग में जौतरिया तथा समोत्र भाद्यों को दण्ड-निकाला होगा बाह्य सम्पायी बछी तथा भानो का फिर मुद्राकर देन में निर्बोधित किया जायगा किन्तु प्रबाव मंत्री से लेकर अन्य सरकारी कर्मचारियों को तथा अन्य जातिवालों का मृत्यु-दण्ड दिया जायगा।

इन विधियों के लागू होते ही सरकारी पदाधिकारियों में अनुशासन जाग्रा और वे पय फक-फक कर चल सगे। इसका प्रभाव शासन-विभाग पर बहुत सुन्दर पड़ा और नेपाल सरकार का शासक-बग बहुत ही सबेष्ट तथा श्यायप्रिय हो गया।

इन सारों विधियों के अतिरिक्त महाराजाधिराज रामसाह ने कुछ अन्य छोटे-मोटे नियम भी लागू किये और जनता के परम हितों तथा बिश्वासपात्र बनकर सन् १९३० ई० तक शासन किया।

रामसाह की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र डम्बर साह सिंहासन पर बैठे। महाराजाधिराज डम्बरसाह न तो बर्ष तक सुचारु रूप से राज्य किया।

सन् १९४२ ई० में डम्बर साह के पुत्र कृष्ण साह राज्याधिकारी हुए और वह दस बर्ष तक शान्तिपूर्वक राज्य करते रहे। इसके पश्चात् सन् १९५२-५३ ई० में चन्द्रशेखर साह नेपाल के महाराजाधिराज हुए। उन्होंने कई बर्षों तक शासन की बामझोर संभाली। चन्द्रशेखर साह के पुत्र पृथ्वीपति साह सन् १९६९ ई० में सिंहासनासीन हुए और वह बीतासीस बर्षों अर्थात् सन् १९९९ ई० तक राज्य करते रहे।

### संक्रान्ति-काल

महाराजाधिराज पृथ्वीपति साह के बाद का काल संक्रान्ति-काल कहा जा सकता है क्योंकि युवराज बीरमल साह गद्दी पर बैठने ही न पाये थे कि वह अपनी गर्भवती स्त्री को छोड़कर स्वर्ग सिधारे। जिस समय बीरमल साह की मृत्यु हुई उस समय उनकी गर्भवती स्त्री अपन मायके तन्हीं में थी। पृथ्वीपति साह के पुत्र कुमार दमसाह एक आँस में नाल होने के नाते राज्याधिकारी होने के योग्य नहीं रह गये व बूझते पुत्र उद्योत साह काल-क्रम से गद्दी के अधिकारी नहीं होने थे। महाराजाधिराज पृथ्वीपति साह अपन उत्तराधिकारी के लिए चिन्ताग्रस्त ही थे कि उनके कनिष्ठ पुत्र चन्द्रशेखर ने वह शुभ समाचार सुनाया कि बिजबा युवराज की अपन मायके तन्हीं में पुत्र रत्न पैदा हुआ है। इस समाचार को सुनते ही पृथ्वीपति साह आनन्द-विभोर हो गये और उन्होंने अपन छोटे कुमार चन्द्रशेखर साह को तन्हीं भेजकर शिशु को सुरक्षित गौरवा माने के लिए आदेश दिया। उपर तन्हीं के राजा गिना नरभूषण साह की ओट में गौरवा को अपन राज्य में मिला लेना चाहते थे। कुमार चन्द्रशेखर साह को जब यह प्रतीत हो गया कि बिजबा युवराज के भाग्यही पिता गिना नरभूषण साह को पृथ्वीपति के पास गौरवा जान मही देने ता उन्होंने तन्हीं-दरबार की भाष को कुछ प्रबोधन देकर अपने परा में मिला लिया और बुझते गे गन्दे कपड़ों में छिपाकर लपट हुए बालक नरभूषण साह को गौरवा भेजवा दिया। महाराजाधिराज पृथ्वीपति साह के पश्चात् यही बालक नरभूषण साह सन् १९९९ ई० में गौरवा राज्य का अधिपति हुआ।

नरभूषण साह न गद्दी पर बैठने ही बागमारी पाटन तथा भक्तपुर के मत्स्यवंशीय

राज्यों को आपस में लड़ते हुए देखा तो उन्होंने इन तीनों को अपने राज्य में मिला लेने के लिए युद्ध की तैयारी की। सन् १७३६ ई० में नरभूपाल शाह मनुषाकोट के मार्ग से मस्करांशीय राजा जगज्जय मस्तक पर आक्रमण किया किन्तु जगज्जय मस्तक ने यह आक्रमण बिकल कर दिया। इसके पश्चात् नरभूपाल शाह का मस्तक राजाओं पर आक्रमण करने का साहस नहीं हुआ। सन् १७४२ ई० में नरभूपाल शाह की मृत्यु हो गई।

### वरदान

महाराजा नरभूपाल शाह की दो महारानीयों थीं। छाग्री महारानी वीरलया देवी के गर्भ से सातवें महीने में ही एक पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ। महारानी को गर्भ-काम में एक दिन स्वप्न में सूर्यनारायण का साक्षात्कार हुआ इसलिए वेदकाक के सूर्यनारायण का पुष्पी पर अवतरित जाकर पुत्र का नाम पुष्पीनारायण शाह रखा गया। उनके मूरप्रताप दसमईन महारथ वृत्ति दसपन तथा छत्र नाम के अनेक नाईयें। पुष्पीनारायण शाह की अवस्था जब छ वर्ष की ही थी तभी एक दिन गोरखा के कुसगुरु गोरखनाथ ने अपनी गुफा में प्रकट होकर अपने मुँह में बही निकालकर बाळक पुष्पीनारायण शाह को प्रमाण में दिया किन्तु बाळक ने जुठन समझकर वही को नीच गिरा दिया। बाळक की इस मूर्खता को देखकर गुरु गोरखनाथ ने कहा कि यदि तू इस बही को खा सता तो तूमें बाळ-सिद्धि हो जायगी और तूरी मनायाय बाणी को भुलते ही सब राज अपना राज्य तेरे राज्य में मिला देत अच्छा अब ता ऐसा हान का नहीं किन्तु प्रसाद का दही तने पैरो में भग गया है इसलिये तू जिस किसी भी राज्य में पैर रख देगा वह तने अधिकार में जा जायगा। इसका आशीर्वाद देकर गुरु गोरखनाथ अन्तर्धान हो गए।

पुष्पीनारायण शाह का विवाह मकवानपुर राजा के हमदण्ड मन की पुत्री स्वर्णमाया देवी के साथ हुआ किन्तु अपने स्वयंवर में उनकी न पड़ी और मकवानपुर तथा गोरखा में बराबर युद्धावली चली।

सन् १७४२ ई० में पुष्पीनारायण शाह तरङ्ग बर्ग की अवस्था में राजगद्दी पर बैठ और उन्होंने अनेक प्रयास में ही तथा मैत्रापति कालू पाण्डेय की सम्मति लेकर गोरखा राज्य की सीमा बढानी प्रारम्भ की। भादगांव पाटन तथा काठमाण्डू के नबार राज्यों का आपस में लूट लड़त हुए अनेक पुष्पीनारायण शाह ने भादगांव के राजा रत्नवीर मन्थ का धकेल पाकर काठमाण्डू के समीपवर्ती बुबाबाट पर आक्रमण किया किन्तु जयप्रकाश ने गोरखों की मना का पीछ हटा दिया। इस पराजय में पुष्पीनारायण शाह की आँखें लाल हो और वह लम्बे-लम्बे क पहाड़ी राजाओं को एक मूख में बाँधकर अस्त्र-यन्त्रों का संग्रह करने लगे और उनसे का दण्ड का मापन का आता चल हो गया। सन् १७४४ में पुष्पीनारायण शाह ने बुबाकोट मार्ग पर पुनः आक्रमण करके जयप्रकाश का बहा में मारा दिया और जय प्रकाश की स्त्री अनेक नरहें मिसु का राजसिंहासन पर बैठाकर राज्य-कार्य संभालने लगी।



इसी बीच में जयप्रकाश को मुख्यध्वज में धरण मिल गई और मन् १७५ ई में उसने एक मित्र महारमा द्वारा एक सङ्ग तथा बरबान प्राप्त करके पुनः अपना राज्य प्राप्त किया।



पृथ्वीनारायण माहू

विष्णु विजय पृथ्वीनारायण माहू की हृत् श्री राजाद्वारमी बरमी बाहा बेंतरामी मुनकीमी तथा बावला पर बावला-जरेला का अधिपति है। बावला-जरेला राजा की महापति

मकरसम्पुग बाबा न गोरखा राज्य पर महमा आक्रमण किया और सिन्धुमन्थोक के मैदान में बाबा मनाभी न समायान युद्ध हुआ किन्तु इस संग्राम में भी गोरखा की विजय हुई। अथप्रकाश मन्त्र का मतानी था। वह मायकर भी हतात्माहित नहीं हुआ और उसने सरदार पकिनबन्धन की भारतीय मना की महायना में गोरखा राज्य पर फिर आक्रमण किया। इस आक्रमण में कास पाण्डव का भीत के बाग उतार दिया। किन्तु मन् १७६१ ई० तक पुष्पीनारायण शाह न गोरख सैनिकों की महायना में सिवपुरी पन्ना-बाक कबिलापुर, काभकोट तथा चोरुट पर अपना अधिकार जमा लिया। पुष्पीनारायण शाह न मन्वान पुर व राजा शिवशन्त मन् का बन्दी बनाया किन्तु उनका अवश्य कृतकर्मिह पक्क न नहीं आ सका और उन्होंने बगावत नवाब की शरण ली। यह समय बगावत नवाब मीर कामिब के लिए बहुत ही संकट का था। उसके राज्य की अथप्रकाश सेन की ताक में बैठ न। इसलिए उसने मन् १७६३ ई० में अपना मनापति क माय माठ हजार सैनिक मन्कर मन्वानपुर पर बाबा बाम बन् के लिए आजा हो। गोरखा सेना भी बाबा बमराज पाण्डव सरदार बहुरि मिह ताहुर मिह तथा रामकृष्ण के अधिनयकत्व में तापमापर तथा पुरान मन्वानपुर की ओर में बढ़ी। मुम्क मना को पहाड़ी प्राणों में लड़न का कुछ भी अनुभव नहीं था इसलिए उसके पैर जम्बी ही उलड़ गये और मुम्क सेना माय लड़ी हुई। इस विजय में गोरखा का हुजारा बन्दूक तथा अन्य अस्त्र हाथ लगे। इसी बीच सम्पुग बाबा न भी गोरखा राज्य पर आक्रमण किया किन्तु सूरप्रताप शाह तथा कीर्ति महाराज न आक्रमणकारिया की बढ़ी बुढ़ी तय्य पराजित किया।

मन् १७६८ ई० में पुष्पीनारायण शाह न कीर्तिपुर पर पराजित। दोनों तरफ की मनाई क्यों तक मन् डाक पड़ी रही। कीर्तिपुर क बहादुर सैनिक कुर्ग क अन्दर में ही जुलते रहे किन्तु अन्त में विजय हाकर कीर्तिपुर बाबा का आत्म-अमर्षण करना पड़ा। इस युद्ध में पुष्पीनारायण शाह व छात्र भाई सुवप्रताप की मौत हो गई। कहा जाता है कि भाई की मौत पूरा जान न पुष्पीनारायण शाह बहुत जल-भुन लगे और दुर्ग का पतन होन ही उन्होंने अन्त सैनिकों का कीर्तिपुर क नष्ट मिगुमा की छाड़कर सब पुण्या व ताक-कान काट मन् का हृत्त किया। महाराजाधिराज की आजा पाते ही सैनिक निरुक्त पड़े और कुछ ही दिनों के अन्दर उन्होंने बगी हुई ताका तथा जानों क डर मना लिया। कतिपय इतिहासकार इस घटना का विवरण भी माय मानते हैं।

### एकाधिपत्य

२० दिसम्बर मन् १७६८ ई० का अथप्रकाश न अन्त मन् सैनिकों की दं-यात्रा-अन्त के उल्ला में अनुमान बाबा दरबार में बुला लिया और उस प्रकार का-माधू मगर मानी हा गया। यह समय पुष्पीनारायण शाह न बिना रक्तान क ही उस पर विजय प्राप्त कर ली और अथप्रकाश तथा कल्पिततन के राजा मैत्र नरसिंह न मायगांव में शरण ली।

इस प्रकार कुछ ही दिनों के भीतर पृथ्वीनारायण शाह ने काठमाण्डू तथा पाल्पा पर आधिपत्य जमा दिया और सन् १७७१ ई. में भादपा के राजा रत्नवीर मल्ल के राज्य के लोभी मातो बारज पुर्षों को अपनी ओर मिलाकर भादगाव पर चढ़ाई की और मातों पुर्षों ने भादगाव शास्त्रालय आदि पृथ्वीनारायण को दे दिये। इस समाधान लड़ाई में जयप्रकाश बुढ़ी तरह बाधित हुए किन्तु अपने अन्तिम काल में भी जयप्रकाश ने आत्मसम्मान को नहीं रखा। विजेता पृथ्वीनारायण शाह के बार-बार पुछने पर उस संधान-सुर न भयवान् पशुपतिनाथ की रजतपाश में जस चढ़ाया तथा एक जोड़ी लडाऊँ, जमर तथा छाते की सामिन्नाय प्रार्थना की। अपनी अन्तिम अभिलाषा की पूर्ति कर भग्न के पश्चात् उसने बायमनी में अपने होना पीर डाले हुए एक पवित्र धिया पर अपनी अन्तिम बसास तोड़ी। पृथ्वी नारायण अपने को केन्द्र मान्ते थे। उन्होंने युरोपियन मिशनरियों को नेपाल में निकलवा दिया और तिब्बत सरकार को भी इसी प्रकार की नीति चरण करने के लिए उत्प्रेरित किया। उन्होंने भादगाव पाल्पा तथा काठमाण्डू पर विजय प्राप्त करके अपनी राजधानी मार्ला में हटाकर काठमाण्डू बनाई और बमन्तपुर दरबार तथा रजमति नदी पर एक पुष्प बनवाया और राजधानी में एक धर्ममाला भी बनवाई। महाराजा धिराज पृथ्वीनारायण शाह ने मोरला राज्य की सीमा कास्की कृष्णामण्डकी मध्यमण्डकी त्रिभुवन औरबाँगे यल्लोचौर पय्पु बुबाफाँट अर्थात् मारी तथा पूर्व में निश्चिन्म राज्य तक बढ़ाकर सन् १७७४ ई. में गण्डकी नदी के तट पर मोहन तीर्थ में एक तिहु मे मुद्र करत हुए कीर्त्यति प्राप्त की। अपने पति के साथ परम साध्वी महारानी भी मरी हो गई।

सन् १७७४ ई० में पृथ्वीनारायण शाह के गण्ड पुत्र मिहप्रताप शाह सिद्धामन पर बैठ और अपने आगल माला-पिता की स्मृति में उन्होंने अपनी माला के मनी स्थान पर त्रिपुरेश्वर महादेव की स्थापना करके एक धर्मशाला भी बनवाई। महाराजा पृथ्वीनारायण शाह के मनुष्य ही राजा मिहप्रताप शाह ने प्रतापो तथा पराक्रमो थे। महाराजा मिहप्रताप शाह ने मोरङ्ग नगर को पछास्त करके अपने राज्य की सीमा सिक्किम तक बिस्तृत कर ला। राजा मिहप्रताप शाह की यह मठवत्ता साधारणतया नहीं मिली। उन्हें मोरङ्ग मरेय में मण्ड बाग मठ बनवा पड़ा और अगल में बहु अगारुही बार पूर्ववर्ण मठक हुए। यह निश्चिन्म की भी विजय करता चाहते थे किन्तु उनकी यह अभिलाषा पूरी नहीं हो पाई और सन् १७७५ ई. में उनकी मृत्यु हो गई।

उनके बाद उनके पुत्र रत्नबहादुर शाह बाप्पराज में राजसिद्धामन के अधिपती बने। उनके अन्त्ययन्त्र काम में उनके भाजा बहादुर शाह मरदाक रहे किन्तु गणबहादुर की विधवा राजमाता राजेश्वरदेवी देवी ने ही राज्यसर्व संचालना। इस वर्षों तक यही प्रबन्ध चलता रहा। राजमाता राजेश्वरदेवी देवी की बहादुर शाह पर राज्य हड़पने की आशया हुई इसलिए उन्होंने बहादुर शाह को बलिदा भगा दिया। सन् १७८५ ई. में राजमाता की मृत्यु हो गई। इनके बाद रत्नबहादुर शाह ने सामान्य पाण्डव की मर्यादा बनाया और

बहादुर शाह फिर वापस आ गये। बहादुर शाह ने पाप्सा के नरेश को प्रलोभन देकर बाइसे बीबिसे राज्य पर आक्रमण करके तत्पुत्र समेत सबको विजय किया। उसी वर्ष गोरखों ने तन्ही राज्य पर भी धावा बाल किया और कामारिदत्त सेन को मारकर तन्ही राज्य के साथ किरात प्रदेश तथा सोमेश्वर तक अपना विजय-केतु फहरा दिया। रणबहादुर शाह को प्रबल अभिलाषा मित्रिम पर विजय प्राप्त करके अपने स्वर्गीय पिता की अन्तिम इच्छा पूरी करने की थी। सन् १७८८ ई० में बहादुर शाह ने मठारह हजार सेना लेकर मित्रिम पर हमला किया और बाइसे ही युद्ध के पश्चात् इतिहास-विषय का भूभाग जीत लिया। इस पराजय से चिन्तित होकर मित्रिम-नरेश ने तिब्बत तथा चीन में महापता मांगी किन्तु उसे सफलता नहीं मिली और अन्त में विवश होकर मित्रिम नरेश को गोरखा सरकार से सपि करनी पड़ी। सपि के पश्चात् गोरखों ने मित्रिम-निवासियों को सूटा और जब तिब्बत सरकार ने गोरखा सरकार से उसे बन्द करवाने की प्रार्थना की तो विजयोन्मत्त गोरखा सरकार ने उस पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। फलतः तिब्बतवासियों ने तिब्बत में बसे हुए नेपालियों को तग करना प्रारम्भ किया। इस समाचार को सुनते ही गोरखा सरकार ने तिब्बत पर हमला कर देने की घोषणा की और सरदार बमनाह के अधिनायकत्व में गोरखों की सेना बढ़ चली। दोनों राज्यों की सीमा पर सामा-य लड़ाई हुई और अन्त में गोरखों की विजय हुई। इसके पश्चात् तिब्बती सेना में कुछ लड़ा तथा दिगर्षा में घरेलू ली किन्तु नेपाली सेना ने वहाँ भी उन्हें परास्त किया। सरदार बमनाह का तिब्बत प्रदेश मारा नहीं इसलिये उन्होंने नेपाल सरकार को तिब्बत-सरकार से सपि कर केन को सम्मति दी। इसकी चर्चा सुनते ही तिब्बत सरकार ने सपि-अस्ताव पर महर्ष हस्ताक्षर कर दिये।

### चीनी आक्रमण

सन् १७९१ ई० में चीन सरकार ने जनरल फु-कंग-उंग के अधिनायकत्व में मठार हजार चीनी सैनिकों को भजवर नेपाल पर आक्रमण किया। जनरल कामादर पाण्डेय ने गोरखा की सेना लेकर प्रतिरोध किया किन्तु चीनी सैनिकों की अग्रगण्य सेवा देखाकर कूनीति में काम केना चाहा और उन्हीने जनरल फु-कंग-उंग के पास सपि के लिए अपने चार जवियों की सेवा और गाव ही अपनी मना का पुन हमला करने के लिए आज्ञा दी। चीनी सैनिक पानी के अभाव में पल्टे ही अत्यन्त विवश हो उठे थे। बेचाबड़ी नदी के तट पर बसमान युद्ध हुआ। इस युद्ध में चीनी जनरल फु-कंग-उंग बहुत ही अघोरता तथा और उन्मत्त मन बनाकर चीनी सेना को ही तमस्त करने लगा। इस प्रकार चीनी सैनिकों के पर उतड़ गया। इस युद्ध में हजारों चीनी सैनिक मारे गये। इस युद्ध में तमयग हा हजार गोरखों सैनिक भी मारे के मर गये। अन्त में विजय हाकर चीन सरकार ने सपि कर री और नेपाल-सरकार हर पाँचवें वर्ष उपहारों के साथ एक तिब्बत-राज के सम्राट् के पास भेजने के लिए प्रस्तुत हो गई।

नपास तथा चीन की इस सन्धि से प्रभावित होकर १ मार्च सन् १७९० ई. को भारतीय ब्रिटिश बचनर-जनरल लाड कार्नवालिस ने नपास सरकार में व्यवसायिक संधि का प्रस्ताव किया और कप्तान कर्कपट्टिक नपास में राजदूत नियुक्त किये गये। किन्तु कप्तान कर्कपट्टिक को काठमाण्डू में बलकर नेपाल सरकार का समस्त अधिकारीवर्ग जल भुन गया और मार्च सन् १७९३ ई. में मेजर कर्कपट्टिक को काठमाण्डू से हटाया पड़ा।

सन् १७९५ ई. में रणबहादुर शाह ने अपने का बयस्क घोषित करके राष्ट्रमूर्ख अपने हाथों में ले लिया और अपने बुढ़ाकासी चाचा बहादुर शाह का मन्त्री बना दिया। उन्होंने तामाहर पाण्डेय का अपना प्रधान मंत्री बनाया।

### जमशक्ति का प्रयोग

रणबहादुर शाह ने एक महिला झाड़ान-कन्या पर आसक्त होकर उससे उत्पन्न पुत्र को राष्ट्राधिकारी बनाने की बात स्वीकार कर उससे विवाह किया और उस महारानी की उपाधि से विभूषित किया। इस कार्य से समस्त प्रजा उनके चिक्छ हावई। कुछ दिनों के पश्चात् मैथिल महारानी के गर्भ से एक पुत्र उत्पन्न हुआ किन्तु राजवंश में रक्त-विषुद्धता की रक्षा के लिए बमलपुर के एक चौरिया के तीन दिन के भिक्षु का साकर महारानी की जगह में मुलाकर वस्त्रा बंधन दिया गया। यह भिक्षु जाग चलकर गीर्वाण मुंड शाह के नाम से प्रसिद्ध हुआ। दो वर्ष बाद मैथिल महारानी को बेचक निकसी और रानी ने चिकन हाकर आत्महत्या कर ली। अपनी प्रिय रानी की मृत्यु में रणबहादुर शाह पागल हो गये और उन्होंने अपनी बड़ी महारानी के पुत्र रणोद्धार शाह तथा अन्य मंगोत्रियों की हत्या कर दी। पासक राजा रणबहादुर शाह के इस क्रूर्य में बुलित हाकर सन् १८०५ ई. में प्रजा में रण बहादुर शाह को राज्य-व्युत्पन्न करके भिक्षु गीर्वाण मुंड शाह को अपना राजा मान लिया।

नेपाल के इतिहास में यह सर्वप्रथम घटना हुई जब मंगलित जनशक्ति ने एक महा राजाधिराज का पदस्थान करके उसके स्थान पर दूसरा उत्तराधिकारी चुना।

महाराजा रणबहादुर शाह की समपत्नी बिपुर मुखरी अपने पति के साथ काशी चली गई। रणबहादुर शाह ने अपना नाम बदलकर त्रिगुणानन्द रत्न लिया। बापों जाकर स्वामी निर्गवानन्द एवं मुन्त्री के प्रमोदाम में छिद्र छेद गये और ईश्वर इन्द्रिया सम्पत्ती की माट-बाट में नेपाल जाकर बहा के राजा बनन के स्वप्न छिद्र में देखन लग। सन् १८४४ ई. में लाई बम्बई की वा प्रस्ताहन प्राप्त कर रणबहादुर शाह नेपाल वापन आ गये और उन्होंने भिक्षु गीर्वाण मुंड का मुबारक भवन में सीमन बागा का प्रधान मंत्री बना लिया और स्वयं राज्य करने लगे। उन्होंने अपने इन मये शासन-काल में पदवान् कुमायु बागदा तथा पाण्या इत्यादि की अपने राज्य में मिलाकर राज्य की सीमा विस्तृत कर ली। उन्होंने नेपाल में स्वर्ण-महा भी प्रथम बार चलाई।

## गोर्खा युद्ध बिक्रम शाह

सन् १८ ० ई० में गोर्खा युद्ध बिक्रम शाह नहीं पर बैठा। और अपनी प्राचीन कार्य परम्परा का और बान्धन करने के लिए 'बोर बिक्रम' की उपाधि अपने नाम के साथ जोड़ ली। उन्होंने नेपाल के प्रधान मंत्री के लिए दो तीन तथा स्वामाजीसा के लिए काजी इत्यादि की उपाधियाँ अपने-अपने नाम के साथ जोड़ने की प्रथा चलाई। गोर्खा युद्ध और बिक्रम शाह ने अपने विशिष्ट मंत्री भीमसेन थापा की सहायता में विष्णुबहाल तथा अमरकुल गोरखा राज्य की सुसज्जित तथा समुन्नत बनाने के लिए सर्वप्रथम एक 'मैजिक सिबि' की स्थापना की। यो ता मोरला साम्राज्य के महाराजाधिराज गोर्खा युद्ध बिक्रम शाह ही ने विष्णु राज्य का साथ सामन्त-कार्य उनके मंत्री भीमसेन थापा द्वारा ही सम्पादित होता था।

मंत्री भीमसेन थापा महाराष्ट्र के माना फरनबीस तथा पंजाब के राजा एमजीतसिंह की माँति मुलज विचारों के शासक थे। उन्होंने मैजिक को बिनाप रूप में पान्थाहित करने के लिए परनुषक होते अबाहुराज

सान तथा जारी के कई प्रचार के बाद ठीक बैठवाए और नेपाल के प्रधान मंत्री के लिए तीन बान्धुजन पगड़ी निर्धारित कर ली। कन्वीय सामन्त को विदेशित करके समस्त राज्य को कई प्रदेशों तथा जिलों में विभाजित किया और प्रत्येक जगह का सामन्त मुबारक रूप में अज्ञान के लिए योग्य कमचारियाँ की निवृत्त किया। इन प्रचार में ग्याम सीधनापुबक हान तथा और राज्य का साथ भी बढ़ गई। उन्नत राज्य में मन्त्रों बनवाकर इन प्रान्तों तथा वस्तीय देशों का भी साथ करवाया और उन्हें अनुप्यों के रहने योग्य बनवाया। अंग्रेज की लड़ाईयों का बचन के लिए उन्होंने तराई में अण्ड-अण्ड छाव नियाँ भी बनवा दी।



गोर्खा युद्ध बिक्रम शाह

महाराजाधिराज गोर्खा युद्ध और बिक्रम शाह तथा भीमसेन थापा की प्रथम अग्नि काया अग्नि राज्य का एक भाग्य तथा बलिय राज्य बनाने की की विष्णु संघाम के बादल चारों ओर गड़गड़ाने लगे। मंत्री भीमसेन थापा नेपाल के शासक थे। वह एशिया में

अंग्रेजों की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर चिंतित हुए। इसलिये उन्होंने महाराष्ट्र ईश्वराबाद मैसूर पञ्जाब अरब बर्मा तथा मूटान आदि ब्रिटिश साम्राज्य विरोधी राजाओं को एक मूक में बांधकर अंग्रेजों को मार भयान के लिए पञ्चमज लड़ा करने का बीड़ा उठाया। उन्होंने सन् १८१३ ई. में चीन के सम्राट् से भी वार्तालाप करके अंग्रेजों के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा बनाने का प्रयत्न किया।

ऐतिहासिक दृष्टि से गीर्वाण युद्ध बीर बिक्रम शाह का शासन-काल बड़ा महत्वपूर्ण माना जाता है। उनके शासन-काल में नेपालियों और अंग्रेजों में बार-बार समाप्तमान युद्ध होते रहे। भारतीय गोरखा और मुगल नवाबों को परास्त कर देने के बाद अंग्रेजों को अपनी भारतीय सीमा की रक्षा करने की विषय चिन्ता हुई किन्तु अंग्रेजों को यह भली भाँति विदित था कि गीर्वाण युद्ध बीर बिक्रम शाह के मर्जी भीमसेन बापा बीछे-बी अंग्रेजों को नेपाल में पैर मही रखने देंगे।

### अंग्रेजों से मुठभट्ठा

सन् १८१४ ई० में नेपाली सेना में ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा साधित तराई के कुछ तलवा शिवराज परगना पर आक्रमण करके उन पर अधिकार जमा लिया। कुछ तलवा शिवराज के परगना पहले पाण्डा राज्य के अंग थे किन्तु सन् १८०२ ई. में ब्रह्म के नवाब ने उन्हें ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिया था। अंग्रेजों ने मोरवा की सना पारसपुर की ओर बढ़ी हुई दैनिक मोरवा सरकार को पंचायत द्वारा भगड़ा निपटा देने के लिए आमन्त्रित किया। तदनुसार अंग्रेजों की ओर से मेजर ब्रेडगा तथा नेपाल की ओर से मुख्या कुलानंद नियुक्त किए गए। दोनों ओर से समझौते की वार्ता प्रारम्भ हुई अंग्रेजों का हिंस्र जमा-जमा था इसलिये अंग्रेज पंच मजूर ब्रेडगा ने मुख्या कुलानंद को कुछ खरी गोपी मुनाई। फलतः समझौता-वार्ता भंग हो गई और पञ्चमी दिव की अवधि के पश्चात् सम्य अग्रस सन् १८१४ ई० में अंग्रेजों की तीन बटालियन मना ने आकर कुछ तलवा शिवराज के परगनों पर अपना आधिपत्य जमा लिया किन्तु अंग्रेजी सना जब वहाँ से फिर वापस लौट गई तब नेपाली सना ने \* मई सन् १८१४ ई० को उस तलवा पर पुनः अपना अधिकार कर लिया।

महोदय का जब यह विश्वास हो गया कि नेपाली बिना अंग्रेजी सना से लोहा लिए घाल नहीं होंगे तो उन्होंने अरब के नवाब को पकड़कर उनसे ढाई करोड़ रुपये वसूल किये और १ नवम्बर, सन् १८१४ ई० को नेपाल के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। अंग्रेजी सना के तीन हजार सैनिक न मैथिली तार इ. आदि लेकर पांच मार्गों से नेपाल पर आक्रमण किया और छ. मी भीम का उजाड़ शत्रु युद्ध-स्थल में परिणत हो गया। इन प्रकार अंग्रेज एक ओर तो नेपालियों से संधि करने का दावा कर रहे थे और दूसरी ओर उनका जनरल ब्रिगेडर्ली आपत्तिक स्थिति में गुप्तचित्र करती अंग्रेजी सना मेजर बेहरादून पर हमला करने

की तैयारी कर रहा था। मेपाभी सैनिक सरण तथा स्वच्छ हृदय के थे। बहु अद्वयों की मुद्र कण्ठोति में परिचित नहीं थे। नपाभी मना का जब अनरस जिलम्पी की लहर मिलीं तो उसने कण्ठान् बसमद्र मिह के अविनायकत्व में 'नालापानी' के पास कम्पूना नामक एक गड़ बनाकर देहरादून की रक्षा करनी चाही। उस समय कम्पूना गड़ में केवल पाच सौ के लगभग सैनिक थे। अंग्रेजी सेना कर्नेल कारपेण्टर, कण्ठान फोल्स कण्ठान कैम्पबल तथा मेजर कैनि के संचालन में कम्पूना गड़ की चारों ओर स तीन दिन तक घेरे रखी। इन चारों के अनिरिक्त पाचवीं बटालियन मेजर लडलो के साथ आपत्ति-काल के लिए सुरक्षित बैठी थी। चौथे दिन अंग्रेजों की सवार मना न कम्पूना गड़ पर तथा द्वारा गाम्बाबागी करते हुए भीषण रूप में चढ़ाई की। तब भी गारण सैनिका न अंग्रेजी मना के धक्के झुका दिए। इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का प्रमुख संचालक अनरस जिलम्पी जिनमें सफाईयन के साथी को पराजित किया था मड़ के श्वाटक पर स्वयं मारा गया। अनरस जिलम्पी के स्थान पर मेजर अनरस कार्टिण्ड मेनापति हुआ। उसने आतङ्की लिम्पी से चार हजार सैनिक तथा पर्याप्त मात्रा में तोपें इत्यादि सगबाकर नया पुरा बनाया और कम्पूना गड़ का एक साथ तब घेरे रहा। अंग्रेजों ने अनुभव किया कि पारण सैनिक अंग्रेजी तायो तथा सेना द्वारा किसी भी परिस्थिति में पराजित नहीं किए जा सकते तो उन्होंने कम्पूना गड़ में आतङ्की पानी की नहर खन कर दी। पानी न पान न मेपाभी सैनिक निकल आ उठ लेकिन तब भी स्थान रहकर ब पाच दिन तक अंग्रेजी मना न युद्ध करन रहे और गड़ के मत्त सगल्ल मेपाभी सैनिक आतङ्की कण्ठान बसमद्र मिह के साथ बस हजार अंग्रेजी सैनिका का भीरत हुए जीवनदा निकल गए। कम्पूना गड़ के युद्ध में पाच सौ नपाभी सैनिक बीर गति का प्राप्त हुए तथा अंग्रेजी मना के इकतीस आकियर और आतङ्की सैनिक वसकाट मिचारे। इन घटना का वचन जा०० सी० बिदियम न बहुत ही सामिक धारों में किया है। अंग्रेजों न अपनी विजय के परचाण देहरादून के पास रिप्पा नदी के तट पर अनरस जिलम्पी तथा अकण्ठान युद्ध में मरे कण्ठान बसमद्र मिह की ही समारोह बनावा दी और उनके पास पिनामेन भी लगा दिवे जिनमें दोनों की प्रशंसा है।

कम्पूना गड़ युद्ध में अंग्रेजी की आर्से लुप्त गई और उन लोगों न नपाभी मना न युद्ध करण के पहले 'तोड़-फोड़' की नीति न काम लेना लिप्पय किया। इस समय को प्राप्तकर विष्मत्त मि प्रियत तथा मर हंटा न सी स्वीकार किया है।

कर्नेल कारपेण्टर ने पण्ड जीवनर की प्रजा की लाड़-फोड़कर अपना जीति की परीक्षा की और जब समस्त प्रजा न बिगाड़ करने गारणों का आतङ्की शत्रु से बाहर निकाल दिया तो उसने एक अंग्रेज कर्नेल को भजकर पदच्युत साहन लण्य का आतङ्की पुरा में मिला लिया। इसके पचाण अनरस कार्टिण्ड ने अंग्रेजी सेना की दो भागों में विभाजित करके मेजर लडलो तथा मेजर रिचर्ड्स का मेनापति बनाकर जयपक दुर्ग पर आक्रमण करन के लिए भज दिया।



अंग्रेजों की बगती हुई शक्ति को देखकर चिंतित हुए। इसलिए उन्होंने महाराष्ट्र और रावार मैसूर पञ्जाब अथवा बर्मा तथा मंगन आदि ब्रिटिश साम्राज्य विरोधी राजाओं का एक मूत्र म बांधकर अंग्रेजों को मार भयान के लिए परामर्श सजा करन का बीड़ा उठाया। उन्होंने मन् १८१३ ई. म चीन के सम्राट् से भी बार्तालाप करके अंग्रेजों के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा बनाने का प्रयत्न किया।

ऐतिहासिक दृष्टि से गीर्वाण युद्ध और विजय साहू का सायन-नाम बड़ा महत्वपूर्ण माना जाता है। उनके शासन काल म नेपालियों और अंग्रेजों में बार-बार बमामान युद्ध हुए। भारतीय मनेषों और मुगल नवाबों को परास्त कर सेन के बाग अंग्रेजों को अपनी भारतीय सीमा को रक्षा करन की विशेष चिन्ता हुई किन्तु अंग्रेजों को यह मल्ली भांति बिचिन था कि गीर्वाण युद्ध और विजय साहू ने मंची भीमसेन बापा जीते-जी अंग्रेजों का नेपाल में पैर नहीं रखने देगे।

### अंग्रेजों से मुठभेड़

मन् १८१४ ई. म नेपाली मना न ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा शासित तराई के बुटवल तथा गिबराज परगना पर आक्रमण करके उन पर अधिकार जमा लिया। बुटवल तथा गिबराज के परगना पहले पासा राज्य का अंग था किन्तु मन् १८२२ ई० में अंग्रेजों के नवाब ने उन्हें ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिया था। अंग्रेजों ने बोरलों की सना गोरलपुर की ओर बगती हुई देखकर गारला सरकार को पचापत द्वारा सगड़ा मिपटा सेने के लिए आमन्त्रित किया। तत्पुनान अंग्रेजों की ओर से मेजर बेडया तथा नेपाल की ओर से मुख्या कुमानव नियुक्त किए गये। दोनों ओर से समझौते की बार्ता प्रारम्भ हुई अंग्रेजों का दिव्य जला-मुना था इसलिए अंग्रेज पंच मेजर बेडया न मुख्या कुमानव को कुछ लरी लागी मुनाई। पञ्च समझौता-बार्ता भंग हो गई और पञ्चीस दिन की अवधि के पश्चात् मध्य अंग्रेज मन् १८१४ ई० में अंग्रेजों की तीन बटालियन सना न आकर बुटवल तथा गिबराज के परगनों पर अपना आधिपत्य जमा लिया किन्तु अंग्रेजी सेना जब वहाँ से फिर वापस लौट गई तब नेपाली मना न मई मन् १८१४ ई. को उन क्षेत्र पर पुनः अपना अधिकार कर लिया।

साह होल्स्टेड की जब यह विवरण हा गया कि नेपाली बिना अंग्रेजी सेना म लोहा लिए शान नहीं होंगे ता उन्होंने अंग्रेज न नवाब को पकड़कर उनसे डान करोड़ रुपय वसूल दिये और १ नवम्बर मन् १८१४ ई. को नेपाल के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। अंग्रेजी सेना के तीन हजार सैनिक न मैसूरों तात इत्यादि भन्तर पांच मायों म नेपाल पर आक्रमण किया और छ मी भीम का उपाड़ा धन युद्ध-वस्तु में परिणत हुआ गया। म प्रकार अंग्रेज पञ्च ओर ता नेपालिया न सजि करन का बीस कर रहे थे और बूली आर उनका जनरल बिन्दरनी आगविष राज्य मे सुमन्त्रियन अपनी अंग्रेजी सेना केर देहरादून पर हमला करन

की रैमारी कर रहा था। नेपाली सैनिक सरस तथा स्वच्छ हृदय के थे। वह अंग्रेजों की भुद कटनीति में परिचित नहीं थे। नेपाली सेना का जब जनरल जिसेप्सी की अबर मिली तो उसने कप्तान बलमद सिह के अधिनायकत्व में 'नालापानी' के पास कसकू नामक एक बड़ बनाकर देहरादून की रक्षा करने काही। उस समय कसकू बड़ में केवल पांच सौ के लग भय सैनिक थे। अंग्रेजी सेना कर्नल कारपेटर, कप्तान कास्ट, कप्तान कैम्पबेल तथा मेजर मैसि के सहायन में कसकू बड़ की चारों ओर से तीन दिन तक बरे रही। इन चारों के अतिरिक्त पांचवीं बटालियन मेजर कुडला के साथ आपत्ति काल के लिए सुरक्षित बैठी थी। चौथे दिन अंग्रेजों की अपार सेना न कसकू बड़ पर तापी द्वारा मालाबारी करते हुए भीषण रूप से चढ़ाई की। तब भी माग्ने सैनिकों ने अंग्रेजी सेना के हमले का विर। इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का प्रमुख सहायक जनरल जिसेप्सी जिसने नपोसियन के साथी को बराजित किया था बड़ के फाटक पर स्वयं मारा गया। जनरल जिसेप्सी के स्वान पर मेजर जनरल माटिण्ड सेनापति हुआ। उसने आते ही दिल्ली से चार हजार सैनिक तथा पर्याप्त मात्रा में तोपें इत्यादि संग्रहाकर तथा बरा बनाया और कसकू बड़ को एक मास तक घरे रहा। अंग्रेजों ने अनुभव किया कि मोरले सैनिक अंग्रेजी तोपों तथा सेना द्वारा किसी भी परिस्थिति में पण्डित नहीं किये जा सकते तो उन्होंने कसकू बड़ में आम आसी पानी की महार बन्ध कर दी। पानी न पाने में नेपाली सैनिक बिकर हो उठे सक्रिय तब भी प्यासे रहकर वे पांच दिन तक अंग्रेजी सेना से बूझ करते रहे और बड़ के सत्तर मध्यन नेपाली सैनिक अपन कप्तान बलमद सिह के साथ दस हजार अंग्रेजी सैनिकों को चीरते हुए जीतनद निकल गये। कसकू बड़ के युद्ध में पांच सौ नेपाली सैनिक बीर मति की प्राप्त हुए तथा अंग्रेजी सेना के इकतीस ब्रिक्मर और सात सौ अगारू सैनिक यमलोक सिपारे। इन बटाल का वधन आर० भी० ब्रिक्मियन न बहुत ही मासिक घण्टों में किया है। अंग्रेजों ने अपनी बिजय के परबान् देहरादून के पास रिप्पा नदी के तट पर जनरल जिसेप्सी तथा कप्तान युद्ध में मरे कप्तान बलमद सिह की वा समाधिवा बनवा दी और उनके पास पिक्मैय भी बना दिए जिसमें दोनों की प्रसंसा है।

कसकू बड़ युद्ध में अंग्रेजों की जानें लुप्त गई और उन जागों ने नेपाली सेना से बड़ करने के पहले 'तोड़-फोड़' की नीति में काम लेना निश्चय किया। इन मरण को प्राप्त कर ब्रिक्मियन मि० प्रियेप तथा सर हंटर ने भी स्वीकार किया है।

कर्नल कारपेटर ने पहले जीमर की प्रजा को ताड़-फोड़कर अपनी नीति की परीक्षा की और जब ममल प्रजा ने बिरोह करके गारनों को अपने शेष में बाहर निकाल दिया तो उगर्न एक अंग्रेज कर्नल को अंग्रेज परबन्धुता माहल मरेप को ज्ञान पत्र में मिला लिया। इसके बादान् जनरल माटिण्ड ने अपनी सेना को वा मार्गों में बिनाजित करके मेजर लहरो तथा मेजर रिचर्स को सेनापति बनाकर जयपक दुर्ग पर आक्रमण करने के लिए भज दिया।

अंग्रेजों की बड़नी हुई शक्ति को देखकर चिंतित हुए। इसलिए उन्होंने महाराष्ट्र ईश्वरबाब मैसूर, पन्नाब जबब बर्मा तथा भूटान आदि ब्रिटिश साम्राज्य विरोधी राजाओं को एक मूत्र में बांधकर अंग्रेजों का पार भंगाने के लिए पड़मन भड़ा करने का बीड़ा उठाया। उन्होंने मन् १८१३ ई० में चीन के मन्दाई से भी बातलाप करके अंग्रेजों के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा बनाने का प्रयत्न किया।

एतिहासिक दृष्टि से गीर्वाण युद्ध बीर बिष्म घाह का शासन-काल बड़ा महत्वपूर्ण माना जाता है। उनके शासन-काल में नेपालियों और अंग्रेजों में बार-बार बमामान युद्ध हुए। भारतीय नरेशों और मूल्य नबाओं को परास्त कर लन ने बाह अंग्रेजों को अपनी मार्गीय सीमा की रक्षा करने की विषय बिन्ता हुई किन्तु अंग्रेजों को यह मसी मांति बिहित था कि गीर्वाण युद्ध बीर बिष्म घाह क मंत्री सीमसेन बापा जीते-जी अंग्रेजों को नपाय में घेर लड़ी रखने हेंगे।

### अंग्रेजों से मुठभड़

मन् १८१४ ई० में नेपाली सेना न ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा शासित तराई के बुटवल तथा पिबराज परगना पर आक्रमण करके उन पर अधिकार जमा लिया। बुटवल तथा पिबराज के परगन पड़म पाम्या राज्य क अंग ब किन्तु मन् १८०२ ई० में जबब क नबाब ने उन्हें ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिया था। अंग्रेजों न मोरलों की सेना गोरखपुर की ओर बढ़ती हुई देखकर मोरला सरकार को पचापत द्वारा भगड़ा निपन सेने के लिए आमन्त्रित किया। लखुमार अंग्रेजों की ओर से मेजर बडया तथा नेपाल की ओर से मुख्या कुलानंद नियुक्त किए गए। दोनों ओर से समझौते की बार्ता प्रारम्भ हुई अंग्रेजों का दिक जल-मना था इसलिए अंग्रेज पंच मेजर बडया न मुख्या कुलानंद को कुछ लगी गार्नी मुनाई। फरन समझौता-बार्ता प्रंग हो गई और पञ्चीम दिक की जबबि के परबान् मध्य जाम्ब मन् १८१४ ई० में अंग्रेजों की तीन बटालियन मना ने बाहर बुटवल तथा पिबराज क परगना पर अपना आधिपत्य जमा लिया किन्तु अंग्रेजी मना जब वहाँ से फिर बापम लौट गई तब नेपाली मना न \* मई मन् १८१४ ई० को उन लन पर पुन अपना अधिकार कर लिया।

माह दिसम्बर का जब यह बिश्वास हा गया कि नेपाली बिना अंग्रेजी सेना न सोहा मिया दान लड़ी होंग ता उन्होंने जबब के नबाब का पकड़कर उनम डार्न करोड रुपय बसूल दिय और १ नवम्बर मन् १८१४ ई० का नेपाल के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। अंग्रेजी मना के तीन हजार सैनिक ने मैकलो लाइ इन्पारि मेकर पाच मासों न नेपाल पर आक्रमण किया और छ मी मीफ का उपजाऊ शब मुट-म्यल में परिणत हा गया। इन प्रकार अंग्रेज लन ओरता नेपालिया में मपि करन का होंग कर रहे ब और दूमरी ओर उनका जलरन बिदेसी आपनिक दाम्ना न मुमकिन जलती अंग्रेजी मना मेजर हेरगुल पर हमला करने

हुए और गोरे सैनिकों ने उनके सीन में संगीन बघकर उन्हें मार डाला। यह सब की लड़ाई में और मोरलों ने भारपात सन्तुलों की खा करके अपनी आर्म सङ्गति का तथा गोरो ने इस युद्ध में अपनी बखला का परिचय दिया। इसके पश्चात् अंग्रेजों ने एक-एक करके कुमायू और गढ़वाल के राजाओं तथा सिक्खों भरोसा को घूस देकर अपन पक्ष में कर लिया और इस प्रकार गढ़वाल-कुमायू तथा मोरंग की बिना शक्तपात की ही अपने अधिकार में कर लिया।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी की इस सफलता से नेपाल की केन्द्रीय परामर्शदात्री समिति चिन्तित हो गई और वह अंग्रेजों से संधि करने के लिए प्रस्तुत हो गई किन्तु राष्ट्र की सङ्ग सङ्गती मैया को संशयन नामे निर्भीक समरसिंह बापा ने अपनी सरकार को एक सन्धा पत्र लिखकर उसकी गुप्त आत्मा का प्रबुद्ध कर दिया—जिसने फलस्वरूप संधि का प्रस्ताव ठुकराकर सात मास के पश्चात् युद्ध का पुनर्तथापनी हुआ सगी।

### मिगौली की संधि

इस अशान्तपक्ष ने पास कतल आकर लोपी में अंग्रेजी सेना पहुँचे में ही अन्न खपती थी। इसलिए बिना किसी प्रकार के प्रतिरोध के गढ़वालों की सभा मकवानपुर आ घमकी। तब भी रथबीर सिंह ने उनको वहीं पछाड़ दिया। इसके बाद अंग्रेजी सभा के लिए सहायता आ गई जिसके फलस्वरूप अंग्रेजी सभा ने रणधीर सिंह का सेना का परासन कर लिया और उनसे हरिहरपुर गढ़ी में अपना डरा समा लिया। इसके बाद अंग्रेजी ८ दिसम्बर, सन् १८१६ ई. को अंग्रेजी सरकार ने एक सप्ताह की संधि-प्रस्ताव सीकाल महाराजा युद्ध और बिजय गाढ़ के पास भेजा जिसे महापद्म योर्जिन युद्ध और बिजय गाढ़ न ११ दिसम्बर, सन् १८१६ ई. के दिन स्वीकार कर लिया और स्मृति-पत्र लिखकर कोयी तथा रानी नदी के बीच की भूमि पर अपना का नियमित अधिकार स्वीकार हो गया। यह संधि मिगौली की संधि के नाम से प्रचलित है। इसके फलस्वरूप अपना तथा बिजय सरकार की नीमावली करम की भी जान बली और सभी तथा निस्त्रा के समय को भूमि सिक्खों राज्य को दे दी गई और रानी तथा काली तलियों के बीच की भूमि अंग्रेजी सरकार को मिल गई। इसके अन्तर्गत अंग्रेजी सरकार ने हा पात अपने प्रतिबर्ध अपना के मना-नापकों का नेमान के रूप में देना स्वीकार किया। इनके साथ ही अंग्रेजों ने माटेनर काटमायू में बिजय रेजाडेन्ट नियुक्त किया गया। इसका कुछ ही समय के पश्चात् महाराजा मावान युद्ध और बिजय गाढ़ की महाराणी ने मृत्यु हो गई।

### राजगढ़ और बिजय गाढ़

राजगढ़ और बिजय गाढ़ तीन वर्ष की ही अवस्था में राज्य मिहामन पर बठाय गया और राजमाता यामनी त्रिपुर कुन्दरी देवी संरक्षक के रूप में कार्य सम्पादन करने लगी। महाराणी ने अंग्रेजों की मदद-रुचि अपना पर देकर भीमसेन बापा को प्रधान मंत्री बना

उस समय जबकि दुर्ग की रक्षा का भार जनरल अमरसिंह थापा के पुत्र रणवीर सिंह ने ठहरा था। जनरल माटिङ्ग ने इस हजार सैनिकों को लेकर जयपूर दुर्ग पर आक्रमण किया किन्तु वारलों न अंग्रेजी सेना का कठिन प्रतिरोध किया और लोड़ समय में ही अंग्रेजी सेना माग लड़ी हुई। इस पराजय से चिड़कर लार्ड हेस्टिंग्स ने माये हुए बंदूकों का पदघ्युत करके जनरल बुद्ध के अधिनायकत्व में ब्रुक्स के पास भीतगढ़ के किले पर हमला करने का आदेश दिया। इस युद्ध में अंग्रेजी सैनिकों ने तोपों से गोले छोड़-छोड़ कर गारवा को मराना चाहा किन्तु वारलों ने ही अंग्रेजी सेना के पाँच आधिसर तथा एक भी बटालियन सैनिकों का मारकर अवशेष राज्य में छोड़ दिया।

इस द्वार के बाद कर्नल डबिड आम्स्टरलोनी ने पंजाब के पर्वतीय राजाओं की भूमि पर हथकड़ियाँ लगाई और बहुत अपने छः हजार सैनिकों का लेकर लालागढ़, रामगढ़ तथा गडमन्हु की ओर बढ़ा। अमरसिंह थापा ने अपने तीन हजार रथ बाँकुने सैनिकों को लेकर कर्नल आम्स्टरलोनी से लड़ाई किया। इस बमामान युद्ध में अंग्रेजी सेना के पैर उलट गये और उन्हें बिचल होकर नेपाल की सीमा से भाग जाना पड़ा। बीरहता में अंग्रेजी सेना की अल्प-अल्प हारकर अपने प्राणा की मित्रता मागने बेसहकर पराजित सैनिकों के साथ मित्रता का व्यवहार किया और हर प्रकार से अपने शत्रुओं की रक्षा की। इस व्यवहार की सराहना मि. प्रिगेप ने अपनी पुस्तक में मुक्त-कण्ठ से की है।

### गारवों की विजय

इस अंग्रेजी सेना मकवानपुर तथा भिक्कापुरी के पहाड़ी मार्ग से परमा पहुँच गई और वहाँ से कप्तान मिर्बलि तथा कप्तान स्टेफन म फौज की दो रा. मार्गों में बाँटकर गारवों को चर सेना चाहा किन्तु मकवानपुर गड के रक्षा ने अठरात्रि में अंग्रेजी सेना पर छापा मारकर हजारों सैनिकों को मार डाला और उनके काय इत्यादि पर भी अपना अधिकार कर लिया। इस युद्ध में कप्तान मिर्बलि की किसी प्रकार जान बच गई किन्तु कप्तान स्टेफन तथा डबल मारे गये।

इस पराजय से अंग्रेजी सेना का गडमन्हु पर पुनः आक्रमण करने का माहम जाना रहा किन्तु लालागढ़ के राजा रामनरत्न न अंग्रेजी सेना का रुझ देकर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया और लालागढ़ के जाने के लिए मकवानपुर में माहम तब मडक भी बनवा दी। कर्नल आम्स्टरलोनी तथा अमरसिंह थापा की सेनाओं में छः मास तक लड़ाई हुई। अन्त में लालागढ़ सेना न अंग्रेजी सेना को पराजित करके उग्र भारत की सीमा में भाग दिया। इसमें भी अंग्रेजी न माहम नहीं छाड़ा और कर्नल कर्पिंग कर्नल टाम्पन मैजर मैटिरी तथा कप्तान बीयर के अधिनायकत्व में छः हजार अंग्रेजी सैनिकों ने रक्षा तथा डेउपल पर अपना अधिकार जमा लिया। सरकार भक्ति थापा की सेना न अंग्रेजी सेना का इन्धर माहम दिया। इस युद्ध में सरकार भक्ति थापा राजा की मार्गी में पावन

शाह ने माधवर सिंह की राजनैतिक कुसमत्ता पर रोझकर उसे कलकत्ते में अपना राजवृत्त बना दिया। भीमसेन बापा के काठमाण्डू पहुंचने के कुछ ही दिनों के पश्चात् २४ जुलाई, मन् १८१७ ई० को बड़ी महारानी के कनिष्ठ पुत्र की सहाय मृत्यु हो गई और रणजय पाण्डेय ने शिशु की हत्या का अपराध भीमसेन बापा पर मढ़ दिया। इसी अपराध में राजेश्वर बीर विक्रम शाह ने भीमसेन बापा को बन्दी और रणजय पाण्डेय का प्रधान मंत्री बना दिया। रणजय पाण्डेय ने प्रधान मंत्री होते ही अंग्रेजों से मिलकर अपनी शक्ति कायम की और अंग्रेजों के आदेशानुसार बन्दी भीमसेन बापा को माना प्रकार की अमानुषिक यातनायें देने लगे। रणजय पाण्डेय का होल अधिक दिनों तक चिना नहीं रह सका और राजेश्वर बीर विक्रम शाह ने महारानी तथा फतहबंन चौधरिया की सहमति से राजगुरु पण्डित रंगनाथ उपाध्याय को प्रधान मंत्री पद पर नियुक्त कर दिया। पण्डित रंगनाथ उपाध्याय भीमसेन बापा की दुरवस्था तथा महता को पूरा रूप से समझते थे और इसलिए उन्होंने अपना पद बहस करते ही भीमसेन बापा को मुक्त कर दिया। कलकत्ते में दो वर्ष रहकर भीमसेन बापा के मंत्री माधवर सिंह ने लाहौर दरबार में भी अपना कनिष्ठ सम्पर्क कर लिया और मन् १८३८ ई० में बड़ लाहौर पहुंचकर सेना का अधिनायकत्व करने लगे। अंग्रेजों को जब यह ज्ञात हुआ तो माधवर सिंह राजवृत्त पद पर वापस लौटकर मिलावा की भी अंग्रेजों के विपक्ष संगठित कर रहे थे। तब उन्होंने राजेश्वर बीर विक्रम शाह से मिलकर एक बाल बालना बाही। बाह्य हजार रुपये वार्षिक भत्ता का प्रस्ताव देकर उन्होंने माधवर सिंह का पुनः नवान् आमन्त्रित करवाया किन्तु स्वाभिमानों माधवर सिंह अंग्रेजों की आज्ञा में नहीं आये और उन्होंने इस भी विपक्ष कर दिया।

### दासन में सुधार

प्रधान मंत्री पण्डित रंगनाथ उपाध्याय ने भूमि का सुधार किया तथा 'निर्वा प्रवा' शब्द की और मजिस्ट्रेटों को जागीरें समाप्त करके उनके स्थान पर उन्हें बेतन देन की प्रथा बनाने ली। किन्तु रणजय पाण्डेय ने इसके विपक्ष सेना में बिद्रोह करा दिया। फरवरी मन् १८१७ ई० में महारानी सागराज्य लक्ष्मी देवा ने पण्डित रंगनाथ उपाध्याय का हटाकर फिर रणजय पाण्डेय का नेतृत्व का प्रधान मंत्री बना दिया। प्रधान मंत्री होने ही रणजय ने बड़ भीमसेन बापा का पुनः काठ-कोठरी में डाल दिया और अंग्रेजों की इच्छा पूर्ण करने के लिए उन्होंने नेपाल-निर्मिता जंग मन्सूरी की अपनी आत्महत्या कर देने पर बाध्य किया और १० जुलाई मन् १८१७ ई० को महारानी भीमसेन बापा ने अपने जीवन का अन्त कर दिया।

अंग्रेजों के पास भीमसेन बापा की मृत्यु का समाचार सुनकर अंग्रेजों को विचार हुई हुआ और उन्होंने प्रधान मंत्री रणजय पाण्डेय से मिलकर अन्त हाथ-हीर फैजान प्रारम्भ कर दिए। मन् १८४३ ई० में बड़ी महारानी सागराज्य लक्ष्मी देवी तथा प्रधान मंत्री रणजय

मिया। प्रधान मंत्री होन ही भीमसेन बापा राज्य के संगठन-कार्य में सफल हो गए। दुर्भाग्यवश इसी वर्ष नेपाल में सत्रह बार भूकम्प आया। महारानी त्रिपुर सुन्तरी देवी की ममता परबराज में अत्यधिक थी। इसलिए उन्होंने राजेन्द्र बीर विक्रम शाह का विवाह बाम्बाबस्ता में ही पारलपुर के एक कुलीन क्षत्रिय घराने में कर दिया और अक्तूबर, सन् १८२० ई. का महारानी साम्राज्य लक्ष्मी देवी के गर्भ में मुखराज सुरेन्द्र बीर विक्रमशाह का जन्म हुआ।

सन् १८३२ ई. में महारानी त्रिपुर सुन्तरी देवी की मृत्यु हुई। अगले वर्ष भी नेपाल में बार बार भूकम्प आया। पीछे भूकम्प से मन्थिरी तथा अट्टालिकाजी की विधाय सति हुई। और बार सौ के लगभग व्यक्तियों की मृत्यु हुई तथा सात सौ के लगभग व्यक्ति बरी तरह घायल हुए।



राजेन्द्र बीर विक्रम शाह

प्रधान मंत्री भीमसेन बापा की भांति महारानी साम्राज्य लक्ष्मी देवी भी अघेजों की पोर पार थी। वह पंजाब-केसरी महाराजा रणबीरसिंह से मिलकर अंग्रेजों का भारत में निवास भयाना चाहती थीं। अघेजों ने महारानी तथा भीमसेन बापा बानों को एकमत बनकर बिम्ब-नीति में काम लेना शुरू किया।

राजेन्द्र बीर विक्रम शाह बड़ अदूरदर्शी तथा वायर स्वभाव के थे। उन्होंने भीमसेन बापा का अघेजों से कोहा मिल बनकर भीमसेन बापा को पद-भ्रष्ट करने का निश्चय किया और राजेन्द्र बीर विक्रम शाह न सन् १८३४ ई. में भीमसेन बापा को राजदूत बनाकर कलकत्ते भेज दिया।

इसी वर्ष राजधानी के बाग़वताने में मयकर आठ लग गई और इसी अघेज में रेडीइन्सी भी सम्मिलित हुआ। बाग़वताने में आय लगाने का उद्देश्य रेडीइन्सी को ही विजय करना बताया जाता है। भीमसेन बापा के छोटे भाई रणबीरसिंह अथवा बड़ भाई की सम्मति प्राप्त करके वेगारनि हुमा चाहते थे। विन्तु निपल राज्यदेवी भीमसेन बापा न रणबीरसिंह की प्रार्थना स्वरा दी। इससे दुविधा होकर रणबीरसिंह अपने भाई भीमसेन बापा के पार पार हो गए और पदभ्रष्टकारियों ने मिलकर उम्हान भीमसेन बापा का ही मयाज कर हाकन का निश्चय कर लिया। सन् १८३६ ई. में राजेन्द्र बीर विक्रम

राजा राजेन्द्र बीर विक्रम शाह द्वारा राज-परिवार के अतिरिक्त समस्त प्रजा को बाराबात भोग-छेदम देम-निर्वामन पदभ्युत तथा प्राप्तदण्ड देम के अधिकार राजकर्मचारियों को इटान तथा निमुक्त करने एवं उनके स्वतन्त्र तथा पदवी में परिवर्तन करम के अधिकार, और भील लिप्यन तथा विदेशी दक्षिणों में मधि-आर्ण करन तथा विदेशी राष्ट्रों के साथ मधि-विग्रह करन के पूर्ण अधिकार अपन हाथों में ले लिये । सामन्त-मुख पर इस प्रकार पूर्ण अधिकार समाकर रानी राज्य

लक्ष्मी देवी ने बड़ी महारानी के दातों पुत्रों मुखराज मुखर तथा कुमार उपेन्द्र को मरवाने का पदकन किया जिसमें कि उनके अपने गर्भ में उत्पन्न राजेन्द्र बीर विक्रम शाह राज्य का उत्तराधिकारी बन सके किन्तु कनह जैन भीतरिया ने स्वभाव को देखकर बीरा राज कुमार की हत्या करवाने का उन्हें साइन नहीं हुआ । इसलिये रानी न मायबर सिंह को माहौर में बुलाकर उक्त २५ दिवम्बर, अन् १८४३ ई० में न्याय का प्रधान मंत्री तथा मन्त्राग्नि बसा दिया । मायबर सिंह महामा भीममन बागा के भर्त्ताय के और बहु मेमा में बहून ही त्रिब बी थे । जलना न उनकी सामन्त-मुखमन पर



रानी राज्य लक्ष्मी देवी

रीजकर उन्हें 'बका बकादु' की उपाधि दी थी । मायबर सिंह न प्रधान मंत्री का पद समालने ही भीममन बागा को पदभ्युत तथा बनी करानकर्म पाण्डय वर्ग के विपुल मुकदम पर बारान्दरी मन्त्रा द्वारा विचार करवाया और करबीर पाण्डय तथा बुधराज पाण्डेय नायक का माया के साथ भग्य बार पाण्डय मोलों का प्राच-पण्ड दिम्बाया और जिनन भी देण ईंही पाण्डय य उन मर्बों को न्याय में निर्वामित करवा दिया । मायबर सिंह की इच्छा राजेन्द्र पाण्डय को प्राच-पण्ड देन की थी किन्तु बहु बसाय्य गेत न पीडित य और इसी में उनकी मृत्य भी हा गई । रानी राज्य लक्ष्मी देवी लुद विचार की थी । उन्होंने मायबर सिंह



पाण्डव न छोटी रानी राज्य लक्ष्मी देवी की हत्या करने का बिकल्प प्रयत्न किया। बनी महारानी तत्कालीन ब्रिटिश राजपूत हांगकन को भी हटा देना चाहती थी। इस समय नेपाल में चार लाख व्यक्ति सेना में भर्ती होने के योग्य थे और प्रधान मंत्री रणबहादुर जंग राणा का संगठित करके पर्याप्त अस्त्र-सस्त्र भी एकत्रित कर रखे थे। इसी बीच में नेपाल के अंग्लिया में यह भविष्यवाणी की कि ब्रिटिश राज्य का अन्तकाक आ गया। फिर



जीमसेन थापा

क्या था—मारबो की विशाल सेना ने चम्पारन की ओर अभियान किया और उसने चम्पारन जिसे क इक्यानके गाँवों को जीतकर हो सी पकड़ीत वर्गीमीक भूमि पर अधिकार कर लिया। ब्रिटिश रेजीडेंट ने कुपित होकर नेपाली सेना को वापस बुलाकर हवाई से के लिए नेपाल-सरकार में कहा किन्तु रानी और रणबहादुर उसका कोई उत्तर नहीं दिया और उल्टे नेपाली सेना में यह समाचार उड़ा दिया गया कि अंग्रेजों की आजा से सैनिकों का बंटन बढ़ा दिया गया है जिसके फलस्वरूप नेपाली सैनिक ब्रिटिश रेजीडेंट पर आक्रमण कर बैठे। राजा और बिजय साह ने उन्हें जैसे-तैसे काबू में किया और नेपाली

सैनिकों को समझा-बुझा कर शांति कर दिया और तब ही ब्रिटिश रेजीडेंट की प्राण बचा हुआ मरी। इस घटना से बिड़कर बाहमराय कोई आकर्षण में मुह की चुनौती की जिसके फलस्वरूप महारानी ने अपनी सेना नेपाल वापिस बुला ली। महारानी साम्राज्य लक्ष्मी देवी शासक जयपुर, अजमेर, बड़ोदा अफगानिस्तान और पंजाब-केसरी रणजीत सिंह के पुत्र लखीपति से सम्पर्क स्थापित करके अंग्रेजी सेना को समायत्त करने की कल्पना रात दिन किया करती थी और इर्मसिप यह राजा और बिजय साह का भी राज्य छोड़ कर बनारस तक आने के लिए बाध्य करत लगी। महारानी साम्राज्य लक्ष्मी देवी की उन्नत अधिकाता अंग्रेजों का समान तथा आल अक्षय्य पुत्र की अभिभाविका बनकर शासन करने की थी किन्तु ६ अक्टूबर, १८४१ ई. को अंग्रेजों ने महारानी का तराई में बिना बिनाकर उतार प्राण ले लिये।

### पहल

बड़ी महारानी की मृत्यु ने छोटी रानी राज्य लक्ष्मी देवी की बाँटें लिय गई और

राजा रामनर बीर विक्रम शाह द्वारा राज-परिहार के अतिरिक्त समस्त प्रजा को कारावास जेल-कानून देश-निर्वातन परबन्धन तथा प्रायदण्ड देन के अधिकार, राजकर्मचारियों को हटान तथा नियुक्त करने एवं उनके स्थान तथा पदवी में परिवर्तन करने के अधिकार, और तीन तिब्बत तथा बिदेसी सन्धिपत्रों से सन्धि-वार्ता करने तथा बिदेसी राष्ट्रों के साथ सन्धि-विग्रह करने के पूर्ण अधिकार अपन हाथों में ले लिये । शासन-सूत्र पर इस प्रकार पूर्ण अधिकार जमाकर रानी राज्य

सदमी देवी ने कड़ी महारानी के दानों पुर्ण पुनराज सुरेन्द्र तथा कुमार उग्रान्त को मरदान का पर्ययन किया जिसमे कि उनके अपने गर्भ से उत्पन्न राजनर बीर विक्रम शाह राज्य का उत्तराधिकारी बन सके किन्तु फलतः रज्य बीरवर्मा के स्वाभाव की देनकर दोनों राज कुमारी की हत्या करवाने का उन्हें आह्वान नहीं हुआ । इसलिये रानी ने मायबर सिंह को काहौर में बुलाकर उन्हें २५ दिसम्बर, सन् १८४३ ई० में नेपाल का प्रधान मंत्री तथा मन्त्रपति बना दिया । मायबर सिंह महारानी भीमसेन बापा के मन्त्री थे और वह मैना में बहुत ही विपरीत थे । जनता ने उनकी शासन-कुशलता पर



रानी राज्य लक्ष्मी देवी

रीसकर उन्हें 'बप्पा बहादुर' की उपाधि दी थी । मायबर सिंह ने प्रधान मंत्री का पर ममान्त ही भीमसेन बापा को परबन्धन तथा बन्दी करवाने काण्डय वर्ग के विरुद्ध मुकदमे पर मारदर्शी न्याय द्वारा विचार करवाया और करवीर पाण्डय तथा कुलराज पाण्डय नामक दो भाइयों के साथ अन्य बार पाण्डय भागों को प्राय-दण्ड दिक्कवाया और जितन भी देन छोड़ी पाण्डय व उन सबों को नेपाल में निर्वासित करवा दिया । मायबर सिंह की इच्छा रज्येन्द्र पाण्डय का प्राय-दण्ड दन की थी किन्तु वह अनाप्य भोग म पोनिंग व और इसी में उनकी मृत्यु भी हो गई । रानी राज्य लक्ष्मी देवी कुछ विचार की थी । उन्होंने मायबर सिंह

महाराजाधिराज का परिवार निष्क्रमक वा और नेपाल की प्रजा उन्हें देव-सुम्प मानती थी। महारानी के वाचरण तथा राजन्त्र बीर विक्रम के स्नेह स्वभाव ने शाही मर्यादा की नींव डगमगा दी और उसकी समता में भी लोगों को संदेह हो गया।

### सुरेन्द्र बीर विक्रम शाह

१२ मई, १८४० ई० को सुरेन्द्र बीर विक्रम शाह अपन पदच्युत पिता के स्थान पर नेपाल के महाराजाधिराज बनावे गए और प्रधान मंत्री जंग बहादुर अपन सभी माइयों को ऊबे-ऊबे पदों पर प्रतिष्ठित करके अंग्रेजों के इशारों पर नेपाल को लूताते रहे। राजा सुरेन्द्र बीर विक्रम शाह को उनके युवराज-नाम में मार डालने के लिए राज्य लुटती देखी न कई बार योजनाएं बनाई थी और जंग बहादुर ने ही युवराज की प्राण-रक्षा की थी। इसलिए महाराजाधिराज हो बाल पर भी सुरेन्द्र बीर विक्रम शाह इन बातों को भुला नहीं सके और जंग बहादुर पर बिश्वास करने उन्हें सामन का समस्त मार उन्हीं पर सीप दिया। सुरेन्द्र बीर विक्रम शाह की इस नीति से काम उठाकर जंग बहादुर महाराजाधिराज के नाम से 'लास मोहर' तथा 'पंचापत्र' का प्रयोग अपनी इच्छानुसार करन लग और उन्हें जनता के सम्पर्क में बखित कर दिया। जंग बहादुर को यह पट्टी अंग्रेजों ने ईंग्लैण्ड में पढ़ाई थी। महाराजा सुरेन्द्र बीर विक्रम शाह का दासन-काम केवल इसीलिए बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है कि जंग बहादुर ने किस प्रकार इसी समय 'राणाशाही' की नींव डाली।

महाराजा सुरेन्द्र बीर विक्रम शाह के छोटे भाई ज्येन्द्र बीर विक्रम शाह जंग बहादुर की कूटनीति का भली भांति समझते थे किन्तु वह विषय थे। जंग बहादुर ने ज्येन्द्र बीर विक्रम शाह को बस में करने के लिए बड़ नाक तपय बापिक मत्ते का प्रयोग दिया किन्तु उन्होंने जंग बहादुर की प्रार्थना टुकरा दी और वह मन्यामी बनकर जंग बहादुर के बिनाप का मार्ग बुझने लग।

सन् १८५४ ई० में तिब्बत वाले तिब्बत में रहने वाले नेपालियों को लूटन-पाटने और बन्दी बनाने लग। इन अपवाचार को सुनकर महाराजाधिराज सुरेन्द्र बीर विक्रम शाह ने करवरी १८५५ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी में एक नवि की और तिब्बत सरकार से युद्ध छड़ दिया। नेपाली सेना तीन मार्गों से बंटकर तिब्बत की ओर बढ़ चली और कुछ ही दिनों के पश्चात् नेपाली सेना ने जुनी तथा झुंगा पर अधिकार कर लिया। झुंगा की रुढ़ाई में प्रवृत्ति न नेपालियों को लोहे के बल बबबाय किन्तु तब भी नेपालियों ने तिब्बती सेना को घंटागड़ी में लगेड़कर भसा दिया और झुंगा दुपे तथा मुनामुष्पा पर अपना आधिपत्य जमा दिया। अगस्त में २४ मार्च १८५६ ई० को तिब्बती सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया और दोनों राज्यों में संधि हो गई। इस संधि में एक हम-गुबी प्रस्ताव स्वीकृत किया गया।

१ तिब्बती सरकार हम ह्वार तथा बापिक मोरमा सरकार को दिया करपी।

२. मोरला तथा तिब्बत दोनों राज्य बीनी सन्धि का आदर करते रहे ह और तिब्बत देश शमासा का पूरव तीर्थ-स्थान है इसलिए मोरला सरकार को किसी भी राजा द्वारा आक्रमण के समय तिब्बत की सरकार का अपनी सक्ति के अनुसार पूरी-पूरी सहायता करने पड़गी।

३. तिब्बत सरकार मोरला राज्य के किसी भी नागरिक दूकानदार तथा व्यापारी से किसी भी प्रकार की चुंगी नहीं लेगी।

४. तिब्बत सरकार मोरला सरकार के सभी बन्दों मिर्चों पारला सिपाहियों हाकिमों सिबों तथा बन्दूकों को लौटा देगी और पारला सरकार तिब्बत सरकार के सिपाहियों के रस कुटी जुगा तकलासार तथा बेतर गुम्बा के रीतिमें हथियारों याक (बीरी गात्रा) को आपस कर देगी और वह अपनी सेवा में सब जगहा में तुरन्त वापस बुला सके।

५. मोरला सरकार की ओर से एक माग्यार सहामा में रहेगा।

६. मोरला सरकार सहामा में एक व्यवसायिक कारखाना रखेगी जहाँ से हीर बचाइएतों में लेकर अस-बस्त्र तक स्वतंत्र रूप से बिका करेंगे।

७. सहामास्थित पारला माग्यार दूकानदारों व्यवसायियों इत्यादि के आपसी झगडा में हस्तक्षेप करेगी किन्तु जब पारला तथा तिब्बत के नागरिकों में झगडा होता तब दोनों राज्यों के अधिकारी मिलकर उसका निपट करेंगे। काश्मीरी तथा मोरला नागरिकों द्वारा जो आमदनी होगी उसे मोरला सरकार सेमी तथा तिब्बत के नागरिकों द्वारा जो आमदनी होगी उसे तिब्बत सरकार सेमी।

८. दोनों राज्यों के द्वारा अपनी-अपनी सरकारों को दे दिये जायेंगे।

९. यदि किसी पारला नागरिक जबवा व्यापारी का सामान तिब्बत का कोई नागरिक से सेवा तो तिब्बती अधिकारी उसे मात्र बिकाने में सहायता देंगे और यदि मात्र नहीं मिल सकेगा तो तिब्बती अधिकारी उसके लिए कुछ प्रयत्न कर देंगे और इसी प्रकार की चर्चे पारला अधिकारियों का भी वापस करने पड़ेंगे।

१०. इस संधि के फलस्वरूप मोरल तथा तिब्बतों मैत्रिक वापस के सम्मनस्य को मुभाकर इन सरकारों से सहायता करेंगे।

२५ मई मन् १८५७ ई. को जब बहादुर की मृत्यु हो गई और राजा मुरन्द और विजय माह से जब बहादुर को पुनः प्रमाण मंत्री बनाया। इसी वर्ष भारत में अंग्रेजों तथा को उन्नाई टैम्प के मिल प्रथम स्वातन्त्र्य-सहायता दिवा जिस संघर्षों में 'मिपही बिद्रोह' कहकर प्रख्यात किया। इसमें जब बहादुर न संघर्षों की पूरी सहायता की। इस सहायता के बन्दे में बिद्रोह मान्य होने ही पहली सन्धर, मन् १८६० ई० को अंग्रेजी सरकार ने तैराक के महाप्राधिपत्य में एक नई वि-सूत्री संधि की जिस पर १५ नवम्बर, १८६० ई०, को वाइसराय तथा यवनेर-जबान कोइ केनिंग के भी हस्ताक्षर हो गये।

महापत्र मुरन्द बार विजय माह के सामान-नाम में प्रजा की सन्धि के लिए कुछ

भी कार्य नहीं हुआ और हजारों मारने भड़-बहरियों की भाँति 'मिर्पाही बिद्रोह' में कटा रिय बय। मन् १८६ ई में सर्वप्रथम बन्दूक जाँच बनाने का एक छोटा-सा कारखाना खोला गया और मन् १८६१ ई० में मूमि का लगान जनाब के बय में न लेकर नवद रूप में म मज की बिधि बनाई गई और इसी समय से जमींदार चौबरी तथा पटवारों आदि नियुक्त किये गये।

इसने बाद सालह बय नव जय बहादुर राणागाही की ही मौब मजबूत करत रहे और बहू अपने परिवार को नेपाल का सर्वस्व बनाने के लिए चारों ओर जाम बिछाते रहे। १० फरवरी मन् १८७१ ई को प्रिम ऑफ बस्म को भिकार लकने क बहाने नवास लाया गया और जय बहादुर के ममस्त बिराधियों को मंजरी सेना का भय दिखाकर एक-एक करके बुचल बिबा गया।

महाराजा मुनेन्द्र बीर विक्रम शाह को जय बहादुर के हाव की कछुपुतमी देखकर मुबराज त्रैलोक्य बीर विक्रम शाह को बहुत ही दुःख होता था। मुबराज त्रैलोक्य को यह भी बिस्कुल पमस्य नहीं था कि जय बहादुर की पुत्री के साथ उनका अपना बिबाह हो किन्तु उन्हें अपने पिता महाराजाधिराज मुनेन्द्र बीर विक्रम शाह की आज्ञा के सामने नतमस्तक होकर बिबाह करना पडा। मुबराज त्रैलोक्य बीर विक्रम शाह राणा परिवार को हाव-पीर कैमान देखकर लहू का घट पोकर रह जाते थे।

२५ फरवरी १८७७ ई का बागमती ने तन पर महाराज जय बहादुर की मृत्पु हा गई। किन्तु जय बहादुर ने उत्तराधिकारी छोड भाई रणोद्दीप मिह में अपने बड़े भाई की मृत्पु का मुबला महाराजाधिराज मुनेन्द्र बीर विक्रम शाह को नहीं बी। रणोद्दीप को यहने में बिदित था कि मुबराज त्रैलोक्य बीर विक्रम शाह उसे किमी मो हालत में प्रवान मंत्री नहीं बनने देवे। इसलिय उगहाने जाल बलकर मुबराज को पकरबद्धा की और भेज दिया। महाराजाधिराज मुनेन्द्र बीर विक्रम शाह का जनेने राज-बरबार म पाकर रणोद्दीप मिह म उनमें प्रवान प्राप्ति करके उस पर साल मोहर लगवा की और अपने को नराल का प्रवान मन्त्रा उद्घाषित कर दिया।

भीमनन बापा तथा मायबर मिह को मन्त्रा में जय बहादुर के भाइया एवं पुत्रों ने बरला लेना चाहता थी। कुमरी ओर मुबराज त्रैलोक्य बीर विक्रम शाह को बड़ी महारानी भी अमनुष्ट थी। परिणामस्वरूप प्रवान मंत्री रणोद्दीप मिह आदि का ममाप्ति करने के लिए योजना बना किन्तु बीच हूँ में यह काम स्थगित हा गया।

मुबराज त्रैलोक्य बीर विक्रम शाह राणा-बागकी की स्वेच्छाचारिता के बिगीबी थे। उगहें बिना इसे ममाप्ति रिय राजमुकुट नहीं बासन करत की प्रतिज्ञा की थी। प्रवान मंत्री अनरल रणाद्दीप मिह तथा मेनराति जगतमिह आदि के लिए यह एक बहुत बड़ी बात एवं चुनौती थी। कहा जाता है कि प्रवान मंत्री आदि ने भी मुबराज को बिग देने का निश्चय बिधा रिय इसी बीच में १ मार्च मन् १८७८ ई को मुबराज की मृत्पु हा गई। महाराजा-

मिराज मुन्नेर बीर बिजय गाहू म मन् १८८० ई० में प्रभाव मंत्री का कार मी कस्मिया क माव भाग जबा जिन्हें अपने अनुमान में न रत्न मन्नेर के कारण रक्षाहीन मिहू की बड़ी बहुरानी हुई।

१३ मई मन् १८८१ ई० का महाराजाधिराज मुन्नेर बीर बिजय गाहू मभा १३ जुलाई मन् १८८१ ई० का महारत्न जन्मी राजन् बीर बिजय गाहू की मृत्प हुई। इनके बाद मुन्नेर बीर बिजय गाहू के पीछे यवराज त्रैकास्य बीर बिजय गाहू वं पुत्र पृथ्वी बीर बिजय गाहू मही के उत्तराधिकारी हुए।

### पृथ्वी बीर बिजय गाहू

१ दिसम्बर, मन् १८८१ ई० को पृथ्वी बीर बिजय गाहू मिहामनामीन हुए। उस समय महाराजाधिराज की अवस्था ६ वर्ष की थी। इसलिए प्रभाव मंत्री जनरल रक्षाहीन मिहू तथा प्रभाव मन्त्रालय जनरल बीर रामार के हाथों में शासन की शानदार जा गई। इस में चांगे बीर मिराजा का बाल बरत तथा राष्ट्रीय जन का बुझसाय देख कर राजधानी के यवका न प्रभाव मंत्री तथा मन्त्रालय को मार शासन का पर्यव किया। इस कार्य का पुरा करने के लिए बाबल युवकों ने प्रमिता की। ६ जनवरी मन् १८८० ई० का दिन इसक लिए निश्चय किया गया किन्तु गगनमिहू के पुत्र जनम उत्तराधिराज त्रैकारी न इन मामलाजिन पर्यव का रक्ष्योत्पादन कर दिया। इसमें राज कुमार मन्नेर बीर बिजय मन्नेर जनम बिजय मिहू मारा बाहि मी सम्मिलित न।



पृथ्वी बीर बिजय गाहू

प्रभाव मन्त्र तथा मन्त्रालय न पर्यव कारियों का निरक्षण कर लिया और मुन्नेर बार बिजय तथा बिजय मिहू जन्मी के रूप में जनरल मन्नेर दिव मय और जननामीन शासन तथा इन कुलीन शासकों न जालि म्पुन हाकर जीवन-मर्त्य कागजाम का दण्ड बाधा। रक्षाहीन मिहू बाहि महाराजाधिराज पर भी प्रतिबन्ध लगाकर उनक नाय पर मनमानी करने मग। महाराजाधिराज का राजा शासकों न विभायी बनाकर जनमण्डल में गर्वका बंशिन कर दिया और उन्हें किसी विन्नी म मी पिन्ने का अवसर नहीं दिया जाता का।

महाराज बीर दामसेर ने अपनी दो पुत्रियों का विवाह पृथ्वी बीर विक्रम शाह से कर दिया और महाराजाधिराज को अपनी प्रथम विवाहिता महारानीयों के पास जाने से भी बंजित कर दिया। इस प्रकार उन्होंने नरेरा को अपनी कन्याओं के पाम ही रहने पर बाध्य कर दिया।

महाराज बीर दामसेर के बाव देव धमधर प्रधान मंत्री हुए। देव धमधर तीन महीने के बाद ही पञ्चभुत कर दिये गये और उनके स्वान पर जनरल चन्द्र धमधर प्रधान मंत्री बनाय गये।

महाराजाधिराज पृथ्वी बीर विक्रम शाह पर राणा शासको का बिस्वास नहीं था तथापि वे उन्हें अप्रमत्त करने का साहस नहीं कर पाते थे।

### त्रिभुवन बीर विक्रम शाह

पृथ्वी बीर विक्रमशाह की बड़ी महारानी लक्ष्मीदेवी की गर्भ से ३० जून सन् १९१६ ई० को त्रिभुवन बीर विक्रम शाह का जन्म हुआ। महारानी लक्ष्मीदेवी हिमाचल प्रदेश के ठाकुर मोतीमिह की सुपुत्री थी। उन्होंने चार पुत्रियों तथा एक पुत्र रत्न को जन्म दिया।

११ जिनवरी १९११ ई० को त्रिभुवन बीर विक्रम शाह १ वर्ष की अवस्था में निहामन पर बैठाये गये। इसके तीन वर्ष बाद यूरोपीय महाममर प्रारम्भ हुआ। इस महा-युद्ध में महाराज चन्द्र दामसेर ने गोरखा की बहुत बड़ी सहा ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिए मंत्री।

प्रधान मंत्री चन्द्र दामसेर ने बालक त्रिभुवन को अपनी देव रेणु में रखा। वह उनको बिलामी और अवर्मेय बनाने के लिए सतत प्रयास करने रहे, किन्तु बिछोर त्रिभुवन लरे ही उठते। उनही अभिरुचि विद्याध्ययन की ओर थी और समस्त मातन प्रस्तुत न होने पर भी वह प्रीतिशब्दा में पदतन करने-करन बिद्वत् की ध्येष्ट पुस्तको में अवगत हो गये। नेपाली हिन्दी संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषा का भी आपने ज्ञान प्राप्त किया। इसके अनिरिकन वह व्यायाम कुष्ठी संवीन तथा कोर्गोपाकी में भी विगत रुचि रखने लगे।

सन् १९११ ई० में उनका विवाह एक भारतीय राजपूत ठाकुर अजुनमिह की दो पुत्रिया बाल्मी राजमन्दी देवी तथा ईश्वरी राजमन्दी देवी में एक साथ ही सम्पन्न हुआ। सन् १९२० ई० में महारानी बाल्मी राजमन्दी देवी के गर्भ में यवराज महन्द्र बीर विक्रम शाह का जन्म हुआ।

इसके पश्चात् द्वितीय राजकुमार हिमामय बीर विक्रम शाह का जन्म सन् १९२५ ई० में तथा तृतीय राजकुमार बगुम्परा बीर विक्रम शाह का जन्म सन् १९२७ ई० में हुआ।

महाराज चन्द्र दामसेर ने त्रिभुवन बीर विक्रम शाह देव की बड़ी बहन का विवाह जनरल बीम दामधर द्वितीय बड़ी बहन का विवाह जनरल मिह दामधर तथा तृतीय और

चतुर्थ बहना का विवाह जनरल कृष्ण रामसर तथा जनरल शूर रामसर के साथ सम्पन्न कराया। इन वैवाहिक सम्बन्धों के पीछे महाराज चन्द्र रामसर की एक कूटनीति भी प्रकट करिसे वह शाही परिवार को सामक-जर्ग में बांध देना चाहत थे।

२१ दिसम्बर, सन् १९२३ ई० को नेपाल सरकार ने विभिन्न सरकार से एक अष्ट मंत्री मंत्री की जीए नेपाल को एक स्वतन्त्र वन प्राप्ति करवा लिया।

महाराज चन्द्र रामसर की मृत्यु के पश्चात् महाराजाधिराज न भीम रामसर और तत्पश्चात् युद्ध रामसर का प्रधान मंत्री बनाया। इस समय नया नेपाल प्रजा परिषद् का सम्बन्ध से और वह अपने व्यापार-विकास सम्बन्ध के द्वारा इन मन्त्रियों की प्रमति के सम्बन्ध में अपने विचार भी दिया करने थे। प्रधान मंत्री युद्ध रामसर तथा भीम रामसर राजकुमार एवं राजकुमारियों का विवाह अपने ही परिवार में करना चाहत थे फलस्वरूप मुबारक महेंद्र वार विजय शाह का विवाह जनरल हरि रामसर की बच्ची तथा द्वितीय एवं तृतीय राजकुमारों का विवाह जनरल शूर रामसर की पुत्रियों के साथ सम्पन्न हुए। राजकुमारियों का विवाह नया में भारत में किया।



विभुवन बीर विक्रम शाह

दिसम्बर सन् १९४५ ई० में महाराज युद्ध रामसर के राज्य-त्याग के पश्चात् महाराजाधिराज न भीम रामसर का पुत्र जनरल वर रामसर का नेपाल का प्रधान मंत्री बनाया। वह सामान में सुधार करना चाहते थे इसलिए महाराज चन्द्र रामसर के पुत्रों में उन्हें त्यागपत्र दे दन के लिए बाध्य किया और मैनापति जनरल माहन रामसर नेपाल के प्रधान मंत्री बनाया गया।

नेपाली जनता का भावि महाराजाधिराज भी रागा सामकों में बनना दिख छाना चाहते थे और जब उनकी ठीक अवसरमिल गया तब उन्होंने अवसर पाव ही रागा फ्रमन के निष्पाद जहाँ बाध लिया। नया व इस निर्दय का स्वागत दण्डविद्वान मंत्री न किया और प्रधान मंत्री जनरल मोहन रामसर का फिर न विभुवन बीर विक्रम शाह देव का नेपाल का वास्तविक शासक मान लिया गया।

समस्त भावि के पश्चात् भी नया न महाराज माहन रामसर की ही प्रधान मंत्री



बनाया। यद्यपि यह सरकार बहुत दिना तक टिक नहीं सकी और मंत्रिमण्डल में कई उल्लास पड़ा। इस प्रकार कई मंत्रिमण्डल मन होने के बावजूद भी महाराजाधिराज केवल और साहस के साथ आगे बढ़ रहे हैं। देश को बनना अब भी उन्हें राष्ट्र का प्रतीक मानती है।

युवराज महेन्द्र और बिजय शाह एक सुष्ठु विचार के हानहार युवक हैं। महाराजाधिराज की उपस्थिति-अनुपस्थिति में वह बराबर शासन-कार्य में अमिच्छि रहते हैं। नये संपास को अपने युवराजाधिराज महेंद्र और बिजय शाह से बहुत बड़ी आशाएँ हैं।

श्री पाश महाराजाधिराज के दाहिने पंख की पाँचों उगमियों का छाप 'पंचापश'



युवराज महेंद्र और बिजय शाह

बहमाता है। मरेश के पास श्री पंच नामक एक ठाक भी होता है जो बहुत अमूल्य माना जाता है। उनका अपना एक स्वतन्त्र पक्ष है जिसके बीच में एक सेर का भिन्न रहता है। श्री पाश महाराजाधिराज को इकनीस तोपी की मसामी दी जाती है। उनकी प्रशस्ति तथा मसामी इस प्रकार है—

प्रशस्ति

स्वस्ति श्री विरिराजचक्र-  
बुद्धामभिनरनारायणभेदादि  
विधिप विद्वत्तति  
विराजमान मानोभत  
ओजस्वो राज्य प्रोत्थन  
नेपाल तारा श्री राम पट्ट  
अनुलज्योतिर्नव विज्ञप्ति-

बटु अति प्रबल गोरखा इतिहासका महाविपनि सर्वोच्च सम्राट्-इन्द्र-श्रीक श्रीमहाराजाधिराज श्री श्री श्री महाराज विजयन और बिजय जंग बहादुर शाह बहादुर घमण्डेर जंग देवाना सदा सत्वर विजयीताम् ।

गलामी

श्रीमान् मन्वीर सपात्री प्रबन्ध प्रतापी कूपति

श्री नाथ सर्जर महाराजाधिराज को सदा रहोन उपनि

राज्य बिराय ईश से प्रजा कसियोस् पुकारों जय प्रेम से,  
हामी नेपाली भाई सारा से,  
बारी सारा हराऊन् धाँत होऊन् सब बिघ्न ब्यथा  
गाऊन्, सारा बुनियासे सह्य नायको सुक्रीति क्या  
राजी कमान भारी बीरता से नेपाल मायी सभै नाय को  
भी होव कूलो हामी नेपाली को ।

### नेपाल के महाराजाधिराज

द्वय शाह	१५५०—१५७०
पुनन्दर शाह	१५७०—१६०५
छत्र शाह	१६०५—१६०६
राम शाह	१६०६—१६३३
दम्बर शाह	१६३३—१६४२
कृष्ण शाह	१६४२—१६५८
रत्न शाह	१६५८—१६६९
पृथ्वीपति शाह	१६६९—१७१६
बीरम शाह	१७१६
नरभूषण शाह	१७१६—१७४२
पृथ्वी नारायण शाह	१७४२—१७७४
मिह्र प्रताप शाह	१७७४—१७७७
रण बहादुर शाह	१७७७—१७९९
मीर्बाज युद्ध विक्रम शाह	१७९९—१८१६
राजेन्द्र बीर विक्रम शाह	१८१६—१८४७
सुरेन्द्र बीर विक्रम शाह	१८४७—१८८१
जेठोराय बीर विक्रम शाह	१८८१
पृथ्वी बीर विक्रम शाह	१८८१—१९११
त्रिभुवन बीर विक्रम शाह	११ दिसम्बर १९११

## राणाओं का शासन-काल

नेपाल का शासन यद्यपि बहा के साही परिवार के नामसे ही चलता चला आ रहा है वास्तव में गत एक सौ चार बरों से बहा के शासन की बागडोर राणा परिवार के हाथों में रही है। इस राणासाही शासन का जन्म महाराजाधिराज निम्बत बीर बिजय साहू देश द्वारा भारतीय वृत्तावास में ६ नवम्बर, सन् १९५५ के दिन शरण लेने के फलस्वरूप स्वतन्त्रता-आन्दोलन के उठ खड़े होने के कारण हो सका। राणासाही का इतिहास रक्तरसित पङ्क्तियों आदि में भरा पड़ा है। एशिया के किसी भी अन्य देश का इतिहास इस प्रकार रोमाञ्चकारी नहीं है।

यह राणासाही शासन सन् १८४६ ई. से प्रारम्भ हुआ जब जंग बहादुर नामक एक व्यक्ति नेपाल के प्रधान मंत्री बन। उन्होंने धीरे-धीरे शासन की समस्त शक्ति अपने हाथों में कर ली और अन्त में वास्तविक शासक बनकर अग्रजा की सहायता से महाराज भी कहवाने लग।

जंग बहादुर का जन्म अपनी तनिहाल बाल्या में १८ जमवरी सन् १८१७ ई. को हुआ। उनके प्रपितामह रामकृष्ण कंवर योरलासी सेना में एक सामान्य सैनिक थे और वह उन्नति करके पच्ची मारायण शाह के अंगरक्षक हो गये थे। रामकृष्ण कंवर के पुत्र रत्नवीर कंवर के पुत्र बालू मरसिंह कंवर हुए। बालू मरसिंह की दो पत्नियाँ थीं। मंसली स्त्री के गर्भ से बीर मरसिंह नाम बहादुर, बड़ी मरसिंह रत्नाहीर सिंह रत्न छमसर, जगत समसार तथा बीर रामसर नाम के सात पुत्र उत्पन्न हुए। बीर मरसिंह बाब में जंग बहादुर के नाम में प्रख्यात हुए। वह अचिन्तन अपनी तनिहाल में ही रहा करते थे। तनिहाल के लोग उनकी बुद्धि देखकर उन्हें जंग नाम से पुकारते थे। उनकी तनिहाल के लोग बहुत ही बरिष्ठ थे इसलिए जंग को अपनी तनिहाल में भी मूकों रहकर भेड़-बकरियाँ चरानी पड़ती थी।

### जंग बहादुर का बाल्यकाल

अपन पिता की मृत्यु के बाद जंग बहादुर अपने मामा रामाप्रसादी यागा काजी के घर में रहकर विद्यया चढ़ाया करते थे। जंग बहादुर के समयार्मीन मुखराज मुखर्जी विजय शाह बहुत ही उत्कृष्ट प्रशिक्षण के व्यक्ति थे और पुरस्कार रत्न-ज्यवर कुछ न कुछ कौतुक सज्जाया करते थे। जंग बहादुर बचपन में ही सब प्रकार के खेलों में रत रहते थे इसलिए वह मुखराज के उन सभी कौतुकों में विजय प्राप्त करने लगे। जंग बहादुर बड़े गाढ़ी सी थे इस लिए वह पुरस्कार की लाकड़ में अपने प्राणों तथा परगण जाने थे। मुखराज मुखर्जी बीर विजय शाह में एक बिगड़न को घर बहुत रत लड़कों पुत्र को पार करने के लिए

पुरस्कार रक्ता। जंग बहादुर तुरंत ही उस घोड़े पर सवार होकर पुरु को पार कर गये और उन्होंने पुरस्कार पा लिया।

इसी प्रकार युवराज सुरेन्द्र बीर विक्रम शाह ने एक गहरे कुएँ में बूझ के लिए पुरस्कार घोषित किया। उसमें भी जंग बहादुर ने अपने साहस का परिचय बेर पुरस्कार पा लिया। उन्होंने एक प्रमत्त हाथी को भी अपने बग में करके राजकीय पुरस्कार प्राप्त किया।

जंग बहादुर बहुत समयसम प्रकृति के भी व और उनकी युवावस्था कुसंपत्ति में व्यतीत हुई थी। उनका सब साथी भी वैसे ही व और वह अपना अधिक समय जुमा लसुन तथा मखिया-नाग करल में बिताया करता व। जंग बहादुर अपने उन्ही साथियों के साथ कृष्णसुनो में कमे रहल व इसीलिए उन्हें सवा ही पैस के लिए मुहताज रहना पड़ता व। उनके एक पुष्पारी साथी ने उनसे अपने वैसे मांम। वैसे सही पान पर उनके साथी व जंग बहादुर को मारकर बेवम करके एक गन्नी मासी में डकेल दिया। ईबात उसी मार्ग व काठमाण्डू ने एक उदार व्यक्ति जा रहे थे जिसका नाम बमनारायण व। बमनारायण को जंग बहादुर की यह दुर्दशा देखकर बड़ी बया आई और उन्होंने उन्हें मासी व निकालकर जंग बहादुर व जो ऋण लिया था उस चुका दिया। इसके पश्चात् जंग बहादुर बमनारायण के सही रहल लग। बीड़ दिनों के बाद वह तराई में भाग गये। वहां पहुंचकर जंग बहादुर जगन्नी हाथी व व कर धनापार्जन करने लग। तराई में कुछ दिन रहने के बाद वह ऋष के बाध से ऊब कर काशी भाग गये और वहा उन्होंने एक प्रसिद्ध गुण्डे के यहां लौकरी कर ली। वहां वह जूए के अड्ड की दरबानी किया करल थे। ईवान् एक दिन उन्ही के मामिक के बस तथा एक अन्य मुण्डा दल में मारपीट हुआई। उसमें व व बहादुर भी सम्मिलित हायवे। वह उस समय गने में व इसलिये उन्होंने बिरोधी दल के एक व्यक्ति की जान से डाली और जंग बहादुर मदमत्त होकर बनारस छाड़कर नपास की तराई में भाग गये।

### मायबर मिह

उनी समय जंग बहादुर के मामा मायबर मिह लाहौर से बुलाकर नपाल के प्रयाग मंत्री बनाये गये। मायबर मिह व जंग बहादुर की अवस्था बहुत ही दयनीय देखकर उन्हें नपासी सता में एक मूबदार बना दिया। मायबर मिह उन दिना भारतीयों को मंगलित कर के वज्रवी जता को जगाइ फेंकन की तैयारी में थे और इस काम के लिए उन्हें अपने समयकों व सम्पत्त स्थापित करना तथा उनसे विचार-विमर्श करना पड़ता व। मायबर मिह बहुत विद्वामी स्वभाव के व और वह अपने मान्द जंग बहादुर का बराबर आज्ञा मान लिय रहल व। जंग बहादुर व मायबर मिह के सम्पर्क में रहने रहल उनकी प्रत्येक प्रतिबिम्ब को पूरा रूप से समझ लिया था। उन्ही दिना राजमंडारी गगनमिह व सम्बन्ध महाराणी राज्य भरमी देवी न हा गया व और इस प्रकार वह महाराणी के विद्वामन्त्र

बन गया। जंग बहादुर न गगनसिंह का महारानी पर प्रभाव देखकर उसने मित्रता कर ली और वह अपने मामा माधवर सिंह की बातें गगनसिंह को बता देता था।

गगनसिंह अंग्रेजों के विश्वासपात्र थे इसलिए वह अंग्रेजों के अलगाव की सभी बातें ब्रिटिश रेजीडेंट से कह सुनाते थे। गगनसिंह बहुत दरपोक प्रकृति के थे और वह राजन् बीर बिजय शाह को भी माधवर सिंह की अंग्रेज-विरोधी सम्पूर्ण योजनाओं को सुना-सुना कर प्रकम्पित करत रहते थे। गगनसिंह न राजन् बीर बिजय शाह के कल अंग्रेजों को माधवर सिंह की कार्यवाहियों में नेपाल पर प्रभाव के आपत्ति का ज्ञान की समाचना है। साथ ही गगनसिंह न अंग्रेजों के इशारों पर महारानी राज्य लक्ष्मी देवी से माधवर सिंह की हत्या करवा देने के लिए कहा। माधवर सिंह की हत्या करवाने के लिए ब्रिटिश रेजीडेंट न गगनसिंह तथा जंग बहादुर को प्रलोभन दिया और जंग बहादुर अपने मामा माधवर सिंह की मार शासन के लिए उद्यत होगया। १८ मई मन् १८४५ ई० को महारानी राज्य लक्ष्मी देवी ने बीमारी का बहाना करके माधवर सिंह को अपने महल में बुलावाया और उनी समय जब बहादुर ने अपने मामा माधवर सिंह का योनी में उठा दिया। अंग्रेजों का इतने में संतोष नहीं हुआ और ब्रिटिश रेजीडेंट को प्रमत्त करने के अभिप्राय से जंग बहादुर न अपने मामा माधवर सिंह के शव को एक हाथी के पीर में बंधवा कर पशुपति तक भेजवाया। जंग बहादुर के इस कृत्य से महारानी राज्य लक्ष्मी देवी बहुत प्रसन्न हुई और उन्होंने जंग बहादुर को 'कर्नल' का पद दिलावाया।

### प्रथम मन्त्रिमण्डल

प्रधान मंत्री माधवर सिंह की मृत्यु के पश्चात् महारानी राज्य लक्ष्मी देवी ने अपने समर्थक गगनसिंह की प्रधान मंत्री बनाना चाहा किन्तु महाराजाधिराज राजन् बीर बिजय शाह को जंग बीरसिंह को प्रधान मंत्री बनाने के पक्ष में थे। अन्त में भारदार मन्त्रियों ने राजा का अनुष्ठान करने के विचार में चार राजाजी अथवा मंत्री नियुक्त किए। इन प्रकार गगनसिंह तथा जंग बहादुर दोनों को काजी बनवाकर महारानी राज्य लक्ष्मी देवी से उनका समस्त सुम्भ्र तथा राजकुमार उत्तर की हत्या करने के लिए कहा।

जंग बहादुर का जब यह विश्वास होगया कि महारानी राजा राजकुमारों की हत्या करवाकर ही शासक होगी तो उन्होंने महाराजाधिराज राजन् बीर बिजय शाह से सब सम्पत्तियों का उत्पादन बड़ी ही चतुरतापूर्वक कर दिया और महारानी की हत्या का पता न चला गया। राजन् बीर बिजय शाह का जब यह विदित होगया कि महारानी राज्य लक्ष्मी देवी का अनुचित सम्बन्ध गगनसिंह से है तो उन्होंने जंग बहादुर को जाना दिया और वह उनी के द्वारा गगनसिंह की मरवा शासन की योजना बनाने लगे। जंग बहादुर का यह बिना मर्ह मनाया करनी थी कि अन्त में गगनसिंह जीवित रहेंगे तब तक उनी उत्पत्ति का कार्य अन्त ही रहना।

गगनमिह के घर बिजयराज नाम का एक व्यक्ति रहा करता था जो जंग बहादुर के पुराने मित्र था। जंग बहादुर इन्हीं बिजयराज की महायत्ना से गगनमिह की पतिविधि का पूरा पता समाप्त रहन था और १६ मियम्बर, सन् १८४६ ई० को जंग गगनमिह पूजा कर रहे थे तब जंग बहादुर के माफी काकम्पा न उन्हें पाछी मार दी।

गगनमिह की हत्या का समाचार सुनकर महारानी राज्य लक्ष्मी देवी पागल-सी हो गई। पहल उन्हें जंग बहादुर पर संका हुई किन्तु जंग बहादुर ने अपनी चिकनी-चुपड़ी बाजा तथा अनृत्य-विनय से महारानी की संका निमूक मिट्ट कर दी। महारानी राज्य लक्ष्मी देवी की प्रतिहिंसात्मक भावनाएँ बिन नहीं सेन देनी थी इसलिए अपने दिव १५ मियम्बर, सन् १८४६ ई० को महारानी ने जंग बहादुर के मतानुसार मारदार ममा के ममी मरम्भों को राजि में कोन बबबा राजमहल में उपस्थित होन की आज्ञा दी। इसी समय जंग बहादुर ब्रिटिश रेजीडेंट कार्यालय का आदेश लेकर अपने मातो भाइया के साथ जा पहुँच और बाहर कोल को तीन पन्टन मेनिका से घिरवा दिया। महाराजाधिराज राजमहल कीर बिजय राह के समझ पगनमिह की हत्या का प्रमंथ छन गया और महारानी ने सीबार की आज्ञा से कासी अहिमान को आज्ञा दी कि बुजकिमोर पाण्डव को पकडा। इन्होंने ही गगनमिह की हत्या की है। अहिमान राजा ने महारानी की आज्ञा पागल की। बुज किमोर पाण्डव ने जब देखा कि महारानी प्रमंथ से पागल हो गई है तो उहान राजमहल कीर बिजय राह में निबहन किया कि मैं निरपराध हूँ। बुजकिमोर की प्रार्थना सुनकर महा-राजाधिराज ने आज्ञा दी कि बुजकिमोर पाण्डव को समी छोड़ दो। इसका मुकदमा स्यापा-लय द्वारा निर्णीत होगा। यह आज्ञा देकर फनहर्जन चौतरिया के नाम राजमहल कीर बिजय राह बाग के बाहर हो गय किन्तु कोल के बाहर जंग बहादुर की पन्टन देखकर उन्हें संका हुआ और वह उन्नत पैर चलन जा गय। वह गुरल ब्रिटिश रेजीडेंट की धार रवाना हुआ गय। ब्रिटिश रेजीडेंट कार्यालय को सब बातों का पूरा पता पहल में ही था और उसे बन्नी प्रकार यह भी ज्ञान था कि यह सबों उनके पाग विम कारण से भाव है। इसलिए उसने कोठी के बाहर से बहलवा दिया कि हम पुरारानी मंग राजि में किसी मा बिदेसी न भेंट नहीं करन जाओ प्राण नाम जाना।

इपर कोल में महाराजाधिराज की आज्ञा पाकर कासी अहिमान राजा ने बुजकिमोर पाण्डव को छोड़ दिया। इस पर महारानी बाध से व्यथ हो उठी और उन्होंने जंग बहादुर को आज्ञा दी कि बुजकिमोर तथा अहिमान राजा दोनों का काग डाला। उसी समय कासी फनहर्जन चौतरिया भी बाग में जाय और अहिमान राजा जंग बहादुर की पन्टन को दमने के मिण बाहर जाय। जब जंग बहादुर ने देखा कि परिधिपति विपन्नता में उठी है तो वह बाग के बाहर जा गय और राजमहल कीर बिजय राह में सब बुलाने यह मनाया और यह भी मनाय दिया कि हम लोगों का राजा समी हो सकनी है जब बाग महारानी को बंदी बना लें। उपर कोल में फनहर्जन चौतरिया य ही। इसलिए महारानी ने उसन बाध भो

राजा में पूछा कि गयनमिह्र के हत्यारे का पता क्या कि नहीं। इस प्रश्न को सुनकर फतहबंस भीतरिया न कहा कि आप इस मामले को मुझ पर छाड़ दीजिय और मैं बीघातिघीघ हत्यारे का पता लगाकर उसे आपके समक्ष उपस्थित कर दूंगा। महाराजी श्रेय में पागल हो रही थी इसलिए उन्होंने फतहबंस बीनरिया की एक भी न सुनी और वह बार-बार यही कहती रही कि हत्यारे का तुरंत लाकर मेरे सामने लड़ा करो। जंग बहादुर ने देखा कि परिस्थिति भीषणतर होनी पार रही है, इसलिए उन्हें यह मय होने लगा कि जब मैं भी इसी में फँस जाऊँगा। उसी समय अहिमाम राणा ने महाराजी से कोत के बाहर जान की आज्ञा माँगी किन्तु महाराजी ने अहिमाम राणा के तुरंत गोली मार देने की आज्ञा दी। अहिमाम राणा कोल के फाटक तक भी नहीं पहुँच पाये थे कि जंग बहादुर के छोटे भाई रत्नादीप कंबर न अपनी कुकरी से उन्हें घायल कर दिया। अहिमाम राणा ने मूर्च्छित होते-होते यह कह ही दिया कि गयनमिह्र के हत्यारे जंग बहादुर हैं। इस बात का सुनते ही फतहबंस ने भी कहा कि गयनमिह्र की हत्या करन बाल जंग बहादुर ही हैं और यह कहकर वह वहाँ से चला पड़े।

जब जंग बहादुर ने देखा कि वह स्वयं फँस जा रहे हैं तो उन्होंने महाराजी के लम्ब कहा कि इसमें आपकी ओला हा सकता है। साथ ही उन्होंने अपने मिताही राममिह्र अधिकारी को फतहबंस पर गोली चला देने के लिए संकट कर दिया। जंग बहादुर न सकन पाये ही राममिह्र की योसिया फतहबंस तथा उनके समीप ही लड़े दमर्जन पाण्डेय ने शीर न घुस गई और वे दोनों वहीं डेर हो गये। उसी समय जंग बहादुर ने अपने भाइयों को संबोधित कर दिया कि वह फतहबंस के पुत्र लखन बिजय को भी समाप्त कर दें। इन पर भीर रामधर ने लखन बिजय का सर घट न अलग कर दिया।

इसके बाद जंग बहादुर ने अपने सभी मण्डल सेनिका को कोल में बुला किया और वहाँ उपस्थित सभी भारबागों को काट डालने के लिए आज्ञा दे दी। एक घंटे के भीतर सभी भारबाग बा अलग कर दिया गया। इस प्रकार जंग बहादुर ने बापा पाण्डेय शाह बल्लेन भंडारी बिष्ट तथा मयर बाग के सभी श्रेष्ठ पुरुषों का समाप्त करवा दिया और कोल-हत्याशाल में सबको निरपराध श्रेष्ठजनों की अमानुषिक हत्या हुई।

नरसंहार का देनकर महाराजी का हुक्म कुछ साल हुआ और उन्होंने जंग बहादुर की आज्ञा पाये ही जंग बहादुर दानों राजकुमारों का मकर काल में उत्प्लवित हा गये और महाराजी ने मृत भी पारा दिलमाने हुए दानों राजकुमारों का राज्य छोड़कर माग्न भाग जाने की सम्मति दी।

इसके पश्चात् जंग बहादुर ने महाराजी राज्य भरती देवी के मकर दोनों बाल टेक कर यह शपथ ली कि वह जीवन्तपर्यन्त उनकी ही आज्ञा का पालन करन रहेंगे। कोल-हत्याशाल के पश्चात् जंग बहादुर कोल के बाहर भी रत्नपाछ बहो इनकर बहुत ही

भयभीत हो गये और वह रात्रि में ही कोश से निकल भागे। प्रातःकाल होत ही जब महा-  
राणी राज्य लक्ष्मी देवी ने सुना कि जंग बहादुर बरकर कहीं भाग गये हैं तो उन्होंने जंग  
बहादुर को खोजने के लिए चारों ओर अपने सिपाहियों को भेजा। जंग बहादुर छिपकर  
काफी मागि तक पहुँच चुके थे किन्तु महारानी के सिपाहियों ने उन्हें पकड़ लिया और  
महारानी राज्य लक्ष्मी देवी के समक्ष उपस्थित किया। जंग बहादुर को भयभीत दलकर  
महारानी ने कहा कि अब कापुण्य की भाँति क्यों भागते हो जसो में तुम्हें नपाण का  
प्रधान मंत्री बनाली हूँ।

महारानी के कहने पर दूसरे दिन १६ मितम्बर, सन् १८४६ ई० को जंग बहादुर  
महाराजा राज्य लक्ष्मी देवी के पास गये और उनसे अपने को प्रधान मंत्री घोषित  
किये जाने के लिए कहने लगे किन्तु राज्य लक्ष्मी देवी जंग बहादुर को देखकर और  
न चिन्ता उठे और स्वयम् पात्र की मार चले गये। राज्य लक्ष्मी देवी ने जब सुना कि  
महाराजापिंगव जंग बहादुर से बहुत क्रुद्ध हैं तो उन्होंने राज्य लक्ष्मी देवी की कुछ  
भी परवाह न करके १८ मितम्बर, सन् १८४६ ई० को स्वयं ही पट्टन की कबायद में  
सम्मिलित होकर जंग बहादुर को नपाण का प्रधान मंत्री घोषित कर दिया।

प्रधान मंत्री हो जाने के बाद जंग बहादुर में महान् परिवर्तन आया। उन्होंने ब्रिटिश  
रेजीडेंट में घनिष्ठता और भी बढ़ा ली और वह ब्रिटिश रेजीडेंट वाशिंगटन की आज्ञा  
शिरोधार्य करके अपने तथा अंग्रेज-विरोधी तरकों को एक-एक करके बुरा करने लगे।

जंग बहादुर ने वात-हत्याकाण्ड में मारे हुए व्यक्तियों की सम्पत्ति हड़प ली और  
उनके बंशजा को नपाण से निर्वासित कर दिया।

महारानी राज्य लक्ष्मी देवी को अपने पति राज्य लक्ष्मी देवी के मरण  
होने लगा कि वह हमें कोश-हत्याकाण्ड का दण्ड दकर ही रहेंगे इसलिये उन्होंने जंग बहादुर  
से मित्रता अपने बचन का मार्ग बूझ निवासन का निश्चय किया। जब जंग बहादुर ने  
सुना कि महारानी का स्वभाव विचित्र हुआ गया है और पता नहीं वह क्या क्या कर बैठें  
तो वह एक-एक बहाना बरने महारानी की बातों का टाटने लगे। महारानी युवराज  
मुरेन्द्र तथा राजकुमार उदय की हत्या करवाकर अपने पुत्र राज्य लक्ष्मी देवी का  
बनाये जा लगी हुई थी किन्तु जंग बहादुर यह नहीं चाहते थे। वह युवराज मुरेन्द्र की  
बिधायिका की महारानी करके उन्हें गद्दी पर बिठाकर अपने पैर जमाया चाहते थे। जंग  
बहादुर ने जब दगा कि महारानी बड़ी गस्तिगाती हुली जा रही है तो उन्होंने महाराजा-  
बिप्राज राज्य लक्ष्मी देवी के पास अपने भाई राजेश्वरसिंह का पात्र भेजकर  
बुलवा लिया। महारानी राज्य लक्ष्मी देवी को जब यह मर्मा भाँति विदित हो गया कि  
जंग बहादुर बिधायिका करना चाहते हैं तो उन्होंने जंग बहादुर का मरवाकर काशी  
की राज बस्ती को प्रधान मंत्री बनाने की ठानी।

जाना जाता है कि महारानी राज्य लक्ष्मी देवी ने काशी की राज बस्ती से कहा कि



शब्दी म पुछा कि गगनमिह के हत्यारे का पता क्या कि नहीं। इस प्रश्न को सुनकर फतहवंश भीतरिमा न कहा कि आप इस मामले को मुझ पर छाड़ दीजिये और मैं धीरघातिधीर हत्यारे का पता लगाकर उसे आपके समक्ष उपस्थित कर दूँगा। महारानी भोब में पायक हो रही थी इसमिए उन्होंने फतहवंश भीतरिमा की एक भी म सुनी और वह बार-बार यही कहती रही कि हत्यारे को तुरंत लाकर मेरे सामने खड़ा करो। जंग बहादुर ने देखा कि परिस्थिति भीषणतर हुनी आ रही है, इसमिए उन्हें यह भय होत लया कि अब मैं भी इसी में फँस जाऊँगा। उमी समय अहिमान राणा न महारानी से कोठ के बाहर जाने की आज्ञा माँगी किन्तु महारानी न अहिमान राणा के तुरंत गोली मार बन की आज्ञा दी। अहिमान राणा कोल के अटक तक भी नहीं पहुँच पाय ब कि जंग बहादुर के छोटे भाई रणोद्दीप कंवर न अपनी सुकरी स उन्हें बामन कर दिया। अहिमान राणा न मूर्छित हुले-हुले वह बह ही दिया कि गगनमिह के हत्यारे जंग बहादुर हैं। इस बात को सुनते ही फतहवंश ने भी कहा कि गगनमिह की हत्या करने वाले जंग बहादुर ही हैं और यह कहकर वह वहाँ से चल पड़।

जब जंग बहादुर ने देखा कि वह स्वयं फँसे जा रहे हैं तो उन्होंने महारानी के समक्ष कहा कि इसमें आपको बाधा हो सकता है। साथ ही उन्होंने अपने मिपाही राममिहिर मयिहारी को फतहवंश पर गोली चला देने के लिए संकेत कर दिया। जंग बहादुर का संकन पाने ही राममिहिर की गोमियाँ फतहवंश तथा उनके समीप ही लड़े बलभंजन पाण्डेय के दरीर में जुग मई और वे दोनों बही डेर हो गये। उमी समय जंग बहादुर ने अपने भाइयों को संकेत कर दिया कि वह फतहवंश के पुत्र लक्ष्म बिजय को भी समाप्त कर दें। इस पर और रामचंद्र ने लक्ष्म बिजय का सर बंद में बलम कर दिया।

इसके बाद जंग बहादुर ने अपने सभी गणराज सैनिकों को कान में बुला लिया और कहा उपस्थित सभी भारदारों को काट डालने के लिए आज्ञा दे दी। एक बंटे के भीतर सभी भारदारों का अन्त कर दिया गया। इस प्रकार जंग बहादुर ने बापा पाण्डेय दाह बसेत भंडारी बिष्ट तथा मकर बंस के सभी श्रेष्ठ पुरुषों को समाप्त करवा दिया और कोन-हत्याबाण्ड' म मकड़ों निरपराध श्रेष्ठजनों की अमानुषिक हत्या हुई।

नरपंथार का बलकर महारानी का हृदय कुछ थाला हुआ और उन्होंने जंग बहादुर को आज्ञा दी कि पुत्रराज गुंग्रेठ तथा उगेठ का लाकर इस बुध को दिया वा। महारानी की आज्ञा पाने ही जंग बहादुर दातों राजकुमारों को सहर कोल में उपस्थित हो गये और महारानी ने मूल की पारा दियेलात हुए दोनों राजकुमारों का राज्य छोड़कर भाग भाग जान की सम्मति दी।

इसके पश्चात् जंग बहादुर ने महारानी राज्य लक्ष्मी देवी के समक्ष दोनों घुटने टेक कर यह दाव्य भी कि वह जीवन्मर्त्य उनकी ही आज्ञा का पालन करने चाहेंगे। कोन-हत्याबाण्ड के पश्चात् जंग बहादुर कोल के बाहर भी रक्तपात बहान बनकर बहान ही

ममयीत हो गय और वह रात्रि में ही कोत से निकल माने। प्रातःकाल होत ही जब महाराणी राज्य लक्ष्मी देवी ने मुता कि जंग बहादुर डरकर बड़ी मान मये हे तो उन्होंने जंग बहादुर को लोभने के लिए चारों ओर अपने सिपाहियों को भजा। जंग बहादुर छिपकर काली मानी तक पहुँच चुके थे किन्तु महाराणी के सिपाहियों ने उन्हें पकड़ लिया और महाराणी राज्य लक्ष्मी देवी के समक्ष उपस्थित किया। जंग बहादुर को ममयीत देलकर महाराणी ने कहा कि जब कापुरण की भाँति क्यों भागते हो जसो मे तुम्हें नेपाल का प्रधान मंत्री बनाती हूँ।

महाराणी के कहने पर दूसरे दिन १६ सितम्बर, सन् १८४६ ई० को जंग बहादुर महाराजा राजेन्द्र बीर बिजय शाह के पास गय और उसने अपने को प्रधान मंत्री घोषित किया जाने के लिए कहने लगे किन्तु राजेन्द्र बीर बिजय शाह जंग बहादुर को बलकर और मे जिम्मा उठे और स्वयम् पाटन की ओर चले गये। राज्य लक्ष्मी देवी ने जब मुता कि महाराजाधिराज जंग बहादुर ने बहुत कुछ हे तो उन्होंने राजेन्द्र बीर बिजय शाह की कुछ भी परवाह न करके १८ सितम्बर, सन् १८४६ ई० को स्वयं ही पटन की कबायद में सम्मिलित होकर जंग बहादुर को नेपाल का प्रधान मंत्री घोषित कर दिया।

प्रधान मंत्री हो जाने के बाद जंग बहादुर में महान् परिवर्तन आया। उन्होंने ब्रिटिश रेजीडेंट से अनिच्छता और भी बढ़ा ली और वह ब्रिटिश रेजीडेंट कालबिन की आज्ञा शिरोधार्य करने अपने तथा अंग्रेज-विरोधी तत्वों को एक-एक करके कुचलने लगे।

जंग बहादुर ने कोत-हुवाकाण्ड में मारे हुए व्यक्तियों की सम्पत्ति हथप ली और उनके वंशजों का नेपाल से निर्वासित कर दिया।

महाराणी राज्य लक्ष्मी देवी को अपने पति राजेन्द्र बीर बिजय शाह से भय होने लगा कि वह हमें कोत-हुवाकाण्ड का दण्ड देकर ही रहेंगे इसलिए उन्होंने जंग बहादुर से मिलकर अपने बचने का मार्ग ढूँढ़ निकालन का निश्चय किया। जब जंग बहादुर ने देखा कि महाराणी का स्वभाव बिचित्र हो गया है और पता नहीं वह क्या क्या कर बैठे तो वह एक-न-एक बहाना करके महाराणी की बातों को टालने लगे। महाराणी मुबराज मुरैय तथा राजकुमार ज्येष्ठ की हत्या करवाकर अपने पुत्र रत्न को जयन्ती रात्रा बलान पर तुली हुई थी किन्तु जंग बहादुर यह नहीं चाहते थे। वह मुबराज मुरैय बीर बिजय शाह की सहायता करके उन्हें गद्दी पर बिठाकर अपने पैर जमाता चाहत थे। जंग बहादुर ने जब देखा कि महाराणी बड़ी चालिलाली इत्नी का छी है तो उन्होंने महाराजाधिराज राजेन्द्र बीर बिजय शाह के पास अपने माई रघाहीरामिह को पागल भेजकर बुलवा लिया। महाराणी राज्य लक्ष्मी देवी का जब यह मली भाँति बिदिन हुआ गया कि जंग बहादुर बिचलमान करता चाहत है तो उन्होंने जंग बहादुर को मरवाकर काजी और पञ्च बन्धन का प्रधान मंत्री बनाने की ठानी।

बताया जाता है कि महाराणी राज्य लक्ष्मी देवी ने काजी बीर बन्धन से कहा कि

वह इस तरह का एक पर्वत्र रथ कि वह जंग बहादुर और उसके भाइयों को साथ लेकर युवराज और उसके भाई राजकुमार के महल में सोव और रात्रि में दोनों राजकुमारों को हत्या करने का आदेश और हत्या का अभियोग जंग बहादुर तथा उनके भाइयों के लिए बढ़ा दे।

जंग बहादुर ने गणसिंह राजमंडारी की हत्या समनसिंह के अनन्य साथी पंडित बिजयराज की ही सहायता से की थी। तभी से जंग बहादुर और बिजयराज में बहुत घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित हो गया था। महारानी राज्य लक्ष्मी देवी के राजमहल में अनेक दानियाँ रखा करती थी और उन दानियों में बिजयराज का घनिष्ठ सम्बन्ध था। जंग बहादुर ने बहुत पर बिजयराज महारानी के राजमहल की लहरें प्रतिदिन जंग बहादुर को दते रहते थे और एक दिन जब बिजयराज को एक दानी द्वारा यह पता चल गया कि महारानी राज्य लक्ष्मी देवी जंग बहादुर का भी मरवा कामना चाहती है तो उन्होंने जंग बहादुर को सावधान कर दिया।

### सुरेन्द्र और विक्रम शाह

महारानी राज्य लक्ष्मी देवी ने निश्चय किया कि एक दिन जंग बहादुर तथा उनके सभी भाइयों का दरबार में बुलाया जाय और वही उन सबों का नप करवा दिया जाय। ऐमत् २ नवम्बर सन् १८४६ ई० को महारानी राज्य लक्ष्मी देवी ने अपने महल में कुछ सैनिकों को पहले से ही नियुक्त करके जंग बहादुर तथा उनके सभी भाइयों को बुला मंत्रा। जंग बहादुर को मार डालने की सूचना युवराज सुरेन्द्र और विक्रम शाह को भी थी इसलिए वह भी जंग बहादुर की सहायता करने के लिए पूरी तैयारी में थे। महारानी ने भी रथ चढ़ कर जंग बहादुर तथा उनके भाइयों को बलात्कृत के लिए भेजा। महारानी का बलात्कृत मन ही जंग बहादुर अपने भाइयों तथा राजकुमार उग्र और विक्रम शाह को लहर भी मजबूत सैनिकों के साथ राज्य-प्रसाद में जा पहुँच। जंग बहादुर ने जब देखा कि राजमहल में उन्हें तथा उनके भाइयों को मार डालने के लिए सैनिक प्रस्तुत हैं तो उन्होंने अपने सैनिकों का यह आदेश दे दी कि सब को तुरंत मार डालो। जंग बहादुर की आज्ञा पाने ही उनके सैनिकों ने महल में छिपे हुए सभी सैनिकों का मारना प्रारम्भ कर दिया और कुछ ही क्षण में लगभग तेरह व्यक्ति मारकर हार कर दिए। यह हत्याकाण्ड 'महाराज-हत्याकाण्ड' के नाम से प्रसिद्ध है। इसके पश्चात् महारानी लक्ष्मी देवी को बन्धनी बना लिया गया। युवराज सुरेन्द्र और विक्रम शाह ने महारानी को अपने भ्रम-भोग के लिए बाधन मान रूप में दत्त २३ नवम्बर, सन् १८४६ ई० को बनारस भेज दिया। राज्य लक्ष्मी देवी के साथ महाराज-भित्त राजेन्द्र और विक्रम तथा राजकुमार उग्र तथा बीरेश भी बनारस चले गए। इस प्रकार जंग बहादुर लक्ष्मी देवी और युवराज सुरेन्द्र और विक्रम शाह का अपने हाथ की बन्धुनता बनाकर मेनास के सर्वे सर्वा नष्ट हो गई।

जंग बहादुर ने 'कोत-हरयाकाण्ड' तथा 'मेडारवास-हरयाकाण्ड' में सभी योग्य मासकों की मृत्यु के बाद अपने माई बम बहादुर कंबर को उपप्रधान मंत्री बन्नी नरसिंह कंबर का मन्त्रपति कृष्ण बहादुर कंबर को सामन प्रवक्ता तथा जगत रायधर तथा धीर रामधर को मंत्री बनाया। इनके अतिरिक्त उन्होंने अपने माईयों के सभी पुत्रों तथा भतीजों का जन्म बनाया और पुराने राजगुरु के बच का हुंदाकर अपने मित्र पंडित तथा उनके सम्बन्धियों का राजगुरु और राजपुत्रोहित के पदा पर विमूषित किया। इस प्रकार जंग बहादुर ने अपने परिवार के सब सदस्यों तथा समर्थकों का एक बाण-मा फैलाकर नेपाल की राजनीति का अपनी व्यक्तिगत बन्धु बना लिया और चीर-बीरे अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भी नाम कमाने लगे।

### जंग बहादुर की विदेश-यात्रा

बनारस पहुँचकर महाराजाधिराज राजेश्वर बीर विक्रम शाह को बहुत पदमातल हुआ और उन्होंने अपने दो मित्राहियों को पितृभूमि लेकर जंग बहादुर को मारने के लिए काठमाण्डू भेजा। बहादुर ही दोनों मित्राही पकड़ लिया गया और जंग बहादुर ने मार दारा तथा अन्य सामकों आदि तीन सौ सत्तर व्यक्तियों के हुंदाकर लेकर राजेश्वर बीर विक्रम शाह के पास एक बमझी-भरा पत्र भेजा कि इस की सम्पन्न प्रजा तथा भारशरी इत्यादि सब मुबराज सुरेन्द्र बीर विक्रम शाह को अपना महाराजाधिराज बनाने का निश्चय कर लिया है। इस पत्र को दलाल ही राजेश्वर बीर विक्रम शाह बहुत जल-मुल गये और वह अपनी बोझी-सी नया सेना काठमाण्डू के लिए चल पड़े। नेपाल की तराई में जंग बहादुर ने पहले से ही राजकुमार उपेन्द्र बीर विक्रम शाह के अभिषेकस्थ में चार हजार सैनिक नियुक्त कर रखे थे और २८ अर्थात् मन् १८४६ ई० की ज्यों ही राजेश्वर बीर विक्रम शाह की सेना बहादुर की सेना ही राजकुमार उपेन्द्र बीर विक्रम शाह ने उस पर आक्रमण कर दिया और अनेक मित्राहियों को मारकर बहनों को भगा दिया। इसके बाद राजकुमार उपेन्द्र बीर विक्रम शाह ने अपने पिता राजेश्वर बीर विक्रम शाह को बंदी बनाकर काठमाण्डू भेज दिया और १० मई मन् १८४६ ई०, का जंग बहादुर ने मारदार्गे के द्वारा उन्हें पराभूत करके चालाक के क्रिये में जीवनार्पण बन्दी बना इन की सम्पत्ति बंदी। इसके बाद जंग बहादुर ने सुरेन्द्र बीर विक्रम शाह को महाराजाधिराज घोषित कर दिया। जंग बहादुर बहुत ही कम शिक्षित होने हुए भी बड़े दुर्गमों से और उन्हें शिक्षित साम्राज्य की शक्ति का पूर्ण ज्ञान था। उन्हें अपनी नीति और कूटनीति पर पूरा भरमा था और स्वयं छोटकर बाहर जाने में उन्हें बच भी आसंका नहीं हुई। वह बहाने ही इन्धोमान के मास १५ अर्थात् मन् १८५० ई० का आने पाई अपने रामर और धीर रामर तथा चासीम आर्यार के साथ इंग्लैंड चले गए। इंग्लैंड में जंग बहादुर ने महारानी विक्टोरिया के लेकर साधारण से साधारण व्यक्तियों को प्रभावित किया और पाँडे ही दिनों में उन्होंने

मभी महान् व्यक्तियों में चनिष् गणक बड़ा मिया । इनके बाद महाराज जंग बहादुर बही में प्रथम तथा स्विटजरलैंड भी गये । काम में उन्होंने एक लाख सैनिकों की परख भी रखी ।

भारत लौटकर उनके दम में प्रायश्चित्तस्वरूप रामस्वरम् तथा काशी भावि तीर्थ-स्नाना के दमन किये । इस प्रकार एक वर्ष विशाल भ्रमण के पश्चात् ६ फरवरी सन् १८५१ को जब बहादुर नपास बापस लौट और अपने माई बम बहादुर से अपना कर्मभार लेकर फिर दामन करने लगे । यूरोप में बापस आने के बाद उनकी शासन-प्रवृत्ति परिवर्तित हो गई और वह कौम का कानून पसन्द बनाने में रुचिबद्ध हो गये ।

राजकुमार उपेन्द्र वीर विक्रम शाह ने जब बहादुर के भाई बड़ी नरसिंह तथा उनके छोटे पुत्र जय बहादुर कबर को मिलाकर महाराज जय बहादुर को आतिथ्य तथा पद ध्युत करने का प्रयास किया ।

इस पर महाराज जंग बहादुर ने राजकुमार उपेन्द्र वीर विक्रम शाह पर गुरेन्द्र वीर विक्रम शाह को हटाकर उनके भाई बड़ी नरसिंह कबर तथा उनके छोटे कबर भाई जय बहादुर कबर इत्यादि की सहायता में स्वयं नेपाल का महाराजाधिराज बनने का दावा प्रस्तुत किया । इसी बहाने उन्होंने गुरेन्द्र वीर विक्रम शाह द्वारा राजकुमार उपेन्द्र वीर विक्रम तथा बड़ी नरसिंह तथा जय बहादुर कबर को नेपाल से निर्वासित करके प्रयाग के दुर्ग में बन्दी बनवा दिया । कुछ दिनों के पश्चात् इलाहाबाद के किले में जय बहादुर कबर की मृत्यु हो गई और राजकुमार उपेन्द्र वीर विक्रम शाह तथा बड़ी नरसिंह मुक्त कर दिए गये । जय बहादुर ने कुछ काल स्पष्ट प्रताप का प्रकोपन करके उपेन्द्र वीर विक्रम शाह का अपनी मुट्ठी में कर लना चाहा किन्तु राजकुमार ने उन्हें स्वीकार नहीं किया ।

प्रधान मंत्री जय बहादुर को उनकी कमजोरी का भंडाफोड़ करने वाले करबीर दाक्षिण में बड़ी आसक्ति थी । इसलिए उन्होंने एक आशान द्वारा करबीर का बहुत अनारद कराया और अन्त में उसकी हत्या भी करवा दी । ब्रिटिश रेजिडेंट का अग्रमान करने के अनुरोध में जय बहादुर ने बल्लभ अमृत नामक एक राष्ट्राभिमानी युवक को बाँड़ की टांग में बांधकर पण्डितबाबू मरवा डाला ।

उन्हात अपने बम बाबा के नाम के गाव मयन काशी कबर की उपाधि छाड़कर 'गंगा' की उपाधि गंगाता प्राप्त किया और तभी से गंगा बंस प्रकाश में आया ।

महाराज जय बहादुर बहुत अनुमयी तथा व्यवहारगुणक व्यक्ति थे । उन्होंने अपने भाग्या तथा मर्जाबा के विवाह बुकीन बाँगे में करके अपना विवाह बुट्टे राज्य की बग्या तथा पुत्र प्रताप दाट कोलरिया की पुत्री राजकुमारी हिरण्यमर्मा रानी से किया । उन्हात अपने गुरु पुत्र जयन जय तथा माता पुत्र रीत जय का विवाह महाराजाधिराज गुरेन्द्र वीर विक्रम शाह की पुत्रिया में करके अपने गंगा और महाराजाधिराज के साथी परिवार को मिश्रित कर दिया ।

प्रधान मंत्री ने बाद ही समय में छोटी परिवार का अपने बच में कर लिया। उन्होंने महाराजाधिराज मुरमुर बीर बिजय राह में स्वयं जीवनपर्यन्त प्रधान मंत्री बने रहन का पंचात्र जितना लिया और अपने भाइयों को संपुष्ट रहन के लिए प्रधान मंत्री पद के लिए पिता से पुत्र को मिलन के बजाय बड़े भाई ने छोटे भाई का कम में प्राप्त होन का नियम बनाया। इस प्रकार उन्होंने 'राजाभाही की नींव मुद्द की। इसके बाद जंग बहादुर ने महाराजाधिराज मुरमुर बीर बिजय राह में 'भाऊ मोहुर' भी प्राप्त करनी और अपनी दण्डालुमार किसी को भी हटान तथा नियुक्त करन का संपूर्ण अधिकार स्वयं ले लिया।

बीनी मग्राद की दक्षिण दलकर जंग बहादुर में १० फरवरी मनु १८५५ ई० को ईस्ट इण्डिया कंपनी ने जी-मूर्ती एक समिति की। छोटे भाई जंग बहादुर को संपुष्ट रहने के लिए उन्होंने १ जगस्त मनु १८५६ ई० को प्रधान मंत्री पद में त्यागपत्र दकर जंग बहादुर को प्रधान मंत्री बनाया और वास्की तथा लम्बुंग की जमीनें प्राप्त करके अपने नाम के भाप महाराज की उपाधि लाई।

जंग बहादुर की मृत्यु के बाद जंग बहादुर ने नियमानुसार जंग बहादुर के छोटे भाई का प्रधान मंत्री का पद न दकर स्वयं फिर से संपात के प्रधान मंत्री बन गये।

### भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम

मनु १८५७ ई० में अंग्रेजी सत्ता की उन्माद फैलन के लिए जब भारत में प्रथम स्वातन्त्र्य-युद्ध नामा साहस पलवा आदि न छोड़ा तो जंग बहादुर ने 'मिर्जाही बिग्राह' को कुचलन के लिए अंग्रेजों की महायत्ना करन का निश्चय किया। मारणा की ममल्ल मना तथा आरवार इस सीति के घोर विरोधी थे। उन्होंने जंग बहादुर का मार डालन की योजना बनाई किन्तु इतिहास गीरेन की 'पूत नीति' के फलस्वरूप जंग बहादुर की बिजय हुई और अगस्त मनु १/५७ ई० में तीस हजार मोरम सैनिकों को बिजय हाथर भारतीय बिग्राही दण्डमन्त्रों के बिगड अंग्रेजी सत्ता की रस्ता करन के लिए मारन जाना पड़ा। जंग बहादुर को मारणा पच्छन का स्वयम् भी भारतीय बिजयकारियों में मिला जान की आज्ञा थी। मराठी सैनिकों का लकर जंग बहादुर ने हिन्दुभा के पवित्र धाम अयोध्या हाथर मर कोलिन कैम्पबेल के साथ ललनऊ की ओर प्रयाण किया। दिसम्बर, मनु १८५७ ई० में जंग बहादुर ने लपाप में मो हाथर और मारणा सैनिकों की बलबादा और अदरम फैलन तथा राजास के साथ बनारस के उत्तर तथा अक्ष के पूर के बिजयकारियों की दबान के लिए पाठा बाणा।

२५ फरवरी मनु १८५७ ई० को जंग बहादुर की मना न अंग्रेजी मना के साथ पापन नदी पार करके अम्बापुर दुग पर आजमन किया और पचासों बिजय कारियों का घोली में मारकर दुर्ग पर अदना अधिवास जमाया। मार्च के द्वितीय मग्राह में जंग बहादुर और कैम्प की मनाओं न पूर्व की जाग में गया मर कापिन कैम्पबल की

मना न पश्चिम में कानपुर की ओर न लखनऊ पर हमला किया। जबकि के विप्लव  
कारिया न सन् १८५८ ई० का जब से नवम्बर तथा सन् १८५९ ई० के नवम्बर से १८६०



महाराज जंग बहादुर

के अंग्रेज तक अंग्रेजों के हाथ लगे हुए। अंग्रेजों में विप्लव हारकर भारतीय विप्लवकारियों  
की भारत में मादकर नवान में घातक लेनी पड़ी। विप्लवकारियों के मना माना नाहक

एवं बाबा साहेब भारि ने अंग्रेजी सत्ता को उखाड़ फेंकने के बाद नेपाल-राज्य को भारत का भी अधिनायक मानन का बचन दिया। तब भी जंग बहादुर को निर्मोह होकर इन्हें सरल देने का साहस नहीं हुआ। उन्होंने कूटनीति से काम लिया और कतिपय बातों की धंढेबाँ को मौपकर अधिनायक को नेपाल छोड़ दिया तथा पहाड़ों में छिपा दिया। नेपाली जनता ने विद्रोहियों के साथ अच्छा व्यवहार किया और वे काफी अरम तक नेपाल में रहे। महाराज जंग बहादुर ने माता साहेब पक्षपा आदि को कुछ गाँव और पेन्शन आदि भी दिये।

नेपाली राजा ने मदर को दवाने में तत्परता से अंग्रेजों की सहायता की जिससे प्रसन्न होकर ब्रिटिश सरकार ने जंग बहादुर को 'सर' की उपाधि दी। अग्रेस बन् १८७२ में बीप के बादमाह ने भी उन्हें उपाधि दी।

जंग बहादुर ने अपनी तीन पुत्रियों का विवाह महाराजाधिराज सुनेत्र वीर विक्रम साह के पुत्र दुबराज श्रीलोक्य वीर विक्रम साह से करके उन्हें अपने वस में कर लिया।

महाराज जंग बहादुर धुल्लाकोशी तथा सक्तिखाली से। उन्होंने समग्र देश के लिए एक ऐसा कानून बनाया जो कानून एवं परिस्थिति के अनुसार बढ़ा ही अनुकूल माना जाता रहा। उन्होंने नेपाल में तीस वर्ष तक शासन किया और अपने तथा अपनी सत्ताओं के लिए अनुम सम्पत्ति तथा हीरे-जवाहरात आदि जमा किये।

राजेन्द्र वीर विक्रम साह तथा राज्य सरसी देवी के आपसी मतभेद से जंग बहादुर ने काफी फायदा उठाया। उन्होंने अपने वीर्य और साहस का परिचय देकर देश की मनोबुद्धि को अभिमूत कर लिया। अंग्रेजी सरकार को भी इस क्रान्ति-काल में जंग बहादुर को परबान का अच्छा मौका मिला।

साठ वर्ष की अपनी अस्तित्व अवस्था में वह नेपाल की तराई में सिकार लेखने जाये और पञ्चरत्ना नामक स्थान के आसपास २५ फरवरी, सन् १८७७ ई० को उनकी मृत्यु हो गई। महाराज जंग बहादुर के राज की शायमती तब पर लाया गया जहाँ उनकी शर्मपत्नी महारानी हिरण्यगर्भा देवी अपने पति के साथ मरी हुई। उनके साथ ही अन्य विराजों पर दो अधिवाहिता रत्निका भी मरी हुई।

### रम्पोहीपनिह

महाराज जंग बहादुर की मृत्यु के पश्चात् उनके पाँचवें छोटे उत्तराधिकारीपनिह राजन वर्ष की आयु में प्रधान मंत्री तथा धीरे धीरे समस्त मेनापति हुए। धीरे धीरे स कई लड़ाइयों में विजय प्राप्त करके बाकी नाम बताया। कार्तिक सन् १८८४ ई० में उनकी मृत्यु हो गई। मरते समय मेनामी धीरे धीरे स अपने सत्रह पुत्रों का 'विपकी तम्पार'— जेम्हा दरबार का उपदेश दिया और इसका फायदा उनके सभी पुत्र जीवनपर्यन्त करने रहे।



प्रधान मंत्री रणोद्दीपसिंह रागी तथा सतामहीन थे। वह योग्य शासक भी नहीं थे। शासन में कमजोरी आने के कारण उनके भाई और उच्चाधिकारी आदि असंतुष्ट थे और वे सनका हुंकार योग्य शासक चाहते थे। परिस्थिति से साम उठाकर जंग बहादुर के पुत्रों ने भीर रामधर के सभी पुत्रों को समाप्त कर शासन का पर्यन्त रखा। पर्यन्त के जयुषा जगत जंग तथा यज्ञ प्रताप जंग थे। भीर रामधर की मतानों का इसका पता लग गया और वे रणोद्दीपसिंह के पास गये किन्तु उन्होंने उनकी बात नहीं सुनी। परिणामस्वरूप भीर रामधर के पुत्रों ने रणोद्दीपसिंह तथा जंग बहादुर के पुत्रों की हत्या का पर्यन्त किया। महाराजा विराजपुष्पी भीर बिजय दाह की माता भी पाच महाराणी की छोटी बहन काशी मेवा लक्ष्म रामधर की मौसी थी और वह रणोद्दीपसिंह की हत्या की साजिश में शामिल होकर लक्ष्म रामधर को प्रधान मंत्री के रूप में देखना चाहती थी।

२२ नवम्बर, सन् १८८५ ई० को लक्ष्म रामधर जम्बर रामधर तथा भीम रामधर ने एक साथ ही बूढ़ रणोद्दीपसिंह का सोकी का निधान बनाया। इन्हीं तीन गोक्तियों के निधानों ने इन रामधरों का प्रभुत्व कायम किया। इसके कुछ ही दिनों के बाद जंग बहादुर के पुत्र जगत जंग तथा उनके बड़े पुत्र यज्ञ प्रताप जंग की भी हत्या कर दी गई।

इन समय नेपाल में शक्ति का ही बोझासा था और प्रधान मंत्री ने पर के उत्तराधिकारी का रूप बिच्छिन्न हो गया था जिससे राज्य-लाभी किसी को भी हास लग सकती थी। भाम्ने ने भीर रामधर का साथ दिया और जनरल लक्ष्म रामधर ने अपने मौलिक भाई भीर रामधर को प्रधान मंत्री बनने में मदद की।

रणोद्दीपसिंह के लगभग आठ लाख के शासन-काल में शासन सम्बन्धी कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं हुआ और उनके स्थिर बराबर पर्यन्त की ही भूमिका तैयारहानी रही और शासन के बिगोधी प्राचरण और कठिन दण्ड के भागी हुए रहे।

### भीर रामधर

भीर रामधर मेवापति जनरल भीर रामधर के सबसे बड़े पुत्र थे। जंग बहादुर ने उन्हें अठारह वर्ष की ही अवस्था में नेपाल सरकार का प्रतिनिधि बनाकर कमलते भेजा था। रणोद्दीपसिंह की मृत्यु के पश्चात् भीर रामधर तेजीव कार्य की अवस्था में नेपाल में प्रधान मंत्री हुए। उन्होंने सर्वप्रथम रणोद्दीपसिंह द्वारा बन हुए रोल्वाङ जंग की वारिज किया और उच्च बिमात्रा के कमचारियों को इधर से उधर किया। उन्होंने जगत जंग के साजिशों को नेपाल में निर्वाहित किया और उनकी मण्डलि भी जगहन कर ली। इसके कुछ ही दिनों बाद भीर रामधर और लक्ष्म रामधर में भी मतभेद हुआ गया और लक्ष्म रामधर को स्वदेश छोड़ देना पड़ा। भीर रामधर ने त्रैलोक्य और बिजय दाह की बड़ी महाराणी को भी निर्वाहित किया और उन्हें अधिकृत महाराणी बना कर रखा। महाराणी की दयनीय

बापिक बसा बेलकर उद्यमपुर के महाराजा फलहिमिह न उनके लिए दारहू हूबार रुपय बापिक भल की व्यवस्था कर दी।

फरबरी मन् १८८८ ई० में बीर रामसेर काउमछय साइ इच्छिन म मिथने कम्कल गय। मपाक बापम आकर उन्हीने अपनी न पुनिया न विबाह पुच्छो बीर बिजम गाह म क्रिय। मन् १८८९ ई० में बीर-मपाक न उहें नृङ्ग-सिङ्ग-मा-क्यूको-काङ्ग-बाङ्ग मियाङ्ग की उपाधि दी। मन् १८ ० तथा १/९० ई० में उन्हे ब्रिटिश सरकार से भी दो उपाधियाँ मिली।

मन् १८९७ ई० में बीर रामसर ने भारतीय सेना के बड़ेज मन्तवसि का कामगाहू आर्म्बित किया। यह मपाक के इतिहास म सर्वप्रथम जबरन का जब नेपाली सेना का निरीक्षण एक विदेशी मन्तवसि न किया।

मन् १८९९ ई० म बीर रामसर काइ नरेंद्र से मिठने पुन कसकसे मये। उनसे शासन-काज में विद्यत के लिए ममक का निर्यात कुछ दिना के लिए एक आम के कारण मपाक बीर विद्यत में मंचय की संभावना उत्पन्न हा गई किन्तु कुछ ही दिनों के बाद यह सगड़ा घान्त कर लिया गया।

महाराज बीर रामसर न सोसह वर्ष तक शासन किया। उन्हीने अपने अवैधानिक पुत्र जक रामसर दइ रामसेर, तेज रामसर तथा प्रताप रामसर आदि का राज्यवासे बर्ग म सम्मिलित कर लिया। उन्हीने पांच विद्याधिया का ईजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करन के लिए आपान भजा। बीर अस्पताल बीर पुष्पकाश्य घंटाघर, कुर्मीबागो का पुक तथा घान दरबार उनके समय में बने। कपों का अनुमान है कि उन्हीन चार-पांच करोड़ रुपय जबरन तथा हीरे-जवाहरात अपन लिए इकट्ठ किया।

### देव रामसेर

महाराज बीर रामसेर के परवान् बीर रामसर के पुत्र देव रामसर मपाक के प्रधान मंत्री हुए। वह सरल और शांत प्रकृति के व्यक्ति हान के कारण रामक के पुर्गों म मजबूत बंशिन थे। राजा बंस के इतिहास में यह वह समय था जब महाराज जय बहादुर तथा उनके भाइयों की मरतनें प्रधान मंत्री पद का जमाबन्धि में जाल के लिए एक दूसरे की जड़ कीर्तन में ही व्यस्त रही। इस समय की जड़ महाराज जय बहादुर न ही गोरो की जिन्हीन प्रधान मंत्री पद का उत्तराधिकारी अष्ट पुत्र न इतान गान्-मरमण के जम से बांध दिया था।

देव रामसर की अयोध्या से जइ रामसर न नाम उठाया। २६ जुन १ ०१ ई० का दिन एक पाह्यव के लिए निरिखत जया और फलह रामसर कुर्गो रामसर तथा मन्हीन रामसर की मजायना म जय रामसर म देव रामसर का बन्दी बनवा दिया। नम नाम में जइ रामसर के छोटे भाई भीम रामसर न भी मजायना की। जल में महापराधिराज पुच्छी बीर

बिक्रम दाह को चन्द्र शमशेर को प्रधान मंत्री मान लेता पड़ा। चन्द्र शमशेर न देव शमशेर को बन्दी करके धनकुटा भेजा और वहाँ से कुछ दिन बाद मसुरी चले गये।

### चन्द्र शमशेर

महाराज जब बहादुर ने छोटे भाई जनरल भीर शमशेर के पुत्र जनरल चन्द्र शमशेर अष्टौम वर्ष की अवस्था में २६ जून सन् १९१६ ई. के दिन नेपाल के प्रधान मंत्री हुए। उनके छोटे भाई जनरल भीम शमशेर प्रधान मंत्री तथा व्यूट पुत्र मोहन शमशेर सेक्रेटरी जनरल हुए। महाराज भीर शमशेर के पश्चात् जनरल खड्ग शमशेर को प्रधान मंत्री पद का उत्तराधिकार प्राप्त था किन्तु भीर शमशेर और चन्द्र शमशेर ने उन्हें प्रधान मंत्री नहीं होने दिया। प्रधान मंत्री होते ही चन्द्र शमशेर ने देव शमशेर, छठह शमशेर तथा बहेन्द्र शमशेर आदि को बहुत तंग किया। उन्होंने देव शमशेर के ऊपर बनारस-व्यापारमय में शांति करने का मुकामा भी बाहर किया किन्तु व्यापारमय ने देव शमशेर आदि को निर्दोष घोषित कर दिया। उन्होंने बहेन्द्र शमशेर को भी जल में डाल दिया और वही उनकी मृत्यु हो गई।



चन्द्र शमशेर  
(बीनी पोस में)

चन्द्र शमशेर पृथ्वी और बिक्रम दाह के कुमामरी प और वह अपने दिव की बात किसी प्रकार भी प्रकट नहीं करते थे। वह महाराजा विराज को बिलामी बनाकर जम-जम्पक में सर्वथा बंजित किए हुए थे और उन्हें किसी बिदेसी में भी मिलने का अवसर नहीं दिया जाता था। शाही परिवार इस कठनीति का रहस्य समझने हुए भी कुछ भी करने में

असमर्थ था।

सन् १९१६ ई. में नेपाली प्रतिनिधि की नियुक्त में चन्द्र शमशेर दिल्ली सरकार में सम्मिलित हुए। वह २५ जनवरी सन् १९०४ ई. को साईं कर्बन में मिलन बलकल गये। इसी वर्ष बीम म एक निष्पक्षक आया विगत महाराज जब बहादुर की भाति चन्द्र शमशेर का भी पुत्र विद्व-विद्व-सा-जपू-जो-बाहु-बाहु-मियाहु की उपाधि प्रधान की विराज अर्ध अधिपति सब बाधा में और सब विरथा में पारम्य सुपाय्य मेलाप्य तथा महाराजा होता है।

नान म विद्वि माप्राप्यवाद के प्रभाव का देगवर कतामा की सरकार का सारा

हुई और इसका निराकरण बल्क समझेर ने जून सन् १९०४ ई० में तिब्बत के दलाई लामा को एक व्यक्तिगत बिट्ठी लिखकर किया। उन्होंने तिब्बत सरकार तथा अंग्रेजी सरकार के बीच की गलतफहमी को दूर करने का सफल प्रयास किया और दोनों सरकारों नेपाल सरकार की नीति का समर्थन करने लगी। बल्क समझेर ने मजम्बर, सन् १९०६ ई० में भारत के सेनापति लॉर्ड किचनर को काठमाण्डू आमंत्रित किया। सन् १९०७ ई० में कलकत्ते जाकर उन्होंने बाइमराय लॉर्ड मिन्तो से बैठ की। सन् १९०८ ई० में वह इंग्लैण्ड गये। संतान में सम्पाद एडवर्ड सन्तान ने बल्क समझेर का स्वागत किया और उन्हें जी जी सी तथा आर जी सी सी को उपाधियो दी। बल्क समझेर ने यूरोप में कई प्रकार की सरकारों की रीति और उनके विषय में काफी जानकारी भी हासिल की। उन्हें इंग्लैण्ड की सरकार सबसे अच्छी लगी और वह तत्काल को ही उसी के आचार पर अपना काम को चला करने लगे। बल्क समझेर ने फ्रांस सिटिडरलेण्ड आदि का भी ६ मास तक भ्रमण किया। स्वदेश लौटने पर उन्होंने महापद्मविराज को खोल की चिट्ठी लिखना करके उसको सब प्रकार से सन्तुष्ट और प्रसन्न रखने की चेष्टा की। सन् १९११ ई० में उन्होंने ब्रिटिश सम्पाद जार्ज पंचम के साथ ठोरी के जंगल में सिकार लका और सिकार के प्यारह दिनों में सम्पाद को अपना विश्व बना लिया और उनके दिम में यह विश्वास जमा दिया कि राजा परिवार अंग्रेजी हुकूमत का गरीब साथ देगा।

पुन्नी कीर बिस्म साहू जी मृत्यु सन् १९११ ई० में युवावस्था में हुई। कहा जाता है कि बल्क समझेर ने उसको इतना बिलामी बना दिया था कि उसी के कारण उन्हें अपने प्राणों से भी हाथ धोने पड़े। इसके पश्चात् मृत्यु भिम्बुवन कीर बिस्म साहू महापद्मविराज समक्ष गये। उन्हें श्रेष्ठ को पाकर बल्क समझेर और श्री शक्तिप्रभाती हो गये और वह बहुत ही इतमीनान के साथ राजतन करने लगे।

सन् १९१२ ई० में व्यापारियों को स्थापना और व्याप-सठिन में परिवर्तन हुआ। इसने केन्द्रीय प्रशासकीय संरचना का रूप दिया और गठान्तर आदि पर नियंत्रण होना लगा।

६ जनवरी सन् १९१४ ई० का यूरोपीय प्रथम महायुद्ध छिड़ने का समाचार काठमाण्डू पहुँचा। बल्क समझेर ने बाइमराय से तुलना ही सैनिक महामता देन की इच्छा प्रकट की और ब्रिटिश सरकार ने उसे तत्काल स्वीकार कर लिया। पहले ९ हजार परन्तु सैनिकों की सीमा भारत के सिन्धु घाटी को गई। इसने बाद पंच हज़ार भारत सैनिक अवरुध बरत समझेर के अधिनायकत्व में भारत रवाना हुए। तत्कालीन राजा न प्राम जर्मनी लुकी सीमा पश्चादिया तथा अफगानिस्तान आदि देशों में अपना ओहूर दिखलाय। महायुद्ध में विजयी होकर नेपाली सैनिकों ने विश्वरारिया नाम तथा अन्य सामरिक पदक इत्यादि भी प्राप्त किए। तभी से नेपाली जगती लोगना के लिए प्रख्यात हुए।

रस महायुद्ध ने पश्चिम भारत में बीस बेटामियन गोरखा फौज रखनी थी बिम्बु बहादुर के बाद यह संख्या बढ़ाकर चाबीम तक कर दी गई। महाराज बल्क समझेर ने

सन् १९१४ ई. से १९१८ ई. के बीच अंग्रेजी सरकार को तीन बार में दस लाख रुपये भी मुद्रकोप आदि में भेंट किये। उन्होंने अंग्रेजों को एक हजार चौराई गाँवों भी दिये। ब्रिटिश सरकार ने इसमें प्रसन्न होकर नेपाल सरकार को सैनिक-सुधार के लिए दस लाख रुपये प्रतिवर्ष देना स्वीकार किया।

जनवरी सन् १९१७ ई० में जन्म रामेश्वर न. साँई श्रीमन्मोहसे और सन् १९२१ ई० में इमूक आँख बंगाल में भट्ठा की। दिसम्बर सन् १९२१ ई० में उन्होंने प्रिम ऑफ़ वेल्थ का डिग्री कलम के लिए नेपाल तराई में आमंत्रित किया और अपने दानदार स्वागत से प्रिम ऑफ़ वेल्थ का भी प्रसन्न किया। इस प्रकार जन्म रामेश्वर ने अंग्रेज साम्राज्य से घनिष्ठता कायम कर ली और नेपाल तथा भारत में कई संघिया भी हुई।

प्रभावशाली व्यक्तित्व के पीछे जन्म रामेश्वर अपने गुणधर सगाये रहते थे। राजा परिवार के पीछे भी उनके आदमी पड़सो आदि की टोह लगाया करते थे। उन्हें न केवल राजनीतिक गतिविधियों अपितु घरेलू बाता का भी पूरा पता लगता रहता था। इसके बावजूद भी एकाध भी शासन के विरोधी अपना काम करते रहे। नेपाल-तराई में भारतीय नेताओं का नाम लुप्त प्रचलित था और तराईवासी उनके भाषणों को सुनने के लिए भारत में प्रायः आया करते थे। जन्म रामेश्वर के गुणधर सिर्फ राजधानी तक ही सीमित थे और वह तराई के कार्यकर्ताओं को पकड़ने की विस्मयी करते थे। जन्म रामेश्वर ने अंग्रेजी सरकार से किसी भी नेपाली सैनिक को सूबेदारी के पद में ऊँचा कोई पद भी न देने की प्रार्थना की।

२८ जून सन् १९२० ई० को उन्होंने मंत्री-प्रथा को पूर्णरूप से समाप्त कर दिया। नेपाल में दाम और मनी-प्रथा बहुत पहले से प्रचलित थी। महाराज जंग बहादुर तथा और रामेश्वर न. मनी-प्रथा का बन्द करने के लिए प्रयास किया किन्तु वह भी वह काम नहीं। दाम प्रथा का समाप्त करने का तो साहस किसी प्रधान मंत्री को नहीं हुआ था। जन्म रामेश्वर न. १९२१ ई० के अन्त तक दाम प्रथा का अन्त कर दिया। इस महान् कार्य के लिए प्रधान मंत्री म. गणुपतिनाथ के कोप में तत्कालीन दाम रुपये ब्यय किये। इस प्रकार मात्र हजार दाम दामों मुक्त हो गये और तभी से वे भुक्त मर-मारी 'दिगम्बर' बहकाते हैं। फरवरी सन् १९२३ ई० में जन्म रामेश्वर की धार्मिक सम्पत्ती में रानीय में अमलेखमय तक पश्चिम सीमा के मन्त्र बन्धन के लिए कार्य प्रारम्भ किया।

महाराज जन्म रामेश्वर का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली था। वह महाराज जंग बहादुर की भाँति ही मन्त्र शासक सिद्ध हुए। जंग बहादुर ने यदि नेपाल में गणतन्त्र की नींव डाली तो जन्म रामेश्वर ने उसे सुदृढ़ किया। जंग न. नेपाल सरकार का यदि ब्रिटिश शासन की ओर उन्मत्त किया तो जन्म न. उसे दस लाख देना दिया कि अंग्रेजी सत्ता उनकी सत्ता और सुरक्षा बरनी रही। अद्वैतमय न. शासन-काल में उन्होंने अपनी सत्ता के लिए भी बरबार बनबाव और बराहों रुपये की बीसवीं पीढ़ी भी निरता में

में पाई।

महाराज चण्ड  
समय न पूर्वी  
नेपाल तथाई में  
हजमतिपा दरबार  
बनवास और बहा  
बहु साल में तीन  
बार महीन रहकर  
तथाई का शासन  
देवत प। उन्होंने  
लच्छी जिमे में दम  
भीत सम्भी नहर  
मुदबाई। भीमफवी  
और बाठमान्डू के  
बीच रागवे काइन  
टकीफान तथा पहाड़  
और तथाई में कही  
कही पुन बादि भी  
बनबाये। उन्होंने  
अपनी मत्तानो का  
अपार बन-मम्पति  
तथा हीरे-जवाहरात  
बादि भी दिए।



( बायें से बायें )

भीम रामगौर, चण्ड रामगौर, मुन्ड रामगौर

महाराज चण्ड रामगौर मरदा की मतिबिधि न बहुत मजकूर रहन थे और बहु दम बात  
को मजकूर तथा जानने थे कि महाराजाधिराज के अग्रमन्त्र हान म मन्त्र नाम बिगड़ आपना  
और शासन में भी परिचरन बबन्तमाफी हो जायदा।

२४ नवम्बर, मन् १९० ई को महाराज चण्ड रामगौर की मृत्यु हो गई और रीत  
अन्य के अनुसार उनके छोटे भाई अनन्त भीम रामगौर नेपाल के प्रधान मन्त्री हुए।

भीम रामगौर

अनन्त भीम रामगौर पण्डित बर्ष और रामगौर तथा अन्तीम चण्ड महाराज चण्ड रामगौर  
की मरदाना में रहकर अनुभवशील हो गये थे। उन्होंने भीम रामगौर म बुढ़ता तथा चण्ड  
रामगौर के सामग्री की नीति भी दी।

रामन की बामदार संभासते ही उन्होंने प्रचण्ड मोरचा एक के सभी पञ्चपकारियों को बालकोठरी में बंद करके नाना प्रकार की कठिणतम यातनाएं दीं। तंग तथा गंभी कोठरी में रहने का कारण अच्युतमान सिंह तथा मैना बहादुर क्षय-रोग के शिकार हुए और बन्दीगृह में ही उनकी मृत्यु हो गई। मैना बहादुर की चौहतर-वर्षीय बूढ़ा माता मृत्यु-बीमा पर पड़े हुए अपने हृदय के टुकड़े को लेवने के लिए कई दिन तक बिना शान्त-मानी के बन्दीगृह के फाटक पर पड़ी रही किन्तु प्रधानमंत्री ने उसे अपने पुत्र को देखने की आज्ञा नहीं दी और उनका बीम ही स्पर्शबाध हो गया। भीम रामशर ने अन्ध रामदेव द्वारा संभावित बाबारी अड्डों को पूरे देश में मजबूत किया और तराई के जो-जो जिम्मे इसके बिरुद्ध थे उनको डरा-बमकाकर तथा हथ डेकर अपन कब्जे में किया।

उन्होंने बहुत ही आत्माकी के साथ नेपाल और तिब्बत के बीच के भगमुठान को भी समाप्त किया।

भीम रामशर ने अपनी अवैधानिक संतान हिरण्य रामशेर, राम रामशेर, प्रकाश रामशर आदि को रोमबाला बनाया। इससे सामक परिवार में बैमनस्य उत्पन्न हो गया। इस समय से पारिवारिक दक्षिण दीप्त हान लगी और सामान-विरोधी तर्कों की बल मिलने लगी। प्रधानमंत्री भीम रामशर अपनी रसेली महापत्नी गीता के गर्भ से उत्पन्न अपनी पुत्री का विवाह मुखरात्राधिराज महेन्द्र और विक्रम शाह से कर देना चाहते थे किन्तु इसके पूर्व ही उनकी मृत्यु हो गई और उनकी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी।

शामकाल में प्रधानमंत्री भीम रामशर ने राजधानी में पानी-कम टोका में आय अस्पताल मार्ग में पानी-कम नाम दिये। उन्होंने गिराहियों के क्षेत्र में भी बुद्धि की और जिनके नाम अन्ध थे उन्हें परक भी प्रदान किये। पानिबार को धूर्ती मनाने की प्रथा इसी समय में प्रारम्भ हुई।

महाराज भीम रामशर कुस्यमनी थे। उनके दरबार में ऐसे ही लोगों का जमपट लगा रहता था। उन्होंने अपन चौकीस सहीने के सामन काल में राजधानी में चार-पाच बहुर बसबाग और बगनी मनानो का करोड़ा खप भी दिये। रत्नकियों के लिए भी उन्होंने आबिद व्ययथा की।

## युद्ध रामशेर

अचरम पीर रामशर के पुत्र जनरल युद्ध रामशर उत्तम रूप की अवस्था में नेपाल के प्रधानमंत्री हुए। एक बर्ष बाद ही महाभूतना आया जिसने उत्तरी भारत विमान बिहार और नेपाल तथा हा मये। आदगाव पान्त बागमाग गया पूर्वी नेपाल में बिमान शक्ति हुई। इसी समयका था मेरन महाभूतना मार्पी राजेश्वर प्रसाद तथा पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने बिहार में सुराज तथा दिया और अवेजी लखनवा की अठ टिक गई। इस आशाजन की प्रतिनिधता पूर्वी नेपाल तथा म भी हुई और लोग ने सरकार को भूमि-ज देना ही बन्द

कर दिया। मुझ समझ ने तराई की सीमें पूरी करने का आश्वासन देकर उसे फिर टाक दिया। काठमाण्डू में बापूई प्राची भी मर गये थे इसलिए प्रधान मंत्री ने यूकम्प-मीडियों की महासभा के नीम लाल एगरे दाम लिये। उन्होंने कुछ लोगों को यूकम्प-मीडित मेकक की उपाधि और तमम भी दिये।

सन् १९५६ ई. में मुझ समझ ने बीर रामधर तथा चन्द्र रामधर की अर्द्धजातिक संतानों का गोल-कम से हटा दिया। परिसामस्वरूप बनरल हिरण्य रामधर, रत्न रामधर तथा तेज रामधर आदि ने पर्य्यन्त बारक बदला लेना चाहा किन्तु मुझ समझ ने सबको राजधानी से बाहर बिकाम दिया। रत्न रामधर पाल्पा तथा हिरण्य रामधर बीरबन्ध के बड़े हाकिम बना दिये गये। उन्होंने प्रकाश रामधर के पुत्र महावीर रामधर को भी काठमाण्डू छोड़ देने के लिए बाध्य किया और बड़े कसकत आकर स्यबमाय इत्यादि करने लगे।

जतन मुझ रामधर क्रूर तथा निर्भीक स्वभाव के थे। उन्होंने नेपाल प्रजा परिषद् के चार नेताओं को मार-पिट तथा अन्य को जीवनपन्न कारावास का दण्ड दिया। उन्होंने सामूहिक कत्तन करने की मनाही कर दी थी। मागवन तथा बेर क झुका का अनुवाद करन तथा पाग और प्रबचन करने के अपराध में पण्डित मुरलीधर का जीवनपन्न कारावास का दण्ड दिया गया था।

द्वितीय महायुद्ध में यज्ञ रामधर ने पञ्चीम हजार नेपाली सेना द्वारा ब्रिटिश सरकार की महायत्ना की। पांच हजार नेपाली सैनिक नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की आज्ञा हित्य पौत्र में तन्मिणित होकर भारत और यपास का संघर्षों के पंथ से स्वतन्त्र कराने के लिए प्रयत्न करत रहे। जसम्प सन् १९४२ ई. के भारतीय जन-आन्दोलन की उन्नता को देखकर मुझ रामधर को किञ्चित्मात्र आनका हुई। उन्होंने 'भारत छोड़ो आन्दोलन' को बबान के लिए ब्रिटिश सरकार का गांधी और जवाहर का गांधी से भार देने की सफाह दी। उन्होंने नेपाल-तराई में भारतीय नेता जयप्रकाश नारायण तथा प्रो. मिश्रनलाल सक्सेना आदि का भी गोली से मार देने का हुक्म दिये। मुझ रामधर ने भारत में गिरफ्तार सभी नेपाली राज नीतिक काम्यकर्ताओं तथा बिद्यापियों की बात से मार डालने के लिए भारत सरकार में नेपाल बन्ध देने की प्रार्थना की किन्तु भारतीय व्यापारियों ने ऐसा निर्णय देने में इन्कार दिया और इन प्रकार दरनों नेपाली युवकों की जानें बच गईं। मुझ रामधर ने अपनी मानी शक्ति बैमाजनों तथा प्रयत्न चाहन वालों को दबाने में संता दी। इनकी प्रतिनिध्या देग और बिदेग में जल्दी हुई और लापों की महानुभूति राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति स्वतन्त्र हा गई। उनका महान् शर्मों का मारन की प्रतिज्ञा पूरी करके जीवनपन्न निवार लपन्ता छाड़कर हजियार रण दिये। सभी और महाजानी नदियों के बीच में बाई भी जंगम लगा बही बचा जियमें महारण यज्ञ रामधर ने निवार नहीं लये। बड़े पौड़ की नवारी के बड़े गोपीन और निनेत्रा के बटूर बिराही थे।

प्रधान मंत्री ने कुछ लोगों को लुप्ट रजन के लिए 'उद्योग परिषद्' 'रूपि परिषद्'



तथा 'युगो स्लॉव स्लाव' लड़ी की। तेरह वर्ष एक माह के शासन काल में मुझ शमशेर ने जयनगर से जनकपुर तक साइन रेलवे साइन बिराजनगर तथा धोरगंज में पानी-कल बांधू को। उन्होंने कामा महल और मठ-मन्दिर तथा विद्यालय आदि बनवाये। अपनी संतानों के लिए उन्होंने आठ-दस-करोड़ रुपये भी बचाये।

१९४६ ई. में राजस्थान के पटवार्न महाराज मुझ शमशेर ने मन्याम ल मित्रा और बहु राजपि कहलाय लग। उन्होंने पण्डित मदनमोहन मालवीय द्वारा संस्थापित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का एक साल रुपये दान दिये। रोड़ी नामक तीर्थ-स्थान छोड़ने के बाद बहु देहरादून चले गये और नवम्बर, मन् १९५१ ई० में वहीं उनकी मृत्यु हुई।

### पद्म शमशेर

दिसम्बर, मन् १९४५ ई. में महाराज नीम शमशेर के पुत्र जनरल पद्म शमशेर प्रधान मंत्री हुए। इस समय भारत में ब्रिटिश सरकार का विहासन लड़लड़ा रहा था और भारतीय नेता अपने देश का शासन संभालने के लिए तैयार बैठे थे। इसी बीच नेपाली नेता भी भारतीय नेताओं के सहारे नेपाल में आन्दोलन करने की क्यरेका तैयार करने लगे। उनके इस सपने को देखकर नेपाल का सामक बर्ष मरक हो गया और बहु प्राणपण से अपने अस्तित्व की कायम रखने के लिए व्यग्र हो उठा।



पद्म शमशेर

परिष्कृत तथा निर्बाधित राजाओं को भारत स्थित नेपाली नेताओं के सम्पर्क में आने में तेरह लड़ी लगी। उनके पास पैसों से और पद्म शमशेर से भी उनके सम्बन्ध अच्छे थे। प्रधान मंत्री पद्म शमशेर ने परिस्थिति को संभालने के लिए १५ दिसम्बर, मन् १९४६ ई. को नागरिक अधिकार सम्बन्धी पत्रें बंटवाए। इसमें कामाज की जनता उनकी बात मानूँट हुई और उनसे सामान में परिवर्तन माने की आशा करने लगी। दूसरी ओर नेपाल-भारत तथा भारत में जन-आगुनि बढती हा रहा। फरवरी में गान सरकार ने भारत के प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू से सम्पादन बंद करवाने तथा नेपाल के लिए एक सामान

विधान तयार करवाने में मदद मांगी। भारत से प्रसिद्ध बाइनी नेता भी भीड़बाग तथा अलख विश्वविद्यालय के अध्यापक डा. राम उपहृ सिंह नामक भव बने। उन्होंने

परिस्थिति का अध्ययन करके तीन-चार प्रकार के विधान मण्डल सरकार के समक्ष प्रस्तुत किये। पद्य रामधर विधान का लागू करने के लिए तैयार थे किन्तु सनापति जनरल मोहन रामधर न उनके निष्पक्ष तथा सकल्य में बाधा डाली। विधान में एक केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा की स्थापना तथा उसकी सहायता के लिए एक मारबारी सभा तथा एक राज्य-मन्त्री की व्यवस्था थी। महाराज पद्य रामधर की प्रकृति तथा निर्बल स्वभाव के थे। वह शासन में परिवर्तन लाने की इच्छा रखते हुए भी मरबा ब्याप्य निवृत्त हुए। मोहन रामधर की धमकी से डरकर वह राज्य छोड़कर भारत भाग गये और बहा से उन्होंने स्वायत्त भज बिना। इसके उपरान्त में मोहन रामधर ने उन्हें दो-तीन साल रपय दिये। शांति के समय महाराज पद्य रामधर ने महाराजाधिराज त्रिभुवन की विजय धाड़ तथा मणाली शांति के कार्यक्रम का स्वागत किया और वह बिहार के प्रसिद्ध मगर राखी में विभास करके लगे।

### मोहन रामधर

महाराज पद्य रामधर के अष्ट पुत्र जनरल मोहन रामधर सन् १९४१ ई० में नेपाल के प्रधान मंत्री हुए। वह बड़ी ही धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति हैं और कट्टर सनातन धर्मी किन्तु साथ ही वह धार्मिक तथा सामाजिक सुधारों के कट्टर विरोधी रहे। इनलिए इन्होंने प्रधान मंत्री बनते हुए महाराज पद्य रामधर के समय किये गये सुधारों का अन्त कर दिया और पामन के विरोधी शांतिकारियों का आरा में विरोध किया जिसका फल यह हुआ कि शांति की उपायों उनके शासन राम में मरकर लगे बारण कर गये और थोड़े ही काम के बाद इन्हें पराजित हुआ पड़ा और रामधर की भाग्य ने महा के लिए अन्त हो गया।



परिचित जवाहरलाल नेहरू  
तथा मोहन रामधर

राजकी सन् १९५० ई० में प्रधान मंत्री की हैमियत में महाराज मोहन रामधर दिवंगत गये और बहा राज्यपति राजेश्वर राजेन्द्र प्रसाद तथा प्रधान मंत्री परिचित जवाहरलाल नेहरू ने श्रेष्ठ की। बहा में बाटमान् लौगने के कुछ मास बाद जिनम्बर में उन्होंने बहुत से

राजनीतिज्ञ कार्यकर्ताओं का मिलन करवाया और उन पर यह अभियोग लगाकर कि वे सब जनकी हत्या का पक्षधर रह रहे प्रायः-दण्ड बना जा रहा किन्तु महाराजाधिराज ने इसकी स्वीकृति नहीं दी।

परिणामस्वरूप प्रधान मंत्री महाराज मोहन शमशेर ने उनको मार डालन की घमकी दी। इसमें बचन के लिए महाराजाधिराज ने ६ नवम्बर मन् १९५ ई० के दिन मन्त्रिपरिषद् भारतीय दूतावास में दायर की थी और वहाँ से वह भारत सरकार द्वारा हिस्से बुला भिन्न भय। इसी के फलस्वरूप मार नेपाल में राजाशाही के विरुद्ध प्रति उठ गयी हुई। इस समय काठमाण्डू में भारतीय राजदूत सर चन्द्रेश्वर प्रसाद नायक सिंह या आ मरदार मुखर्जी सिंह मन्त्रीधिया के बाद दूसरे राजदूत ब। मरेण के शासन में आदि की बात भारतीय राजदूत में तुरन्त ही भारत सरकार का बताई।

महाराज माहन शमशेर ने महाराजाधिराज त्रिभुवन की विरक्त गाह को अपनी गही छाड़ जान पर पक्षधर पापित किया और उनके तीन वर्षीय पौत्र ज्ञानेश्वर का नया महाराजाधिराज पापित कर दिया। भारत सरकार ने नयाको शांति का स्वागत किया और नयापन-नरय का समर्थन करके शिष्ट ज्ञानेश्वर को मया मरेण मानना स्वीकार कर दिया।

इसी बीच में ३ दिसम्बर, मन् १९५ ई को हिस्सीस्थित ब्रिटेन के हिप्पी हुई कमिन्तर मिन्टर राजदूत तथा ब्रिटिश परराष्ट्र विभाग के विधायक सर एस्टर इतिव नायकान्द्र पुरुषे। वह राजा-शामन के समर्थन में हस्तभय करना चाहते थे किन्तु राजधानी की जनता ने एक विराट प्रदर्शन करके उनका बहा रहना तक असमर्थ कर दिया। उसमें भारत सरकार के निर्णय का स्वागत करने हुए अपने नरय को काठमाण्डू बापम बुलाय जाने की आरदार माँग की। अन्त में विरक्त होकर महाराज मोहन शमशेर को समझौता करना पड़ा। ११ दिसम्बर, मन् १९५ ई का नेपाल की भारतीय मन्त्रालय ने महाराजाधिराज त्रिभुवन की विरक्त गाह का नयापन का नरय पुन स्वीकार कर लिया और १५ फरवरी मन् १९५१ ई को वह हिप्पी में बापुयान द्वारा काठमाण्डू लौट आय। इस अवसर पर राजधानी की जनता ने उनका अतिथीय स्वागत किया।

१८ फरवरी मन् १९५१ ई का अन्तरिम सरकार की पापना हुई और जिसके प्रधान मंत्री महाराज माहन शमशेर ही बनाय गये किन्तु राजा और बापम की यह मिन्दी खुसी गन्तार बल समय तक कार्य नहीं कर सकी और महाराज मोहन शमशेर ने स्थान पर मापुका प्रसाद कोइराणा के मन्त्रालय में एक नया मन्त्रालय बना। यह गन्तार भी बल दिया तक नहीं चल सकी और नरय को शासन की मारी बापशेर अपने हाथों में म सकी परी जब उन्होंने कार्य-न्यायन के लिए ६ दिसम्बर की एक परामर्शानु मन्त्रिण बना की। बाद में श्री मापुका प्रसाद कोइराणा के मन्त्रालय में मन्त्रिमण्डल बना जो अब तक पापनामन्त्र है।





नेपाल के प्रधान मंत्री और उनका शासन-काल

जनरल श्रीमनेन थापा	१० अप्रैल १८०६—१८१० ई०
जनरल मायकेर सिंह	२८ नवम्बर, १८४२—१८ मई १८४५ ई०
महाराज जग बहादुर	१७ सितम्बर १८४६—२५ फरवरी १८७७
जनरल रमादीप सिंह	७ फरवरी १८७७—२२ नवम्बर १८८५
जनरल बीर शमशेर	२२ नवम्बर १८८५—५ मार्च १९०१
जनरल देव शमशेर	५ मार्च १९०१—१६ जून १९०१
जनरल चन्द्र शमशेर	२६ जून १९०१—२४ नवम्बर, १९२९
जनरल भीम शमशेर	२४ नवम्बर १९२०—१९३३
जनरल वज्र शमशेर	१०३३—दिसम्बर, १९४५ ई०
जनरल पद्म शमशेर	दिसम्बर, १९४५—१९४८ ई०
जनरल माहेश शमशेर	१९४८—११ नवम्बर, १९५१ तक
जनरल यानुका प्रसाद कोइराला	१६ नवम्बर, १९५१ ई०

## प्रकृति की देन

नेपाल के इतिहास के अनुरूप ही हम देश का प्राकृतिक गठन भी बड़ा ही विचित्र-सा है। एक ओर तो यहाँ संसार के सबसे ऊँचे पहाड़ों की चाटिया हैं और दूसरी ओर साधारण स साधारण तराई क्षत्र है जो पूर्णतया समतल है। इसकी यह विशेषता बड़ा की बलबाबु पर भी पूरी तरह से अपना प्रभाव डालती है—बड़ा नेपाल के एक अंश में जटिलतम षीत का प्रकोप होता है वहाँ बूसे अंशों में ग्रीष्म भी बुरी तरह की पड़ती है। नेपाल का एक अंश तो पहाड़ी होने के फलस्वरूप पूर्णतया ऊँच है इसका दूसरा भाग बड़ा ही उपजाऊ है। हम सब बातों का प्रभाव नेपाल के निवासियों पर भी पड़े बिना नहीं रह सका है और पहाड़ तथा तराई में बसने वाली जातियाँ एक-दूसरे से इतनी भिन्न हैं कि दोनों को एक साथ ही नेपाली कहने में प्रमत्त होने लगता है।

नेपाल की जनसंख्या सन् १९११ ई. में ५५,७३,७११ तथा सन् १९२० ई. में ५५,७४,७५६ बताई जाती है किन्तु हम जनगणना को विश्वसनीय नहीं माना जा सकता। विद्वानों का अनुमान है कि आजकल नेपाल की आबादी लगभग एक करोड़ है। इसका क्षेत्रफल ५४,००० वर्गमील है और यह लम्बाई में पूर्व से पश्चिम ५२५ मील है और इसकी चौड़ाई उत्तर से दक्षिण १०० से १४० मील तक है। संसार के महा-मों उसका स्थान २६°२०' तथा ३१°१०' अक्षांशों के बीच और ८०°१५' तथा ८८°१५' देशान्तर के मध्य में है।

नेपाल की वर्तमान सीमाएँ उत्तर में तिब्बत पूर्व में सिक्किम दक्षिण में बंगाल बिहार तथा उत्तरप्रदेश तथा पश्चिम में कुमायू प्रदेस से मिलती हैं। चीन और भारत के बीच स्थित होने के कारण नेपाल की राजनीतिक महत्ता बहुत बड़ी है।

नेपाल के दक्षिण में तराई भाग को छोड़कर अन्य सभी नेपाल पहाड़ी है और बहुत जलमय समतल देश में फैल हुआ है। इसका एक मुख्य कारण यह है कि यहाँ वर्षा बहुत होती है—जून से अक्टूबर तक नेपाल में औसतन ६ इंच पानी बरसता है। वहीं यहाँ अक्टूबर से अप्रैल तक बड़ी बड़ी पड़ती है और ग्रीष्म ऋतु में १ इंच से अधिक गर्मी नहीं पड़ती। मूल्य यह अत्यन्त मान रखते हैं और बाजार की मजदूराइयों का एक बड़ी साधारण बात है।

प्राकृतिक और प्रशासनिक दृष्टि से नेपाल का दो मुख्य भागों में विभाजित किया गया है—एक पर्वतीय तथा दूसरा तराई प्रदेश।

पर्वतीय प्रदेश पर्वतों की ऊँचाई दस हजार फीट से उनीस हजार फीट तक है।

यह भाग प्रायः बर्फ से ढका रहता है। इसी प्रदेश में संसार की सब से ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट जगन्ना विभीषण २९,००२ फीट पर स्थित है। इसके अतिरिक्त कंचनजंघा २८,१४६ फीट मकामु-पम्बों जगन्ना कुम्भकर्ण २७,७९० फीट बीसगिरि २९,८०० फीट गुमाईनाथ २६,३०५ फीट लामटांग २३,७३१ फीट तथा गौरीशंकर २३,४४० फीट ऊँची पर्वत चोटियाँ हैं।

इस प्रदेश में केवल बड़ी पशु बसते हैं जो बर्फ में रहने के सम्मर्थ हैं। पर्वत-शिखरों को पार करने के लिए प्रकृति ने वहाँ बारह-नेरह गिरि शार जगन्ना बरें बना दिये हैं। इन में स नपाल से तिब्बत जान जाने मात गिरि शार विशेष रूप से प्रसिद्ध है—

(१) लकपा दर्रा—बोकागिरि और मन्दादेवी के बीच में है। (२) मुस्तांग दर्रा—जामी गण्डकी के तीरे में स्थित है और जो बीसगिरि पर्वत के जामीम मील पूर्व में है। यह गिरि शार काफी बालू रहता है। इसी से हाकर मानी मुक्तिनाथ तथा तिब्बत जाते हैं। (३) करोंग दर्रा—गुमाईनाथ पर्वत के पश्चिम की ओर है। (४) कुटी दर्रा—यह नेपाल के पूर्व में है। कुटी बरें से होकर ग्वाहा क यानी नेपाल की राजधानी काठमाण्डू माने-जाने है। यह मार्ग बड़ा ही दुर्गम है। (५) इतिमा दर्रा—इस मार्ग से हाकर भारत नहीं बहती है। (६) बाकल दर्रा—कंचनजंघा के पश्चिम और नेपाल के पूर्वी छोर पर है। (७) सग्मा दर्रा—यही नेपाल में तिब्बत जाने का साधारण मार्ग है।

पर्वतीय प्रदेश की ऊँचाई पार हुआर स एकर बग हुआर फीट तक है। इसका क्षेत्र कम कम हुआर कमभील है। इस प्रदेश में शिबपुरी पर्वत (९,००० फीट) पून चीन पर्वत (८ ०० फीट) लामार्जुन पर्वत (७ ०० फीट) महादेव पोखरी पर्वत (१ ००० फीट) तथा पञ्चागिरि पर्वत (६ ९०० फीट) की ऊँची चोटियाँ हैं।

नपायी सम्प्रदाय संस्कृति वैद्यभूषा तथा रत्न-मङ्गल का यही उद्गम-स्थान है।

इस प्रदेश में प्रकृति ने अपनी सर्वश्रेष्ठ कृपा सर्व गरिमा प्रकट कर दी है। वहाँ के बृशों में आच्छादित पर्वत-शिखर और टेढ़ी-मढ़ी लम्बी नदियाँ प्रत्येक आगन्तुक का आश्चर्य करती हैं।

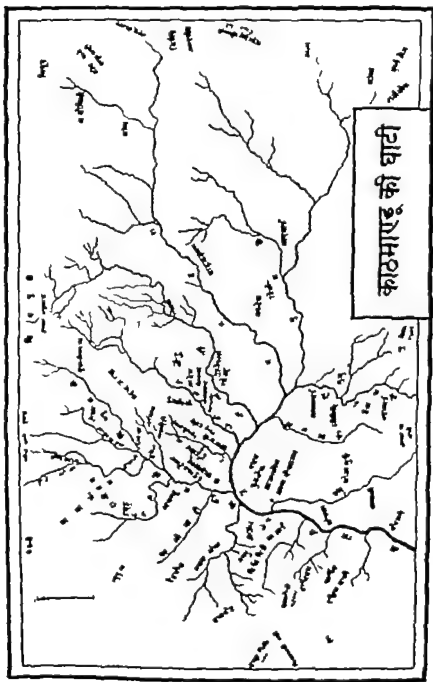
### तराई

पर्वतीय प्रदेश के निम्नलिखित का लम्हणी प्रदेश तराई (मधम) कहलाता है। यह प्रदेश समुद्र से परावर्त में है हुआर से केकर माइ तीन हुआर फीट तक ऊँचा है और इसका क्षेत्रफल लगभग सातह हुआर वर्गमील है।

### तीन नदियाँ

नेपाल में मुख्य तीन नदियाँ हैं। काशी नदी पूर्व में गण्डकी मध्य में और बगौली पश्चिम में बहती है। ये तीनों नदियाँ हिमालय पार करके भोट में निकलकर गंगा नदी में मिल जाती हैं।





कुमाईनाथ तथा कंचनजंगा के बीच में निकलकर कोसी नदी की साठ धाराओं उत्तर में दक्षिण बहती है। इन धाराओं में अनेक सरोवर बनी हैं। इसके अतिरिक्त तामा कासी किन्तु कुछ कोसी इनकावती तथा तमोर प्रसिद्ध है।

पीलाविति तथा कुमाइनाथ के बीच का बल गण्डकी नदी की साठ धाराओं से बहता है। जब सभी धाराएँ एक में मिल जाती हैं तब यह गण्डकी नदी कहलान समी है। यह सभी इधर गण्डकी काको गण्डकी बुडी गण्डकी मारी मस्यांगरी तथा त्रिभुमी के नाम से प्रसिद्ध है। इन धाराओं के अन्य नाम भी हैं।

कर्नाथ की पूरव नदियाँ कर्नाली भेरी मनी तथा यहाकासी (मारवा) हैं।

इनके अतिरिक्त तराई में बूडी नगा और राज्नी बहती हैं पश्चिमी पर्वतों प्रदेश में योसी नदी काठमाण्डू के पूरव में रश्मती मणिमती हनुमती तथा इलुमती उनके पश्चिम में भद्रमती बिन्नुमती और काठमाण्डू के दक्षिण में प्रभावती बागमती तथा कर्मनागा बहती हैं।

मल कोसी गण्डक तथा कर्नाली नदियों की महावक नदियाँ समूचे नेपाल में जान की तरह फैली हुई हैं। जब तक ये नदियाँ पहाड़ी प्रांतों में बहती हैं तब तक तो बहुत ही भयंकर प्रगति में बहती हैं। किन्तु जब यह तराई में आ जाती हैं तब उनकी गति काफी धीमी हो जाती है और इनमें कामाती से गाँव बसाई जा सकती हैं। इन्हीं नदियों के द्वारा मान एक जगह से दूसरी जगह में आया जाता है। तराई की उपजा पहाड़ी शर्तों में ये नदियाँ छिद्रनी तथा पतनी हैं और इनकी धाराएँ भी तीव्र होती हैं। इन नदियों में से अतिवृत्त कामाती तथा की मछलियाँ पकड़कर बेची जाती हैं। इन नदियों से बहुत अधिक मात्रा में बिजली उत्पन्न करके कल-कारखाने चलाए जा सकते हैं। और तराई में इन नदियों का बांधकर इनसे बलक लहने सिंचाई जा सकती है जिनके द्वारा सिंचाई का काम बहुत बढ़ाया जा सकता है और अन्न उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है।

### पर्वतीय प्रदेश का हृदय

काठमाण्डू का 'पर्वतीय प्रदेश का हृदय' कहा जा सकता है। यह चारों ओर पर्वतों से घिरा हुआ है। इसके पूरव में भोजपाङ्ग पश्चिम में मधुव और पाँच माने भोजपाङ्ग तथा दक्षिण में ताव कोट स्थित हैं। इनके बीच में स्थित घाटी की अवस्था लगभग ७ मान है।

इस घाटी को तीन भागों में विभक्त किया गया है—

१ काठमाण्डू (कानिपुर) बागमती नदी के पश्चिम-उत्तर में स्थित है।

२ पाटन (मलिनपुर) काठमाण्डू के दक्षिण में है।

३ भागपाव (भक्तपुर) काठमाण्डू के पूरव में है।

माने नपाव की घाटी के पूर्व में कोसी प्रदेश है जो मान शर्तों में बाँटा गया है। चारों ओर सिन्धु बागबाक पाल्पा विमान् मान चिरांग पल्की चिरांग तथा र्नाथ।

सास नेपाल की बाटी के पश्चिम में पहाड़ी प्रदेश है जो बीस भागों में विभाजित है—मुवाकोट सामी डांडा सत्यान बादिय मोर्चा तन्ही कास्की सम्झुंग मिरिग मिरिग डोर, पस्सो मुवाकोट भिरकाट, सटीं गह्रीं पय्मुं पर्वत पाप्सा गुम्मी बस्कोट चुरकोट, मुसीकोट इस्मा अर्वा खापी तथा प्युठाना ।

उपयुक्त पहाड़ी प्रदेश पूर्वी तथा पश्चिमी दो भागों में विभक्त कर दिये गये हैं । पूर्वी पहाड़ी तथा पश्चिमी पहाड़ी के ये जिले चार चार नामों के नाम से पुकारे जाते हैं ।

पहाड़ी प्रदेश के पश्चिम में कर्नाली प्रदेश है जो छः उपखण्डों में बाट दिया गया है—सत्यान दैलेख हुस्तु, जुम्मा अछाम तथा डोटी ।

भीतरी तराई (मधेश) को भी जिलों में बांटा गया है—मधवानपुर, सिन्धुली उदयपुर, चितीन नवलपुर, बाय देउरगुरी मुनार तथा मुर्खेत ।

बास तराई (मधेश) का बाटू जिलों में विभाजित कर सकते हैं । पूर में परसा बारा रेतहट सर्लाही महोत्तरी गण्डरी तथा मोरग नामक सात जिलों में से मध्य में बुटवल जिला पासी भागलपुर सारही तथा सूर्यन चार तहसीलों में विभक्त है और पश्चिम में चार जिले बाके बर्धिया कैमारी तथा कंचनपुर है । इस प्रकार भीतरी तथा सास मधेश में सब इस्कीम जिले हैं और जिनकी जनसंख्या समूच देश की जनसंख्या की आधी से अधिक है ।

### अस्वायु

शीतप्रधान देश होने के कारण नेपाल के पर्वतीय क्षेत्र बड़े बलिष्ठ और परिधमी होते हैं । कतिपयों में आर्य तथा मयोन रक्त का सम्मिश्रण है । पर्वतों पर बसने वाले पहाड़ियों का कद बहुत ही लटा होता है परन्तु उनकी जाति तथा छापी की इच्छायां अत्यधिक मजबूत होती है । उनका शरीर का बल एसा निराला होता है कि बासीस और पचान वर्ष का व्यक्ति भी नवयुवक-सा प्रतीत होता है । उनकी स्त्रियां भी बहुत स्वस्थ परिधमी और सुन्दर होती हैं ।

### गन्निज पदार्थ

नेपाल में कितने प्रकार के गन्निज पदार्थ पाये जाते हैं इसकी अभी तक निश्चित कौन ही नहीं हो सकी है । पहाड़ी प्रदेश होने के कारण वैज्ञानिक गावनों की पहुँच अति कठिन अवस्था है किन्तु अनुभव नहीं । पहाड़ों में लाला प्रकार के अम्ल पत्थर, सीसा, सुरमा, गन्धक इत्यादि आसानी से निकाल जा सकते हैं । इनके अतिरिक्त मोला चारी लोहा कोयला तांबा जस्ता अभ्रक बाबाज तथा सीसा पोषा इत्यादि अन्य पदार्थ भी यहाँ बहते हैं । पर्वतों को कूट-कूट कर भीमर तथा चूना भी तैयार किया जा सकता है । कुछ विदेशी अन्वेषकों का कहना है कि हिमालय पर्वत में बहुधा बलान में उपयोगी वन भी यहाँ पर्याप्त मात्रा में मिल सकते हैं । तराई में भी मिट्टी के तेल आदि की बड़ी-बड़ी स्थानों

का पता लगाया है। इस प्रकार के खानों का पता लगाने में भारत सरकार का भी सहयोग नपाक का प्राप्त है।

### जड़ी-बूटियाँ

पर्वतीय प्रदेश के बाजल में स्थित बन प्रान्तों में जनक प्रकार की कीमती लकड़ियाँ मिलती हैं। कहीं-कहीं तो घुप और जन्दन इत्यादि सुगंधित वृक्षों की पत्तियाँ ही पत्तियाँ हैं। इनके अतिरिक्त लाखों प्रकार की जड़ी-बूटियाँ इत्यादि भी आयुर्वेद व लक्षणों को देख देख कर प्राप्त की जा सकती हैं। बन प्रान्तों में घेर, चीते हाथी मेंढे हिरन तथा मुनायम अयाल बाँधे कई प्रकार के पशु तथा सुन्दर पक्षी आदि भी मिलते हैं।

### अन्न-फलादि

शरद ऋतु में अन्य फल तथा नारंगी फल रूप में मिलती हैं। पहाड़ी प्रदेश में कोरी तरह मकई मूनी मालू महुमूल प्याज तथा कला प्रचुर मात्रा में बोया जाता है। मसूर में बिनाय रूप में बान की जाती होती है। तराई का बाजल मसूर है। इसमें अतिरिक्त गहूँ मकमा लम्बाक पाट कई आमू लम्बी और फण्डर इत्यादि भी अधिक मात्रा में पैदा किये जाते हैं। पूर्वी नेपाल के बलकुटा तथा ईमाम प्रान्त में बाय भी होती है। नेपाल में एसी धामें कई सी मील तक मिलती हैं जिन में कामज बनाया जा सकता है। विषाकलाई बनान के लिए भी प्रचुर सामान उपलब्ध है।

## पुण्य तीर्थ भूमि

नपाल को तिब्बत के लोग 'नपा' कहते हैं जिसका अर्थ तिब्बती भाषा में 'तीर्थ' वासी होता है। जिसका अर्थ यही है कि वे लोग नपाल को अपनी पुण्य तीर्थ-भूमि मानते हैं। इसी प्रकार आर्य-संस्कृति के उपासक भी नपाल को अपना तीर्थ-स्थान मानते हैं। बौद्धानुयायी स्वयम्भू शैल्य महाबौद्ध मन्दिर आदि की पूजा करते हैं।

वस्तुतः यदि नपाल को धार्मिक दृष्टि से देखा जाय तो वह पवित्र तथा पूजनीय है। सभी तीर्थ भाषों की पूजा 'शारण्यं सर्वं मृताणाम्' की दार्शनिक भावनाओं से जोनप्रयोग

हाकर हिमालय के बनों में अपनी अनुसूचित जाति काटाया करते थे। वैसादा पर्वत तो निकालरणी भगवान् धरु का घाम ही ठहरा जहां वे बहु बमक बजा-बजा कर अविमल मृष्टि का कौतुक देला करते हैं। बनों तथा पर्वतों का प्रमान्त बालाधरक मानस में बैराग्य की भावना भरता रहता है। और यही कारण है कि पहाड़ों के रहने वाले धर्मशील तथा आत्मिक होते हैं। यद्यपि नपाल में बौद्धानुयायी भी बहुत हैं किन्तु वे भी किसी पण्य मत्ता की ही उपा मत्ता करते हैं।

नपाल में पर्वतस्थित तीर्थ-स्थानों में मुस्लिमाय का बहुत बड़ा महत्त्व है किन्तु बड़ा बहन ही कम लोग जा पाते हैं। इस प्रकार वे तीर्थ-स्थानों का मझाद मुस्लिमाय को माना जाता है।

माना का विवरण है कि जो मुस्लिमाय के दर्शन कर मत्ता है उगाक जब पाय चल जाते हैं। हमने अनिरिक्त विमान्य की उपन्यवाभा में मझाद तीर्थ-नपाल है जहां किसी के किसी गुज मूर्त में देने लगत रहते हैं।

नग्नपुण्य में भीम पाय 'भीमदुर्गा' निय का आह्वान्य बहुत ही विम्वार



स्वयम्भू-शैल्य

पूजक दिया गया है जिसकी पूजन तथा परिक्रमा करने की विधिमा भी बताई गई है। गयाक में बहुत से एम स्मृति हैं जो इन तीर्थों की परिक्रमा करते हैं। यह परिक्रमा लाङ्गशूड पर्वत स्थित कुशावर से प्रारम्भ होकर बाटमाण्डू स्थित मिश्रवर पर्वततिनाथ तक समाप्त होती है।

कुशावर के समीप ही नीमेश्वर काशीश्वर तथा कम्पेश्वर स्थित हैं। कम्पेश्वर के पास ही जगन्नाथ हिमश्रवा नदी के मध्य में स्फटिकेश्वर पर आदिन शुक्ल पंचमी को मेला मगता है। इसके पश्चिम में स्वच्छ पर्वत पर जगद्वर नामक तीर्थ-स्थान है। यहा माघ शुक्ल पंचमी को एक मेला लगता है। घमेश्वर तथा विकटेश्वर भी यहीं हैं और लीलावती तथा राक्षसी नदी के संगम पर इन्द्रेश्वर है। इसके पश्चिम में मासेश्वर स्थित है जहा माघ शुक्ल तृतीया को मेला लगता है। पुण्डरीक मिश्र तीर्थ में त्रिनेश्वर मन्त्री तीर्थ में तथा जम्बेश्वर मरस्वती तीर्थ में स्थित हैं। रामेश्वर म्रिय प्रभावती और मरस्वती नदी के संगम पर है। इसके दक्षिण में दो नदियों के संगम पर कामेश्वर का म्रिय है। पश्चिम ब्रह्मतीर्थ में कुटेश्वर है। व्याघ्रेश्वर वर्षा गंगा नदी के तट पर है यहा के लोगों का विश्वास है कि वर्षा वर्षा नदी बिष्णु ममबान् के पसीने में निकलती है। वर्षा गंगा नदी का स्नान बड़ा ही पुनीत माना जाता है। यहां एक गड्ढा कुण्ड भी है। गोमात्रेश्वर मोषवी तथा बागमती के संगम पर एवं जम्बेश्वर यज्ञश्रवा और बिष्णु तीर्थ में है। इसके पश्चिम में दो मीन की दूरी पर जम्बेश्वर स्वर्णतीर्थ में स्थित है। यहां माघ शुक्ल पाटी को पर्व मनाया जाता है। पश्चिम में मन्त्रिनेश्वर, योगेश्वर तथा फल्गुश्वर पुष्प माने जाते हैं। कौटेश्वर गामवर्णीय में स्थित है। जमिनेश्वर इनके उत्तर में है और यहां माघ शुक्ल ठाकरी को मेला मगता है। इन्द्रावती और मण्डकी के संगम पर भैरवेश्वर की स्थापना की गई है। यहा पांच नदियों का संगम है और उनी संगम पर जलमय म्रिय है। यहा माघ शुक्ल जनुर्दशी को मेला मगता है।

ब्रह्मेश्वर ब्रह्मतीर्थ में है। कहा जाता है कि यहीं बाबाबुर का शंकर सवबाव न बरदान दिया था। इसी स्मृति में यहां फल्गु पुष्यमा को मेला मगता है। बरीश्वर म्रिय का स्थाप करने ही प्रयत्न जानु स्वयं ही जाता है—मेमो निबन्धनी प्रचलित है। यहा शैव गुह्य जनुर्दशी का मेला लगता है। गान्धर्वेश्वर मृगश्रावण शुद्धि तीर्थ में है। बावद्वर म्रिय के जाने में यहा के लोग की बड़ी विधि मगता है। यहां दही बावद्वर तथा मिश्र म्रिय का लग है। यहां माघ शुक्ल पंचमी का एक मेला लगता है। यही आका गंगा में बहती है। मन्त्रि जगद्वर जगन्निर श्रव में है। यहां फल्गु शुक्ल अष्टमी को मेला लगता है। नारायण की स्थापना एम मीन में हुई है। यहां माघ शुक्ल जनुर्दशी को पर्व मगता है। इसके पश्चिम में गड्ढा जगद्वर जगन्निर है। नारायणेश्वर की पूजा बैशाख पुष्यमा का विनोद रूप में की जाती है। इनके पश्चिम में एक बटेश्वर है। यहा एक पुनीत मीन है जिसमें माघ शुक्ल जनुर्दशी तथा आषाढ़ पुष्यमा को स्नान दिया जाता है। बावद्वर

रत्नचूड़ेश्वर में एक मीस की दूरी पर है और इसके पश्चिम में किमेश्वर है। यहाँ माघ पूर्णिमा तथा आश्विन शुक्ल पंचमी को पर्व मगता है। बास्मिकेश्वर और हनुमान जी और महा तीर्थ में है। मगलेश्वर में चैत्र शुक्ल तृतीय को उत्सव मनाया जाता है। इससे कुछ ही दूर त्रिभुज कन्चरा में बिमलेश्वर है जहाँ बिमलोदक बंगा बहती है। अनन्तेश्वर श्रृंगाराम पर्वत में है। माघ कृष्ण अष्टमी तथा चैत्र कृष्ण नवमी को यहाँ मेला लगता है। इनके पास ही बुद्ध मंगा में बिरुपेश्वर है। यहाँ वैशाख पूर्णिमा को पूजा होती है। नोमेश्वर सोम तीर्थ में है और यहाँ कार्तिक शुक्ल अष्टमी तथा चतुर्विंशी और आश्विन पूर्वमासी को मेला लगता है। गोभद्रेश्वर श्रृंगी तीर्थ में है। यहाँ श्रृंगि श्रृंगि ने तपस्या की थी। यहाँ चैत्र शुक्ल द्वादशी तथा भाद्रपद कृष्ण चतुर्विंशी को पर्व मगता है। श्रृंगीश्वर मिथारण बुद्ध के मंदिर है। यहाँ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को मेला लगता है। कुपितेश्वर पर चैत्र कृष्ण द्वादशी को मेला लगता है। सर्वेश्वर गौरी बुद्ध और शिव मंगा में है। इनको कुम्भेश्वर तथा मुमुक्षुश्रम भी कहते हैं। यहाँ कार्तिक की पूर्वमासी को मेला लगता है। नोमेश्वर जबवा गोपाल कृष्ण पर कार्तिक पूर्णिमा चैत्र पट्टी तथा माघ कृष्ण अष्टमी को मेले ममते हैं। भीम तीर्थ तथा चन्द्रमटारेश्वर भस्ममया नवपारा तीर्थ में है। यहाँ इन्द्रहृद येनुतीर्थ और विष्णुपद तीर्थादि हैं।

यज्ञेश्वर, पिण्डाश्वर तथा परमेश्वर एक दूसरे के पास ही हैं। जर्मेश्वर पर चैत्र कृष्ण चतुर्विंशी को मेला लगता है। इन्हीं के समीप जलामायी नारायण है। मोकर्णेश्वर चन्द्रमासा नदी तथा बागमती नदी के संगम पर है। इस संगम को यहाँ के लोग ब्रह्मतीर्थ नाम से पुकारते हैं। टीश्वर मंजु मूल तीर्थ में है। इस तीर्थ को उत्तर प्रयाग तीर्थ और उत्तर कामी तीर्थ भी कहते हैं। ज्ञानेश्वर मयूर तीर्थ में है। यहाँ चैत्र शुक्ल पट्टी तथा अष्ट शुक्ल नवमी को मेले लगते हैं। बागेश्वर पर्वतेश्वर तथा जलेश्वर एक दूसरे के समीप ही हैं। लाया की पारवा है कि जलेश्वर महा अलगमन ही रहते हैं। यहाँ चैत्र पूर्णिमा की रात्रि तथा आश्विन कृष्ण चतुर्विंशी को विशेष पूजा होती है। किरानेश्वर बाममती न बशिष में है। भस्मेश्वर भस्म मंगा बुद्ध में है। इनके पश्चिम में ज्ञान बुद्ध है। भुवनेश्वर ज्ञान बुद्ध के ही पास है। शम्भारेश्वर शिव का दर्शन रत्न बुद्ध में स्नान करने के पश्चात् किया जाता है। मायेश्वर बामुकी बुद्ध में है।

### पद्मपतिनाथ

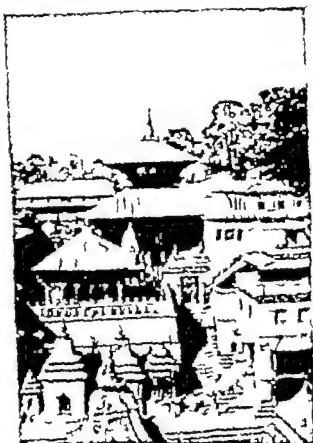
मेषाल और तिब्बत के हिन्दू तथा बौद्ध दोनों ही इन तीर्थों तथा देवताओं का दर्शन करते हैं। इन सब के दर्शन तथा परिचया कर चुनने के पश्चात् तीर्थयात्री मिटेश्वर पद्मपतिनाथ जी के दर्शन तथा पूजन करने का अधिकारी माना जाता है। पहाड़ों की चढ़ाई तथा मार्ग की जयजयना का विचार करके अधिकारी तीर्थयात्री पद्मपतिनाथ के दर्शन करने लगे जाते हैं। पद्मपतिनाथ का पूजन शिव चतुर्विंशी के दिन पद्मपुत्र के

कृष्ण पक्ष में विजय वृषभान के साथ किया जाता है। इस तिथि को भारत से लाखों गृहस्थी तथा साधू-मन्यात्री यहाँ आते हैं। इतना बड़ा पर्व और मेला नेपाल में कभी नहीं म्यता।

कान्तिपुर का तुलजा  
मन्दिर तथा कान्तिपुर  
का महाबीड़ मन्दिर  
श्री पवित्र माना जाता  
है और यहाँ हजारों  
बिजों की बरबर  
बीड़ लगी रहती है।

यात्रामें

काठमाण्डू घाटन  
तथा माइवास में तो  
प्रतिदिन ही किसी न  
किसी उत्सव-यात्रा  
की श्रम रहती है।  
इनमें मत्स्यप्रताप  
वाचा बाड़ा यात्रा  
ब्रह्म यात्रा याई यात्रा  
तथा रथ यात्रा विशेष  
प्रसिद्ध हैं। जब कृष्ण  
जन्मावस्था के दिन  
शाही परिवार तथा  
प्रधान मंत्री इत्यादि  
सुनी लाल के महान



पार्वतीनाथ का मन्दिर

म मुड़बीड़ देखन आते हैं। इन बीड़ में बिजयार्जों का पुरस्कार भी दिये जाते हैं। यात्राएं  
तथा जमानेह लगाऊ की परम्परावन औरता तथा बातगाइयों को लज्ज करन के प्रयासों  
की ही नावाये हैं। दुर्गा पूजा काठमाण्डू में बड़े वृषभामने मनाई जाती है और जिसमें  
अन्य पशुओं की बलि भी दी जाती है।

धार्मिक स्थान

तराई में कम्बिनी जनकपुर, बाराह घाट तथा बिनेको इत्यादि तीर्थ-स्थानों का  
विमान अदृश्य है। कम्बिनी शीतल बुद्ध का जन्म-स्थान है। यहाँ प्रतिवर्ष लाखों बीड़  
जनाबन्दी शीतल जापान संघ तथा बर्मा इत्यादि देशों से आने रहने हैं। कम्बिनी में



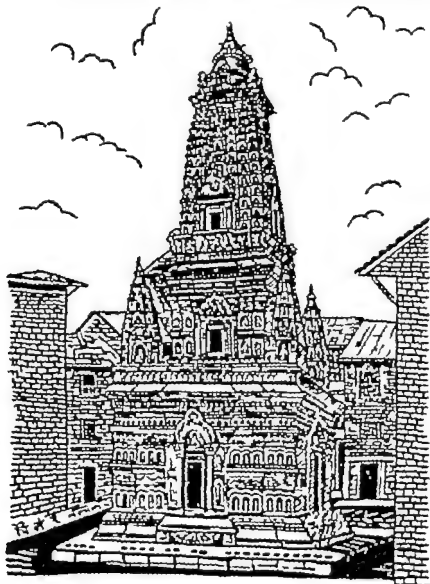
शेन रामनवमी तथा पूजिमा का मने लगत है। यह तराई व मेर्को में महत्त्वपूर्ण माना जाता है। बाराह धन में बाराहावनार हुआ वा एमा माना जाता है।



दुमला मन्दिर बागिनपुर

त्रिवेणी तीर्थ नदियों का संमेलन है। यहाँ मज्जीम घाह की लड़ाई हुई थी। माघ  
अमावस्या को यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है जो महीनों तक चलता रहता है। व्यापारिक  
दृष्टि से यह बहुत ही उपयोगी है।

जमकपुर महारानी भीमा की जन्म-भूमि है। यहाँ प्रतिवर्ष लाखों हिन्दू अपनी  
घड़ा प्रकट करने आते हैं। यहाँ मले भी लगते हैं। पश्चिमी बंगाल के पहाड़ी प्रदेश में



महावीर मन्दिर ललितपुर

## नेपाल की कहानी

चीनी बैठड़ी तथा जौलजिबी पवित्र तीर्थ माने जाते हैं। लोगों का कथन है कि प्राचीन काल में चीनी में बहुत बड़ा यज्ञ हुआ था। यहाँ यज्ञ करने का विषय माहात्म्य बताया गया है। बैठड़ी छोटी प्रान्त का एक नगर है। यहाँ भावनी के दिन ब्रह्ममासी का मेला लगता है। यहाँ बेबी-बेबताओं के अनेक मन्दिर हैं। इन मन्दिरों में सहस्रों देववासियाँ रहती हैं जिनके कारण यहाँ का वातावरण काफी दूषित हो गया है। जौलजिबी महाकाली नदी के किनारे स्थित है। यहाँ अगहन की संक्रान्ति को बिराट मेला लगता है। पश्चिमी पहाड़ के मेले में जौलजिबी का स्थान सर्वोच्च है। व्यवसायिक दृष्टि से पश्चिमी नेपाल में यही एक ऐसा मेला है जहाँ भारत नेपाल तथा तिब्बत के हजारों व्यापारी एक साथ मिलते हैं।

## कला और संस्कृति

नेपाल में कल्पित कलाओं की अपेक्षा उपयोगी कलाओं की अपनी विधाय महत्ता है। इस विद्या में यहाँ वास्तुकला, मूर्तिकला तथा चित्रकला की समान उन्नति हुई है।

वास्तुकला तथा चित्रकला को प्रथम प्राचीन काल से ही मिलता रहा है। किन्तु मूर्तिकला का उत्पत्ति दैत का येय बौद्ध धर्म को ही प्राप्त है और यही कारण है कि नेपाल के प्रत्येक मन्दिर में बौद्ध धर्म की भी मूर्तियाँ मिलती हैं।

इन मूर्तियों की कला-शैलियाँ संभाव्य ज्ञान, मयोक नेपाली तिब्बती मंगोल तिब्बती नेपाली आर्य तिब्बती संभाव्य तिब्बती आर्य नेपाली तथा कुछ नेपाली सभी ढंग की पाई जाती हैं। इनके तुलनात्मक वैधानिक अध्ययन से ही नेपाली संस्कृति का पुरा ज्ञान हो सकता है। ये मूर्तियाँ नेपालिया के धार्मिक जीवन को व्यक्त करती हैं।

मुसलमानों ने नेपाल पर जब आक्रमण किया तब तबम पहले उन्हीं मूर्तियों तथा मन्दिरों को ही तोड़ना प्रारम्भ किया और जब नेपालियों ने उन्हें पराजित करके नेपाल से भगाया तब उन्होंने सबसे पहले इन मूर्तियाँ तथा मन्दिरों का ही जीर्णोद्धार करवाया। ऐसा करने में उनकी दीवियों में जोड़ा-बहुत परिश्रम तथा अथक हो ही गया। फलस्वरूप उन पर मुसलमानी शैली का भी प्रभाव यथेष्ट स्पष्टतया दीखता है।

नेपाल ने वास्तुकला तथा मूर्तिकला में विदेशी शैलियों का कोरा अनुकरण मात्र ही नहीं किया अपितु उन्हें आत्मसाधन कर लिया है। इनके अतिरिक्त नेपाल में कुछ मनीन शैलियाँ भी आविष्कार करके तिब्बत, चीन तथा भारत को दिया है। पगोडा की शैली वास्तुन नेपाली शैली है। नेपाल की वास्तुकला में चीनी, तिब्बती तथा भारतीय कलाओं का प्रचुर मात्रा में सम्मिश्रण हुआ है। नेपालियों के घर भी दूर से देखने पर बरवाबर मन्दिर की धानि ही प्रतीत होते हैं। उनकी मकान-निर्माण कला विविध ढंग की है। कुछ मन्दिरों के प्रांगण चीनी ढंग के हैं। पाटन तथा ललितपुर में गिलाकला के उन्मुख्य मयून भी मिलते हैं। इनमें महाबौद्ध मन्दिर तथा तुमजा मन्दिर विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।

जम्दर तथा मुर्तन इत्यादि आदिमा ढंग की बहुत अच्छी-अच्छी चीजें बनाये हैं। नबार मोय मोना चाबी गाँवा पीनक तथा बाँस का काम बहुत सुन्दर करते हैं। ये काम कपाम न करके भी तैयार करते रहते हैं। नेपाल में हाथ से काम का काम भी बनाया जाता है। यह काम बहुत ही मजदूत किन्तु लुप्त हो रहा है। नेपाल का राजधानी काठमाण्डू में एक मरकती राष्ट्रीय कलागामा भी है जिसमें सब प्रकार की कलाओं का समूह मिलते हैं। इनके पास ही एक कलागामा भी है जो नेपाल की बीरमर का प्रतीक है।

नरखी मतायी में मम्म बंस वालों न काठमाण्डू की घाटी में जाति रीति आदि सम्प्रदाय रीति-रिवाजों का पुनरुत्थार किया। इस समय बौद्ध धर्म का पतन हो रहा था और शैव सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव बड़ जातों के साथ हो रहा था। इसके बाद मबार जाति के लोगों ने नेपाली संस्कृति का जन्मुत्थान किया। इन लोगों ने भारतीय सम्प्रदाय तथा संस्कृति का विषय अनुकरण किया। मबार हिन्दू जाति बौद्ध धर्म के प्रभाव में बिगड़ चुक न आ गई थी और यही कारण है कि मबारों में अबतक शाक्य भिक्षु पञ्चाचार्य आदि भेषिया मिलती है। इस समय हिन्दुओं के पशुपतिनाथ एवं बौद्धों के स्वयम्भू तथा बौद्धताप को शैव और बौद्ध दोनों सम्प्रदायों के लोग पूजन सब गये थे। इसी लिए नेपाल में बौद्ध और शैव सम्प्रदाय में कोई विषय अन्तर नहीं माना जाता और न जाना न कोई विरोध ही पाया जाता है।

ब्रह्मपान में शैव और बौद्ध पद्धतियों का मेलन हो गया था वह अब भी सर्वत्र प्रकट है। काठमाण्डू में अब भी मुहम्मद का नाम बहाल ही है। यह 'बहाल' शब्द बिहार का अपभ्रंस है।

मबारों में अधिकारा आदिवासी मंगोल जाति के हैं। इसमें कोई ही भारतीय आर्य हाथ। नेपाल में प्रचलित आर्य अथवा भारतीय ही बौद्ध हुए और बाद में उन्होंने मबारों का एक मूल में बाँटकर बौद्ध मतावलम्बी बनाया। तत्पश्चात् वर्णाश्रम धर्म के कट्टर अनुयायी हिन्दू राजाधर्म ने बार वर्ष और छत्तीस जातियाँ बनाकर मबार जाति को बिसर दिया। कुछ विद्वान् मबारों का कथन है कि मबारों बौद्ध नेपाल के ही आदिम निवासी हैं, वह वर्णाश्रमी आर्य मंगोल ब्रह्मन् नहीं। नेपाल के जो बौद्ध पुगेहित या ब्रह्माचार्य हैं वह सब ब्राह्मण से बौद्ध हुए हैं और बहुत से बौद्ध मम्म तथा लिच्छवी ब्रह्मन् भी हैं जो ब्रह्मान्तर वैद्यों में गिने जाने लग्ये।

तिब्बत के लोग 'सामा' को 'जम' भी कहते हैं। यह 'जम' संस्कृत के 'जम्' शब्द का अपभ्रंस है। इससे स्पष्ट होता है कि प्राचीन कामा गाव वाले भी मूलतः आर्य ही हैं।

तथाई में ब्रह्म नाम का नाम मनाउन हिन्दू धर्म का ही मानते हैं। यह शब्द पानी के शब्द 'स्वर्धर' का अपभ्रंस है। शैवों के विषय प्रभाव के कारण इन जाति में जादू-टोने और मन्त्र प्रत्येक प्रकार का विषय प्रचार है।

नेपाल-नरखी में बड़ी-बड़ी इस्लामी संस्कृति भी भी शक्ति मिलती है। पशुपतिनाथ के रहने वाले मुसलमान तथा राम का ही मानते हैं और न खीम ही नहीं। उन पर तो शैवों के देवी उभरा ही मबार है। काठमाण्डू के पूर्वी भाग में तो कुछ लोग भी मुसलमान मिलते हैं जो बौद्ध मन्दिरों को पूजते हैं। सरदार इब्रालीमजी शाह न अपनी पुष्ता में लिखा है कि पूर्व में नरखी ही एक लगा देश है जहाँ मुहम्मद की शिष्टाओं का सर्वथा बहिष्कार किया गया है।

## भाषा और साहित्य

हिन्दी और नेपाली भाषा के सम्बन्ध पर साहित्यशास्त्रियों ने मिश्र-मिश्र मत नहीं है। हिन्दी साहित्य के कुछ विद्वान् जैसे नेपाली भाषा का बोधा प्राकृत अपभ्रंस से मिलित मानते हैं। उसी प्रकार कुछ भाषा ज्ञान भाषा का वैशाखी तथा दक्खी भाषासमूह की उपयोगता मानते हैं। डाक्टर प्रियम्वद का मत है कि 'लमकुरा' दोरसेनी और मागधी की भाँति प्राकृतिक अपभ्रंस का एक रूप है। मूलतः नेपाली भाषा हिन्दी की संतान है। बिमल पाली तथा प्राकृत के अपभ्रंस भाषाओं की प्रचुरता है। नेपाल में बीह्र बर्ष के पश्चिम के भाषा ही भाषा पाली भाषा भी लुप्त फैलती गई। यह पाली भाषा अपने सांस्कृतिक रूप का छोड़कर व्यावहारिक रूप में परिवर्तित हो गई।

लमका की बोली 'लमकुरा' का उद्भव-स्थान नेपाल की पानी में पश्चिम माध्याह्निकी प्रदेश है। प्राचीन इतिहास तथा वादपय में इसके सम्बन्ध में काफ़ी सामग्री मिलती है। लम जाति जायों में भी प्राचीन जाति बताई जाती है। उसका निवासस्थान उत्तर-पश्चिम पहाड़ बनाया जाता है। कब्रिस्तानों में बोली जान बोली बोली का ही नाम 'पर्वणिपा' कहते हैं। यह भाषा अभी तक संसार की अन्य भाषाओं के समस्त अनुपम भाषा में है। पुराण में जैसे 'बालापुर' और 'अलार्यो' तथा हिन्दुस्तान में 'हिन्दुस्तानी' लिखी जायाएँ जाती उसी प्रकार नेपाल में यह 'नेपालीकुरा' भी लिखी भाषा बोली जा सकती है। पचास सालों की उपेक्षा-नीति के कारण नेपाली भाषा विकसित नहीं हो सकी और उसमें संस्कृत बोली अरबी फारसी अंग्रेजी निखली तथा चीनी भाषाओं के सहयोग प्राप्त पुरु-मित्त गये। निखली वादपय में न बजबा मय्य तथा 'पा' अर्थात् देण अर्थात् 'नपा' शब्द का अर्थ 'मध्यदेण' होता है। नेपाल 'नपा' का सांस्कृतिक रूप है। 'न' केवल एक प्रत्यय है। कुछ लोग का कथन है कि 'न' मुनि का बनाया हुआ हस्त के कारण 'नेपाल' नाम पड़ा। कहीं तक यह कथ्य है, कहना कठिन है। कुछ लोग यह नहीं मानते कि 'न' नामक कोई मुनि भी हुए है। एतिहासिकों ने न नामक गुप्तवंशज एक राजा का उल्लेख किया है। यह भी सत्य है कि 'निमि' नामक एक राजपति हो गए हैं और उसी के आशय पर 'निमिराज' से 'निराज' और अन्ततः उच्चारण-नीति के फलस्वरूप 'नेपाल' हो गया। गया भी कुछ लोग का मत है। यह भी सत्य है कि निखल में नीय का 'न' बज्जट और 'पा' का अर्थ 'बाप' होता है। इसलिए 'न' में 'पा' जोड़ दिए जाने पर 'नपा' का अर्थ 'पितृवशी' होता है।

काश्चात्तु की नवगी भाषा में 'न' और निखली में 'न' (पानी) पाटन

को नबारी में 'यल' और तिब्बती में 'पाख्य' आदगांव (भक्तपुर) को नबारी में 'खोप' और तिब्बती में 'खोसोंग' कहते हैं। एसे ही बहुत से नगर, गांव तथा तीर्थ हैं जो नबारी और तिब्बती में एक प्रकार से उल्टा-पल्टा होते हैं। ध्वनि विज्ञान की दृष्टि से काम्माण्डू की प्रमुख भाषा नबारी तथा तिब्बती भाषा एक ही परिवार की सगी बहिन हैं।

### बोलियाँ

बासी और गण्डक नदियों के बीच माझगञ्ज प्रदेश में नयासी भाषा पर राजपूतों के सम्पर्क से राजस्थानी बोली की छाप पड़ी है। यहाँ की बोली पर कन्नडा भाषा का अधिक और अधिकारी का कम प्रभाव पड़ा है। पूर्वी तराई में मैथिली तथा मध्य तराई में भोजपुरी बोली आती है। परन्तु पश्चिमी तराई में एक एसी भी बोली बासी आती है जो पड़वाल तथा कुमायू की बोली से अधिक मिश्रित-जुल्टी है। मीठरी मधेश की निचली तलहटी में 'मरहनी' बोली है जिसे केवल बाद लोग बोलते हैं। इन सब बोलियों के मूलस्रोत तो प्राचीन हिन्दी में मिलते हैं। मुझुर पश्चिम में 'डाटाल' भाषा बासी आती है जो डोनी के नाम पर बनी है।

पर्वनी बोलियाँ मयाङ्ग बोलियों की समूह की हैं। इनमें गुम्फू, लामाङ्ग, स्यापॉ, स्लोपा, लाङ्पा, लिङ्ग, चिरली, मुमी, मुनबार, मदरी, यले और तिब्बती-बर्मी भाषा की भी बोलियाँ सम्मिलित हैं। नबारी तथा तिब्बती बोलियाँ एकाग्रराजी हैं और चीनी परिवार की हैं। तिब्बती भाषाओं की भाँति नबारी की भी उन्नति नहीं हो सकी है, और एक-एक शब्द के प्रायः कई कई अर्थ होते हैं।

पर्वनी बोलियाँ में गीता की प्रचुरता है। इनमें साहरे, साहुरे या साहोरिया नबार् देउमज, गुबारी, माङ्गमिरी, रनमी, बामुन, मंगिनी, चेंग, अमारे, साउम, लामी, कृष्णीन और बाराहामे आदि गीत विषय रूप से गाये जाते हैं।

नयासीपुरा की 'गोरगार्नी' भी बड़ा जाना है। 'गोरगा' (गर्गा) शब्द से निकला हुआ मान्य होता है या जिन्हा, परगना या कुम का पर्यायवाची है। 'गर्गा' का अर्थ बनी बस्ती होता है जैन—नयासी को गोरगार्नी कहता अर्थात् इसी प्रकार नयासी भाषा का माङ्गलामी ब्रह्मा भी आपनिजनक है।

### लिपियाँ

मयाङ्ग में बोन्, रैजा, मनिङ्ग और बरार् में उर्दू से भी इत्यादि लिपियाँ प्रयुक्त की जाती हैं परन्तु देवनागरी या मयल नयाङ्ग की राष्ट्र-लिपि और अर्थात्ति दोनों ही हैं। नयासी भाषा में पाङ्गी के भी बारी शब्द प्रचलित होते हैं। इनमें हङ्ग, बमाजिब, लमङ्गुव, रैपन (रैनी) इत्यादि आधुनिक मापदण्ड हैं।

### साहित्य

साहित्य और कला की दृष्टि से नबारी भाषा का भी अपना स्थान है। पुराने गानकों

न मराठी और हिन्दी भाषा का प्रचलन बिस्कुस बन्द कर दिया था। कोई साहित्यकार मराठी भाषा में कुछ लिखने-पढ़ने नहीं पाता था। बहुत पहले तो इस भाषा का इसकिए प्रकार नहीं था थाया कि उस समय पाठी प्राकृत और अपभ्रंश भाषा का बालबाला था। मराठी व्याकरण पहले एक जर्मन विद्वान् ने लिखी। इसके पश्चात् अमर लहीर शुकराज शास्त्री ने सन् १९३० ई० में मराठी भाषा की संक्षिप्त व्याकरण रची।

नेपाली भाषा का साहित्य समृद्धिवासी नहीं हो पाया है। सन् १९२९ ई० में डाक्टर टर्नर ने बहुत परिश्रम से नेपाली भाषा का संक्षेपीय तैयार किया। इसमें अभी तक भाषा विज्ञान इन्जीनियरिंग वर्तन विज्ञान व्यापार, ज्योतिष, भौतिक शास्त्र तथा कला आदि विषयों पर पुस्तकें ही नहीं लिखी गई हैं। इस भाषा में सर्वप्रथम समाकल्य धार्मिक रचनायें रचनायें मनु तथा परमानन्द की मिलती हैं। इसके पश्चात् ब्राह्मिण का अनुवाद नेपाली भाषा में हुआ। आदिशिव भानुभक्त नेपाली साहित्य के संत तुलसीदास मान जाते हैं। जिन्होंने भी एक 'रामायण' लिखकर रानीयता फैलाई। तराईवासियों की भाषा हिन्दी है। इसी में तराई का मारा काम-काज होता है। फेंकते-फेंकते हिन्दी पहाड़ों में भी घुस गई है और अब नेपाल सरकार ने इस भाषा को मान्यता दे दी है। तराई-निवासी हिन्दी भाषा ही में पुस्तकें आदि लिखते हैं। यही हिन्दी पड़ोसी भारत की राष्ट्रभाषा है जो पूर्ण विकसित विश्व की मध्य भाषाओं के समकक्ष पहुँच चुकी है।

नेपाली भाषा के आदिशिव भानुभक्त के पश्चात् कुछ साहित्यकारों द्वारा महा भारत और मागधन तथा अप्यारम रामायण का संक्षेपक अनुवाद नेपाली में किया गया। इसी समय कुछ गद्य लेखकों ने उर्दू तथा फारसी के उपन्यासों का अनुवाद किया। इसी समय कुछ लेखकों ने उर्दू की कविताओं का आधार पर मखिरम की कवितायें लिखी। अनुवाद के क्षेत्र में अतिशय शाकुन्तलम् विक्रमादित्य बुद्धि बालक तथा हिनोपदस विषय प्रसिद्ध हैं।

बीसवीं शताब्दी के पहले का नेपाली साहित्य बहुत पिछड़ा हुआ है किन्तु बीसवीं शताब्दी का प्रभाव होने ही नेपाली साहित्य में विकास हुआ तथा। सन् १९१० ई० में राजपुर पे० हेमराज ने नेपाली भाषा की 'बत्रिका' नामक व्याकरण लिखी। इसके पश्चात् पण्डित मोयनाथ ने 'मध्य बत्रिका' तथा पण्डित देवीदत्त पराजुनी ने 'अमरादय' की रचनायें की।

सन् १९१५ ई० के बाद पण्डित जयनाथ ने 'अनुविचार' 'मध्य-कवि-सम्पाद' तथा 'बुद्धि-विनी' नामक पुस्तिका की रचना की। साहित्यिक दृष्टि से तो इन पुस्तकों का महत्त्व कम है किन्तु इनमें से किसी में भी सामयिक समस्याओं की स्पष्ट जाँच नहीं मिलती है। इसी समय दोनों का एक लघु सूक्ति संग्रह तथा पण्डित पराजी शर्मा के 'वैद्य' प्रकाशित हुए, किन्तु उनका कोई विशेष प्रकार नहीं हुआ।

सन् १९२४ ई० में प्रधान मंत्री बग्न जमनाल ने 'पोरना भाषा प्रचारिणी' नामक



एक प्रकाशन संस्था लखी की जिसका उद्देश्य राणा सरकार का समर्थन करना तथा विद्या मया के लिए पाठ्य-पुस्तकों को प्रकाशित करने की स्वीकृति देना था। बाद में अंग्रेजी मस्कृत तथा बंगाली भाषा के भी बो-जीन बय मपामी भाषा में अनूदित हुए।

मन् १९१ ई० के परधान् साहित्यकारों का ध्यान गद्य की ओर विधायक रूप से गया। इस युग में काव्य उपन्यास कहानी तथा नाटक विषयक ग्रन्थों की रचनाएं हुईं। इसी काल में अग्रजी-मपामी वाचकपत्र तथा कहानियों मुहावरों और वस्तुचर्चाओं का मध्य भी प्रकाशित हुए।

मन् १९१ ई० के अन्त में मपामी साहित्य पर हिन्दी तथा बंगाली भाषाओं का विधायक प्रभाव पड़ा। इस समय की अग्रजी रचनायें हैं जनता के लिए एक न एक संदेश लेकर आती हैं। काव्य के क्षेत्र में पण्डित लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा भाषि कवियों ने विधायक प्रयास किया है। पण्डित लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा की रचनाओं में प्राध्व तथा पादचार्य शर्मा प्रकाश के कवियों की दीक्षिता बार् आती है। इनकी कविताओं में रहस्यवाद छायावाद तथा कुछ अन्य बार् की भी छटा देखने का मिलती है। जन जीतकारों में बमराज बापा का नाम उल्लेखनीय है। बापा व मीनो में मगीत का साथ ही साथ राष्ट्रीयता तथा मौलिकता भी पाई जाती है।

बामकुल 'सम' तथा भीमनिधि तिवारी द्वारा काव्य के कुशल कलाकार हैं। 'सम' की माध्य-पुस्तकों में 'मुद्रको व्यथा' घब और 'प्रह्लाद' सुन्दर हैं। जावपल तथा कला-पल शर्मा की सुन्दर अभिव्यञ्जना है। गद्य-साहित्य में रत्नराज पाण्डेय के 'प्रायश्चित्त' तथा 'कल्पनी' का मौलिक उपयोग है। इस शर्मा के अनिश्चित इनका विधायक और भारतीय का इतिहास तथा 'नवरत्न' भी पढ़ने योग्य है।

### पत्र-पत्रिकाएं

मपाम का सर्वप्रथम पत्र 'गोरणा पत्र' का जिस नेपाल के प्रधान मंत्री देव रामरा ने जन्म दिया। यह पत्र अब तक सक्रिय है और इसका प्रकाशन मन्हा में तीन बार हुआ है।

मन् १ १९ १३ ई० में मुद्रा देवीप्रसाद नायकोटा के मन्हादरार में 'गोरणा' नामक एक साप्ताहिक पत्र बनारस में प्रकाशित हुआ किन्तु पात्र बंद के बाद राणा सरकार ने भारत सरकार में कहकर इस बन्द करवा दिया। इसके बाद मन् १९२३-२८ में ठाकुर चन्द्र मिश्र व मन्हादरार में दहरादून में 'गोरणा मपाम' और 'तन्त्र गोरणा' राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्र प्रकाशित हुए। राणा सरकार में इन पत्रों पर भी प्रतिबन्ध लगाया गया और बार् मपामी उन्हें मपाम की सीमा में नहीं ले जा सकता था। मन् १९४४ ई० में दम्बर मिश्र गुप्त व दार्जिलिंग में 'गोरणा' नामक पत्र का जन्म दिया। पत्रों की गलत जब बन्द बन्द नहीं मग भारतस्थित मपामी राजनीतिज्ञ कार्यकर्ताओं ने मन् १९६३ ई० में लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा के मन्हादरार में 'मुद्रामी' नामक एक नय राष्ट्रीय साप्ताहिक

पत्र का प्रकाशन किया। इस पत्र का उद्देश्य तथा सरकार का विरोध तथा नेपाली राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रचार करना था।

इसके कुछ दिनों के बाद 'नेपाल पुकार' नामक एक साप्ताहिक पत्र काठमांडू में प्रकाशित होने लगा। 'नेपाल पुकार' हिन्दी और नेपाली दोनों भाषाओं में प्रकाशित होता था। इसी समय 'नव नेपाल' तथा 'नेपाल टुडे' नामक दो साप्ताहिक पत्र हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रकाशित होने लगे।

१० जनवरी सन् १९५१ ई० में नई दिल्ली में 'श्री नेपाल' नामक एक अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र स्वतन्त्र रूप में भारतीय तथा प्रा० गिब्सन्सन्स मन्त्रालय के सम्पादन में प्रकाशित हुआ। नेपाल सम्बन्धी यह पहला ही पत्र था जो विश्व के प्रत्येक स्वतन्त्र राष्ट्र में भेजा जाता रहा है।

अन्तरिम सरकार की स्थापना हो जाने के बाद काठमांडू में नेपाली भाषा में 'भाषाज' नामक एक दैनिक समाचारपत्र प्रकाशित हुआ किन्तु कुछ दिनों के बाद बन्द हो गया।

इसके बाद कोई भी दैनिक अथवा साप्ताहिक समाचारपत्र नियमित रूप से काठमांडू में नहीं प्रकाशित हो सका और इसके लिए जो प्रयास किए भी गये वे असफल ही रहे। अतएव हिन्दी के कुछ साप्ताहिक नेपाल के लिए भारत में प्रकाशित होने लगे बिना उनकी भी हालत बहुत खराब ही रही।

## पहाड़ और तराई

पहाड़ और तराई के सैनिक तथा आर्थिक आधार पर अत्यन्त भिन्न हैं। एकतर्फी तथा उसके पहाड़ भी सरकारों को दोनों भागों में उतना ही सम्बन्ध था जितने से राज्य का काम चमक सकता था। पुष्पनी सरकारों और जनता के बीच केवल राजस्व बसूल करने तक का सम्पर्क रहा। सबकी दृष्टि राजधानी पर केन्द्रित रहती और जहाँ के परिवर्तन और मायमताएँ समूचे राज्य पर प्रभाव डालती।

राजाघाटी स्थापित होने पर इस दृष्टिकोण में बोझ-बहुल परिवर्तन आया किन्तु तब भी राज्य की राजधानी काठमाण्डू ही 'नेपाल' कहलाती रही—सामन्य पर भी वही शहर हावी रहा। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए राजधानी को संतुष्ट रखना अनिवार्य था और शासकों का यही अभिप्राय भी रहा। मारी शक्ति प्रसागर्हीय संघ राजकीय योजनाएँ काठमाण्डू की बाती में कन्डीभूत रहनी और पुष्पिम तथा मैना का ज्ञान राज्य के अग्य भागों में फैलाया जाता।

राजधानी के अतिरिक्त शासकों को देश के किन्हीं भी प्रांत में भय नहीं रहता। पहाड़ों पर बसने वाले आम पर्यटियों के लिए पुष्पिम और मैना की सरकारी मौकरी बरदान मिष्ट हानी और तराई-बासी सोना उगमन वाली घरेली की गोरी में प्रसरित रहन।

शासका का तराई में केवल भूमि-कर बसूल करने तक का सम्बन्ध रहता और तराई के निवासी भारत के सहारे ही अपनी मारी आबस्वकताएँ, समस्याएँ पूरी करते और मयाप की सीमा में बसे हुए के लाने काठमाण्डू की सरकार का भूमि का कर लेकर अपने पिण्ड छेदने।

तराई बहुत अग्रे में मंशाम-भूमि रहती है। मुसल तथा ब्रिटिश साम्राज्यों में अत्यन्त की लड़ाई हमी प्रदेश पर लानी रहती। प्रागैतिहासिक काल में किरातों और पाण्डवों की भी लड़ाई यही होनी बल्लवाई जानी है। लार्ड्स यह कि तराई राजाधिया तक साधारण-सी बनी रहती। एकतर्फी राजाघाटी के बिच्छ भी जितनी हलचलें जालिया हुई बिचर लय में बहु लकी मधेग की ही भूमि पर हुई।

परिधिपति क अनुसार जमीन की लालच उसके जंगल और उपजाऊन के लाने बढ़नी रहती और ज्यादा आबादी में बृद्धि होनी गई क्योंकि बीचन जगह आबाद होती गई। राजाधन्य तराई अबका मयरा के लिए एक अलग विभाग ही नहीं बल्कि कानून में भी कुछ भिन्नता बरनी गई। पर्वतीय प्रदेश के लिए इस बात की जरूरत नहीं महसूस की गई।

एक ही अदगाय के लिए तराई और पहाड़ क भाग का भिन्न गवाण मिलनी और

जमीन आदि के हक की प्राथमिकता पर्वतीय का मिलती। इतना ही नहीं अपितु तपान-तराई में भारतीय सिक्के का ही प्रचलन रहने दिया गया। यह सब प्रारम्भिक काल में नहीं था। इस मदमाह का रजता उस समय अनिवार्य प्रतीत हुआ जब तराई की भूमि पर आबादी तेज रफ्तार से बढ़ने लगी और इस प्रदेश में जो विकसित रही बड़ दूर हो चली।

प्रपञ्च की भूमि पर आविर्भाव जमान की मुकामात विरता प्रथा से हुई जब सामक अपने लोग को पुनः रजन के लिए जंगल और जमीन के दुकड़े—जबकीन रूप में देन लग। धीरे-धीरे यह शेष व्यापक होना गया और समय तराई की बाधी कृषि योग्य भूमि उन्नी वर्ग बिगम के हाथों में चली गई जो सामान्यतः पर भी हुआ था। सामका न भूमि को प्राप्त करन के सम्बन्ध में भी दुरी नीति से काम लिया। इससे देश की मरमा हुआ और सत्ता चारियों की बाध पहाड़ और तराई दोनों जगह के बासी समझन लगे।

प्रकृति के कोस का राजन बनकर पर्वतीय सर्वथा विवश थे। उनका भारत में उतना प्रापक सम्बन्ध नहीं था जितना तराई के रहनेवाला का। उन्हें काठमाण्डू की कृपा पर जीना, करना और उन्नी की ताबहारी में व्यस्त रहना पड़ता। सामक उनको तराई में आबाद कराने की बात न सोचकर स्वदेश के बाहर भगान से अपनी बला टाकना समझते। विदेश में सैनिक और दरबार आदि के पर उनके लिए नियामन साधित होती और वे सेनी की ओर मुखातिब न हाकर गीकरी की ही ओर भागे बढ़ने। तराई वालों की मनोकृति ठीक इसके विपरीत बनती रही और वे गीकरी की अधिक परबाह न करके परली की ही उपामना करने और सामक वर्ग भी इसको अधिक पसन्द करने।

राजा सामकी की नीयत यद्यपि महेदियों के प्रति भुक्त से अत तक तराब रही तथापि तराईवासियों की हली जमती ही गई और उनकी आर्थिक हानन लगी के सहारे अच्छी होती रही। पर्वतवासियों की हानन इसके प्रतिकूल रही। यही राजा हकूमत की मरम बड़ी बकूथी साधित हुई।

पहाड़ी जनता को तराई में लगी की तथा तराई की जनता को सरकारी गीकरी की भुक्त बजती ही गई और समय आते ही तराई तथा पहाड़ की जनता कंधे से कंधा मितानर सरकार के बिन्दु आन्दान कर ली।

मेगाल की पर्वतग्री सरकार न जनता की एकता तथा पक्षि को बिनकन और निर्दम बनान के लिए पहाड़ और तराई में अदनीति लगी थी। वर्तमान सरकार यह बात अच्छी तरह जानती है कि पहाड़ और तराई की एकता और बिनाम पर ही मेगाल राज्य का अस्तित्व टिका हुआ है। इसी अमिनाय के बहु सरकार की अनुदान नीति का परिचलित करके जनचारी मिताओं पर चलने का प्रयास कर रही है।

### सामन-व्यवस्था

सामन के बन्धान सामन पता जब प्रजासामिक गतिधियों के हाथ में आई तब

उनके सामने सबसे अहम सवाल प्रशासकीय ढंग का ही ठीक करण का उठ खड़ा हुआ। बस्तुतः यह एक बहुत बड़ी समस्या साबित हुई और जिस कोई भी अस्थिर सरकार भला बनें हल कर सकती थी। कुमरी और बेल का प्रतिक्रियावादी तत्त्व भी सोचा हुआ नहीं था और वह अपनी जड़ पर कुठाराघात होते हुए बेलकर सरकार के इस कदम को पीछे खींचता रहा। इस दौरान में पहाड़ और तराई की जनता को मुश्किलें ही जमीन हुई और सभी अग्रिम ब्राह्मण तत्त्व फिर उठकर बिबराम रूप धारण करने लगा। विद्रोह के अभाव तथा पुष्पिम की कमजारी से तराई प्रवेश राजा शासन के समय से ही अघान्ति का घर रहा। ऐसी स्थिति में चोरी और डकैतियों का ही बोलबाला रहा और यही कारण है जो गर्मी के महीना से तराई का कोई जमींदार अथवा किसान मुस की नींद सोन नहीं पाता। जमींदार आदि अपन बास-बच्चों को प्रायः भारत के किसी यात्रे अथवा नगर में भेज देते हैं गर्मी की ऋतु में डाकूओं का बिछड़ भय रहता है और वे कभी-कभी मॉटिम लेकर डाके डामते हैं। नेपाल की तराई में तो एक-एक रात में दो-दो बार-बार डाके पड़ना साधारण-सी बात है और निरीह व्यक्तियों की निर्दम हत्याएं हुआ करती हैं। डाके का बढ़ना लेकर कोई भी व्यक्ति किसी की हत्या कर डालता है। इस प्रकार की घटनाओं में सरकार अपनी बिबलाता दिखाकर अपना पिण्ड छड़ा देती है। किसानों के घर घूम के होते हैं। इसलिए उनकी बात पर गांव के गांव एक चिप जाते हैं। नेपाल सरकार की पुष्पिम इतनी निकम्मी अकुलस और घुगलोर रही है कि वह प्रायः चोरों और डाकूओं से मिलकर जनता की झूट में हिस्से लेती रही।

नेपाल और भारत के बीच में कोई प्राकृतिक सीमा नहीं है। दोनों देशों के बीच एक चौड़ी सड़क बना दी गई है जिसे 'दम मजरा' कहा जाता है। इसी सड़क में ईंट के लम्ब लड़े कर दिये गये हैं। ये लम्ब सीमेंट-सीमेंट की छुरी पर लट्ट हुए छुर ही से सफाई रख के बुल्लिओवर हाथ हैं जो दोनों देशों की सीमा निर्धारित करने हैं। नेपाल के लोग भारत को 'मट्टागार' भी कहते हैं। मट्टागार का अर्थ होता है रात के पार बासा रोड। नेपाल के लोग भारत को अथ भी प्रायः 'मुसमान अथवा 'अबजी' ही कहा करते हैं। 'दम मजरा' पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं है। इस सीमा पर दिन इहाड़ डकैनी हाती है। परन्तु लम्ब भी एक दुमरे की रखा नहीं कर सकते। मान लिया कि सीमा पर नेपाल का एक गांव है और उस गांव में आग लगी या दावा पड़ा तो उसी के सामने भारत के गांव बास रख गया पर गद हाथ विबाध लमारा दलन क और कुछ भी नहीं कर सकते। यही कारण है कि सीमा पर स्थित गांव से प्रायः दाव पड़ा करते हैं। इतना ही नहीं। लोग हत्याएं करने भी इस उपर हा जाते हैं। मान लिया भारत के एक व्यक्ति ने नेपाल के किसी नागरिक का घर दावा और उस गांव पार कर पुराना ही भारत की सीमा से आ चुका तो इस परिस्थिति में तो नेपाल की पुलिस ही पकड़ सकती है और न ही नेपाल की जनता ही। इस प्रकार के मामलों में तो यही कह दिया जाता है कि अगर्भीता मट्टागार हा गया।

मपास में एक प्रकार के 'विमलक्षोर' होते हैं। ये अपने को पार उद्घोषित करके जिसकी चाली कर लेते हैं उसमें बनायी बसुण करते हैं। 'पनाही' यह स्वच्छ उस जुमान को कहते हैं जो खोर को इम्पिया बाप्य होकर देना पड़ता है जिसमें खोर चाली का मास बाप्य कर दे। 'पनाही' पास पर ही खोर खोरी का मास बाप्य करना है। यह-यह डाकु इसमें मध्यस्थता का काम करते हैं।

मर्यादा सरकार की अस्मिता भारतीय शाहुओं की भी मर्यादा की तराई में पताह पान का प्रमुख कारण रही है। भारत सरकार और मर्यादा सरकार में वृत्ति एक सीमा द्वारा शाहुओं और को पकड़ने के लिए एक दूसरे के राज्य में प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त है तथापि यह खूबसा मर्यादा में अभी जारी हो रही है।

अस्पृतास्तु तथा वाक्यधर

अपान की राजधानी काठमाण्डू में तुमी लाम के मैदान के पास एक मिमिद्री अस्पताल है। इसमें केवल अमाध्य रोगों में पीड़ित मैनिक ही भरती किए जाते हैं। इसके प्रधान के पास एक दुम्पी बाई है जिस कुछ वार्षिक गृहायणा मिलती है। इसी के समीप 'मिबिल बीर अस्पताल' है जिसमें केवल जो ही रोगियों के रहने के लिए स्थान है। इन्हीं दोनों अस्पतालों के पास एक अनाथा अस्पताल भी है। जिसका नाम 'बीर पीयल अस्पताल' है। इसके अनिविधन काठमाण्डू में एक तात्काल मनीषाविषय है जिसमें लम के रोगियों की रक्षा होती है।

पहाड़ी प्रदेश तथा तराई में अच्छा सम्पत्त नहीं है। प्रत्येक जिले की छावनी पर एक छाती-नी मरकानि हिन्दुस्तानी अपवा औपचार्य एक मामूली हाथर क गिरिजा में रहता है। इन हिन्दुस्तानियों में आम जनता का दबाइया नहीं मिल पाती। पौखारी तथा हत्या आदि के माध्यमों में हिन्दु के हाथर को हजारों रुपय मूम देकर अपराधी अपनी मरणा का पार्थ निवारण मंगा है।

मगई में पाता प्रचार की अर्थकर बीमारियाँ फैलनी रहनी हैं। प्रचार तथा चार्जिक क मशीनों में ती प्रचरिया तथा बूटी बनार का अत्यधिक प्रचलन हुआ जाता है। उपर्युक्त-मैंगल में प्रचार हुआ तथा ताऊन म पीछिन होकर जनता माहि चार्जिक करन लयनी है परन्तु जन भी सरकार की ओर से जनता के स्वास्थ्य के लिए कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता रहा। इस प्रकार जन का मार्गों प्रामी रोमा के सिवाय हा आया चलन है। अस्पतालों व अस्वास्थ्य के कारण जनता विषाणु आसों और मार्गों में जनता काय बनान का प्रयत्न करनी रही है। य मान जनता का हर बीमारी में मून जन का प्रचार बनान है। आहुक जनता इन आजा के आक में पंचकर जनता मकम पीसा बेछनी रही है। मार्गों में हुआ तथा ताऊन पदन पर मान बदे चार्जिक भी मइसायवन आदि मुनन बनन है और प्रचरित प्राक तथा मार्ग पीवान म आकर तब स्वर म हुननविचारक बाहर बानी मे देखी-देवनाओं की प्रचार

समान समतल है। पहाड़ों पर बसतबासों को जड़ी बूटी के अतिरिक्त अन्य कोई बसा भित्ति ही नहीं पानी। वे उतने पड़-मिट्टि हाते ही नहीं जो मायुर्बेद के मरुतों आदि को देखकर जड़ी-बूटियों को पहचानकर उनका मनुष्ययोग कर सकें। बाटक बीमारी हो जाने पर उन लोगों को ठंडी ऊंची चोटियों में कूद कूद कर आत्म-हत्या कर लेनी पड़ती है। नेपाल में किसी भी प्रसिद्ध डाक्टर को पहले जमान ही नहीं दिया जाता था। देश की अधिकतर मूमि डाक्टरों तथा आयुर्विज्ञानियों से भरी हुई है।

### मातापाठ तथा संचार

नेपाल में काठमाण्डू बीरगंज तथा बिराटनगर आदि को छोड़कर कहीं भी तार एवं डाक की सम्पूर्ण व्यवस्था नहीं है। पहाड़ तथा तराई के सभी जिलों में डाक-व्यवस्था नियमित रूप से चालू नहीं है। प्रत्येक जिले तथा तहसील में एक डाकघर रहता है जिसमें आम जनता का सम्पर्क प्राप्त नहीं रहता।

### जल का प्रबंध

नेपाल में एक मैदानी जल है जिसमें दो हजार बँदियों के जल का स्थान है। इस जल के लिए एक अस्पताल है जिसमें बँदियों की बसा होती है। राजधानी में मकानों नामक एक और जल है जो बहुत तराब माना जाता है। तराई के बँदियों को पहाड़ी जलों में अधिक दिन रहने के कारण उन्हें पहाड़ का पानी कम जाता है। नेपाल में पानी कमता भी है और पानी कमता भी है। इस पहाड़ी का पूरी तरह वही समझ सकते हैं जो नेपाल की आन्तरिक हालत में सभी भाषा परिचित हैं। नेपाल में अरुणधियों का 'काठमाण्डू' तथा 'गुरुयन्त्र' की प्रथा है। इस अनुसार बँदियों के दोनों पैरों का एक बड़ी लकड़ी के मुख्य अथवा जँबीर में डाकघर नाम दिया जाता है। महिलाओं के लिए भी किसी विशेष सुविधा की व्यवस्था नहीं की गई है। नेपाल के बँदियों में कोई काम नहीं दिया जाता।

अन्तरिम सरकार ने पानी की सजा रद्द करके 'जल विधि' में कुछ सुधार किए हैं। इन सुधारों के फलस्वरूप जल की सजा आठ से बढ़ाकर बारह कर दी गई है और जलों में 'क' धर्मा के बन्धियों को मिलन-गहन तथा विभिन्न कुशल की सुविधा मिल गई है। न. धर्मा के बन्धियों का ग्राह्य-आमर्षी के अतिरिक्त कुछ पैग भी बन की व्यवस्था है। नेपाल के जल संचालन गाने में किसी प्रकार भी अलक्ष्य नहीं है। बन्दी को प्राप्त जल पर न ग्राह्य-आमर्षी तथा अन्य संचालन किसी प्रकार अपनी अधिकारिता नहीं पड़ती है। जलों को यह व्यवस्था मिलने जमान को धाद दिया नहीं है और जो विधि भी प्रभावशाली है न कि विधि अज्ञान्यक की बात है।

## शिक्षा

नेपाल में शिक्षा का नितांत बर्बाद है। यहाँ की जनता एक प्रतिघात से भी कम साक्षर है। सन् १९१२ ई० में इम्पेरियल के सम्राट् जार्ज पंचम जब भारत आय वे तब उनके साथ नेपाल के तत्कालीन प्रधान मंत्री जम्न धामदर से बातचीत हुई थी। कहा जाता है कि ब्रिटिश सम्राट् जार्ज पंचम ने जब उनसे पूछा कि क्या यह सत्य है कि नेपाल में शिक्षा विस्मृत नहीं क बराबर है तो जम्न धामदर ने कहा था कि नेपाल में शिक्षा का वास्तव में अभाव है और जिसका फल यह है कि हमारे नेपाल में लिलक और गोखले जैसे वास्तविकारी पैदा नहीं होने पाये।

महाराज जम्न धामदर के इस कथन से राजा रामर्षों की नीति स्पष्ट हो जाती है कि उनका प्रयत्न सदा यही रहा है कि नेपाल में शिक्षा का प्रचलन कभी भी न होत पावे अथवा जनता में शिक्षा का प्रसार हो जान से अन्तिमकारी भावनायें स्वतः ही उत्पन्न हो जायेंगी और राजासाही की दृष्टि भी हिंसनी प्रारम्भ हो जायेगी।

राजा धामर्षों ने अपने तथा महाराजाधिराज के परिवार को भी आधुनिक उच्च शिक्षा से संबंधित रखा। तथापि मवेशी की अभिमता अपनी मन्त्रियों की शिक्षा दिमाग की बराबर रही है। महाराजाधिराज विमुक्त और विजयराहु ने अपनी मन्त्रियों को उच्च शिक्षा देने के अभिप्राय में प्रधान मंत्री जम्न धामदर ने एक अंधज महिमा की मांग की और जिसने दाही परिवार को अंधगी भाँति की तालीम दी।

पाश्चात्य ईंग के आचार पर नेपाल के प्रधान मंत्री और धामदर ने सर्वप्रथम सन् १८९४ ई० में बरबार हाई स्कूल का उद्घाटन किया। इसके पहले नेपाल के विद्यार्थी भारत जाकर शिक्षा प्राप्त करते थे। नेपाल के प्रधान मंत्रियों में जम्न धामदर बहु प्रथम व्यक्ति का जिसने कलकत्ता विश्वविद्यालय में मैट्रिक की मगर प्राप्त की थी।

राजा रामर्ष में शिक्षा-विमान प्राप्त प्रधान मंत्री के मातहत रहना था और निरीक्षण करने के लिए एक इन्स्पेक्टर जनरल और उसके साथ डिप्टी हाइड्रेटर और जिसके मातहत पांच इन्स्पेक्टर होने थे।

राजा सरकार प्रतिक्रिय कुछ विद्यालयों का बड़ीफ देकर भागीय विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए भर्ती थी किन्तु वह उनमें प्रायः गुणधर का काम लेती थी। विद्यालयों का राजा रामर्षों के बाल रिपोर्त् भर्ती पढ़नी की बिनमें राजा सरकार के विरुद्ध भारत में समस्त बार्नेबाइयो का विचारम देना पड़ना था।

नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में एक विशाल बालेज है जिसमें की १० लाख ७५० का



की काम तथा बी एम-सी तक की पढ़ाई होती है। यह पटना विश्वविद्यालय में सम्मिलित है। ममल्ल देश में चाभीस हाई स्कूल मझगाँ के लिए तथा एक चाभेस काठमाण्डू में मझगाँ के लिए है। बिन्ना केन्द्र तथा छोटे-छोटे कस्बों को मिलाकर सब इकट्ठी मिडिल स्कूल तीन सौ अस्सी प्राइमरी स्कूल दो सौ चौहत्तर संस्कृत पाठशाला एक सैन्ट्रल नर्सरी स्कूल एवं सैन्ट्रल ट्रेनिंग स्कूल बनिक शिक्षा के लिए खुले हुए हैं। इनमें अधिकांश गैर-सरकारी और अर्ध-सरकारी हैं। काठमाण्डू में अध्यापिकायें सेवाश्रम में दिया प्राप्त करके जाती तथा परेल उद्यान-बगीचों तथा प्रामाण्य के कामों की शिक्षा देती हैं। निष्कर्ष यह है यह कहा जा सकता है कि पश्चीम-उत्तरीय राज्य की जनसंख्या वाले गोरखपुर जिले में जितने चाभेस मिडिल स्कूल तथा बेसिक प्राइमरी स्कूल हैं और जितने विद्यार्थी प्रतिवर्ष बहा गिरा प्राप्त करते हैं और जितना पैसा शिक्षा पर खर्च किया जाता है उतना एक करोड़ की जनसंख्या वाले एक स्वतंत्र राष्ट्र नेपाल में नहीं होता। बिचन्द्र चाभेस को जोलकर महाराज चन्द्र रामनर न उम राजाशाही की कश्तिखान की मन्त्रा बी बी।

### संस्कृत साहित्य में अभिगच्छि

धार्मिक देश होने के नाते पहाड़ी लोग संस्कृत में प्रीति करते हैं। उनमें पुस्तक कटव करण का सबसाधारण प्रचलन है। उनका स्वर भी मधुर होता है। वे बेरों का पाठ भी गुप्त करण हैं और उनके पाठ में साध्यमुखीय और साधायनीय पाठों का आभित्य होता है। नामवेर के प्रति विनय अभिगच्छि हाथ न कारण यह पद्य को भी या या कर पढ़ते हैं। बाह्य लोग अपने मझगाँ की संस्कृत पढ़ने के लिए 'कापी जी' (बनारस) भेज देते हैं। कापी जाकर वे बच्चे भिन्ना मागकर अपना विद्यार्थी-जीवन व्यतीत करते हैं। उनमें से प्रायः सबकी बुद्धि तीव्र होती है और अल्पकाल में धार्मिक ग्रन्थों को कठम्य करके अपने दम लीट जाते हैं।

महाराज चन्द्र रामनर न 'गोरखा प्रचारिणी नामक मन्त्रा मन्त्री की को विमल' उद्यम धार्मिक ग्रन्थ उपायाम एवं अनर्गल नया-साहित्य तथा पाठ्य-पुस्तकों इत्यादि का अनवरत नयावी माया में प्रचारित करण की स्कोहृति दनी मात्र था। दैव रामनर न अपने प्रधान मन्त्री नाम में 'गोरखा पत्र' नामक अर्ध-साप्ताहिक मन्त्रागी पत्र निकलवाया और यह पत्र आज तक प्रचारित हो रहा है।

राजा मन्त्राज मन्त्रा और बहियों को सबन अधिक लनरनाज समझती रही है। नामक की मन्त्राज मन्त्रा न वह इतना इतनी की वि प्रधान मन्त्री चन्द्र रामनर न गुप्ता गुप्त नाम उपायाम की वैचल इमिगि भी बर की मन्त्रा बी बी कि उन्हाज मन्त्री का मन्त्री नामक पुस्तक बना मिली। उन्हाज अपनी पुस्तक में लिखे इतना जिन दिया था कि मन्त्रा में पट यह मन्त्रा भी माया को दन्ता बना नाम को नहीं मिलनी।

नामक की मन्त्रा में नाम अनन अनन पत्र में धार्मिक तथा साहित्यिक पुस्तकें अर्गित करण में शक्तिनि की पुस्तक नहीं मन्त्रा न और न किसी पत्र जववा परिवर्त

प्रिया

## अस्पृश्यता का अभिशाप

नपाक की राधा सरकार अपने को पूर्णतः 'हिन्दू सरकार' कहती रही है और उसने अस्पृश्यता का अपने सामने में एक महत्वपूर्ण स्थान बना रखा था और वह उसका मंत्रालय कहती रही। राधा सामको न बिम्बदय यात्रीजी की लाठी प्रहार योजना को कुछ प्रशंसा ना अस्वस्थ की किन्तु अछूताद्वार के कारण वे बापू को हिन्दू धर्म का महान् धनु के रूप में प्रचार करत थे।

सामन्ती शासक परिवार अछूतों को पशु-कोटि के प्राणी मानता रहा है। अछूत का छूआ पानी पी मन पर ग्यादात्म्य 'पानी का मुहा' कहलान वाला मुकदमा चला गयी थी। 'पानी का मुहा' उस मुकदमे को कहल है जो हिन्दू धर्म के सामने नपाक के उन्मूलन के नागरिका को बग़ार यातनायें दी जानी थी। जो अछूतों के हाथ का छूआ पानी पी लेने से उन्हें अछूतोद्धारक न कहकर अनात्मिक तथा हिन्दू धर्म का उन्मूलन करने वाला कहकर दायाँ मिट्टी दिया जाता था। 'पानी को मुहा' का शाब्दिक अर्थ यह होता है कि जो अस्पृश्य जानिया के पात्र का अथवा उनके बदन का पानी ग्रहण कर लेने पर मुकदमा चलाया जाय। स्पृश्य जानिया का पनिया मिमान माना जाता रहा है और उनके साथ रागी-बगी का सम्बन्ध जोड़ा जा सकता था।

### पानी का मुकदमा

'पनिया मिमान जानियों का पानी चपला का पहाड़ में हमई मारपी पोड़' श्यामी और तराई हरिजन लट्ठा लावन पानी मरविषय पोड़ी लगी बरई बलबाद, मुमहर और मुमममान आदि परिमणित जानियों का पानी नहीं चपला था। किसी अछूत का छूआ पानी पी लेने पर उस विधान की 'पानी का मुहा' की धारानुसार जुर्माना और बाराबान भुगतना पड़ता था। जान बूझ कर किसी स्पृश्य जानि बाबू व्यक्ति का अपने हाथ का पानी पिला बन पर भी बटोर बण्ड भुगतना अनिवार्य था। स्पृश्य जानि बाबू को किसी अस्पृश्य जानि बाबू की बिन्धन पीन हुए पराट दिया जाता तो बाबा को लज्जा टाड़ दिया जाता था। 'पानी को मुहा' क दर में बाई हिन्दू किसी मुमममान नाई न न ना बाबू ही बनवा सकता था और न ही उसका छूआ पानी ही पी सकता था। इनबाई की दुश्मन तथा किसी मंदिर में अस्पृश्य जान लगी पाता। या ना नपाक में बाटो लगे अठ-धरि है जिनके अपिपत्ता एक बुजुर्ग अछूत ही है।

नपाक में 'पानी का मुहा' बहुत ही रितबल और अदृश्य माना जाता था। इस मुहा में एक बार जम जाता था वह बहुत ही अनात्म की दुष्टि में देगा जाता था।

इन पाण्डु का ब्रूमरा पल अस्पृश्यों का बहुत बड़ा उपकारक था। यदि कोई अस्पृश्य मृत्यु—  
जाति की किसी कन्या अथवा स्त्री से अनुचित सम्बन्ध स्थापित कर ले और दोनों प्राणी  
उसे स्वाभाविक में स्वीकार कर लें तो उस पर इस प्रकार का मुकुटमा नहीं बनाया जाता  
था। परन्तु यदि कोई मृत्यु जाति का व्यक्ति किसी अस्पृश्य जाति की कन्या अथवा  
स्त्री से अनुचित सम्बन्ध स्थापित कर ले और स्वाभाविक को उसकी सूचना मिल जाये तो  
उस पर पानी को मुहाँ बना दिया जाता था। नाम लिया कोई ब्राह्मण अथवा अधिप  
जमींदार किसी बहुत अथवा मूलजमान की कन्या अथवा स्त्री से अनुचित सम्बन्ध स्थापित  
करके उसे ठुकरा दें और वह बहुत और मूलजमान कन्या अथवा स्त्री प्रभाव देकर स्वाभाविक  
में वह सिद्ध कर दे ता उस जमींदार पर कबल पानी को मुहाँ ही नहीं बनता था अपितु  
उसे उस जमींदार की सम्पत्ति में से उचित हिस्सा भी मिल जाता था और उस जमींदार  
द्वारा जो सत्ता उत्पन्न होती थी वह उसकी सम्पत्ति की उत्तराधिकारी होती थी।  
यदि जमींदार न किसी मय से उसके गर्म के बन्ध को मिरवा दिया और उस स्त्री से उसे  
स्वाभाविक में मिल कर दिया ता उस पर 'पानी को मुहाँ' न बनकर 'बून को मुहाँ' बन  
जाता था और जमींदार महाराज को बीस वर्ष तक की बेल की सजा मिल सकती थी।

नयाम में मृत्यु और अस्पृश्य जाति की पहचान करना कठिन है। इसके लिए  
राजा सरकार ने कोई नाम विमान और परिभाषा निर्दिष्ट नहीं की थी जिसके अनुसार  
मृत भूत और मर्त्य का नियंत्रण कर लिया जाय।

आधुनिक विद्या के व्यापक प्रसार होने तथा प्रजातन्त्र आने के साथ ही साथ  
इसका बंधन काफी ढीला हुआ जा रहा है और सुशिक्षित समाज उसे बर्बर और  
अभिघात समझकर इसे समाप्त कर रहा है।

नहीं दत्त। इसी ही मजदूरी पर उस बीबीस घंटे काम करना पड़ता है। हुम्बाह की स्त्री को भी इसी दम रुपये माह में काम करना पड़ता है। पति के साथ ही पत्नी पर भी जमींदार का अधिकार हुआ जाता है। हुम्बाह को अपने घर सोन तक की आज्ञा नहीं होगी। उस जमींदार की पत्नी और उसके घर की बीकरी बरनी पड़ती है। जड़हन की पत्नी जाड़ा में लगती है। तराई में जाड़ा कितना पड़ता है यह तो बड़ी बात साफ है जो तराई प्रांत में रह जाय है। जंगल में जाना प्रकार के कीड़-मकोड़े भी अधिक हस्त है परन्तु सब भी हुम्बाह का लगे म जाड़ा की रातों में जबरन फसल की रतबासी करनी पड़ती है। जमींदार न तो उस कोई कम्बल इत्यादि देता है और न कोई सुविधा ही। बेचारे मजदूर जंगल में पुमान जमा जमा कर रात काटत है। अधिक पुमान जलात मुनकर जमींदार पुमान भी नहीं अपना देता। उस भगवान् के सहारे ही अपनी बिल्दगी काटनी पड़ती है।

हुम्बाहो न अनिरिक्त जो भी मजदूर नीर में काम करने है उन्हें वैसे न देकर डाई-टीन मेर पाय दिया जाता है। हिमाच लगाने से पता चलता है कि वह मजदूरों महेशी के समय में भी दम-बारह जान से अधिक नहीं पड़ती। तराई में अच्छे से अच्छे किसानों का भी जमींदारों की मजदूरी करनी पड़ती है और जो किसान मजदूरी करने में शिथिलता है जमींदार उसके गाय-बैला को अपने गाव के चरायाहा में पाय नहीं करने देता और उसे खूब आदि भी नहीं देता।

जमींदारों न अपने बड़े-बड़ आमासिया में अपना काम करवाने के लिए कई हथ कीड़ बना रण है वे उनको प्रमत्त करने के लिए बड़पर (बड़ परबासा) महगो (बीपरी) मम्बरदार (मम्बरो लग जोगने वाला) तथा बरबारी (बरबार करल वाला) इत्यादि नाम से प्रसिद्ध कर देने हैं। तराई का कोई भी ऐसा गाव नहीं मिलगा जिन में बरबारी बड़पर तथा महगो न मिलन है। इनके अनिरिक्त निम्न सभी के मजदूरों को प्रमत्त करन के लिए जमींदार हुम्बाह (हुम्बासा) बरबारे (बैलबासा) गयबारे (गाय चरानबासा) भैमबार (भैम चरानेबासा) पाड़ाई (पोडा चरानबासा) डापाड़े (डाडा की माफी-पाफी देनेबासा) माबराड़े (माबर उगावबासा) इत्यादि नामों से विभूजित करता है। जमींदार इन मजदूरों को नाममात्र की मजदूरी देकर अपना गमल साधे चरबाता रहता है।

गतिहर मजदूर। वासवति करके उनकी आर्थिक हालत सुधारने तथा बेचार युवकों को स्वतंत्रता दायी म न्याय की मोखला गलनही हनुम की समाप्ति के बाद भी अभी तक सही बन पाई है।

न्याय न नीर ही लगान में कुछ बल-बारगाने है। इसमें बिराजपुर का स्वान सर्वप्रथम है। बिराजपुर पूर्वी नेपाल की तराई में बना हुआ है। बिराजपुर और बीगाज में सब अलग-बीग मिल है। देश के मजदूरों की चारखा भी कि नेपाल की

अन्तरिम सरकार उसकी समस्याएं हल करने को दिशा में अग्रसर होकर उन्हें सम्य देशों के व्यक्तियों के समकक्ष मानने में समर्थ हो सकेंगी किन्तु सरकार की उपेक्षा तथा अव्यक्त की दमन नीति न उनकी इस तथा को जंग कर दिया है।

नेपाल की राजधानी काठमाण्डू पहाड़ों के बीच न बसी हुई है जिससे वहाँ कम-कारनाम बहुत ही कमिनाई से खोले जा सकत है। मही ता केवल नेपाली सैनिक सरकारी कर्मचारी तथा कुछ अन्य भूमिक ही हैं।

राधा सरकार बपाल के सभी अष्टमरों तथा सरकारी कर्मचारियों को वेतन प्रति मास नहीं देती थी। वर्ष के अन्त में वेतन देते समय नीकरो से कुछ 'सकासी' की जाती थी। वो सी राधे पाल जाने सिपाही को कम-कम बीम समय सकामी देनी पड़ती थी राधा सरकार प्रायः न तो किसी भी सरकारी कर्मचारी के वेतन में वृद्धि ही करती थी और न उसे किसी उच्च पद पर ही नियुक्त करती थी। नीकरी से छुट्टी मिल जान पर उस पेंशन भी नहीं मिलती थी। उस महीनाई का भत्ता भी नहीं दिया जाता था।

वह नेपाल के बड़े-बड़े अष्टमरा की भी पर्याप्त वेतन नहीं देती थी और उन्हें बाध्य होकर बूम लेनी पड़ती थी। उनमें को प्याम तथा ईमान की रक्षा करते हुए अपने वेतन ही में निर्वह करत थे। उन्हें न ता कोई उच्च पद ही दिया जाता था और न उनके बलन में कोई वृद्धि ही की जाती थी। सरकार की इस नीति न सब अष्टमर बहुत ही दुखी तथा असन्तुष्ट रह करत थे। कभी-कभी तो सरकारी कर्मचारी ही विद्रोह कर बैठते थे। सरकारी कर्मचारियों के रहन के लिए सरकारी भटान भी नहीं होत थे इसलिये अष्टमरों को प्रायः छप्पर की कुली बनाकर ही अपने बालबच्चा के साथ लानाबदोशों की बांठि अरिस्त जीवन व्यतीत करना पड़ता था। प्रजा के कार्य के लिए हाकिमों को बार-बार बीर भी करना पड़ता था किन्तु राधा सरकार उन्हें न ता कोई सहायी ही देती थी और न ही मार्ग-स्यप इत्यादि।

सरकारी के बिना नेपाल सरकार का काम नहीं चल सकता। माण्डुबारी तथा गणों का सेवा-बगवा बही रहता है। वह बिचपन माण्डुबारी ही समूह करत के लिए नियुक्त होता है। प्रत्येक सरकारी आग्रा का व्यक्ति-व्यक्ति तक बही बहुवाता है। जब भी उसे राध में एक बार ही वेतन मिलता है। पटवारी का वेतन मासनुबारी के अनुपात में नियत होता है। एक ही काम करत बाल एक हा पाण्यता के वो पटवारियों का बलन मित्र-मित्र होता है। वेतन को नेपाल में 'रवानगी' भेंट को 'जमासी' तथा बूम को पान-भूम' कहा जाता है।

नेपाल में कुछ सरकारी कर्मचारियों के वेतन के तीन रुपये न भी कम और प्रायः नवी नीकरीया उपलब्धिचार स्वल्प ही मिलती थीं। अन्तरिम सरकार न सरकारी कर्मचारियों के वेतन कम न कम तीन रुप निर्दिष्ट करके इस प्रथा को भी तीव्र देने के लिए महारबुलुं करत उद्योग है।

एवंतंत्री सामल-काल में प्रधान मंत्री आदि मनमानी बेतन मने थे किन्तु अन्तरिम सरकार की स्थापना के पदचाल् नवीन व्यवस्था के अनुसार उन्हें अब क्रमशः ठाई हजार तथा ढङ्क हजार रुपय मासिक बेतन मिसने मय है। इसी व्यवस्था के अनुसार त्रिले के बड़े हाकिम तथा मुन्त्रो के बतन भी चार हजार तथा बारह सौ रुपये वार्षिक म इयोड़े रुपे कर दिय गय है। नवीन सामल-व्यवस्था के अनुसार नेपाल में नये-नये बिभाग खोले जा रहे है। और उन बिभागों म काम करने वाल कर्मचारियों के बेतन में आपुनितता लाई जा रही है। अन्तरिम सरकार बर्ष में एक ही बार बतन देने की प्रथा ताड़कर सबको प्रति मास बेतन देने लगी है।

भिन्न राष्ट्रो की सहायता तथा राष्ट्रीय पूजीपतियों क सहाय म बण का औद्योगी करम तथा आर्थिक बिबाम करना कोई कठिन बाग नहीं है। राज्य एक बिस्तृत बिबाम की योजनानुसार दग की प्राकृतिक सम्पत्ति का उपयोग करके बेत को समुद्र घासी तथा मुगी बना सकता है। हम पिदा में हमारे सामने अपन पड़ोसी भारत और चीन की मिसालें ही काफी है जिनके आचार पर नेपाल आवे बलवर बेकारी आदि की समस्याए भी बहुत जल्दी हल कर सजता है।

## किसानों की स्थिति

नेपाल के प्रथम राजा प्रवास मंत्री महाराज बंगबहादुर ने इंग्लैण्ड में वापस आकर 'पूरा शासक शासन करने की नीति अपनायी। उन्होंने तराई की भूमि खूब जातन बाँट किसानों को न दबकर बड़े-बड़े चौधरियों तथा अपने चादुकारों को दी। यही चौधरी और बाग्यदार राजा सरकार के पालनू हाथी बनकर किसानों का पीरन रहे।

महाराज अन्त समय में राष्ट्र की आमदनी बढ़ाने के लिए तराई में नारी (वैवाह्य) करवाई। इस नारी में नाना प्रकार की घोषमियाँ की गईं। इसमें जिन व्यक्ति ने जिनकी अधिक धूम हो उस उसकी ही अधिक भूमि मिली। इस प्रकार माखों गनबाक किसान बिना लगबाने और सैकड़ों बिना लगबाने महामन धूम बकर बड़ी बड़ी मीरबासे बन गए।

महाराज अन्त समय में परबानू भी तराई में नारी बरन की प्रथा ही चलायी। नारी (वैवाह्य) बरन के लिए राजा सरकार तराई में कमी-बची सरकारी कर्मचारियों के बड़े-बड़े अपने भेजनी थी। नारी बाये कर्मचारी तराई के माख-माख किसानों की भूमि बाया बकर धूम दन बाया का द देन व जैम लन की नारी करते समय कोई किसान बड़ा उपस्थित नहीं रहा तो उसकी भूमि नारी बाय धूम केवर किसी दूसरे जागीर के नाम लिख देन व और किसी माँकी पालनूकारी भी पठा-बठा देने थे। यही कारण है कि आज भी नारी का नाम सुन ही तराई का किसान घबराता हुआ जाता है।

नपाल में पहाड़ी भाग पर्वतों के सड़कर अपने मरघ-जापन कृष्ण कुछ न कुछ गनी करने ही रहने हैं। बड़ा पानी का बस्यल भसाव रहता है मरिज लव भी बड़ा क किसान लव-लव भीम की दूरी में पहा में पानी भर-भर कर भेरा में डालन ही रहन है। पहाड़ों में अधिक न अधिक पाँच प्रतिशत व्यक्तिों का सरपट मात्रन मिल जाता है। यही कारण है आज नालो बपानी भाग में जाकर जाना पड़ पापन है। पहाड़ों में जमीनारी ना नहीं के बराबर है फिर भी यहाँ के 'त्रिमुबानी' (जमीनबाँट) तराई के जमीनगरी की तरह किसानों तथा गतिहुर मरदुनों के पत्र में जान पारकर अपना घर धरन रहन है। इन त्रिमुबानी का प्रयास स्वाधीन कर्मचारियों पर विद्वान बन के रहना बना बायाई और इसलिए कोई भी व्यक्ति इन व्यापारिक में भी बिजय नहीं पा पाता था।

जीनटी समय में दुर्गि बाय भूमि छोड़ी-सी अबदय है बिन्नु बहु नाम मबेग की मानि उतबाऊ नहीं होती। जीनटी समय में भी महारा बाबरन तथा उतब विमोद बन



न हाता है। यहाँ केले इत्यादि की भी खेती होती है।

परिचयी भीतरी मसम न जिमुबाल प्राय बड़ी-बड़ी सीरे ही करवाते हैं। सीर की भूमि जिमुबाल की ही रहती है किन्तु वह आमासियों द्वारा बिना मजदूरी दिय केवल इमलिए जुताई-बुआई जाती है कि व उनही जमीन में बम हुए होने हैं। दूसरी प्रकार की लकी को 'मैम' कहते हैं। 'मैम' जिमुबाल की भूमि होती है। अबिदा-बटाई (फल की बापी) अबदा तीसरी प्रकार की जात का 'बगारी' कहते हैं। बगारी जिमुबाल की भूमि कहलाती है जो आमासियों द्वारा बिना मजदूरी इत्यादि के जाती-बोई जाती है किन्तु उसका फल जिमुबाल ही बलता है। इससे अतिरिक्त जिमुबाल बगारी में बिना मूल्य के भी रूप मसाई फल-फूल लकड़ी तथा अनाज इत्यादि क्रिमानों में जबरदस्ती बनूल दिया करता है। मघसत्र जाति के समय बिहोहियाँ न उपयुक्त तौनों प्रयाजों को नष्ट करके भूमि क्रिमानों को बाट दी थी किन्तु बाद का सरकार ने जिमुबालों को संतुष्ट रखने के लिए पुरानी व्यवस्था पुनः स्थापित की जो आजकल भीतरी मघेस में सतोंप का प्रमुख कारण बनी हुई है।

ताम तराई में इपि-माप्प भूमि बहुत अधिक है। उसमें जमींदार बड़ी-बड़ी सीरे करवाते हैं। सरकार ने हुगी बगारी बन्द करने की घोषणा कर दी है और उसे अवैधानिक कर दिया है तथापि जमींदार आदि क्रिमानों को मार-मार कर बगारी आदि मत्ते ही रहन हैं। बेनारी देने में आ आमासी जानाकारी करता है उसे जमींदार अपने गाँव में निवास देने की समझी देता है। जमींदार की सीर में प्रत्येक आमासी को गहयोग देना पड़ता है। गाँव की लकी वा भीमगा जमींदार की ही सीर में हाता है। जमींदार की सीर के पहले कोई आमासी अपने लका में न ता मिचाई ही कर सकता है और न बुचाई ही। गाँववालों को मिसकर पहले जमींदार की सीर को ओगता-जाना पड़ता है और उसके बाद ही वह अपनी लकी कर पाता है। गाँव के पोखरा तासाबा तथा बाद-बेसीचों इत्यादि पर जमींदार का सर्वधिकार होता है। नदिया तथा तासाबा की मछलिया भी कोई क्रिमान पकड़ने नहीं पाता।

तराई के जमीनदारों ने जैसे अपने आराम के लिए बाग बगीचे लगा रखे हैं उसी प्रकार तासा-पोखरों में भी उन्होंने मछलिया रख छोटी हैं और प्रतिदिन अपने गाने के लिए उन्हें पकड़ लेते हैं। इन तासाबा अबदा पाखरों में रिमाता के बीरावे पानी नहीं बीज पाता। कभी-कभी तो गंगा छाना है कि रिमाता को मराने के लिए जमींदार पीकरा और तासाबा का बेच देता है और मछलियों का पचदन के लिए मछले उसका मारा पानी बाहर निबाद देन है। पानी बाहर हुआ जाने पर तासाबा बहुत जल्दी सूख जाने है। बेगांग और उपर के मरिना में तराई के जमागियों में पानी न मित्र मरन का मुख्य कारण जमीनदार की घटी कर्माकमा और कूर्मीति जाती है। तराई माया का नैतर कहलगा है और घटा अछत ब्रह्म करगात भी पावे जात है जमींदारों को कुर नीति

का निकार आमासियों के बीच ही होने ह। बाबतवा बगीचों की रखवाली जमीनार के कारिन्दे तथा मीरदार करते हैं। उनके फल भी गांव के भाग नहीं जाने पाते। जमीनार या तो उस बाग को अपने जाने के लिए रख छोड़ता है जबवा किसी सत्तिक व्यापारी को बेच देता है। आमासी का यदि कोई बच्चा एक आम अथवा अन्य कोई फल तोड़ लेता है तो उसमें जमीनार की भी रफ्त दण्ड अनुम कर देता है।

तराई में अधिकतर ऐसे गांव हैं जिनमें हजारों एकड़ भूमि ब्रूमि योग्य होती है। इसमें से अधिकतर जमीनार की मीर होती है। भूमि भूमि आमासियों को अधिया (बटाई) हुआ अथवा धानगुहारी पर मिली होती है। मीर की वेतनात्म करम के लिए जमीनारों ने गांवों में मीर को मकान बना रख है। मीर के मकान में एक कारिन्दा और तीन-चार मीरदार रहकर कुछ हलवाहों की सहायता से जमीनार की पूरी मीर करता है। ये कारिन्दे तथा मीरदार प्रायः एके साल होने हैं जो निर्मय होकर निर्ममतापूर्वक किसानों पर खूब अत्याचार करते हैं। इनको जमीनार को-चार बीच जल और बाट-वस रफ्त पामिक बेतन में अधिक नहीं देता। जमीनार के कारिन्दे आमासियों से मकानों रफ्त मजदूरी तथा भूमि करकर धानगुहारी पर उनको लत देते हैं। ये कारिन्दे गांव में बिना टीके के राजा कहलाते हैं। इनके अनिश्चित जमीनार कुछ गुहारे तथा सट्टे को अपने प्रत्येक गांव में कुछ भेद देकर बनाय रहता है जो अपनी काठो के बल से आमासियों तथा मजदूरों का नाम बनाय रहते हैं। जमीनार की मीर का मकान प्रायः अधिचार का अड़हा होता है जहां आमासियों तथा मजदूरों की बड़-बड़ियों के सहायक के साथ जमीनार के मीरदार हामी बेतन करते हैं। ऐसे ही मीर के मकानों को गिराने का तारा बांति के समय दिया गया था और जिन बटवस जिन के किसानों ने बट उल्लाह के साथ पूरा किया।

जमीनार की मीर में जो भूमि दोर बच जाती है उसमें जमीनार को फलन की बापी तथा हुंदा के अनुसार एक निश्चित रकम मिल जाती है।

नवम्बर सन् १९५० की प्राणि के समय परिचामी तथापि की बिनाही सरकार ने इन दोनों प्रजाओं का तीव्रतर दन प्रकार की समस्त भूमि किसानों को बांट दी थी। इनके अनिश्चित जमीनारों की बड़ी-बड़ी मीर की तीव्रतर बिना भेद बाग मजदूरों को बांट दी गई थी किन्तु समझते का सरकार ने किसानों में भूमि छीनकर पुन जमीनारों को मीठा दी। अधिया (बट्टा) प्रजा के विशेष में जया मुष्क के अन्तर्गत राजपुर तथा बेल्गा में कई सन् १९५१ ई० का किसानों ने जब एक किसान प्रदमन किया तब प्रतिनिधायकी तरीकों ने जितने किसानों के ऊपर गोपी बच्चा का और एक रफी मयेन तीन किसानों का गांवों का मीनार बनाया और मकान प्रदर्शनकारियों को धावत कर दिया। इनके अनिश्चित मीरदार द्वारा सहायकों तथा अन्य जिनों में भी किसानों के ऊपर धोखेबाजी बर्ताई गई और कई किसान बायेंबला मारे गए।

राजा सरकार किसानों तथा जमींदारों को क्रूरने के लिए नाना प्रकार के हुक्मों के आबिष्कार करती रहती थी। इनमें 'दौड़ाहा' विधाय उल्लंघनीय है। इसके अनुसार दौड़ाहा (बीरा करनेवाला हाकिम) किसानों के भूमि मालिकों को निपटाने के लिए अपनी पत्नी लेकर तराई में बीरा करने के लिए राजा सरकार की ओर से क्रूरने-नीतरे वध भेजा जाता था। यह तराई में आकर जमींदारों से रकम घुम सकर किसानों के लगे छीनकर जमींदार की गीर में भिजा देता था। यही कारण था कि दौड़ाहा हाकिम बनने के लिए बादुकार लगे मयास व प्रधान मंत्री को वधों सलाही चढ़ाया करते थे। ये लोग प्रधान मंत्री को अपन वश में करने के लिए नाना प्रकार के क्रूरने रणों को उपहार में भेंट करने रहते थे। 'दौड़ाहा हाकिम' अपने साथ मुख्तियारों की एक टोली भी लेकर चलता था। वह अपना बीरा समाप्त करने के पश्चात् पुनः के पैसों से एक इलाका लरीर बना था और जाने लोगों तथा कारिन्दों को वही नियुक्त करके पुनः अपने स्थान पर चला जाता था। तराई में इस प्रकार दौड़ाहा हाकिमों के मैकड़ों छोट-मोठ इलाक़े हो गये हैं। ऐसे इलाकों के किसानों की परिस्थिति स्थानीय जिन्दा अधिकारी कभी नहीं समझते। इन अधिकारियों का मर्यादा यही भय लगा रहता था कि दौड़ाहा हाकिम जब स्वयं ही हम लोगों के ऊपर एक बड़े माय्य हाकिम है तो हम लोग छोटे हाकिम होकर उनका इलाकों के प्रभाव में कैसे हस्तगत कर सकते हैं।

तराई में मायापान की क्रूरविधा हान के कारण जमींदारों को थोड़े तथा हाथियों का विषय पीछे है। इन्हीं पर बैठकर वे अपने गाँव तथा इलाकों का निरीक्षण करते हैं। तराई के कुछ जमींदार अपने हाथियों में विधाय कार्य भी संते हैं। ये राज में अपने हाथियों पर दादुर्गों को मजदूर गाँवों में डाक डलवाया करते हैं। डाकू हाथी की पीठ पर गये हुए मनुष्य को लाइ तोड़ कर छिपाये रहने लगे और उस बलकर किसी स्थिति को मायारणनवा तथा भी नहीं होने। इसके अनिश्चित जब कोई जानामी जबका मजदूर जमींदार की आमा का उल्लंघन करता है तब जमींदार अपने हाथियों में उसके घर तथा फलन को मण्ट गण्ट करके उसे जान नाश में उखाड़ देता है।

पश्चिमी तराई की भूमि-व्यवस्था पूर्वी तराई की अवस्था सर्वथा भिन्न है। पश्चिमी तराई के किसानों के अधिकार व जो भूमि हानी है उस 'निरज' अथवा 'मज्जरी' कहते हैं। 'निरज' की मायगुजारी जमींदार जबका मजदूर का भी आ मजनी है। निरज के अनिश्चित एक 'क' धर्म की भूमि हानी है। 'क' धर्म की भूमि बहुत जमींदारों की ओर से किसानों का मिट्टी हुई जानी है। जमींदारों ने इन भूमि को भी गन्ध लकर दुमने स्थिति का नाम निरज दिया है। यही कारण है जो मज्जरी तराई के किसानों को मजदूर जमींदारों का पत्नी का गृह लटन रहते हैं। लौगरी प्रकार की व्यवस्था 'उगाड़ा भूमि' कहलाती है। 'उगाड़ा भूमि' उस भूमि का कहते हैं जो जमींदार तथा

सामाजी की ओर से अधिकतर दुखड़ा अथवा मालमुजदारी पर भात को सात के लिए किसी दूसरे व्यक्ति को बंदी जाती है। 'उलझा भूमि' का लगान वास्तविक लगान से कई गुना अधिक वसूल किया जाता है। इसके अतिरिक्त वह उनसे 'बड़पोत' भी लेता रहता है जो लगान के ऊपर अधिक धन होता है।

सामंता अत्याचारों से तंग आकर, पूर्वी तराई के जिसे विरहता और जमींदारों के विरुद्ध क्यों न आवाज बुलन्द करके आन्दोलन छेड़त आ रहे हैं।

बिगत जनजाति में तराई के अधिकारा जमींदारों न अपनी सीर की सुरक्षा के लिए आजा प्रकार के उपायों का प्रयोग किया। उन लोगों ने राजा सरकार तथा जनता



कुछ किसान कार्यकर्ता

कोनों का साथ दिया। राजा सरकार की दृष्टि में समर्थक बनने के लिए एक बार ता के पंच भावियों का कार्य करते रहे और दूसरे ओर जन-मता से बचने के लिए अपने एक भाई अथवा परिवर्तों का जन-मता में भेज देत रहे। इनके अतिरिक्त कुछ एम भी जमींदार व जो अपने को राजा सरकार का समकक्षक तथा सत्ता बहकर सरकारी मन्त्रियों के साथ हुआ विशाहिया की जन-मता पर आक्रमण करते रहे। पश्चिमी मण्डल में बुद्धबन्धी जिसे कुछ राजा सरकार के मान जमींदारों न सरकारी मन्त्रियों के अस्वभाव्य प्राप्त करके जिनका नामक स्थान पर एक जमींदार की छोटी में अपना पोखी अट्टा बनाया और जन-मता पर आक्रमण करने का प्रयत्न किया। बीसों हजार विशाही किसानों तथा

मजदूरों की जन-जना ने उनका हजियार रस दन के लिए लमकारा किन्तु जमींदारों ने उनका उत्तर नासियों में दिया। फलतः बिजोही किसानों तथा मजदूरों की जनसना ने उन पर आक्रमण करके उनको समाप्त कर दिया और उनके बस्त्र-बास्त्रों को भी छीन लिया।

पूर्वी मेपास तराई में भूमि-स्वयत्तता दूसरी तराई की है। यहाँ एने भी सामान्य है जो मिर्क आठ-दस बीघा के जमींदार हैं, किन्तु वे हजारा बीघों के जोतार होने हैं। पूर्वी तराई में मीर को जिरायत तथा मोर के मकान को कामद कहते हैं। यहाँ भत को लडा बटाई (अधिया बगई) तथा हुण्डा आदि पर कमाने का साधारण रिवाज है। भासिज और किमान होता खुसी में इस भत का पाकन करते हैं।

राणा घामन काल में पूर्वी तराई में नामका के अधिक संपन्न रहे। पश्चिम की अरसा पूर्वी तराई की भूमि पर अधिक भार है और वह उपजाऊ तथा कीमती भी अधिक है। सिम्बुजान भास किपट में कीपट प्रथा है। कीपट सिम्बुजान आति की पुननी चीज है और जिसका सम्बन्ध सिम्बु अपन धर्म में जाड़न लग है। कीपट को प्रचार के जो निराधार हैं। किसी सिम्बु की जमीन जब गीर सिम्बु आति की जा जाती है तब वह कीपट न कहलाकर 'रैकर' कहलाने लगती है। सिम्बुजान की महम किपट समस्या यही है और जो भास जनता की मरीबी का एक कारण बनी हुई है।

### निर्धनता

मेपास का किसान अरसा बही पुरानत रूप लेकर लून-जमीना एक करते रानी करता है परन्तु तब भी उसको इनका अनाज नहीं मिल पाता जिससे कि वह अपनी साधारण दैनिक आवश्यकताओं को पूरी कर सके। उस प्रतिबर्ध बर्ज पर बज सना पड़ता है और फलतः बज ही अपन महाजना को बाना चुका बाना पड़ता है। मेपास में मूर भी डयाडा हुना दना पड़ता है। जमींदार प्रतिबर्ध अपन आमासियों को अनाज 'बिमार' बना है और ६ माह पूर हाज ही उपार की मबाई मार-नीज कर बनुज बज भी जाता है। मेपास का किसान बर्ज ही लखर जीवन-नर्पण बेला के भास गनी में काम करता है। जाड गर्मी और बरमान की कुछ भी परबाह न बरक बज हर दम प्राजा की बाबी लगाना पड़ता है परन्तु तब भी उस बर्ज ही लखर जान बजत का भी प्रबन्ध करना पड़ता है।

बिमान स्वभावतः एक सामाजिक प्राणी होता है। उस अपन समाज में रम्य रिवाजा को आज बुरादर मानना पड़ता है और उसे वन-जग पर सामाजिक नियमों का पालन पूरतया करना पड़ता है। समाज में बलिहृत हाज बज जि ही पैग मरना है। बज जान बान-बचना व बिबाह आदि में अपित गच करता है। बिबाह तथा स्वाहाती के अवसर पर निर्धन में निर्धन बिमान भी अपन पैग पानी का लख बहादर मनाज में अरसा मर कृपा रमन का प्रबन्ध करता है। दिनधनता उसमें समाज में बजुनी लजारी

जाती है और भित्तबद्धता से काम लेने पर उसकी नाक कट जाती है। वह कर्म लेकर जब हुआई स बचने का प्रयत्न करता है।

नपाल में किसानों को ब्राह्मण तथा साधू महन्त बुरी तरह मूटते हैं। मरती करती में तो उसकी और भी बुराई की जाती है। ब्राह्मण अपना बिरादरी भोजन दिए बिना उसका समाज में उतार ही नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त तीर्थ-उत्त न करन से वह पापी कहा जाता है और मन्त्र में उसे नरक ही मिलता बताया जाता है। राम-नाम का मुहताज हुन हुए भी उसे कज पर कर्म लेकर अपने समाज-अम्बु-बालक तथा मानदारों को समय-मय पर झिझाना-पिझाना पड़ता है।

मोला किसान कर्म ही में उत्पन्न होता है और कर्म में ही मृत्यु को प्राप्त होता है। छाने से छाने और बड़ से बड़ जमींदार तक का काम जल में जला करता है। जल देने और लेने का रिवाज नेपाल के प्रत्येक घर में व्याप्त है। कर्म लगा तो नेपाल में विषय फैलाना हो गया है। पतला उगी का बड़ा माननी है जो कर्म लेना और दना दोनों जानता है। मूर की कमाई से ही धनिक महाजनता का काम चलता है।

प्रायः यह कहा जाता है कि जमींदारों अबका महारजा के घरों की स्थितियों न साफट' अबका जल दना अपना पसा बना लिया है। वे जिन्हें 'साफट' बती है उसमें दूधोडा अबका दूना बन्धु भी करवा लनी है। जपिर्दाज जनता अभी इतनी पय भीर है कि एक बार जल से लेने पर जब तक बड़ पाई-पाई नहीं चुका बती तब तक वह यही समझती है कि अपना जल में उसे नरक में भी जल चुकाना ही पड़गा। स्थितियों में जल लत समय बचति उस कोई कामज इत्यादि नहीं स्थितता पड़ता परन्तु तब भी रहानी इनका निराश्रय और बिरबमनीय होना है कि वह स्वयं बिरकन भी कर्म से अपना पिड छुड़ा लेन के लिए अहविश व्यय रहता है।

महारजों के कर्म लत और लेन का हम बड़ा चयिन तथा कूरता-गूब है। वे किसानों को जब कर्म दन है तब अंगूठ का निमान ल सते है। गरज का बाबसा मोल-माना किसान महारज के दोर कायज पर अपन अंगूठ का निमान लगा दना है और महारज उन दोर बाबज पर जा चाहता है जिन लता है। नेपाल में बांस के दारे काबज पर हुआओं एपे तक न तमस्सुक (प्रोमोट) जिनबाध जान है। मारन की तरह नेपाल में उस पर कोई लिबट नहीं लगता पड़ता है। यदि किसी महारज न किसान को भी स्पय जल दिए ता वह जगमे दो भी एपे का तमस्सुक जिनबाध लता है और उस पर भी किसान को कज न कम पञ्चीम स्पय प्रतिबर्ग व्याज दना पड़ता है। इतना ही नहीं उन हम स्पय प्रतिमान तमस्सुक की जिम्माई तथा पाब स्पय पाठ चुनवाई भी महारज का दनी पड़ती है।

नेपाल में जब किसी त्यौहार अपना उलव का अवसर आता था तब राया महारज की ओर से कुछ गन्ध की बिगन आभा दी जाती थी। इसी तरह जब राणावश में किसी

मजदूरों की अम-मता न उनको हजियार रत्न बन के लिए लम्बारा किन्तु जमींदारों ने उनका उत्तर गालियों में दिया। फलतः बिड़ोही किसानों तथा मजदूरों की जनमेता न उन पर आक्रमण करके उनका समाप्त कर दिया और उनके अस्त्र-शस्त्रों को भी छीन लिया।

पूर्वी नेपाल तराई में भूमि-स्वतन्त्रता दूसरी तराई की है। यहाँ ऐसे ही आसन्न ह जो मिर्च खाऊ-रस बोये के जमींदार हैं किन्तु न हजारी बीघों के जोहार हल है। पूर्वी तराई में मीर को जियायत तथा मीर के मकान को कामद कहने हैं। यहाँ नल को लडा बगई (अधिया बटाई) तथा हुण्डा आदि पर कमाने का माधारण रिवाज है। मालिक मीर बिमान इला लुयी में इस वर्ग का पालन करते हैं।

राधा घामन काल में पूर्वी तराई में घामको के अधिक संपर्क रहे। पश्चिम की अगला पूर्वी तराई की भूमि पर अधिक भार है और वह उपजाऊ तथा बीमानी भी अधिक है। मिम्बुआन माझ किरान में कीपट प्रथा है। कीपट मिम्बुआन जाति की पुर्ननी बीज है और जिसका सम्बन्ध मिम्बू अपन घर्म में जोड़न लग है। कीपट का प्रकार के हैं या निराधार है। किसी मिम्बू की जमीन जब नर मिम्बू जाति की ही जाती है तब वह कीपट न कहलाकर 'रैकर' कहलाने लगती है। मिम्बुआन की सबसे बिबट समझा यही है और आ आम जनता की गरीबी का एक कारण बनी हुई है।

### निर्धनता

नेपाल का किसान अपना बही पुरातन हल लेकर गुम-जमीना एक करके खेती करता है परन्तु तब भी उसको इतना अनाज नहीं मिल पाता जिससे कि वह अपनी माधारण दैनिक आवश्यकताओं को पूरी कर सक। उस प्रतिफल बर्ष पर बर्ष लगा पड़ता है और फलतः करते ही अनाज मंडाजनों को दाना खुशबेला पड़ता है। नेपाल में मूद भी इयोंश दुता रना पड़ता है। जमींदार प्रतिवर्ष अपने आमासियों का अनाज 'दिमार' बना है और ६ माह पूरा हल ही उपार की मर्दाई मार-गीत कर बसुन कर को जाता है। नेपाल का किसान बर्ष ही लचर जीवन-पर्यन्त बीना के साथ गया न काम करता है। जाद गर्मी और बरमान की कुछ भी परबाह न करन बट हर हम प्राया की बाजी लमाता रहता है परन्तु तब भी उस बर्ष ही लकर अपने कपल का भी प्रबन्ध करना पड़ता है।

विमान स्वमाधन एक सामाजिक प्राणी होता है। उस ज्ञान समाज के सम स्थिति को आज मूर्खता मानना पड़ता है और उसे पय-पय पर साक्षात्कृत नियमा का पालन पूर्णतया करना पड़ता है। समाज में अतिरिक्त होकर वह फिर भी बँस मरता है। वह अनाज खा-बचना के विवाह आदि में अग्रिम लग करता है। विवाह तथा त्योहारों के अवसर पर निर्धन में निर्धन किसान भी आज नैम पानी की तरह बहावर समाज में अपना घर उठा रान का प्रयत्न करता है। विनियमना उक्त समाज में बहुली मर्दाई

## जन-आगरण

राजाधर के प्रबलक महाराज जन बहादुर के प्रभुत्व को देखकर छाही परिवार बर्त उठा और उस अपन भविष्य का भी आभास मिलने लगा । फलतः महाराजाधिराज सुमन्त्र बीर बिजय साहू के ज्येष्ठ पुत्र सुवराज त्रेलोचन बीर बिजय साहू ने अपने अस्तित्व का बायम रक्षण के लिए राजा-विरोधी युद्ध का आह्वान किया । कालान्तर महाराज जन बहादुर ने अपनी दो पुत्रियां के विवाह त्रेलोचन बीर बिजय साहू से सम्पन्न करके उनकी अपनी और आहुष्ट कर दिया । तत्पश्चात् सरकार बिराधी मुकदम दल संगठित हुआ रहा और आम बलकर जिसका मन्त्र राजकुमार मरन्त बीर बिजय ने किया । मरन्त बीर बिजय के साथ काठमाण्डू के बाबत त्रिभाषाली वृद्ध व जो प्रधान मंत्री रजोदीप सिंह तथा सेनापति धीर राजार को हत्या करके सामन्त-सत्ता का सामर्थ्य में छीन लेने पर लुके हुए व । ९ फरवरी सन् १८८७ ई० को परमेश्वर का पता सामर्थों को मिल गया और मंत्री प्रमुख-प्रमत्त कार्यकर्ता बन्दी बना लिये गये । इन अपराध में इकट्ठी व्यक्तिपूर्ण तथा इन कुलीन बाहुबल का अग्निभ्युत्पन्न करके काठमाण्डू का दण्ड मिला । मंत्रिम मूर, मन्तर बिजय पापा बिजय सिंह बापा अमर बिजय पापा इन्द्र सिंह टण्डन तथा चन्द्र सिंह पाण्डेय आदि मन्त्रियों के लिए बन्धन अल्प दिवस गये । सेनापति जनरल धीर रामचोर की हिम्मत राजकुमार मरन्त बीर बिजय को मार बामन की नहीं हुई इसलिए उन्होंने उन्हें बन्धनों को भीतर बुनारण्ड के बिने में बन्ध करवा दिया ।

बीमबी राजाधरी के प्रारम्भ हान ही नेपाल के राजनीतिक इतिहास की धारा पलटी और महाराजाधिराज पुष्पी बीर बिजय साहू ने प्रधान मंत्री देव रामचोर को समझाकर नेपाल में संसदीय व्यवस्था स्थापित करने का विचार किया । इसी समय पण्डित माधवराज जोशी ने आर्यसमाज के प्रबलक स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपदेशों का प्रचार काठमाण्डू में करवा प्रारम्भ किया किन्तु राजा सामर्थों ने पण्डित माधवराज जोशी की बात-स्वगन्तवा को नहीं किया और उन्हें जीवन पर्यन्त काठमाण्डू का दण्ड देकर उनके सभी भावियों का भी काठमाण्डू में लेकर रण-निष्णामन तक का दण्ड दिया ।

भारत में सन् १९०१ ई० ही में लालबहादुर शास्त्री गणेश दास विनियम बिहारी पाल ने स्वदेशी आन्दोलन उत्पन्न में उठाया । इस आन्दोलन की हवा नेपाल को भी जगाने लग गई थी किन्तु राजा सामर्थों की नादिराही से मध्यम होकर काठमाण्डू के मोलों को गुल्फर बिरोध करन का आह्वान नहीं हुआ था । भारत के स्वदेशी आन्दोलन की प्रतिक्रिया नेपाल में हमने रूप में हुई और काठमाण्डूवासी हिन्दा



प्रधान मंत्री के पत्र उत्पन्न हुआ था वह कुछ कैदी भी छोड़ दिये जाते थे और नमस्त नपास में ब्रह्मा धर्म की सरकारी जागृती जाती थी। पीकाली में ला जुआ महीनों ब्रह्मा जाता था। इनका ही नहीं नपास के प्रधान मंत्री स्वयं बड़-बड़ जुआरियों को ब्रह्मा लेकने के लिए अपने दरबार में प्रतिवर्ष आमंत्रित किया करते थे और जो व्यक्ति प्रधान मंत्री के साथ जुआ खेलने में बहुत बड़ा प्रतिष्ठित माने जाते थे।

नामन्ती सरकार को नमस्त करके ब्रुयि की नमस्का जो हम किय बिना किसानों की हानि नबर नहीं मरनी। यह काम उक्त काटि के संघर्षका वा एक कमीशन ही कर सकना है और जिसका वास्तविक रूप बन में ब्रह्मा अपनी जारी शक्ति बनाकर उक्त वास्तविक बन में सरकार का पुरा महामय दबी और देश के सामान्य तथा ब्रह्माचार की सरकार की वास्तव का बिरास करने की हिम्मत नहीं करे।

## अन-आगरण

राणाबस के प्रवक्तृ महाराज जंग बहादुर के प्रमुख को इकट्ठा कर राणी परिवार घरी उठा और उसे अपने भविष्य का भी आशवासन मिला दिया। फलतः महापराधीन मुराद और बिक्रम शाह के सपूत पुत्र युवराज जैकाश और बिक्रम शाह ने अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए राणा-विरोधी युद्धों का आह्वान किया। कात्मानर महापराज जंग बहादुर ने अपनी दो पुत्रियों के विवाह जैकाश और बिक्रम शाह से सम्पन्न करके उनको अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। तथापि सरकार विरोधी युद्ध इन सगठित होता रहा और आगे चलकर जिसका वस्तुतः राजकुमार नरेश और बिक्रम से किया। नरेश और बिक्रम के साथ बाटमाथू के बाबत प्रभावशाली युद्ध में भी प्रभाव मंत्री रणवीर सिंह तथा मेतापति और रामेश्वर की हत्या करके घातक-मत्ता का राजाबस में छीन सेन पर लुटे हुए थे। ६ फरवरी सन् १८८२ ई० को पञ्चम का पठा घातकों को मिला गया और मंत्री प्रमुख प्रमुख कार्यकर्ता बन्दी बना लिये गये। इन अपराध में इकट्ठी व्यक्तिगतों तथा हम कुलीन बाह्यका का आतिथ्य करके काठमान्डू का दण्ड दिया। मध्याम मूर, मध्याम बिक्रम पापा बिक्रम सिंह पापा अमर बिक्रम पापा इन्द्र सिंह टण्डन तथा अमर सिंह पाण्डव आदि लक्ष्यवर्तियों के मिर बड़े में अलग किया गया। सेनापति जनरल और रामेश्वर की हिम्मत राजकुमार नरेश और बिक्रम को पार काबल की मही हुई इसलिए उन्हें जहाँ जहाँ का मीरकर बुतारक के किये में दण्ड करवा दिया।

बीसवीं सताब्दी के प्रारम्भ होने ही नेपाल के राजनीतिक इतिहास की पारा पकड़ी और महापराधीन पृथ्वी और बिक्रम शाह में प्रधान मंत्री देव रामेश्वर का समझाकर नेपाल में संगीत व्यवस्था स्थापित करने का विचार किया। इसी समय पश्चित माधवराज जोशी ने आयतमात्र के प्रवक्तृ स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपदेशों का प्रचार बाटमाथू में करना प्रारम्भ किया जिससे राजा शाहों ने पश्चित माधवराज जोशी की वाद-स्वगत्या का महत्त्व मही किया और उन्हें जीवन पर्यन्त काठमान्डू का दण्ड दत्त उनके सभी माधवों का भी काठमान्डू में मकर देव-निराकरण तक का दण्ड दिया।

आरम्भ में सन् १९०३ ई० ही में काठमान्डू आन्ध्रमत्त निष्ठा लाना काबाल राम बिनि बिहारी पात्र ने स्वदेशी आन्दोलन उद्वेग में उठाया। इस आन्दोलन की हवा नेपाल को भी अलग लगे गई थी जिससे राजा शाहों की नातिगमाही में मधवीन हाकर बाटमाथू के लोग को गुमकर बिहारी करम का माहूम बही होता था। भारत के स्वदेशी आन्दोलन की प्रतिविम्ब लाना में उनके कर में हुई और बाटमाथूवासी हिमा

को अपन अस्त्र बनाकर राणा सामन्तों को समाप्त करन के अवसर की प्रतीक्षा करने लगे । महायज्ञाधिपति पृथ्वी वीर बिजय शाह राज्य में समरीय व्यवस्था कायम करके राणा सामन्तों के हाथ में सत्ता छीनकर जनता के हाथों में देने के पक्ष में थे । इस कार्य के लिए सरदार पृथ्वी वीर बिजय शाह ने कर्नल कुमार जंग राणा कप्तान जयभर सिंह कप्तान यमनसिंह कप्तान गया बहादुर बस्नेत तथा मुख्या दुर्गनाथ अधिकारी इत्यादि का उन्नाह करके एक नास्तिकारी दल बनाया । इन दल का उद्देश्य हिंसात्मक नीति अपनाकर सिंह बस्नेत का राणा महित उखाटना तथा नेपाल को विमुक्त करना था । मुख्या दुर्गनाथ बहुत ही कायर तथा लाठी प्रवृत्ति का व्यक्ति था इसलिए उसने जन्म रामेश्वर में सब राज्य प्राप्त किया । इस पक्षपात का समाचार पाते ही प्रधान मंत्री जम्मू रामेश्वर ने महायज्ञाधिपति पृथ्वी वीर बिजय शाह के समर्थकों को बकहवा बुलवाया । उनमें से तीन व्यक्तियों को देश-निष्ठाजन तथा कप्तान जंग वीर राणा को संग्रहीत वापित करके बाणभंग भंग दिया गया और कर्नल कुमारजंग का बलकुट्टा की जंग में जीवन-मर्त्य का समाप्त हो दिया गया ।

सन् १९२१ ई० में महात्मा गांधी ने भारत में असहयोग-आन्दोलन छड़ा और अंगरेजों को यह अर्थ हुआ कि यह प्रच्छन्न आधी सप्तमी हुक्मत की उठाकर डी रहेगी । पर जयजंग न नेपाल को यह ही ने असह कर रखा था । उन्होंने बर्मा को भी भारत में पृथक करके भारत की शक्ति छिन्न-भिन्न कर देने का निश्चय किया । महात्मा गांधी के आन्दोलन की आधी न राखायाही की भी सज्जोरा । सन् १९२० ई० में ठाकुर बल्लभ सिंह ने देहरादून में 'भारतवासी' की स्थापना की । इस लीग का मुख्य उद्देश्य भारतवर्ष में स्वायत्तियों को समर्थन करना था । ठाकुर बल्लभ सिंह का विचार ध्यान केवल उन्हीं स्वयंसेवकों पर था जो स्वयंसेवक छानकर भारत में कम से कम उन्हीं के लीग की हवा लगातक अधिक नहीं पहुँच सकी । २४ नवम्बर सन् १९२१ ई० के दिन जयजंग भीम रामेश्वर नेपाल के प्रधान मंत्री हुए । उन्होंने भारत में महात्मा गांधी का व्यापक प्रचार तथा उसका प्रभाव नेपाल के स्वयंसेवकों पर भी पड़ने हुए देखकर अपनी पूरी शक्ति लगाकर स्वयंसेवकों की हवा की बनाई की । जयजंग शाह बग के उमेरा बिजय शाह गङ्गनाथ सिंह बस्नेत बालान गण्डमान सिंह मैना बहादुर तथा गणनाथ राणा इत्यादि काठमाण्डू के स्वयंसेवकों ने सन् १९१० ई० में 'प्रचलन' नामक पालिकागी लया की स्थापना की । प्रचलन पालिका के स्वयंसेवकों ने विचारों के द्वारा बिन्दुओं करके जयजंग भीम रामेश्वर आदि प्रमुख प्रमुख राजा सामन्तों को उठा देना चाहा । महायज्ञाधिपति का यह विचार वादी बहुत देगेने ही भीम रामेश्वर बर्मा उन और उन्होंने उमेरा बिजय शाह गङ्गनाथ सिंह मैना बहादुर गङ्गनाथ राणा तथा बालान गङ्गनाथ सिंह को जीवन-मर्त्य कागवाय की बहादुर गङ्गनाथ की । कुछ लोगों की राय थी कि जयजंग राजा में इन दल की मुखना प्रधान मंत्री भीम रामेश्वर की दे दी की ।

## अमानुषिक याचना

महागुरु भीम रामगुरु न पाचों सपूतों का लोह के एक संकीर्ण पिन्ड में त्रिमयी लम्बाई तथा चौड़ाई कम फीट और छ फीट की और जिसे कागसागू में 'गामधर' कहा जाता है—ऊँकर दिया। 'गौतमर' में बम्ब हाथ पर की राजनीतिक बन्धिया की रूप कपी बरी के अनिरिक्त पाँच पर लोह की पल्लरी तथा कमर में भीम पर लोहे की जरीर की हाथ की गई। इतना ही नहीं बल्कि राज-बन्धियों को प्रतिदिन गामधर से बाहर निकालकर दो घंट कोड़ों में धारकर जपमरा किया जाता रहा और उनके मामूला में आसनीनें भी चुनोई जाती रही। इसी गामधर में बन्धियों का लान से लेकर ममजून भी ल्याबना पड़ता था और राजि का उमी में एक साब सामा भी बढ़ता था। उनका मल-मूत्र साफ करने के लिए बाहर से कोई बीज भी नहीं मिष्टी की और बीजे की राज से उन्हें अपना मल-मूत्र का प्रतिदिन साफ करना पड़ता था। धावन भी उमी गामधर में स्वयं बनाना पड़ता था और अनाज भी इतना नहीं दिया जाता था कि वे अपना पेट भर सकें।

जन्म की बंठिन याचना का शाही परिवार में पला हुआ उमरा बिजय दाह महुन नहीं कर सका और वह बिना एक बूद भीपि पात्र जिये हुए अपना मुग दारी छोड़कर पिन्ड के बाहर हो गया। जन्म की याचनाओं से ऊँकर बचमप बन्धियों न आमरण अन गमजन धारम किम किन्तु भीम गामधर में जन्म में सुधार करने का आशयान देकर अनशन रंग करवा दिया। सोड़ दिन बचान् भीम गामधर की मृत्यु हुई और अनरम यज्ञ गमधर नपाप के प्रयास मनी हुए। उमी दिन में जन्म में पुन अनशन प्रारम्भ हो गया। मुठ गमधर न अनशन के पाँचवें दिन अपना पुत्र अनरम हरि गमधर की अनशन रंग करवाय के लिए जन्म में मजा। अनरम हरि गमधर जन्म में पितृपुत्र लेकर पहुँचे और उन्होंने अनशन कारिया का धमकाकर उनका रज भंग करवान का प्रयत्न किया। हरि गमधर की इन चुनता का देखकर मैना बहादुर आग-बबुला हो गया। उनका उन्माय धारकर हरि गमधर की कबीर छड़ डाली और उन्हें ताप टोकर लपटाया। घर की बहाड़ का मुनने ही हरि गमधर के छत्र छूट गए और वह उन्मा पर अपने रुमिबाम में जा छिप।

इन घटना के पश्चात् वह ज़रूरी अन्व-अन्व कर दिए गए और मैना बहादुर की लाह की हपपड़ी बड़ी के अनिरिक्त पाँच पर लोहे की लम्बेनी हाथ की गई। जन्म में तैरेरि के गिराव होकर मैना बहादुर तथा बज्जान गगधरान बिहू की इह नीलाय ममान्ड भंडे। प्रबन्ध कारणों की बिजवादी राजधानी तक ही सीमित रही और वह काटमागू की पाटो से बाहर नहीं फेंक सकी। इसी बीच माग्न में बहादुर गोपी का 'मय-मयागू' भी जोर बरह चुका था और जिसके प्रति तान्त्र-तराई का ध्यान स्वभावतः आहूत हो रहा था। ६ मार्च सन १९११ ई० का काफी दिन देकर हुआ। इसके पश्चात् हिमम्बर मनु

जिस वि मरेया का पदच्युत में कोई हाथ नहीं था। भी पांच महाराजाधिराज का इस प्रकार से अपमान हाथ हुए देखकर नेपाल की सारी सत्ता में लम्बलम्बी मच गई और एसा दीखने लगा कि समस्त नेपाल में बिज्जु बूढ़ लड़ा होगा यदि भी पांच सरकार को पदच्युत में किसी प्रकार पामा गया। कहा जाता है कि इस अवसर का काम उठाकर युद्ध समसार महाराजाधिराज त्रिभुवन और बिक्रम शाह को पदच्युत करके उनके व्यष्ट पुत्र महेन्द्र और बिजय शाह को नेपाल का महाराजाधिराज और भी पांच त्रिभुवन का उनके द्वितीय तथा तृतीय पुत्रों के साथ मारवा नगर में भोज देना चाहते थे बिज्जु बूढ़ एसा कर नहीं मने। २६ जनवरी सन् १९४१ ई० को दुकराज शास्त्री को बागमती नदी के किनारे अर्ध रात्रि को एक बूढ़ में मरकाजर मार डालन की आज्ञा हुई। शास्त्री जी ने बागमती में स्नान तथा गीता पढ़ कर भजन की अनुमति मांगी। दुकराज शास्त्री के कहन पर उनको नदी-स्नान तथा भी गीता जी का पाठ कर भजन की अनुमति तो मिली बिज्जु पामी देन के बादह घट पहल ही युद्ध समसार ने बाढमाण्ड में प्रतिबन्ध सजबा दिव और स्थाग-स्थान पर मशरुत मैतिका का बैठ दिवा गया।

जाह की नीरव रात्रि में दुकराज शास्त्री को पामी की मूछनी डोर के पाग से बाधा गया। डार का देखन ही दुकराज शास्त्री ने उस डार की बूम भिया और रक्षकों की



श्री धर्मचर्य



श्री वीमला

आर देगवर उनको लम्बोलिन करने हुए कहा कि युद्ध समसार आज का भारत के लिए इतन बिजय है बिज्जु से तो कम है। इस पर शास्त्री जी ने शास्त्री ने कहा कि यदि हा मने ना मने भारत के नाम पर मरेया पड़ना देना कि मरी पामी के लिए बनी जिम्मेदार है क्योंकि उगल पुन रोकर उनका बिच्छू मूछनी कर दी थी। इसका बज्जर शास्त्री जी

न फाँसी का फँसा अपने पक्ष में स्वयं हाथ मिला और बोधम् 'बोधम्' कहकर अपना मन्त्र धरीर छाड़ दिया। इसके कुछ ही दिनों के पश्चात् खडगती नदी के किनारे नीरब रात्रि में धर्ममन्त्र का भी एक बूझ में लटका दिया गया। धर्ममन्त्र की हत्या बड़ी ही बुरी तरह धूमनापायक की गई। उनको वक्त तरीके में सत्काया गया। धर्ममन्त्र को शायी के फाँदे में छत्पल्लव हुए देवकर नर मममर अट्टहास मारकर हँसता जी जाता था। रात्रियों के बार-बार प्रार्थना करत पर धर्ममन्त्र जी को नीचे उतारकर उनके हाथ-पर बांध दिये गये। नर मममर न धर्ममन्त्र को मार-मार कर लहू-महान कर दिया और अंत में टांगकर मार डाला। पाँडे ममम के बाद गंगाकाम तथा दशरथचन्द्र को गोली में उड़ा



दत्तत्रेय दशरथचन्द्र



दत्तत्रेय दशरथचन्द्र दत्तत्रेय

दिया गया। गंगाकाम की संकल्पना दशरथचन्द्र ने कम ही इसीलिए दशरथचन्द्र ने यह प्रार्थना की कि गङ्गे सदाप्राप्त पर गोली बरसा जाय क्योंकि तबपूजक गंगाकाम मृत की बाग बहान दशरथचन्द्र मममर हो सकता था। दशरथचन्द्र की इस प्रार्थना का सुनकर नर दशरथचन्द्र न दशरथचन्द्र की जाय में गोली मारने की आज्ञा दी। गोली उनके मीन में न मारकर जाय में लम्पित पारी गई कि दशरथचन्द्र का बिगड़ पीड़ा हुआ और गंगाकाम बिचलित हो जाय। जाय में गोली लपट में दशरथचन्द्र पीछे मिलत तब सन्पटान गहू। नर दशरथचन्द्र न बड़ा कि यदि मृत ममम भी राणा मरवार के समर्थ बन जाओ तो हम मुक्त हो सकें। गंगाकाम का जाय सुनते ही दशरथचन्द्र बिचलित पन और उन्होंने नर दशरथचन्द्र न बड़ा कि मृत पर दया नगे और गोली देते मीन में गुरम मार

अवधि की वीरता को देखते हुए एक दूसरे मित्रानुसार न भीत कर पार कर उनके लिए बिये। दमरुधरजी की लूट की बातें तथा छटपटाहट देखकर गोप्ती बलान बाबू गान्धारी की बाप में गोप्ती मारने में इन्कार किया। उसने कहा कि यह दूसरे में अब दम नहीं है। मुझे भीन में गोप्ती मारने की आज्ञा ही बाप। पर समयसर की आज्ञा ही हो गोप्तीया गगामास के नीचे में आ जाती और गगामास वहीं बर रहा।

महीदो की आज्ञा बाजार की मड़कों पर तमाम दिन पड़ी रही जिसमें जनता भय हाकर फिर कभी सरकार का विरोध करने का साहस न करे। राजा शासकों ने महीदो की आज्ञा की बुद्धि देखकर जनता सबका के लिए मध्यमता हा बापनी राजा सरकार के विरुद्ध एक साथ भी नहीं निरामसी परन्तु शासकों को कहा यह मामला कि आज्ञाक किसी भी इतिहास में महीदो के लूट का कार्य नहीं हुआ मिला नहीं किया।

नपास में शासकों के आचार्य उन्नी-ज्या बढ़ते जाने से त्याग-प्राप्ति भारत में विद्या न करने बाबू नपासी विद्यापी राजागोही का नपास करने के लिए भारतीय नताओं महाभूमि प्राप्त करके सरकार-विरोधी मोर्चा बनाने में संलग्न थे। इन उद्देश्य से राजा में 'नेपाली संघ' तथा कमन्स में 'गोर्खा काग्रम' नामक दो संस्थाएं भारत में बन कर रही थी।

अगस्त १९४२ ई. में जब महारानी शाही ने अजय के विरुद्ध 'भारत छोड़ो' आन्दोलन छड़ा तब उस में भारतस्थित नपासी विद्यापी भी सम्मिलित हुए। इस आन्दोलन को बुझाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने पूरी शक्ति लगा दी। इस आन्दोलन में विरोधी नता बाबू जयप्रकाश नारायण ने भारतीय जन में भावने के बाद नपास तराई आधाय किया किन्तु वह बहुत समय तक तराई में छिपे नहीं रहे उनके और राजा मीनकों के पकड़कर मणरी जिन के इन्दुमान नगर नामक जल में डूबी बना दिया। कुछ ही दिनों के पश्चात् जयप्रकाश नारायण वहां से भागकर भारत में चले गए।

नपासी नताभा का यह पहलू में बिदिन था कि जब तक भारत स्वतन्त्र नहीं होता तक नपास भी राजागोही में विमुक्त नहीं हो सकता। यही साक्ष्य नपासी नता राज के प्रत्येक आन्दोलन में सक्रिय भाग लेते रहे। इस समय भी भारतीय नताओं के साथ ही समस्त नेमी उदय राज बाबू हरि प्रसाद प्रधान बिदरदर प्रसाद कादरामा तथा प्रसाद जगन्नाथ इत्यादि भारत में दिग्दर्शन कर लिये गए और इनके मार्ग को भी भारत छोड़ो आन्दोलन में डूबी बना दिया गया। इनके अनिश्चित पटना बनवना तथा अन्तिम इत्यादि स्थिति पर भी बहुत से नपासी राजनीतिज्ञ कार्यकर्ता विरुद्ध लिये। राजा सरकार ने ब्रिटिश सरकार के सभी राजबन्दी नपासियों का नतास भ्रम के लिए प्रार्थना की। भारत सरकार ने भी सभी नपासी नताओं का कार्यक्रम भ्रम का बना किन्तु भारतीय स्वायत्तता में नैतिकता का कार्य नहीं करत ही जिससे जन जन सभी बन्दी भारतीय जन में ही न और दबावमय स्थिति लिये गए। नपास में

राजा सरकार ने इसका माप-ही-माप जमाना शुरू-शुरू ही व्यक्तिगतों पर सरकार बिनाभी मुकदमा चलाया और बाईस व्यक्तिगतों का आई-आई नर्प की जगह भी सजायें भी दी। इसमें न कृष्णवीर कापी की मृत्यु काठमाण्डू की जेल में हुई। बाद में 'भारत छोड़ो' जन आन्दोलन की मकसदता देखकर प्रधानमंत्री युद्ध मन्त्रालय न नकबकनी का विभाजन दिनाम पर नेपाली राजनीतिक बन्धियों को छोड़ना प्रारम्भ किया। उन्होंने नेपाली प्रजा परिषद् के सभी नेताओं को छोड़ने का विचार किया किन्तु जहाँमान सिंह पुष्प बहादुर, एक प्रमुख आचार्य बुद्ध प्रसाद राम हरी शर्मा तथा योगिन्द्र प्रसाद ठपाध्याय आदि न जेल न किहीं भी शर्तों पर छूटना स्वीकार नहीं किया।

जनवरी मन् १९४६ ई० में भारतीय नेताओं की प्रेरणा से दिल्ली रमज रेगमी तथा बिरेन्द्र प्रसाद कोइराला न बनारस में नेपाली राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना की। २५ जनवरी मन् १९४७ ई० को इसका उद्घाटन-समारोह करकता में सम्पन्न हुआ। और विमकी मकसदता के लिए भारतीय काँग्रेस ने तत्कालीन अध्यक्ष आचार्य कृष्णमणी तथा पण्डित विश्व कर्मा और जयप्रकाश नारायण इत्यादि नेताओं में अपने गुप्त संदेश भेजे। सम्मेलन ने एक प्रमुख आचार्य का नेपाली राष्ट्रीय काँग्रेस का महापति मनोनीत किया जो कि काठमाण्डू के जेल में बन्दी थे।

### मर्यादा

नेपाली राष्ट्रीय काँग्रेस ने अहिंसात्मक नीति धारण करके प्रथम में मर्यादा करने की तैयारी की। यह मर्यादा बिराटनगर के जूट मिल मजदूरों की शर्तों का लेकर ४ मार्च मन् १९४७ ई० को आरम्भ हुआ। बिराटनगर के मिल्-मजदूरों के नेता जन माहून अधिकारी ने सभी मजदूरों को हड़ताल कर देने के लिए आदेश दिया। जूट मिल बिराटनगर के मिल्-मजदूरों ने अनिश्चित काम के लिए हड़ताल की। इसी हड़ताल के फलस्वरूप राजा सरकार ने मनमोहन अधिकारी के माप उसमें सभी माहियों को जिसमें बिरेन्द्र प्रसाद कोइराला भी थे बन्दी बनाकर काठमाण्डू भेज दिया गया। इसके पश्चात् बिराटनगर, काठमाण्डू इलाका चतुर्गुण अम्बिनी परगनी तथा जयनगर इत्यादि जगहों में भी अहिंसात्मक मर्यादा छिड़ा। इसी समय कास्तर बुकर इन्द्र सिंह कुण्ड राम मकन उद्योग मज माप शान्ति प्रसाद कीतपनी रही रामबदन शर्मा जनबन्धि 'दिदेश' आदि न अपना एक जगह बनाकर पश्चिमी नेपाल के परगनी बुटवल मंगवानपुर तथा भण्डवगर तथा बुकर बन्धु सिंह आदि न नेपाल मंत्र में भी आन्दोलन छड़ा। १३ मध्य मन् १९४७ ई० को बिराटनगर में मर्यादा छिड़ा किन्तु नेपाल सरकार ने सभी मर्यादा पहियों को बन्दी बना लिया। २० अग्रेष का वीरगाव तथा २७ अग्रेष को जनकपुर में मर्यादा छड़ा गया। वीरगाव के मर्यादा में वीरगाव हार्न स्कूल न मंगबन्ध का भी छात्रों न बिराट माप लिया किन्तु राजा सरकारों ने प्रमुख मर्यादापहियों को बन्दी बनाकर



विधायियों को मार-पीट कर छाड़ दिया। हुकुमी सरकार में अहिंसात्मक सत्याग्रह को बचाने के लिए बिराटनगर इत्यादि स्थानों पर गोबिन्दा भी भेजाई जिसने बिराटनगर में तीन मिनटों की शांति की शिकार करी और जनकों सत्याग्रही बाधित हुए। ३० अप्रैल सन् १९४३ ई० को नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में सत्याग्रह छिड़ा। इसकी कानूनी पाठ तथा प्रादण्य छत्र पड़्यो। स्वाधीनता की मूली जनता में सरकार के विरुद्ध बिराट दर्शन किया। इस सत्याग्रह को बचाने के लिए जनरल नर रामगोरे ने अमक हरिमम किया। उन्होंने राजधानी के नागरिकों का भी बुझाया है। इस सत्याग्रह में राजधानी की घड़ियाला न बिजय जाल किया। सत्याग्रह आन्दोलन में राजधानी के सैकड़ सत्याग्रही लुह मार-पीट कर बन्दी बनाये गये। इसकी सूचना जब महात्मा गांधी को मिली तो उन्होंने और देशर नेपाल सरकार को जनता की भाँति पूरी करने तथा सत्याग्रहियों को बिगुल अहिंसा से काम लेने की सीख दी। महात्मा गांधी की सम्मति तथा सरकार ने दुकरा दी किन्तु सत्याग्रहियों ने अहिंसात्मक नीति धारण कर पुनः सत्याग्रह छड़ने की तैयारी की। १९ जुलाई सन् १९४३ ई० का बनारस में मुखा देवी प्रसाद भायराज के समारोह में नेपाली राष्ट्रीय कायम का प्रथम कार्यक्रम हुआ। इस समारोह में डाक्टर राममनाहर आहिया आदि भी उपस्थित थे। सम्मेलन में किसी समय नेपाली का नेपाली राष्ट्रीय कायम का अन्त्य मन्त्रिमन्त्रि से निर्धारित किया। इस अधिवेशन में आगत प्रतिनिधियों ने नेपाल में अहिंसात्मक आन्दोलन करना का प्रस्ताव पास किया।

नेपाली राष्ट्रीय कायम के सत्याग्रह को और बढ़ने देकर प्रचल मंत्री महापत्र पत्र समार न पण्डित जवाहरलाल नेहरू से सत्याग्रह स्वयं करा देने की अपील की। उन्होंने भारत के प्रधान मंत्री का यह बिन्दुमान बताया कि वह सीधे ही सभी राजनीतिक बन्धियों का मन्त्र करके नेपाल के पास में सुचारु भी भार भरण होय। भारत पत्र समार न भारत सरकार में एक वैधानिक समारोह भी भौर की कलत अधिवेशन की कानूनन सन् १९४३ ई० में एक शिष्टमण्डल काठमाण्डू जाया। अधिवेशन की तीन बार प्रचार के बिन्दुमन्त्रि करके नेपाल सरकार को दिये। किन्तु राणा शासकों ने उन बिधान का वेचन कायम पर ही रहन दिया। अधिवेशन की भी सम्मति को एकतरफ राजा शासकों ने सत्याग्रहियों का नहीं छोड़ा। सत्याग्रहियों की हावम मर्तन देगतर बिन्दुमन्त्रि प्रसाद भायराज न भारत के समारोहों तथा डाक्टर राममनाहर आहिया के पास एक बिन्दुमन्त्रि प्रचार करके नेपाल सरकार को दिये। किन्तु प्रचार के लिए नहीं। बिन्दुमन्त्रि प्रसाद भायराज की बिन्दुमन्त्रि भारत डाक्टर राममनाहर आहिया ने प्रधान मंत्री पत्र समार के पास बिन्दुमन्त्रि प्रचार कीयारा को छोड़ देने के लिए इस प्रकार की एक बिन्दुमन्त्रि—

श्री पद्म रामागर जंग बहादुर राजा  
प्रधान मंत्री नेपाल ।

प्रिय श्री महाराज

मेरा तार आपका मिला होगा । श्री हृष्य प्रसाद उपाय्याय महारत्ना गांधी का पत्र  
और यह पत्र आप तक क आ रहा ह ।

श्री बिरेन्द्रर प्रसाद काइराला की जबस्वा तो मर्यामम आ गई है ऐसा यहाँ  
सुना गया है, फिर भी कोमिश उन्हें बचान की बम्बई में की जा सकती है । मेरा विश्वास  
है कि इन युवक की मृत्यु से हम सभी की बहुत छति हुस्ती और इन्ह बचाने की बरा नी  
आगा है ता अबिलम्ब रिहाई है ।

श्री बिरेन्द्रर का लिखा हुआ पत्र में आपके द्वारा ही भेज रहा ह । यदि वे छोड़े  
जायें ता उन्हें यह पत्र दिया जाय जिसमें छूटने ही ब बम्बई जाने जायें ।

बाहे दर हा गई है बिरेन्द्रर की रिहाई नेपाल और भारत दोनों के लिए बम्बान-  
कारी होयी और आपकी तरफ से एक मात्रबीय काम ता होगा ही । धरे नमस्कार और  
दुःखछायें आपका स्वीकृत हों ।

सबरीय

राम मनोहर लाहिमा

दिनांक मन् १९४० ई० में नेपाली राष्ट्रीय काङ्ग्रेस बाणिकलम्ब बजारम में  
हुमा । इसी समय काठमाण्डू में 'नेपाल प्रजा पंचायत' नाम की एक राजनीतिक संस्था  
स्थापित हुई । नेपाल प्रजा पंचायत ने काठमाण्डू में जुलुन निकालकर राधा सरकार के  
विन्दु मत्पाद छड़ा । राजा सरकार न प्रजा पंचायत के नेता त्रिपुरवर सिंह, सुय बहादुर,  
विजय बहादुर मन्त्र पूर्ण बहादुर, चमराम तथा तुल्सी शाल आदि के साथ बिरेन्द्रर  
प्रसाद काइराला को भी गिरफ्तार किया । प्रजा पंचायत के मुखियों को जल्दी मुमकर  
काइराला हथ न एक अपिरोमन द्वारा नेपाल की तराई में मत्पादह करन की घोषणा की ।  
प्रथम जुल मन् १९४८ ई० में मत्पादह-आन्दोलन प्रारम्भ हुआ । बिरेन्द्रर प्रसाद  
काइराला न अनगन इन घोरम करके अन्य राजनीतिक बन्धियों का भी अनगन करन के  
लिए बिदेस किया । मायाप्रहियों की पार्से पूरी की न हा पाई थी कि बिरेन्द्रर प्रसाद  
काइराला प्रधान मंत्री महाराज मोहन चमरार का आस्थापन पाकर बिना लगी  
अनगनबाधियों की राय निय अनगन तोडकर भारत जाने गय ।

इन कार्यवाही में हुगी हाकर काठमाण्डू के राजनीतिक बन्धियों ने अपने साथ  
व्यक्तिओं द्वारा अपप्रकाश नारायण बिरेन्द्रर प्रसाद कोइराला के पास पत्र भेज ।  
अपप्रकाश नारायण के पास जो पत्र लिखा गया वह हिन्दी भाषा ही में था किन्तु बिरेन्द्रर  
प्रसाद कोइराला के पास आ पत्र लिखा गया वह नेपाली भाषा में था । ब बन्धों पत्र बमता  
हम प्रकार है —

विद्यार्थियों का मार पीट कर छाड़ दिया। हुकुमी सरकार ने अहिंसात्मक सत्याग्रह को दबाने का विश्व विराट्मण्डल इत्यादि स्थानों पर गोळियाँ भी बरसाईं जिनमें बिछटनगर में तीन श्रिया मोर्चियों की शिरार बनी और जनता सत्याग्रही बाम्य हुग। ३० अप्रैल मन् १९४७ ई. को नवाक की राजधानी काठमाण्डू में सत्याग्रह छिडा। इसकी मर्प पाटन तथा मारगाव तक पहुँची। स्वाधीनता की मुक्ती जनता ने सरकार के विरुद्ध बिछट प्रदान किया। इस सत्याग्रह का दबाव के लिए जनरल नर शमशेर ने मक्क परिसर किया। उन्होंने राजधानी के नागरिकों का भी कुत्सी की। इस सत्याग्रह में राजधानी की महिलाओं ने बमय भाग लिया। सत्याग्रह-आन्दोलन में राजधानी के नैकडा सत्याग्रही मूक मार-पीट कर बन्दी बनाय गय। इसकी मुक्ता जब महात्मा गांधी को मिली तो उन्होंने जार देकर नेपाल सरकार को जनता की माँ में पूरी करने तथा सत्याग्रहियों को बिगुड अहिंसा में बाम लेन की अपील की। महात्मा गांधी की सम्मति राधा मरजार ने दुकरा की बिन्नु सत्याग्रहियों ने अहिंसात्मक नीति बारक कर पुनः सत्याग्रह छडने की तैयारी की। १९ जलाई मन् १९४७ ई० का बनारस में मुखा रही प्रभास मायक्रोटा के समानाधिक में नेपाली राष्ट्रीय बाइस का प्रकम बापिकोन्मन हुआ। इस समारोह में डाक्टर राममनोहर माहिया आदि भी उपस्थित थे। सम्मेलन में दिल्ली रमज रेग्मी का नेपाली राष्ट्रीय बाइस का अध्यक्ष सर्वसम्मति में निर्वाचित किया। इस अधिकरण में आगत प्रनिधिधियों ने नवाक ने अहिंसात्मक आन्दोलन बरक का प्रस्ताव पास किया।

नेपाली राष्ट्रीय बाइस के सत्याग्रह को जार पकडने देववर प्रदान में ही महाराज पद शमशेर ने पण्डित जवाहरलाल नेहरू से सत्याग्रह स्थगित करा इन की अपील की। उन्होंने भारत के प्रधान मंत्री को यह बिनाम दिखाया कि वह पीछे हटी गयी राजनीतिक स्थितियों का मक्क करक नेपाल के शासन में सुधार की ओर अग्रसर हुन। अग्रस पद शमशेर ने भारत सरकार से एक बैधानिक सत्याग्रह की माँग की फक्क भीप्रकाश जी के मन्त्र म मन् १ ४९ ई० में एक सिप्टमण्डल बांमण्डू भाया। भीप्रकाश जी ने तीन बार प्रहार के बिमान तैयार करके नेपाल सरकार को दिये। बिन्नु राधा शासनो ने उन बिपानी का बकड बावक पर डी चकन दिया। भीप्रकाश जी की सम्मति का ठकराकर राजा शासनो ने सत्याग्रहियों का मर्ती छाना। सत्याग्रहियों की हानय मर्दान देववर बिरोधर प्रभास कोन्गाला ने भारत के समाजवादी नेता डाक्टर राममनोहर माहिया के पास एक बिन्नी लिखकर प्रदान मंत्री के पास एक बिचारिया की बिन्नी मन्त्र के लिए लिगी। बिरोधर प्रभास बाइसका की बिन्नी बाबर डाक्टर राममनोहर माहिया ने प्रधान मंत्री पद शमशेर के पास बिरोधर प्रभास कोन्गाला का छाड देन के लिए इन बहार की एक बिन्नी मंत्री—

श्री पद्म रामगढ़ जग बहादुर राणा  
प्रधान मंत्री नपाय ।

प्रिय श्री महाराज

मेरा तार आपका मिला हाया । श्री कृष्ण प्रसाद उपाध्याय महारमा यात्री का पत्र  
और यह पत्र आप तक आ रहा है ।

श्री बिदेवर प्रसाद काइराणा की अवस्था तो मरणात्मक आ गई है एसा यहाँ  
सुना गया है फिर भी कोशिश उन्हें बचाने की बम्बई में की जा सकती है । मरा बिदेवर  
है कि इस मुश्किल की मूल्य में हम सबों की बहुत क्षति होगी और उन्हें बचाने की जरा भी  
आशा है ता अविनाश रहित रहे ।

श्री बिदेवर का मित्रा हुआ पत्र में आपको द्वारा ही भज रहा हूँ । यदि वे छोड़े  
जायें ता उन्हें यह पत्र दिया जाय जिससे छूटने ही में बम्बई चल जायें ।

आह वैर हो गई है बिदेवर को रिहाई मनाल और भारत देशों के लिए बन्धाय  
बांधी होगी और आरक्षी तरफ में एक मानवीय काम ता होगा ही । मेरे नमस्कार और  
शुभच्छाया आपका स्वीकृत हों ।

प्रबन्धीय

राम मनोहर साहिवा

दिसम्बर, मन् १ ४३ ई० में नपासी राष्ट्रीय जनपद बापिकाम्यक बनारस में  
हुआ । इसी समय बापिकाम्यक में 'नपास प्रजा पंचायत' नाम की एक राजनीतिक संस्था  
स्थापित हुई । नपास प्रजा पंचायत ने काठमाण्डू में जुमूम निकालकर राणा सरकार के  
बिरुद्ध सत्याग्रह छेड़ा । राणा सरकार ने प्रजा पंचायत के नेता त्रिपुरवर गिहू, मूय बहादुर,  
बिजय बहादुर मन्थ पूर्ण बहादुर, बमरल तथा तुलसी आदि के साथ बिदेवर  
प्रसाद कोइराणा को भी पिरालार किया । प्रजा पंचायत के मुखियों का बन्दी मुनवर  
कोइराणा बल में एक अपिबेगन द्वारा नपास की तराई में सत्याग्रह करने की पापना की ।  
प्रथम जून मन् १ ४८ ई० में सत्याग्रह-आन्दोलन प्रारम्भ हुआ । बिदेवर प्रसाद  
काइराणा ने जनगण बल धारण करके अन्य राजनीतिक बन्दिनों का भी जनगण करने के  
लिए निवेदन किया । सत्याग्रहियों की माँग पूरी भी न हा पाई कि बिदेवर प्रसाद  
काइराणा प्रधान मंत्री महाराज माइन रामगढ़ का आदेशान पालन बिना सभी  
जनगणकारियों की राय लिये जनगण तारकर भारत चले गये ।

इस कार्यवाही में दुर्गौ हाजर बापिकाम्यक के राजनीतिक बन्दिना में अपने साथ  
अपिबेगन द्वारा अपप्रवास मारामय बिदेवर प्रसाद काइराणा के पास पत्र भज ।  
अपप्रवास मारामय के पास आ पत्र लिखा गया वह हिन्दी भाषा ही में था कि बिदेवर प्रसाद  
प्रसाद काइराणा के पास आ पत्र लिखा गया वह नपासी भाषा में था । प ४ —

मर्चन्टी जयप्रकाश नारायण की  
पत्नी ।

जय नवल ! जय हिन्द !

सम्माननीय माधियो ।

कुछ दिनों के पहले अपना परिचय देना उचित है । इस मन् १९३६ ई० में यहाँ काठमाण्डू में नेपाल प्रजा परिषद् नामक ओ सभासभासी मन्षा की स्थापना हुई थी उसके सदस्य हैं । श्री माक बीठ मय नेपाली अल के कठोरतम नियमों के सहने हुए किसी तरह अपना जीवन यापन कर रहे हैं । हमारे बारे में बहुत-सी बातें नेपाली राष्ट्रीय कार्यक्रम के कार्यकर्ताओं द्वारा आप लोगों को मालूम हो चुकी होगी ।

हमें बहुत दिना ने आरका पत्र मिलने की इच्छा थी किन्तु पत्र आप तक पहुँचाने वाला कोई व्यक्ति न मिलने के कारण हम ऐसा नहीं कर सके । अभी यहाँ की परिस्थिति की गति अचरता ने प्रेरित हो हम किसी तरह इन पत्रों का भिन्न विनियम से आपके पास पहुँचा रहा हूँ ।

आप लोग ने और आपके दल न बिना तरह हमारी जन-जागृति में मदद पहुँचायी है वह बहुत सराहनीय है । हमने किण हमारा देश और हम मन्षा आपके अनुगृहीत बन गये । इस विज्ञान है जैसा आपन पुरु में मदद प्रदान की है बीमे ही आगिर तक हमारी समस्याओं को मुक्तप्राप्त में आप गति मङ्गलपरापूर्व तत्परता दिखाने रहेंगे ।

आज हमारे देश की राजनीति न जैसी प्रियमिता आ गई है वह हमारे लिए बहुत विचारणीय है । इस प्रियमिता का कारण क्या है यह कैसे हुआ या नकली है—प्रस्तुत पत्र में जैसी बातें हैं हम आपको लिख रहे हूँ ।

नेपाली राष्ट्रीय कार्यम न आप लोगों की सहायता पाकर पहले जैसी सफलता प्राप्त की थी उसके ललात्रा की अपरिचरता और सन्ध्याकाश के कारण हम लोग अन्त में उस सफलता का कदम नहीं उठा सके । उसके अन्दर जो पूरा हुई वह तो आप लोगों की जानन ही है । एक हात न बाह भी यदि दला में न कोई भी पल बला की मन्षी मलाई का स्वाद न गन्ध हुए कार्य-शत्रु न आग बडा हाता ता मात्र एक कुछ हो गया हाता किन्तु हमारे ललात्रा को यह मजूर नहीं । वे मन्षा बीम हैं कि बिना काई आगिम उगाय आग में बीमर हम्मा मन्षा न ही मन्ष काम बन आयमा ।

अनसाधारण की आपनी मन्ष आरपिच बन्ध के लिए त्याग और समय बहुत आवश्यक औरतार है । भारतीय आध्यात्मिक मन्गृति न पनी हुई अनन्ता के लाल में बिना अन्ध रहन ही है । मौनरवारी दुष्टिहान में भी त्याग के बिना निश्चित कुछ नहीं हाता निश्चय रह हुए बिना नीति का नीति-और व्यवहार और रक्षा हो नहीं मन्षी और नीति के नीति-और व्यवहार और रक्षा के बिना मन्षता प्राप्त करने की चाह माना गन्ध मात्र है । अनसाधारण के कार्यों में ललात्रा का प्रथम अनन्ता का विनागरान बनता पटना है ।

इसके लिए उन्हें चाहिए कि अपनी नीति की रक्षा को एक परम आवश्यक कार्य समझें। हमारी समझ में यहाँ के जन-आन्दोलन में वा विविधता आ गई है वह नेपाली राष्ट्रीय कावस के नेताओं का सामान्य धी बिस्वेदर प्रसार जी की जूनों का दुष्परिणाम है। वा वर्ष आन नेपाली राष्ट्रीय कावस न जब पहुँच-पहुँच आन्दोलन छद्म या उन वक्त यहाँ की जनता उनसे ऊपर पूरी धन्य और बिश्वास करने लग गई थी। उसमें किम प्रकार उनका अनुमान किया वह आप लोगों का भी मान्य है। किन्तु बाद में वे नेपाली जनता की आँखों में गिर पड़े। इसका कारण वा जब वे बीमारी की वजह से मजबूती न छोड़ दिये गये (तापत्र आप लोगों के कहने पर ही राधाबाग छाड़ा) तब उन्हें उचित था कि बीमारी से वापस आ जाने के बाद अपनी समस्याओं की नीति रक्षा के लिए यहाँ लौट आने और सरकार कहने कि या तो सरकार उन्हें धी उनके सहयोगियों के साथ (वा उनके माय-माय पकड़ गये) जल में रखे या उनकी जगहों को पूरी करे। इस तरह अपनी नीति की रक्षा करना या दूर रखा इसके बिपरीत मारत में ही रहकर मजबूती-पक्ष के लिए वे बिस्फी रमण जी से कहने लगें। परिणामस्वरूप नेपाली राष्ट्रीय कावस न टुकड़ों में बिभक्त हो गई। सरकार का भी यह भीका अच्छा हाथ लगा। उसमें अपने छोटों का कावस के अन्दर घुसा कर जहाँ तक हा सका फूट को बड़ा दिया। धी बिस्फी रमण एक परभावपूर्ण आदमी ही क्यों न वे फिर भी परिस्थिति का पहचानन हुए धी काइराणा जी का बाबिब था कि धी बिस्फी रमण का कुछ समय के लिए मजबूती के पक्ष में रहने देते और आप यहाँ आकर उपरोक्त बात सरकार में कहें। आप अनुमान लगा सकते हैं कि यदि वे गया करते तो जनता के बीच बिश्वासपात्र बन सके होते और धी बिस्फी रमण की उनके बिन्दु कहीं तक चल सकती। हमी एक भूटि न ही किया-कराया सब मिट्टी में मिला गया और साथ यह बहुत कम कि धी बिस्वेदर जनाद न राधाबाग में पैसा लेकर आन्दोलन का प्रतिकार किया। बाँधम में भी फूट डाल दी। हा नकता है राधाबाग में ही इस बात की अपेक्षा कि नेपाली ही किन्तु नापारण जनता के लिए वह देखने हुए कि आन्दोलन के मुख्य नेता तो एटवर जाते गये नव हैं तथा उनसे साथ वे और कार्यकर्ता (अभी तक) जल की हवा ला रहे हैं इस बात पर बिश्वास करने के बिना और बाग ही गया था। जगह-जगह आदमी धी इस बात पर बिश्वास करते गये। हाक में जब न यहाँ आय न ठह हम न इस भुक्ति के बाद में उन्हें लिखा था। उत्तर में उन्होंने लिखा कि वे इस तरह अपनी जाय जाग में झगड़ना नहीं चाहते।

इस बार उनके आयमन का बाग्य घुलन पर उन्होंने लिख मजा था कि सरकार के बिन्दु लपुन बाँधों की रचना के लिए ही न यहाँ आय न। मजिद बिस्वास करने पर मान्य हुआ कि बाग्य में बात बीबी नहीं थी। नेपाली राष्ट्रीय बाँधम में धी बाग्यना जी और धी रमण जी के बीच आ नव हुई थी उनकी विचार के लिए यहाँ राजधानी के कार्यकर्ताओं न बहुत बागिग की धी किन्तु हमका कोई नतीजाजनक परिणाम नहीं

निकल सका था। उसने निराश होकर उन कार्यकर्ताओं से कहा कि अपने घरों पर लौट जाना ही अच्छा है। इसी विचार के अनुसार उन्होंने 'नेपाल प्रजा पंचायत' नामक संस्था स्थापन के लिए जनता में अमील की थी। परिणामस्वरूप यहाँ जो संस्थाग्रह आन्दोलन होने लगा था उसको भरसक अपने घर में मिटाने में हो सका तो उसमें बाधा डालने के लिए ही थी कोइराला जी यहाँ आय थे। उनकी इच्छा पूरी न हो सकी क्योंकि यहाँ के कार्यकर्ता उनसे बहुत बिड़ गए थे और माह ही आन्दोलन के लिए कटिबद्ध थे।

इसी बीच उनके माह हमारी लिखा-पढ़ी हो रही थी। हम ने उन्हें लिखा था "आप के ऊपर जनता का विश्वास हटता जा रहा है। आप इस बार यों ही लौटकर भारत चले आइयें। आपके पकड़ वाले में ही तमाम काम नहीं रुक जायेंगे। अपना हिस्सा आप निमाच्य शेष प्रकृति और ही देख लेंगी। जन-आन्दोलन एक ही आदमी के बूते या घरों में नहीं रुका करता। बहुत आप में जो बूटि की है उसका प्रायश्चित्त के लिए तैयार हो आइयें। सरकार न नव वर्ष के शुरू से नया विधान पालन करने की घोषणा की थी किन्तु अभी तक उसे कार्यान्वित नहीं किया है। आप सीमा को लाबिम या कि मुर्करर मारील में यहाँ आकर अपनी कार्यवाही शुरू करें। अब भी मौका है सरकार की झूठी पापना के विरोध में यहाँ बड़ी से आवाज उठाइयें। पकड़ गया तो भी कोई हर्ज नहीं बागवा हिस्सा तो निमा जायगा" इस बात का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वे क्यों अपनी जान आज में डालना चाहते लगे। लौट जाने को ही थे। परन्तु इसी वक़्त सरकार ने उन्हें पकड़ लिया और एक सुनमान जेल में बन्द कर दिया।

इसी समय मेंट्रुल जेल नम्बर २३ में जहाँ पंचायत आन्दोलन के कार्यकर्ता रक्ते गए हैं राजबन्धिया द्वारा जेल के अन्तर्गत के अन्धकार के बिन्दु तारा मयाम के कारण उन पर सरकार को तरक में जैसी मार पड़ी उसका कोई बदला नहीं। १४२ आदमी पापल हुए। उनमें में म्यारह और थी बिन्दुवर बाबू के चार पुराने सहयोगी मरिण जया नवरह का सरकार ने मेंट्रुल जेल नम्बर २३ के 'बालपर' नामक तरक में अभी तक बन्द कर रखा है। इन टंक प्रभाव और रामहरि जेल तरक में बाई बरं रडे और थी राइममान मिह ग्यारह बरं। अभी हम लोग के लिए बड़ा जगह मानी करवानी पड़ी दयालित हम नाम नम्बर २३ में मार सके हैं।

इन घटना के कुछ दिनों में बाद थी कोइराला जी में भी जनघन शुरू कर दिया। जनघन शुरू करने के बाद राज करने उग्योने या किसी मित्र में महानुभूति और महवाग के लिए मारा हम मारी की एक पत्र प्रजा था। हम लोग में भी इनके लिए प्रयास किया। मारा आज बाबिजा में उन महवाग में जनघन शुरू कर दिया। नवी समय मारी मारीक बांधन में जन की एक मारीक में मयाग्रह आन्दोलन छुट देन की बाधना कर दी। जनघन के उद्दीगम में मार थी बाइगला की बेट थी बाइन ममजर में हुई। हमें बीच में बांधन मारा कि थी बाइन ममजर में पारिज आन्दोलन बाइ बरन के लिए उनका बड़ा

या और उन्होंने भी अपन को रिहाई मिलनी देखकर आन्दोलन बन्द करके व मित्र अपन मित्रों का पक्ष लिप्त थे । जो हों वे छोड़ दिए गए । आन्दोलन बन्द करवाने की बजाह बनाना हुए नेपाली राष्ट्रीय कायम से पक्षों में प्रचारित करवाया— 'भरकार और नेपाली राष्ट्रीय कायम के बीच पार्वे होन जा रही है । इसके लिए भारत आताबरन की आवश्यकता है । इसी बजाह में कुछ दिनों के लिए आन्दोलन बन्द करवाया जाना है । रिहाई मिलने ही भी कोइरामा जी पटना की तरफ रवाना हुए ।

यहां पहुँचकर वे क्या बलव्य प्रचारित करवाने हैं कि "नेपाल सरकार राज नीतिका के प्रति सर्वोपरन भाव रखनी है । अपनी रिहाई के बाद में अपन अनयम बन्द करवाने बिचे रहने का कोई आचार नहीं पाना ।" इत्यादि इत्यादि । सब बडाइय ३० ३४० क दिन का भार राजबन्धियों पर पड़ी और सरकार सब भी उनके प्रति जो दुर्धर्महार कर रही है उसके बारे में सब आमत हुए बहा आकर सब वे एसा बलव्य बन जगते हैं जब उन के बारे में क्या समझा जा सकता है । क्या उनका अनयम जारी रखन के लिए कोई आचार नहीं था । जब कि सरकार स उनमें से एक भी मींग (जिन मीपों का अन्तर व अनयम कर बैन व) पुनी न को भी और सात आठमी मंत्री महामुमुनि और मन्त्रालय में अनयम कर रही रहे व कि इन लोगों का अपन अनयम तोड़न की लबर तक दिए बिना वे यहाँ से चल दिये ।

बाद में दिखी पहुँचकर वे फिर क्या बहल है कि "मुझे निश्चय है कि नेपाल सरकार एक मास के अन्दर ही कुछ करेगी । मुझ पूरा विश्वास है कि आन्दोलन का बन्द कर लेन का हमारा निजय उचित मित्र किया जायगा । नेपाल सरकार कुछ मुबार काल के लिए कुछ रूप से उत्सुक है । मैं आशावादी हूँ और मुझ निश्चय है कि सरकार एसी कष्टा करेगी ।" इत्यादि । जिन प्रतिनिधियों भी मोहन रामार और उनके आइमान अपनी भाव समायोक्तता के कारण अपन मुफारबारी बचे बर माई थी पक्ष धायम को पक्ष धायम के लिए बाध्य किया वे प्रचारित सम्बन्धी मुफारों के लिए वहाँ तक कुछ करने के लिए उत्सुक हा सकते हैं । यह मापारण स मापारण व्यक्तियों को भी स्वच्छतर मायम हो सके वाली बात है । थोड़ी देर के लिए हम दात भावें कि वह हम तरह रावाजा को पुममा कर अपना काम निवासना चाहते हैं तो इस पर भी हमारा दिल विश्वास करना नहीं चाहता क्योंकि श्री कोइरामा जी को यह बकूबी मायम है कि सरकार कर्नीतिज्ञ थी मोहन रामार उनकी चित्त-चरदी बानों में आ फँसने वाले आरमा नहीं है । श्री कोइरामा जी और नेपाली राष्ट्रीय कायम के बारे में क्या बहा माय आम्दापन बन्द करवाने के बल में बहन है कि सरकार और उनके बीच पार्वे हो रही है किन्तु बाद में सरकार ने जब इस बात का राजन विचार सब वे जग कुछ बजाह ही नहीं दे सक । आगिर पार्वे की बात भी टूटी निजनी ।

महाराज ! कायम जैसी उत्तराधिकार रखन वाली एक राष्ट्रीय संस्था का क्या हम मूत्र बानों में लगना और बिना कुछ सकाय आत्म में बिगोयी जाने बहनी चाहिये ? एम



कापी में तो जनता का भयन ऊपर जो विश्वास बन गया है उस पर मुठारावाह ही होता है। हमारे नेताओं का यह कालम नहीं कि यह जन-आन्दोलन है। इसके मंचात्मक के लिए जनता का विश्वास प्राप्त करना परम आवश्यक है। नीति की रक्षा के बारे में इस बार भी उम्मान बड़ा भारी मूल की है। क्या उन्हें अपनी एक भी माँग पूरी हुए बिना रिहाई करके भारत छोड़ जाना उचित था? हाँ वे एक सुतमल जल में एक बवंडर में उन्हें बहुत तनवीर का रही था। इनके लिए सरकार में कहते और जल के मन्दार नहीं अच्छी जगह अपने को रखवाने। नवार्थ राष्ट्रीय काँग्रेस के जल में यह हुए सब कार्यकर्ताओं के नाम छाड़ दिये गये जाने का भी एक बात थी। हमारी समझ में जन-आन्दोलन बन्द करवाने के बदले में सरकार की ओर से कोई कार्रवाई हो जान के बाद ही उन्हें भारत छोड़ जाना उचित था।

जन आन्दोलन के नेताओं के जल में पड़ने का सब काम नहीं एक जाने बसिक बहुत रूप में अपना प्रभाव और भावनाएँ ठीक पर बाहर फैलता रहता है। इन बार भी जब वे पकड़ गये तब ही जनता ने उन पर पुनः विश्वास करना शुरू किया और सामान्य उसका एक जल बाँटित एक जन आन्दोलन में सामान्य के लिए तैयार हो गया था। नेताओं की तरफ से लम्बा खान दिया बिना जनता के नाम मान-दण्ड के लिए है ही क्या जिससे वह अपने तथा की लड़ाई का मत लेकर उनके पीछे हो लें। इसमें हमारे बहुत का मतलब यह नहीं कि जहा-जहा जान साफ़ कि। यह बात हमें अच्छी तरह मालूम है कि कोरे खान में हा लगी नाम नहीं बन जान लखापि जहा उनके आवश्यकता होती है बड़ा वह हाका हो चाहिए। नहीं तो आम तद्विषय करम पर भी काम नहीं बन सकता। इस ऊपर वह चुके हैं कि जल के ठीक-ठीक प्रभाव के बिना मजबूतता प्राप्त नहीं हो सकती। इनके लिए खान की आवश्यकता होती है। फिर दूसरी बात यह है कि आम जनता के साथ उदा। मडा नीति नहीं बन सकता। उसके साथ ही सम्मेलन और मजबूत जनता के वेद जाना चाहिए। फिर नेताओं का जल में स्थिरता भी मजबूत होती चाहिए। जल एक बात कभी दूसरी बात वह या जान में विरोध। एक बाँटों में नेताओं की बहुत परहेज करना चाहिए और नीति-नुमा बात बड़ देनी चाहिए जिसको साधारण जनता समझ सके और उनका अनुसार कार्य कर सक। उसके साथ इसका मतलब तो यही है कि जहा जिसके अग्नि में जल जल जल बदन बाँटी बाँटी के बीच लम्बे खानिज कर उनका समझ मत।

या बिना-बन प्रभाव बाँटता है तो बात यह है उदा। भी दिखी समझ की रोमी का भावना जगह नहीं है। मुलत में जाना है कि बाँट जल बैंगल जल बाँटतम में बरामा दिया करने - जल उम्मान बहुत निज जान हा 'अन्तरिम सरकार' का माँव परमाँ का लम्बे के। यदि हम लज बेचन बाँटती हाँ दहर बाँट बाँट में ही लो बर में खानिज बेचन बाँटती बाँट में दिखान बाँट करम में समझ जाना ला खानिज व निज बड़ी-बड़ा बैंगलिया कर मजबूत करम की मानदण्डता ही करो जहा बाँटती में भी दिखी दखन में लो जान लाना का समझ निज व आवश्यकता

हुई है कि राष्ट्र के इन्डियन सोशलिस्ट पार्टी ने सहस्य है और उनके द्वारा जो काम होता है लोग उसे बाप लोगों का ही कराया समझते हैं। इसी भूल करने के बाव भी उनकी जो कुछ इच्छा सब रही है वह आप लोगों के साथ सम्बन्ध होने की बरीकत ही है। किन्तु वे इस तरह सब तक जनता के विवेकसंपन्न बने रह सकेंगे ?

अभी आप लोगों के प्रति हमारी जनता की काफ़ी भ्रष्टा भक्ति है। अत्यन्त गिरी हुई स्थिति के कारण जिस तरह हमारी जनता की मनोवृत्ति पान्थि की तरह झुक रही है और उसी वक्ता जिस तरह आप समाजवादी नेताओं ने उनकी राजनैतिक व्यावस्थिकताओं की पूर्ति के लिए आवाज उठाई है इसमें माफ़ होना है कि आई० एम० पी० का प्रभाव हमारे देश में बहुत बाल पर्यन्त फैला हुआ है। किन्तु यही विषयवस्तु प्रभाव द्वारा जैसी भूलें हो रही हैं वह इसके लिए बहुत गतगताक है। यहाँ की जनता उनकी हानि की कारं बाद के कारण इससे बहुत चिन्ती हुई है। हमें इस बात में बहुत अचम्बित हो रहा है कि हमारे प्रजापक्ष की राजनैतिक कार्यवाही में भूक में ही उनके नेताओं में अत्यन्तुपम आन मया है। उन्हें नेता बनने का शौक तो है लेकिन मकड़ के समय नेताओं को अपनी जान सब से आगे करनी पड़ती है—यह बात उन्हें माफ़्य नहीं।

अब आप से हमारा कहना यह है कि जैसे आप ने हमारे मामलों में मध्य करण की मेहरबानी की है वैसे ही अपना राष्ट्रीय कार्यक्रम के नेताओं के कार्यों पर नियन्त्रण रख उन्हें ठीक रास्ते पर मान की कायिदा भी करें। हम यह नहीं कह सकते कि भी काइराणा जी ने बरनिवत मही ऐसा किया हो। संभवतः उनके दुष्प्रकोप में कुछ मदद या बात मही लगी जाने हुई है। यदि ऐसा है तो ब फिर ठीक रास्ते पर आ सकते हैं। उनका हमारा कोई प्रतिपक्ष प्रस्ताव नहीं उद्घाटन हमारी भलाई ही की थी और अब भी आशा है वे ऐसा करने लेंगे। किन्तु राष्ट्रीय हित के आगे वैयक्तिक स्वार्थ के लिए कोई स्वार्थ नहीं होना चाहिए इसीलिए जनमत का छोड़कर हमें उनके विरुद्ध उपरोक्त बातें कहनी पड़ी हैं। हम आपको अपना सम्मानना सबी और मुहूर्त ममशते हैं। भी काइराणा जी भी आपकी रीति ही ममशते होंगे इन हावत में यदि हम उनके बारी को सुधार के लिए आपके नामने पेश करें तो हमने उनकी बुराई की है ऐसा ह्यास उन्हें नहीं रखना चाहिए।

संयमन के बारे में यदि अपनी राष्ट्रीय कार्यक्रम के नेताओं की रास्ते पर चल जाने ता अभी तो बहुत बड़ा संयमन हो गया होगा। प्रजा नवपुत्र में प्रकाश करने के लिए तैयार बैठी है। उनकी आर्थिक स्थिति निर्गुन हुई है और वर्तमान समय और उनकी सामान्य-व्यक्ति के प्रति वह मान-माद विरोध-भाव रखती है।

अब यहाँ जो संयमन होया वह हमारी राय में समाजवादी मित्राण की नींव पर ही होता चाहिए। इन बारे में यह कहा जा सकता है कि यहाँ अभी आन्दोलन सर्वद्वारा मजबूर बने की वृत्ति नहीं हुई है। इसलिए यहाँ समाजवादी संयमन की कोई गुंजाइश नहीं। उत्तर में हम अपना अधिक देनों का उदाहरण पेश करने हुए यह कहना चाहते हैं कि संसार अभी

कायों में ता जनता का अपना ऊपर जो विरहाम बन गया है उस पर कुठाराघात ही होता है। हमारे नेताओं का यह मान्य नहीं कि यह जन-आन्दोलन है। इसके मन्त्रालय के लिए जनता का विरहामनाय बनना परम आवश्यक है। नीति का रक्षा के बारे में इन बार भी उन्होंने बड़ी माध भूल का है। क्या उन्हें अपना एक भी मिनट पूरी हुए बिना दिखाई देकर भारत छोड़ जाना उचित था? हाँ वे एक सुवर्णमय जल में रक्तमय बँ उल्लेख बहुत उल्लेख हो रही थी। इसके लिए सरकार में कहते और जल के अन्दर नहीं अच्छी जगह अपना को रखवाना। नराला राष्ट्रीय कायम के जल में पड़ गए सब कायमताओं के साथ छोड़ दिया गया था तो मा एक बात था। हमारी समझ में जन-आन्दोलन अन्दर करवाने के समय में सरकार की ओर से कोई कार्रवाई हो जाने के बाद ही उन्हें भारत छोड़ जाना उचित था।

जन-आन्दोलन के नेताओं के जेल में पड़ते हैं सब काम नहीं रुक जाते बल्कि अत्यन्त रूप में अपना प्रभाव और या कारगर तौर पर बाहर फैलाना शुरू है। इस बार भी जब वे पकड़े गये तब ही जनता ने उन पर पुनः विरहाम करना शुरू किया और मायदा उसका एक अर्थ जापित एक जून आन्दोलन में भाग लेने के लिए तैयार हो गया था। नेताओं की तरह न मन्त्रालय त्याग रिहाय बिना जनता के पास माप-दण्ड के लिए है ही क्या जिसमें वह अपने नेता को लड़ने का साथ लेकर उनके पीछे हो लें। इसमें हमारे कहने का मतलब यह नहीं कि जहाँ-जहाँ जान जाऊँ कि। यह बात हमें अच्छी तरह मालूम है कि कोर त्याग में ही सभी काम नहीं बन जाते तथापि जहाँ उसका आवश्यकता होती है वहाँ वह होता हो चाहिए। नहीं तो लाल तरबोर करने पर भी काम नहीं बन सकता। हम ऊपर कह चुके हैं कि नीति के ठाक-ठोके प्रभाव के बिना मन्त्रालय प्राप्त नहीं हो सकता। इसके लिए त्याग को आवश्यकता होता है। फिर दूसरी बात यह है कि आम जनता के साथ जहाँ से जो नीति नहीं चल सकता। उसके साथ तो मरकता और मन्त्रालय हमदर्दी में पेज आना चाहिए। फिर नेताओं की बातों में म्बिरता भी खूब होता चाहिए। कभी एक बात कभी दूसरी बात वह भा मायम में बिरोधी। उन कायों में नेताओं को बहुत परखे करना चाहिए और नसो-नुसो बात वह देना चाहिए जिसका साधारण जनता समझ सके और उसके अनुसार कार्य कर सके। उसके पास इनकी मर्मा ताओम है ही वहाँ जिसके जरिये वह अच्छा-अच्छा बरकत वालों बातों के साथ सम्बन्ध स्थापित कर उनका समझ सके।

यही विचारकर प्रचार काइशमा की ता बात यह हुई उधर भी हिन्दी रमण जी रेगमा का भा कार्य अच्छी तरह नहीं है। मुलतः मन्त्रालय है कि बलक जगह बैठकर प्रस वास्तव में बलक दिया करत है, कम उम्मान बहुत दिन काम ही अन्तरिम सरकार की माय फरमाई या ललक से। यदि इस तरह केवल मागों हाक देकर कोई बाहर से ही मा बल में स्थापित स्वच्छाचारो सरकार का क्रिम में निवास बाहर करत में मर्मा होता तो बालि के लिए बड़ी-बड़ी तैयारियाँ कर मुठमड करत का आवश्यकता ही क्यों हुआ करती? और भी हिन्दी रमण म तो आप मागों को स्थापित निजम की आवश्यकता

हुई है कि पायब के इन्डियन मासिस्ट पार्टी के सदस्य हैं और उनके द्वारा आ काम होता है लोग उसे आप लोगों का ही कपया समझते हैं। इतनी जूँ करने के बाव भी उनकी जो कुछ इज्जत अब रही है वह आप लोगों के साथ सम्मान होने की बरीकत ही है। किन्तु वे इस तरह अब तक जनता के बिबबसपाव बने रह सकेने ?

अभी आप लोगों के प्रति हमारी जनता की काफ़ी मझा-मझि है। अत्यन्त गिरी हुई स्त्रिण के कारण जिस तरह हमारी जनता की मनाबूति जालि की तरह झुक रही है और उसी वकन जिस तरह आप समाजवादी नेताओं न उनकी राजनीतिक मावश्यकताओं की पूर्ति के लिए माबाज उठाई है इसमें माकूम हल्ला है कि आई० एम० पी० का प्रभाव हमारे देश में बहुत काण पर्यन्त फैला रहा। किन्तु भी बिस्वेदर प्रभाव द्वारा जैसी जूँ झा रही है वह इनके लिए बहुत लठगमाव है। यहा की जनता उनकी हाम की बारें बाई के कारण उनसे बहुत चिडी हुई है। हमें इन बात से बहुत अपमान हा रहा है कि हमारे प्रजापन की राजनीतिक कार्रबाई में झूठ म ही उसके नेताओं में फालगुन जान समा है। उन्हें नेता बनन का टीक तो है मजिम मकट के समय नेताओं का अपनी जान म म आग करनी पडनी है—यह बात उन्हें मालम मही।

अब आप ने हमारा कहना यह है कि बीजे आप न हमारे मामलों में मदन करन की मेहरबानी की है बीजे ही नपाण राष्ट्रीय काँग्रेस के नेताओं के कावों पर निगरानी रन उन्हें टीक रास्ते पर मान की कागिद भी करें। इस यह मही कह सकन कि भी कोइराला जी न बहिनवन मे ही एमा किया हा। ममवन उनके दृष्टिकोण में कुछ यह बा जान मे ही एमी बाने हुई है। यदि एमा है ना वे फिर टीक रास्ते पर भा सकने हे। उनमे हमारा कोई खातिवन सपदा नहीं उधरान हमारी जलाई ही की थी और अब भी आया है वे एमा करने रहते। किन्तु राष्ट्रीय हिन के माग बेवकिदक स्वायं के लिए कोई स्थान नहा होना चाहिए इमोलिए कुलजना की छाड़कर हमें उनके बिच्छ उपगवन बाने बहनी पडी ह। हम आपसे अपना सम्माननाय मावी और मुहब समझन हे। यी कोइराला जी भी आपसे बीमा ही समझने हल। इस हालत में यदि हम उनके होयों को गुपार के लिए आपक मावन पैग करें तो हमने उनकी कुराई की है समा क्याक उन्हें नहीं रनना चाहिए।

मंगलम के बारे में यदि नपाणी राष्ट्रीय काँग्रेस के नेतागण टीक रास्ते पर बने हल्ले तो अभी तक बहुत बडा मपडन हो गया हाता। प्रजा नवमुग में प्रवास करन के लिए तैयार बेटो है। उसरी जाबिक स्थिति गिरी हुई है और वर्गमान मामक और उनकी गायन-गदति के प्रति बह माउ-माउ बिबाव-जाव रमनी है।

अब यहा आ मंगलम हाया वह हमारी राय में मबाजबावी मिडाल की नींव पर ही हाता चाहिए। इस बारे में यह कहा जा सकता है कि वहाँ अभी जागवक मवशात मबदुर बर्ष की लुप्टि मही हुई है। इसलिय यहा ममाजवादी मंगलन की कोई गुबागम मही। उत्तर में इस बगारा आदि दलों का उदाहरण पना करने हुए यह कहना चाहने है कि नमार अभी

तक वहाँ वहाँ समाजवादी सिद्धान्त लागू हो सका है वहाँ-वहाँ जागृक सर्वहारा मजदूर वर्ग के यरोसे नहीं बल्कि इसी सिद्धान्त की नेतृत्वता प्राप्त ऊमरी कुछ व्यक्तियों के अवरतन तक मजदूर और शक्ति के यरोसे ही लागू हो सका है। साथ-साथ में भी दल-शक्ति के भरोसे ही पहले-पहल लागू हो सका है। यदि कोई यह कहे कि दल-शक्ति के यरोसे ही सब काम करना बुरा है तो ठीक है किन्तु कुछ दिनों के लिए जब तक कि विरोधियों के साथ लड़ाई जारी रहती है और अपने सिद्धान्तों का महत्व और नेतृत्वता आम जनता के मन-मन में नहीं बुझ जाती तब तक यह इतिहास के रूप में किसी सीमित क्षण तक प्रमाण दिया जा सकता है। अभी हमारी जनता के सामने दो रास्ते हैं एक समाजवादी और दूसरा पूँजीवादी। ऐतिहासिक घटनाक्रम के दृष्टिकोण से एक के बाद ही दूसरा शुरू होता है किन्तु अपने देश की स्थिति से लाभ उठाकर यदि हम घाटंघट तरीके से भाग के रास्ते का पकड़ सक तो क्या हर्ष है? यह काम दल-शक्ति के यरोसे राजसत्ता को अपने हाथ में लेकर जारी न सम्पादन कर सकते हैं। केवल दल-शक्ति ही नहीं इस काम में आम जनता की महानुभूति और सहयोग भी हमारे साथ रहेगा। नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस को अभी इसी बात को दृष्टि में रखकर आगे बढ़ना चाहिए। श्री कोइराला जी की जब हमन इस बारे में लिखा था तब उन्होंने उत्तर में एक जगह तो यह लिखा कि हमारे वहाँ समाजवादी कार्यों के लिए कोई पुनराग्रह नहीं दूसरी जगह वह लिखते हैं कि नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस भी बाद में जाकर समाजवादी सिद्धान्त का पोषक बन सकती है। तीसरी जगह इम्बबन्दी की जूब लिखा की है। हो सकता है वे भी समाजवादी सिद्धान्त के पोषक हो और बाद में जाकर नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस को समाजवाद की तरफ प्रसर भी करावें। लेकिन हमारे कहने का मतलब यह है कि अभी हमारी मोली-बाली जनता में गठानो डार जिस तरह की नेतृत्वता मरी जायगी बहुत बंधा में हमारा प्रविष्ट्य उसी के अनुरूप बनेगा। अभी कुछ गड़बड़ी हुई तो बाद में जाकर समस्या किसी तरह सुलझ नहीं सकेगी आप सोचसिद्ध बन ही रहन देश पुनर्बाद के लक्ष्य में चलता ही जायगा जैसा कि नहक की और उनके दिव्य की हातत हो रही है। इसलिए हमारे कहने का मतलब यह है कि अभी से ही हमारे वहाँ समाजवादी नेतृत्वता पर मजदूर होना चाहिए।

जब हम कप्त के कार्यक्रम के बारे में हमारी राय में भी सामरिक हक के लिए ही आन्दोलन होना चाहिए। साथ ही राजनैतिकों की रिहाई के लिए भी। आन्दोलन के लिए हमारे देश में कोई सत्ता जेन्नी इतनी खलिखाली नहीं बन गई है कि वह अपने ही भराये कारगर और पर आन्दोलन कर सके। इसलिए देश में जितनी समस्याएँ हैं उन्हें मितकर ही आन्दोलन करना चाहिए। हम लोगों ने इस बारे में अभी को पत्र लिखा है। एक पत्र महानुभूति और महायत्ना के लिए श्री नहक जी को भी लिख भेजा है। आप ही के यरोसे पत्र भेजा जा रहा है। यदि आप वह समझ कि उसके द्वारा श्री नहक जी के पास कुछ काम बन सकेगा तभी आप उसे उनके वहाँ जब दें।

हम को भारतीय समाजवादी पार्टी के बारे में बहुत कुछ जानना था किन्तु स्वातन्त्र्य की वजह से ऐसा नहीं कर सके। और बोझ ही निरंतर सतोंप कर गये हैं।

हम पन्द्रहतापूर्वक आज से सब से पहले यह पुष्टता चाहते हैं कि भारतीय समाजवादी पार्टी की अच्छी प्रति हतो नहीं दिखाई दे रही है। इसका क्या कारण है? आपका हम जासिकारी समाजवादी दल है। हमारी समझ में समाजवादी विद्यालय बालों के लिए वैधानिक दल से आने बड़े आज पर एक दिन बहुमत का समर्थन प्राप्त हो जाय तो उस वक्त भी क्या हमें यह आशा नहीं बनी रहेगी कि भारत में भी जर्मनी और इंग्लैंड की तरह पूँजीपतियों के प्रत्याक्षमकारी कामिन्स दल बना होगा और वह हमें हर तरह से बलात् की कामिन्स करेगा? जब हम जर्मनी के लिए हर हाल में तैयार रहना पड़ना था अभी से हाँ क्यों से जासिकारी उठाया जा करताया जाय? पाल्मु कामिन्सारी कार्यों में भारतीय समाजवादी पार्टी इनकी कार्यशैली नहीं दिखाई दे रही है फिर हम जल के अन्दर रहने बालों को तो पाल्मु भी बँग हो सकता है। आ हाँ इस अर्थ में यह कहना चाहते हैं कि अभी भारतीय समाजवादी पार्टी में जिनकी कार्यशैली दिखाई दे रही है वह जनमानस स्थिति के लिए पर्याप्त नहीं।

हमें मान्य है कि कम्युनिस्मों के प्रति आप लोगों का विरोध-भाव है। हाँ सचता है बिमिश देता के कम्युनिस्ट दल साक्षिपट कम की ही प्रापेकडा के प्येकडस हों और यह भी हो सकता है कि वे कम की डिक्टेटरियस ही माने मगार में फैलना चाहते हो। यदि बात ऐसा है तो हम भी उनके प्रति सफरल है। परन्तु इसकी वजह हमारे सामने आ हमारी एक समस्या नहीं हो जाती है वह बहुत बिचारणीय है। वह समस्या यह है कि देश के अन्दर उनकी बढती को कैसे रोकना जाय। कम्युनिज्म एक बहुत शक्तिशाली मुकमेक है। जासिक समाजता के बिरोधा पूँजीपतियों की बढती और उनके पुष्टपोरक पुरानी पायिक संप्रदायों का बुझाणी की प्रतिविम में पर्याप्त रूप से कामशीलता और प्रभाव यदि कामाजिबों के कोई दल प्रदर्शन कर सकता है तो वह कम्युनिस्ट दल है। इसमें कपल बिरोधियों के प्रति शैला ही बढती और नियमना है जैसा कि पूँजीपतियों और उनके पाल्पाकड से होता है। पुरानी स्थिति में पीड़ित जनता का यह न बचक नहीं जासिक प्रणाली ही प्रदान करती है बरन् नयी सञ्जक के रूप में गुलि भा। यह नयी सामाजिक और सायिक प्रणाली का बाना ही नहीं हमने जलवा एक सञ्जक की है। इसके बापतराओं में अवश्य उम्माह और कार्यशीलता है। यह समझना निगी भूक है कि कबल कम के वैसे और सञ्जकजलना से ही समार में कम्युनिज्म फैल रहा है।

जासिक समाजता की तरफ समार की सारी तरीक जनता की प्रकृति हो रही है उनका अन्तर्राष्ट्रीय रूप देख आस बढातबाला कम्युनिज्म ही है। भारत में अभी कम्युनिज्म जनता आस नहीं पकड़ सकता। पूँजीय देशों में यह किस तरह फैल रहा है उस आस देख ही रहे हैं। यदि आज भारत में हमारी बढती को रोकना चाहते हैं तो भारत की

उमा गच्छ की कार्यशीलता और मजहबी ढीर पर कट्टरता दिखाती होती पूजोपास के विरुद्ध अपन अनुयायियों का बिहार के लिए प्रोत्साहित करना होगा और उनके हाथों से देश के धामन को बागडोर छीनकर बहुत जल्दी कम्युनिस्टों की बगलगी का या उनसे भी जल्दी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था अपन देश में लागू कर देनी होगी उनी आप कम्युनिस्टों के बहते हुए प्रभाव को रोक सकेंगे ।

हम आपको कठिनाइयों का कुछ-कुछ विश्लेषण हो रहा है । इन कठिनाइयों से पार होने के लिए सुदृढ़ मोर्चे की बहुत बड़ी आवश्यकता है । इसके लिए हम आप से यह कहते हैं कि यदि आप हमारे आन्दोलन को प्रोत्साहित कर कामयाब बना सकें तो आपके लिए वह सुदृढ़ मोर्चा हमारा देश बना और इसी के जरिये भारत में भी अपने सिद्धान्त के प्रचार के लिए आप बहुत ज़ारों से काम कर सकते हैं ।

हमें अभी एक बात का भय हो रहा है भारत में अभी गृहयुद्ध की और उनके सुदृढ़ ही नगीबों के लिए हृदय में स्थान रखन वाले व्यक्तियों के हाथों में सरकार है इस वक्त हम यहां कुछ कर सकते हैं हमारे कामों में बाधा देन काफ़ी कोई नहीं होगा । किन्तु यदि वह मौका योद्दा ख़ुश गवा और भारत के धामन को बागडोर कहीं पूंजीपतियों के मुछामों के हाथों में चला गयी तो वक्त वक्त हम लोग समाजवाद के तत्त्वज्ञक यहां कुछ भी नहीं कर सकेंगे । इसलिए हम चाहते हैं कि अभी जल्दी ही यहां परिवर्तन न हो । इसके लिए आप लोग हमें अपनी पूरी शक्ति समाकर मदद करें ।

हम लोग बाहरी सघार से बिगुल हो बन्द हाथों व बहुत दिनों से जेल में हैं । हम बबइ से हमारे उपर्युक्त बिचारों में दोष भी हो सकते हैं । आप में हमारा निवेदन है कि उन दोषों का आप हमें दिखायें और कौन रास्ता बाधा ठीक है इस बारे में भी अपनी राय हमें पत्र डाक प्रदान करें । पत्र में बहुतोरी त्रुटियां हो गई हैं—बना करें कायम और समय की कमी से लाचार है । अन्त में सब त्रुटियों के लिए समा प्रार्थना करते हुए हम आप से बिदा होते हैं । वस्तु !

भवदीय

टंक प्रसाद आचार्य आशि आशि  
काठमाण्डू जल काफ़ीठरी ।

कालकोठी (काठमाण्डू बस)

२५ मार्च, २००६

श्री बिस्नेखर प्रसाद कोइराठा

बपानी राष्ट्रीय काँग्रेस

धिय लापी

आपके कार्यों न हम को इतनी खुम्हता दी है कि उनका बचन ही नहीं कर सकते । यहाँ सरकार के द्वारा राजनीतियों के प्रति किये गये आयाचारों के आत होते हुए भी आप ने आफर 'सरकार राजनीतियों के प्रति मतोपबन्धन काय रखती है' बन्धन्य वेमों का कैसे साहस किया ? पुन 'सरकार कुछ मुखार करन के लिए प्रयत्नशील है' इत्यादि कैसे कह सके ? आपकी यह कैसे नीति है ? कुछ समय में ही नहीं जाता । कारणान्त की कठिन यातनाओं में मस्त होकर बाहर जपन में पहुचने के बाद आप न अपनी इज्जत बचान के लिए ही तो ऐसा नहीं किया ? सरकार द्वारा किये गये आयाचारों का बर्नन करना तो अलग रहा उम्ह आप सरकार का ही गुणगान करने लग गये ।

आपके ठार काग मन बर्ष में ही अनेक धकाओं की बृष्टि में टैलन लग गये न । परन्तु हम लोगो न अपने हृदय में उनका तनिक भी स्थान ही नहीं दिया । अन्त में आपके कार्यों को देखकर हमारे मन में अत्यन्त चोट पड़ी । आपके उपर्युक्त काय के बारे में हम ने बाबू जयप्रकाश नारायण का भी लिय मन्ना है । इसके लिए आप को कुछ समझने हो मुने तो आप बहुत बड़े धीतिकबारी मान्य पड़ते है जितने सरयामस्य का तनिक भी ध्यान न रख कर तिस प्रकार भी हो अपना उम्ह सीखा करना चाहते है । किन्तु हम प्रकार आप नहीं के न रहें । नीतिकबारी बृष्टिकाय के भी अपनी नीति की गता तथा पापन करना अत्यन्त आचर्यक होता है । अनन्य प्रारम्भ करके आप ने मरपोप तथा महानुभूति के लिए यहां लिय मन्ना । जाड मारमी यहां भी अनन्य करन मन । राजाओं द्वारा अपने का मुख होकर आपन 'बटना पतुचन ही अब अनन्य' नामु चिय रहन का कोई आचार ही नहीं रहा' ऐसा बन्धन्य दे मार । आपन अनन्यकारी मायियों का कुछ भा ध्यान न रखना यह कैसे भी सायकी है ? क्या इन अनन्यकारियों को आपने अपने हाथ का पितीना समझ लिया ? सरकार ने तो अत्यन्त नीतियों में से एक भी गुरी नहीं दी थी । राजनीति मूठ-मूठ का व्यवहारकार नहीं है । इतना ध्यान आप अच्छी तरह कर लीजिए । वहाँ जाकर आप नीतिर बिजय का बोना ब्रजाने लगे । वहाँ सरकार आपके अनुपायियों से कायन्तामा कायन लियका रही है । यह चिय प्रसार को नीतिक बिजय है ?

आपका दाग की गई अनन्य बृष्टियों का बयान बर्न किया जाय ? बृष्टि ना प्रत्यक स्थिति द्वारा हापी है छिर हम काय काते है केवल आप ही ने बृष्टि हुई है ह्याग बटना यह नहीं है । अनिग्रानपुन तथा बर्दि की अरतिरकनाचन बृष्टि हाने में अधिक अन्तर है यह ज्ञान के लिए बं बाध्य है । बृष्टि की अरतिरकनाचन बृष्टि करने नाम अन्ति की



अपनी गलती को स्वीकार करना ही पड़ा। अथवा यह भी उल्टा ही बातक सिद्ध होगा जिनका अभिप्रायसुक्त बुद्धि-कार्य । हमारे कला लोग तो अपनी गलती स्वीकार ही नहीं करते हैं ऐसा सुनने में आता है । “हम जनता की आँखों में बड़े हुए सम्प्रदायि नेताओं को अपनी गलती स्वीकार कराना उचित नहीं” ऐसा कहते हैं । उपर्युक्त बचनों से आपको कोय आभा स्वामाधिक ही है परन्तु राष्ट्रीय कार्य में हाथ डालने से अपने कामगमों की जबाबदेही देनी ही होगी । आपस में हम कठोर मन्त्रों का प्रयोग करना नहीं चाहते । किन्तु इच्छा की कि ये ट होयों हम आपस में बाटे करेंगे किन्तु अनेक कारणवश हमारा हृदय पथक हो रहा है इससे हम को अछूतोंम है ।

अन्त में हम आप से यह कहेंगे कि जब भी ठीक रास्ता पकड़कर संयुक्त मोर्चा बनाने के लिए एक बार फिर प्रयास कीजिए और मानसिक हक प्राप्त करने के निमित्त आन्दोलन करें । हम ने इस सम्बन्ध में श्री रेग्मी जी श्री महेन्द्र विक्रम जी श्री पोषाल जी श्यामि का भी लिखा है । सब को एक में मिलाने का प्रयास करके अपने हाथ में सौजिए और आन्दोलन आरम्भ कीजिए । महापद्म साहूब कोर्गों की उदारता को आस्था लगाये रखने पात्र ने हमारा काम नहीं छोड़ा । विपरीत स्वार्थ वाले एक दूसरे की उदारता में कब तक आधा लगाये रहेंगे—यह बात तो आप जैसे बुद्धिमत्त लोगों के विचार में आनी ही चाहिए ।

आपका

डॉ. प्रताप शर्मा शर्मा

भारत में विस्मयी रमण रेग्मी और बिबेकचर प्रसाद कोइराला को आपस में लड़ते हुए देखकर जनरल हिरण्य समशेर तथा जनरल महावीर समशेर को विचय पिला हुई । जनरल हिरण्य समशेर तथा जनरल महावीर समशेर के सम्पर्क भारतीय नेताओं और मजिदों से भी य इसलिये उम्हल उठनी प्रथा से विस्मयी रमण रेग्मी तथा बिबेकचर प्रसाद कोइराला में मेक कठान का प्रभाव किया । इस कार्य में जनरल हिरण्य समशेर के पुत्र जनरल सुबर्ण समशेर ने विशेष परिश्रम किया किन्तु तब भी दोनों व्यक्तियों में समझौता नहीं हो सका । फलतः जनरल महावीर समशेर, सुबर्ण समशेर महेन्द्र विक्रम शाह ने जनस्तम्भ १९४८ ई० में नपाथ प्रजापथ कायेम की स्थापना कम्बलते में की । इसमें कई दिनों में मर्यादाह उठकर सफलता भी प्राप्त की । नेपाल प्रजापथ कायम ने विस्मयी रमण रेग्मी तथा बिबेकचर प्रसाद कोइराला ने सहयोग करने की स्वीकृति की । नपाथ प्रजापथ कायम गांधीवादी तरीके अपनाकर देश में प्रजापथ शासन की हिमायती थी और थोड़े ही काम में उसे नपाथी और भारतीय जनता का समर्थन भी प्राप्त होना लगा था कि भी यम तथा ग्यारह अक्टूबर १९४९ ई० को नपाथ प्रजापथ कायम तथा नपाथी राष्ट्रीय कायम के कोइराला तथा नपाथ संयुक्त अधिवेशन सम्बन्धता के लक्षण मिनमा हाँक में हुआ ।

अधिवेशन में दोनों दल मिलकर नपाया कायम में परिणत हो गए और जिसके मातृका प्रसाद कोइराणा अध्यक्ष तथा महेंद्र बिजम शाह महामन्त्री निर्वाचित किये गए। सण्ड के प्रश्न का लकर प्रतिनिधियों ने बीच ठोस बाद-बिबाद हुए और जिसके अध्यक्षता वाला दल मन्त्री मन्त्री के बाहर निष्पत्ति का उद्योग हुआ। तराई के प्रतिनिधियों ने अध्यक्षता का काम किया और नपाय प्रजापंथ का चार ताग वाला झण्डा नपायो कायम का झण्डा स्वीकार कर लिया गया। दूसरे दिन हम सत्र मन् १९४० ई का नपाय में आयोजन करने तथा राणा सरकार में किया या परिस्थिति में मयमौला में करने के प्रस्ताव स्वीकृत किये गए।

इसके पदचान् २६ तथा २७ सितम्बर मन् १९५० ई० को बैरगनिया कार्यक्रम हुई जिसमें नपाय कायम की काय-मिति मन्त्री मन्त्री कायम के अध्यक्ष मातृका प्रसाद कोइराणा को सर्वोच्चकार दिए गये। इस प्रकार के प्रस्ताव का विशेष आकर्षण बुद्धर इन्द्रमिह तथा महेंद्र बिजम शाह ने बारबार दावा में किये किन्तु वह प्रस्ताव पास कर ही लिया गया।

## सशस्त्र क्रान्ति

नेपाली जनता एकताभी शासन-प्रवृत्ति में तंग थी। वह सुर्मण्डित न होने पर भी हुसमी हुकूमत को समाप्त करके अपने पैरों पर खड़ी होन की चप्टा करती रही। हुसरी और घाही परिवार भी निरंकुश घामका के फेंकों से स्वर्णन होना चाहता था। बिस्म का इतिहास तो यही सिद्ध करता है कि जमता अपने हितवाएक सामन न होने पर प्रायः राजाओं के विरोध में आवाज उठाती आई है परन्तु नेपाल-नरेश न एक क्रान्तिकारी कदम बढ़ाकर जनसाधना का बीर प्रोत्साहित कर दिया। महाराजाधिराज त्रिभुवन बीर बिस्म साहसेव भी अपने पूर्वजों की भाँति निरंकुश घामन में तंग था तब से बीर वह उस सत्ता की उखाड़ फेंकन के लिए महत्वा क्रान्ति के अपद्रुत बन गये। राधा शासकों ने समझा था कि वे दुनिया की बाँलों में बल झोंककर शाही परिवार को अपनी कठुलसी बनाए रहें और नेपाल की भोली-भासी जनता पर दमन-बक चलाते रहें किन्तु नरेश ने बिस्म कुर्रहमिना एव दृढ़ता-पुनक कदम बढ़ाया वह इतिहास के पन्नों में स्वर्ण-मकरा में लिखा जाएगा। नेपाल को फीफावी पंजों में मुक्त करने के लिए मारन में राजनैतिक दम उत्पन्न होकर अह्म एक ओर बनारस पटना और कलकत्ता में अपने-अपने काम कर रहे थे वहा हुसरी और नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में भी जीवन-मरण काटावान की मजा पाए हुए नेपाल प्रजा परिषद् की प्रेरणा से काठमाण्डू का नवपुनक वर्ग प्रबुद्ध था कि इसी बीच अग्रेल मन् १९५० ई. को नवजन्ता अधिवेशन न मधामी कावेम को जन्म दिया और यह प्रस्ताव पास किया कि नेपाल में आन्त्यात्म छेड़ दिया जाय।

आन्दोलन की पृष्ठभूमि काठमाण्डू में भी बहुत पड़क में तैयार थी किन्तु उसको व्यापक रूप देने में परिस्थिति बाधक थी।

२४ मितम्बर, मन् १९५० ई० का राजा मरकार न दिप्पमानमिह, पञ्चमामानमिह, मुम्बरराज बाकिसे सुनीला नारय घमशेर आदि ध्यक्षितवा को बन्दी बना लिया और उन पर ये झूठे आरोप लगाकर घानदण्ड से देना आहा कि वे सब प्रघान मंत्री आदि की हत्या का पड़पत्र रख रहे थे। इन प्रम्नाव पर महाराजाधिराज ने काफ मोहर करन से नाफ इनकार कर दिया। तब इस पर घामको क होंग दुबाय उठ गय और उन्होंने अटपहरियों का भी यह आदेय से दिया कि बिना मरजाटी आजा लिय नरेश को बहुत क बाहर मत जान दो। प्रघान मंत्री मोहन घमसर आदि नरेश त्रिभुवन तथा उनके तीनों बालिन पुत्रों को नारन्या मेरकरदुवराजाधिराज न पंचवर्षीय गण्ट पुन बीरेम बीरबिस्म साह को यही पर बैठाना चाहने थे। प्रघान मंत्री न माथा था कि गिन महाराजाधिराज के नाम पर वह सब प्रचार

को समझानी निबिम्बकप से करते रहेंगे और वह दुनिया को यह साबित भी कर देगा कि नरेस तथा उनके तीनों पुत्र सामान्य-कार्य से बैराग्य लेकर नेपाल की प्राचीनतम राजधानी गोरखा में सामान्य हैं। महाराज बाहुन रामेश्वर की इस बात का शाही परिवार भांप गया और उसने बलपूर्वक ६ नवम्बर सन् १९५० को सिकार बाल के बहाने महाराज भारतीय वृत्तावास में धरल से लो। इस आकस्मिक बलना में भारी मोर लसबली मध गई। मोहन रामेश्वर ने किसी प्रकार शाही परिवार को मनाकर राजमन्त्र में बापिस बुला लेने की ठानी किन्तु उन्हें इस कार्य में प्रबल सफलता नहीं मिली ना वह सुरल ही ब्रिटिश वृत्तावास की मोर दीड़े। ब्रिटिश हुकूमत उस शासन का पोषण करती रही और भारत को अपना मुसाम बना लेने के पदचान भी उमन नपास को पदचान बना लेने की अवेना उमके साथ मंत्री नाम ही बनाए रागता धयस्कर समझा था। उमके समन भाग्यीय जल-जान्दासम जहां एक जोर बाधक रही वहां दूसरी और अंग्रेजी हुकूमत के स्वायं उमके नपासी गुपी द्वारा जिस हृद तक पूरे हुने संभव थे व पराधीन अमबा भारत में विनीत नपास द्वारा कर्नापि नहीं।

प्रधान मंत्री महाराज बाहुन रामेश्वर ने सारी बलना ब्रिटिश राजदूत जॉर्ज फॉर्नर के समन प्रकट की। कहा जाता है कि कतिपय राजाशासकों की योजना भारतीय वृत्तावास पर हमला करके नरेस का बापिस कामे की थी। कलम फॉर्नर ने इस रास्त को बलन बलना करके संसदीय तरीके से नरेस को पदचान कर देने की राय दी। पदचान प्रचलनमंत्री बाहुन रामेश्वर ने तथाकथित भारतीय नपा द्वारा बर्बरली एक प्रस्ताव पाम कराकर महाराजविशाल निमुषन को पदचान करके उमके ही तीन कार्यो पीन जानेन को मिहामन पर बैठा दिया। इसके बाद ही तामु महाराजविशाल के नाम पर मुद्रा भी बलना दिया गया।

मिहामु ज्ञानेश्वर का पदचानोहक समारोह हुकूमत डाका में इच्छीम तारी की मकानी के माध गमपन हुआ। लोगों की आवाजे काफ़ोठरी तक पहुंची और जेत के मीतचों में बल राजबन्धियों को भी नम बरिचनेन का समारोह दिया। दूसरी मोर भारत में नेपाली बन्धन अमनर की प्रतीक्षा में थी ही और इनकलाब की ५ मरकार जिम्बाबाद, राजा-शाही मुन्निार बादि के भारों से गुरु हा गया। बालि का बिमुन मुने ही आजाद हिन्द फौज में पिछा पाव हुए नेपाली सैनिक भी अपनी मानुमुमि को आजाद करने के लिए स्वधीनता-संग्राम में बूध गई। कलाक की बहानुर जनता एबबारसी उठ गही हुई और गहन गुलाबी तथा पर्वत शम्बरों में भी बीपन बिरोह की आला प्रज्जमिन हा गई। पवित्री नपास के बिरोही लखों ने एक धनित्राव पर अपने रक्त में अंगुटे का निमान समबाकर राजाशाही को बिना बफ़नाए बेंन व लने की राय भी और अपने प्राणों की बाजी लगाकर स्वाधीनता-संग्राम में भाग लिया। पूर्वी नपास के लामों मिम्बू किछनों ने भी जान मर पर कटन बाप कर मरकार के निमाक समारोह कर दी। लखों की जनता तथा मिम्बू किछनों ने बालि के प्रबल बलना में अपनी रपदुलना तथा लाहन का बपूर्व परिचय दिया। बलिना के

विष्णुभक्त महात्मा गौतम बुद्ध ने यद्यपि बिम्ब को बहिष्ता का ही पाठ पढ़ाया था किन्तु लम्बिनी बुद्धजन्मी तथा कपिलवस्तु क्षेत्र में ८ नवम्बर को जूनी जन्ति के लिए बातों ने जो बिराट रूप धारण किया वह कभी भी विस्मृत नहीं किया जा सकता।

उसने सामन्तों तथा पुत्रिष्ठ से बन्धुके लेकर भारतस्वित येन्नाम पाने वाले नेपाली सैनिकों द्वारा पुत्रिष्ठ चौकियों पर कब्जा करना प्रारम्भ कर दिया। इसके दूधरे ही दिन बीपावली की रात्रि में जब कि सभी सरकारी सैनिक तथा कर्मचारी जूबा-सराब में जकमस्त थे कि नेपाली कांग्रेस के छात्रमार्गों ने बीरलंज पर बचावक कब्जा करके सरकारी कोष



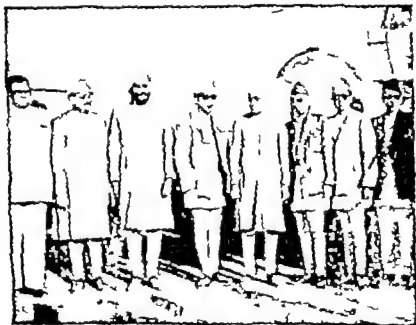
नेपाली कांग्रेस के बिजोही नेता दिप्ती-हुर्बाई बड़े पर

(बाएँ से दाएँ) कमल सुब्बा घमटौर, दिव्यलक्ष्मी कोइराला मल्लिका प्रसाद कोइराला विन्सेन्टर प्रसाद कोइराला तथा नुर्मे प्रसाद उपाम्याय

और राखवावर पर पूर्ण आधिपत्य प्राप्त कर लिया। उस समय बीरलंज के सरकारी कोष में लगभग पचासहज़ार रुपय तथा मोन चारी के कुछ छह आठ आठ बी बी और बिल्ली बम्बरबाट बिजोहिया के कुछ उल्ह मंठाओं के बीज हुई। इसमें से वेनीम लाभ रुपये तो भारत सरकार न दिप्ती-हुर्बाई बड़े पर ही छीनकर अपनी हिरामल मल्ल लिया। बीरलंज के पतन से राधा सरकार बर्ग उठी। राजधानी की हालत बहुत बीजक देखकर १२ नवम्बर को भारत सरकार न हो बाबुबाल बजकर महापञ्चाधिराज किन्तुबन बीर बिजम भाइ को उपरिचार गई दिप्ती बुला लिया और ईदराबाद भवन में ठहराकर अपना बलिबि बना

मिठा। बीरगंज में मुस्लिम नेता और राजा कीज में बसामाम लड़ाई हुई। दोनों पक्ष के जनकों व्यक्ति बामी के मिठार हुए जिनमें बिड़ोही नेता पिरबन मम्म का नाम स्मरणीय है।

नेपाली बाँधम पश्चिमी नेपाल का कोई उचित प्रबंध नहीं कर सकी। पर भीतमबा में महुल में डाक्टर कुँवर इन्द्रमिह तथा इस पुस्तक के लेखक उनके साथी बहुत पहले से गंगागाढ़ी के निवास बिड़ाह की तयारी कर रहे थे और नेपाली कारण को बता एक मजबूत गाना भी। पश्चिमी नेपाल के छोटी के निवास डाक्टर के आई मिह कई सालों



पतासापिराम का विस्ती-आगमन

में भीतमबा में बिबिस्ता करने से। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में भी उन्होंने भाग लिया था और अभी में उनका लम्बे भारतीय नेता प्राकपुर गिरधरनाथ मन्नेता म हु। गया था। जब प्रोक्टर मन्नेता गोरखपुर जिला कायम बमेटी के अध्यक्ष थे तब डाक्टर मिह भीतमबा मन्नेता बाँधम बमेटी के अध्यक्ष थे। उस समय कायम की ओर में गिरधरनाथ मन्नेता म कुँवर इन्द्र मिह की भीतमबा गाउन गरिया के मन्नेता के लिए बनाए से महुल किया था और उनकी पालनहार बिबिस्ता हुई थी। जिन समय नेपाल में मन्नेता जानि हुई था बाँधम के प्रमुख कायबर्ती से।

नेपाल के आगत बने आग पर डाक्टर के आई मिह तथा मन्नेता म मन्नेता भीतमबा पर बरखा बने गंगागाढ़ी का लम्ब करने की योजना बनाई। नेपाली क बमेता म महुल

विक्रम शाह को पश्चिमी नेपाल के आन्दोलन का संभालना करने का भार सीपा। उन्होंने भैरहवा पर कब्जा करने की योजना का समर्थन किया। इस बीच गोपाल समशेर ने बड़ी पहुँचकर अपने आपको नेपाली कांग्रेस की ओर से पश्चिमी नेपाल का सेनापति प्रसिद्ध किया। वास्तव में उनका नाम आन्दोलन को सहयोग देना नहीं बल्कि अपने स्वार्थ सिद्ध करना था। असमियत का पता लगाने पर डाक्टर के आई सिंह ने उनका प्रयास रोक दिया और गोपाल समशेर को बड़ी से बापना पड़ा।

डाक्टर कुँवर इन्द्रसिंह तथा कर्नल सख्तमनहादुर सिंह पूर्व में अपने प्राचीन की हथेली पर लेकर भैरहवा पर आक्रमण किया। बड़े हाकिम भीरब्रज राणा आभिसमर्पण करना चाहते थे किन्तु गोपाल समशेर ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। इससे भीरब्रज राणा की हिम्मत बड़ी और वह बिद्रोही सेना से मुकाबिला करने पर उताव हो गये। प्रथम दिन के संघर्ष में सरकारी सेना के दो सैनिक काम आए और तीन बायल हुए। बिद्रोही सेना का एक सिपाही महीब तथा बनेको बायल हो गये। इसी दिन मोरंग जिले में जीतपुर नामक स्थान पर किसानों ने अपनी पंचायत खड़ी कर ली।

सिन्धुबल और नास किरात में शक्ति की लक्ष्मी सबसे बहुत देर से पहुँचती रही तथापि जनता कटिबद्ध होकर सरकार के विरुद्ध कूटती रही। पीप दश मते की तरह नुम आदि पर बिद्रोहियों ने कब्जा किया। भोजपुर में सरकारी सेना और अधिकारियों में बमामान लड़ाई हुई जिसमें इन्द्र बहादुर नेमबाद, रामसेन राई आदि बहादुर, बक बहादुर, दल खेरराई, नर बहादुर राई, बल बहादुर राई, पद्मवीर राई, राम सिंह राई तथा बिम बीर राई आदि घाईब हुए। बन्हीपुर के मोर्चे पर उत्तर कुमार खेड, सप्त बहादुर राणा आदि बहादुर सार्की मनेराय खेड, रत्न बहादुर तथा बर्मन्धन नुवेग आदि घाईब हुए।

भीरब्रज में मुक्ति सेना के पैर पेशाओं की ज़बूरबसिता से कड़बड़ाने लगे और इसका पूर्वाभास तो १६ नवम्बर को परचालीपुर ही में मिल गया जबकि राणा सरकार की सेना ने मुक्ति सेना को पीछे हटा दिया।

१७ नवम्बर को रनेसी पर कब्जा करके हरेवा पर हमला हुआ। बार हवार काम कमाण्डरो ने अपनी पसल सजाकर म्युविहवा की बीच फँकरी को अपनी फौजी छावनी बनाकर भैरहवा पर तीन तरफ से घेरा बोल दिया। उपर्युक्त स्थानों पर राणा सरकार के सैनिक लगे हुए तमक को बहा करते हुए बड़ी ही मुन्दी के साथ बिद्रोही सेना का मुकाबिला कर रहे थे। जनसेना ने १८ नवम्बर को दक्षिण तथा पूर्व की ओर से भैरहवा पर पुन आक्रमण किया। इसमें सरकारी सैनिक ही बुरी तरह हताहत हुए। बिद्रोही किसानों ने इस दिन महाजनी सीता की जयन्ती मनकपुर पर भी आक्रमण किया।

बिद्रोहियों के कतिपय अवसरवादी नेता अपनी पूरी शक्ति शक्ति में न लगाकर सरकारी कोष बचवा सामर्थ्य को नष्ट करने में व्यस्त थे और राणा पीढ़ के साथ सामना होने पर मोरंग-पाके किसानों को बुझाने की गीतियों के सामने सौंफकर स्वयं पीछे हट जाते

ने। रौतहट की जनता ने गौर पर हमला किया किन्तु १८ नवम्बर को भीर में रति संन्यासी विषयमात्र सिंह तथा मन्मू नाह के साथ बीसों बिद्रोही किन्नाम गद्दीय हुए तथा सैकड़ों बायल हो गए। इनके परवान् आबामौज साया और गौरी गंज पर चारों तरफ से हमला हुआ। नेपाली काग्रम क मता बीरगंज के सजाने को पाकर जबकि अपने मन की सुराहें पूरी करने में मस्त थे कि राजा सरकार के सैनिकों ने बीरगंज पर पुन अधिकार बना लिया। इस सफल में तेज बहादुर, प्रेम बहादुर, पद्म जग तथा हारिका प्रसाद आदि बीसों बिद्रोही गद्दीय तथा सैकड़ों बायल हो गये। इनके अतिरिक्त लगभग सौ बिद्रोही बन्दी बना लिये गए।

उदयपुर नदी १८ तथा २२ नवम्बर के बीच बिद्रोहियों के मानहृत हो गया और भैरुवा के सरकारी सैनिकों ने बिद्रोहियों की पौड़ी छावनी पर हमला किया किन्तु उनको ही अपने चार सैनिकों में ह्रास होता पड़ा। शान्तिकारी तरह बिजयोस्मास में जाग बहने किन्तु राजा सरकार के समानालार बिद्रोही सरकार बनान को हिम्मत बहुत ही कम नेताओं में हुई। मच बात तो यह थी कि बीरगंज के पत्तन के परवान् जनता का नेपाली कांग्रेस में विश्वास नहीं रह गया और वह अवसरवादियों ने अपना पिछ छुड़ाकर बिद्रोह राष्ट्रवादी तरकों की अभीक्षा करने लगी।

पश्चिमी नेपाल की जनता का उल्लाह व्यापक हो गया था और जातों की जनता जनवादी सरकार स्थापित करने के लिए कटिबद्ध थी। पुरुषों की भारी देना के साथ औरतों की भी एक पन्थन कीपति मित्र तथा समुदा देवी के मूल्य में लड़ी हो चुकी थी। समय आ गया था कि पश्चिमी नेपाल के बिद्रोही मता एक बिद्रोही सरकार की घोषणा करने। शान्ति को व्यापक और सफल बनाने के लिए भी एक ऐसी शान्तिकारी सरकार की अपेक्षा हुई। २१ नवम्बर, मन् १९५० ई० को विभिन्न जिलों के पांच भी प्रतिनिधियों ने बीसों हजार जनता की एक भारी समा में डाकटर के आई सिंह का पश्चिमी नेपाल का मिमिगरी बर्नर लेखन का प्रमाण पत्री तथा बर्नर बर्नर बहादुर सिंह यु ग को प्रमाण देनापति चुना। बाद में लोक बहादुर राजा एडवुन्ट जनरल होकर आने इन्चार्ज प्रति विधाय तथा हर्ष बहादुर मरिचक इन कमाण्ड नियुक्त हुए।

शान्तिकारी सरकार का चुनाव मिम्वन नाम मन्मेना की उपस्थिति में उनके परामर्श में हुआ था।

चुनाव समाप्त होने के बाद जब मिम्वन नाम मन्मेना अपने माधियों के साथ जीवनता आ रहे थे उन्ही समय राजा पौड की माधियों बरमने लगी। मन्मेना के साथ उनके साथी मदन पाण्डेन रामानुज पाण्डेय बरमिह कृपादयाल मिश्रा तथा नेपाली कांग्रेस के बर्नर बायकर्ता कृष्णदास मदन भी थे। माधियों की बीछारें उनकी बीछर पर होती रही और वे टुक की बीबास में टकराकर रहती रही। राष्ट्रपति की एक गोष्ठी डाइवर के पंद पर ने पार बरके मन्मेना के टिप्पणी की इन्ही गोष्ठी हुई बाहर



महारे ही कुछ दिनों तक बटी रहेगी किन्तु हवाई मड्ड पर जाम हुए प्रदर्शनकारियों को  
खिचर-बिचर करने और बहुत से युवकों को बन्दी बनाए के बादगढ़ भी जममल ने अपना

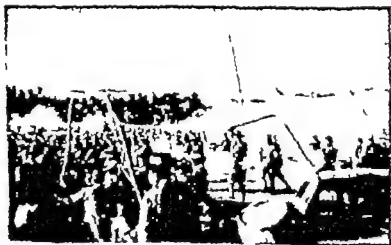


गोर्खा विद्रोहकाल पर ब्रिटिश कदमीमित्र

बहादा हुआ मरन पीछे नहीं हटाया तब यह युद्ध के बल मिर पड़ी ।

एक दिमम्बर को घरायी बमोली तीन दिमम्बर का भजनी और बर्बाबा चार दिमम्बर को जुम्मा बोबनिया तथा सतिवा पुलिस बागों पर बिहोही क्रिमानों न अधिकार कर लिया। दिमम्बर का दाबोलीन के पास पम्पति नगर में बमामान सड़ाई हुई।

६ दिमम्बर को नरायनपुर और भगवानपुर, ७ दिमम्बर को नरायनपुर तथा परासी को बमता ने अपन अधिकार में कर लिया। सत्ता बमामानो बिरटा तोकला नकासबवा तथा बोलाबाटी पर आठ दिमम्बर को एवं दिमम्बर के मध्य तक मासावत धनगड़ी डडक-मुछ बेंठड़ी और डागी मी बमता के अधिकार में हो गया। धनगड़ी में बड़ा हाकिम महिकर देव मारा गया। दूसरी टकड़ी मुरबेत तथा बैमन की और बड़ गई। इन्ही हिली कोपी धेब में भी कुपित गया तथा राधा फीज में संघर्ष होने रहे। तराई तथा पहाड़ में आन्दोलन की सफ़लता देखकर काठमाण्डू का विद्यार्थी समाज प्रबुद्ध हो गया और १३ दिमम्बर को विषम्य कामेज के विद्यार्थियों न हड़ताल की और सरकार के विरुद्ध विरुद्ध जुलूम निकालकर



प्रदानकारियों पर लाठी-प्रहार

मातहत प्रहसन किया। विद्यार्थियों को शान्त करने के लिए सरकारी मैजिस्ट्रेट न मिहाय छात्रा पर लाठिया बरपाई जिससे दोनों छात्र घायल हुए।

१ दिमम्बर का भारतीय संसद न भारत की अद्वैतिक मोलि पर बहस की। परराष्ट्र मंत्री की हूँमियन ने भारत न प्रदान मंत्री वॉलिन अवाहरमान नेहू न चाणसा को हि नयान का अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध ब्रिटिश सरकार न समय में बेचल भारत ही तक मामिल या बिम्बु अब भारत सरकार नयान का एक प्रानिनीय सकितावासी देन के रूप में हमना जानता है। अब भारत के प्रदान मंत्री न कहा कि बम्बुन हय नयान को एक स्वयं राष्ट्र मान्य है। यदि भारत के साथ उमर मांशुनिक एवं औपानिक सम्बन्ध बहुत ही पतिव ह। उनरी

महसूस पर नेपाल में आ बसानि लगी हुई है उसमें भारत को भी भागंदा है। जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि नेपाल में कोई सविधान ही नहीं है और मजदूरी को भी कोई आबाध नहीं है।

२ दिसम्बर को भारत के प्रधान मंत्री ने नेपाल के सम्बन्ध में फिर एक महत्वपूर्ण भाषण दिया। इस दिन आपन कहा कि भारत सरकार में बार-बार का लिए नेपाल सरकार से अपील की थी और इस लक्ष्य है जो महापद्म माहान नामधेय ने उसका स्थापित किया है। भारत नेपाल से वैधानिक परिवर्तन समायोज्य नाम चुनाव करा कर एक विधान परिषद की स्थापना एक अन्तरिम सरकार जिसके प्रधान मंत्री राजा परिवार के हो हों तथा जिसमें और विधायक शाह का ही तरह नाम लन के पक्ष में आ और जिसे नेपाल सरकार में सहमति स्वीकार कर लिया है।



राजधानी में जालि के समय महिलाओं का प्रदर्शन

इस दिनपाल में भी सभी बांधों पर लड़ाई होती रही और देश में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए प्रयास होने लगे।

इसकेबाध की बांधी बुरी पहचानो तक पहुँची। उसमें किष्कुबास तथा माझ-किराला आदि का भी सम्मर्भाग। राई सिन्ध और किराली की किरायों में भी जालि में महिला नाम लिया। पूर्व राज-नीति सम्बन्ध के किसी अधिकारी में कतिपय महिलाओं के नाम उनके पिता की राजा और के सिवाग हुए। जिनमें गर्मबनी भोमनी नाम बहादुर नाम बहादुर, और बहादुर नामधेय जगन बहादुर नामधेय बम बहादुर रत्न बहादुर, नाम बहादुर, पूर्व बहादुर टीका जाल राई छाम बाग राई आदि सुप्रसिद्ध थे।

सिन्धबाध माझ-किराला व किर्ताहिरी का सम्पूर्ण राम प्रसार राई आदि ने किया।

माडपुर आदि करना कर लेन के बाद बिद्रोहियों की एक पौख बिराटनगर की ओर बढ़ी। इसी वक्त पर गणपती कायम न बिराटनगर के सरकारी भवन आदि पर हमला बाल दिया।

गणपती आदि न जानते हुए राणा मैमिका का बिद्रोही सरकार न गतिनी तन पर भर दिया। वाला पक्षा में डटकर लड़ाई हुई। राणा सरकार के दर्जनों सैनिक काम जाय और बीमा वापस हुए। इस मात्र न राणा पौख न बाल लट्टा हो गये और सरकारी भवन के आगे आर गहरी लाइवा लाइकर न अपन प्राणा की रक्षा करने रहे। इसी बीच उनका राशन बाहि भी कुछ घसा और न माकदार चिमला को जन्म मग। मामलपण्ड के सामन्ता न सरहसाम्बिन सैनिका का पर्याप्त वाक्य आदि दिया और यही कारण था जो उनके संकट पर वे बिम बिमो भी नाक पर लट पड़न।



बिद्रोह कालेज के सामन बिद्यापियों का प्रवेशन

बार्नि रिमम्बर का सख मगर और बहादुरपण पर करना हुआ जहां बिद्रोही सर दार का सम्मी-जख हजार गये हाथ लग। बिराटनगर में सगानार कई दिना तक सीपण नपरा डाला रहा। सरकारी भवन के आगे आर परा पडा रहा। संपर्क में बहा हाजिम का बग मारी का दारदर हो गया। इसक अनिरिक्त राणा पौख को यह बिदकाल हो गया था कि माडपुर और धनकुटा में बिद्रोहिया की बड़ी सेना बिराटनगर आ रही है। इसी वक्त न सरकारी सैनिकों न कायम-मपरास कर दिया। बिराटनगर में गणपती कायम को बासी रख और लड़ाई के माकाम की हाथ लग। बिराटनगर में टाकर कुलनीय हा के साथ इन बिद्रोही दारिण हुए और बराब जमाद का-दाला तय गवनर बनाय गये। इसक पञ्चानू भी भाग्य बिम में घरीना तब जगामा भवना रहा और सामन मृष्यबग्गिन न हो पान में भी

काफ़ी राष्ट्रीय क्षति हुई। भोजपुरी और बनारस पन्नीस बिसम्बर को बनारस के मातहत हो गया। बहुवेबमखी सिलगढी बैठड़ी तथा कोयलाबास में बिद्रोहियों को सरकारी कोयला तथा राखीपार हाब बना। बिद्रोही सेना का तत्काल भीमदल पल ने किया जो डा के बाई-सिंह से अपन सम्पर्क स्थापित करके समय-समय पर सहीने तक जन-सरकार बनात रहे।

राजधानी के मायरिको तथा छात्रों न भयंकर जुलूस निकालकर राजबन्धियों की पिछाई की मौन की। सरकारी सैनिकों न उन पर गोळियाँ बरसाई और सैनिकों प्रदर्शन काटी बायल हो पये।

बीबीस बिसम्बर को राजधानी के सत्तर कर्मचारियों ने त्यागपत्र दे दिया। इससे कर्मचारियों के वर्ग में सनसनी फैल गई, किन्तु उसका उपशमन सरकार न बिलम्ब ही कर किया।

इक्कीस और बट्टाईस बिसम्बर को बिद्रोही निवासी ने महोत्तरी जिला में बीराही मण्डरिया बिरसा तथा बीबेही पानों पर अपन झण्डे कहरा दिये। इस दिन कुशाघाट रानीलंज सलाई तथा बाजीलिंग के पास ठेरहमूम पर जाया हुआ। पड़ोसी जनबरी को कुशाघाट पर बसासान सड़ाई हुई। इस सड़ाई में सरकारी फौज का कप्तान बायल हुआ और जिसकी मृत्यु कहरिया सपाय बसपताल में हुई। इसके अतिरिक्त राजा सरकार के लगभग सिव्हात सैनिक मारे गये और 'केवल' जवान जन-सैनिकों द्वारा मिरपत्ता हुए। पिछली रिपोर्टों द्वारा मरे हुए सैनिकों की संख्या कुछ कम बताई गई।

जनबरी का प्रथम सप्ताह मैरुवा मोर्चे के इतिहास में महत्वपूर्ण रहा। राजा फौज के छत्रके बिद्रोही मना में लड़ते-लड़ते छूट पड़े थे और बहु गाय बेलों के मुण्ड आगे करके जनसेना को बगल-कट में डालने लगे। इसी प्रकार मुहम्मद गीरी आदि मुगल बाजमयकारियों न भारतीय सेना को बगल-कट में डालकर विजय प्राप्त की थी। इस प्रयास में भी राजा फौज को मुह की लानी पड़ी। बातों और न प्रतिरोध और प्रयाक्रमण हुए। राजा सरकार के साथ सैनिक मीत के बाट उठते और तीन-चार बीघाए भी पानी के विचार हुए। इसी प्रसंग में यह भी स्मरण रखना चाहिए कि जितने बिद्रोही सैनिक बायल हुए व उनकी मरहम पट्टी और माकूल इलाज गुल्लकी जाती थी और जिन बाबलों की हालत बहुत खराब रहती उनके मातहत बसपताल में भज दिया जाता रहा। इसके विपरीत राजा सरकार अपने बायल की तीमारदारी करन के बजाय अभी-कभी पहर बजवा मोली देकर अपनी पदे मूर्खताबस। यही कारण था जो प्राणों को सनट में देकर ऐसे सैनिक बिद्रोही मना में सम्मिलित हो बाया करते थे। मैरुवा की सड़ाई में तराई के विमानों के साथ बल बहापुर, ठेक बहापुर गुनन भीम बहापुर गुनन इहाँ सिंह पूरन मल बहापुर गुनन मलीलाल गुनन रजबीर गुनन तथा लोप बहापुर लाल भी शामिल हुए।

तीन जनबरी तक प्युठान नस्थान बाग-बेटपुरी बैठड़ी मनिहारी धनकुटा

महिनापूर तथा बनूपा जनता के अधिकार में आ गया। कहा जाता है कि बनूपा में ही मर्यादापुत्रात्म भी रामचन्द्र जी ने पित्र-बनूपा छोड़ा था। यहाँ बिदोहिपों को बीमों राष्ट्रपति मिली और राम सिंह तथा नन्द राम तामाग आदि यहाँ रह गए।

नरपाल के इतिहास में पाल्पा का स्थान बहुत राख रखा है और वह अपनी शानदार परम्परा को अब तक कायम रिये हुए है। शायद प्रमत्त राणाजी ने युतपूर्व कमालधर-इन श्रीक गुरु रामार का तानमेन में लखरबन्द करके अनमन्यक में बंशित कर दिया था। मधुसूत जालि ने पाल्पा स्थापना मुकाबल तथा बाबुद में हलचल मचा दी और पांच जनवरी का पन्द्रह भी मरकागे मैमिकों ने तानमेन में राख जालि कर दी। सभी राजबन्दी रिहा हुए और मान स्थितिवा की पचायता मरकाग बनी। इसी मन्नाह पाल्पा में गौरव धारण किया और वह इतिहास में प्रमत्तों को धाममममम कर देना पड़ा।



काठमाण्डू में मरकाग का प्रदर्शन

प्रधान मंत्री मधुसूत मधुसूत रामार ने काठ जनवरी का मुपागों की एक मन्ना मागा थी। इसका स्थापन नराल जेठ तथा माल मरकाग ने भी किया। नराली नरालों ने इन बीमों के सम्बन्ध में अपने बिचार प्रकट करके अमनोप ही प्रकट रिय और लम्बे जागे गयी। इसकी अभिव्यक्ति प्रकटवा में बीमा हजार निमालों ने मन्नापट्ट के रूप में की। नराल की तरफ से लम्बा मन्नापट्ट बनी गयी। इसका और निम्नी जनता दिन आज के पांच बरी गयी वह बमिमाम भी बिन्दु नराल पीर ने मन्नापट्टिया पर लाटिया और बंरुकों ने कुड़े बरमाकर बरी तरह पायन किया। इसी दिनों आनरवार और मर्यादों की बी

जगता उमरी किन्तु खून-खराबा बिल्कुल ही नहीं हुआ और उसके अरमान भी पूरे हो गये।

महाराज माइल समथर न अपने पुत्र विजय समथर को संधि-वार्ता के लिए बिल्ली भेजा। इसी और उन्हील पन्डू जनबरी को संदल में होने वाले वामनदेव के प्रधान मन्त्रियों के सम्मेलन में श्री भवान का मामला पेश कराने का प्रयास किया। कन्नौर के प्रथम का समुक्त राष्ट्र संघ में संबद्ध भारत सरकार को बहुत बड़ा सबक मिल चुका था इसलिए उसने भी बाज-येज से काम लिया। इसका इस्तेमाल तो भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने उसी वक्तव्य में कर दिया जिसमें उन्होंने यह साफ़ घोषणा में यह दिया कि नेपाल का मामला हमारा है। इस नज़रना न ब्रिटिश पार्लियामेंट के काम लड़े कर दिये और प्रधान मंत्री महाराज माइल समथर ने हथियार रखने तथा राजकर्मियों को रिहा कराने का आदेश दिया। इसके बावजूद भी कतिपय मोर्चों पर पूर्ववत् लड़ाई जारी रही।

ग्यारह-बारह जनबरी को भैरहवा में फिर सरयाइल हुआ। राजा सैनिकों ने दो सौ पुष्पों तथा पचास स्त्रियों को घायल किया। इन दो विधों में राजधानी की कामकोठरी से एक सौ छपन राजबन्दी मुक्त हुए। सोलह जनबरी को फिर एक सौ छपन राजबन्दी मुक्त हुए और रामपुरमण्डौ तथा मुसरिया पर राष्ट्रीय सेना का आधिपत्य हुआ।

नेपाली कांग्रेस के अध्यक्ष मातुका प्रसाद कोइराला ने मन्त्र जनबरी को मनमानी इन में सड़ाई बन्द करने की घोषणा की। यह घोषणा मुक्ति-संग्राम के सम्बन्ध सेनामियों से बिना परामर्श किये ही अर्ध-आधिकारिक ढंग से की गई। इसी समस्या पर विचार-विमर्श करने के लिए बाईस तथा तेईस जनबरी को बिड़ोही प्रतिनिधियों ने नई दिल्ली में बिसय बैठक की और विसर्न सड़ाई जारी रखने का निर्णय किया गया।

मुक्ति सेना तथा राजा फौज में अनुशासन का अभाव था। फलस्वरूप घोषणा के विरहीत जनकपुर तथा सुनार आदि में संघर्ष हुए। जनकपुर में आठ राजा सैनिक मोर्ची के अधिकार और बीसों घायल हुए। भैरहवा के पास मजिमाबा में भी मुठभेड़ हुई। राजा फौज का एक सैनिक मारा गया और कुछ बन्दी बनाकर समानान्तर सरकार की ओर में डाक दिये गये। जनबरी के अंतिम सप्ताह में ईलाय बाय बहिया तथा मपालमंज में पोलिबा बली। मपालमंज में बमामान सड़ाई होने की संभावना थी किन्तु बड़ा हाकिम भुव घमनर ने आत्मसमर्पण करके अपने सैनिकों को बचा लिया। कहा जाता है कि नेपालयज के सरकारों कोष में सारे तीन लाख रुपये थे जो उसी समय लपटा हो गये। फरवरी के प्रथम सप्ताह में राजधानी से पर्याप्त सैनिक भैरहवा भेजे गये और बिड़ोही सेना को म्यूडिहवा में हट आना पड़ा। इसके परचाशु बुद्धर इन्द्र सिंह ने कर्बला में अपनी कीर्ती छावनी बनाई। पश्चिमी नेपाल की आन्तरिकी सरकार शक्तिशाली हो गई थी। और जमान सीन बन्धाय का मारा दिया। लाजयज जल जाति को जाज करने के लिए जाज कर्मायन तथा लठ मन्त्रयी शयर्न को निबगल के लिए मोबाइल करने लगे दिये गये। बिड़ोही सरकार के इन प्रगति-

दील कायजम न मामन्ती के काल लव कर दिमे और वे अपनी कम सम्पत्ति प्राण भजकर ब्रह्म सम्पत्ति को रक्षा करने लग। इस जामि-काय में मामन्ती व जा रबैया ब्रह्मिदार दिया वह बहुत ही बुद्धिमान रहा।

एक बार ता वे राजा फौज में अपन सम्पद स्थापित करके प्रतिक्रियावादी का कटघर पालन करण और हुमरो आर अपनी कोठिया पर मर्यादा कायम क सण्ड गहराकर बबबर मना का भी अभिषेक करन वे। मामन्ता को इस कटनीति का भंडाफाड़ना उस समय पूर्ण बादा कर न हा गया जब कि मामन्ती के मना मुबनद्वर प्रसार दुकन तथा मामन्ता नाम न बिशही सरकार स ओहा ले लिया। मुबनद्वर प्रसार दुकन एक बहादुर बदनाम जमींदार स और जिग्दोंन अपनी काठा बिदिता में मुकुद बिम्बावन्दी कर रखा थी। फरम्बकय स्यारह फरबरो को बिगिता में मुब बमामान मड़ाई हुई जिनम अन सरकार म लउन-अइन मुबनद्वर प्रसार दुकन और सरम्बको नाम क माय मामन्ता के पचासों सैनिक काम माय और बिशहिया का बायो बन्नुके आदि प्राण हुई।

पच्छिमो मराठ की बिशही सरकार मलमानी समझी के बिनाफ थी और वह इतनी अनग्रिय हा चुकी थी कि राजा सरकार मे समझौता करन बाधा कायम गूट पबडा बा। उसन भारत सरकार के प्रधान मंत्री पकिटन जवाहरलाल नेहरू क समय बिगिता बाबड की विमाम पम करण हुए इस बात पर जार दिया कि जामि का लगुत्व अब मर्यादा कायम के हाक स निकल गया है और पच्छिमो मराठ की जामिदारी सरकार समझौता जामि का बिगयी है।

१५ फरबरो सन् १९५१ ई० का महाराजाधिराज त्रिभुवन कोर बिजय दार मरिषार मण्डल का राजधानी पठक और हुमरो और महाराज माहन रामभार न समझौता करन बाधे कायम गूट म डाक्टर के आर्द मिह को डाकू और लुनी पापित कर दिया। १८ फरबरो सन् १९५१ ई० का मराठ मदेन न बन्तरिम सरकार के संबिमडन की बापमा की। बन्तरिम सरकार न डाक्टर क आर्द मिह को पबडन क पिया भारत सरकार स सैनिक महापता मागी। फरम्बकय भैरुवा में मयुक्त सैनिक कारबाई हुई और डाक्टर के आर्द मिह अवन मभी सैनिक के साथ मियनार करके भउबर जम में बरी बना लिय। इसरी प्रतिबिरामबन्ता अगस्त जामि बन्द हा गर् और मार नगड में जामि दशानि हा गई। मराठ की जामि में लगभग पाच सौ व्यक्ति मर्हीद हुए जिनम परिणाम दबन्त मराठ स राजागाही की मर्यादा होकर दस प्रबापन का भार अपनर हुआ।



## प्रमातन्त्र की ओर

सबिबा सं प्रताड़ित नेपाल की एक करोड़ जनता में सहमा समंवर जैनबाई जी और श्री पांच धरकार की बयकार मनाकर रामासाही के समर्थकों के लुग की होमी खंमने लगी। बिद्रोही जनता ने राणा सरकार को बाध्य करके इस बयनीय परिस्थिति में सा दिया कि बहु बिस्वी में भारत सरकार को सम्म्यस मतकर बिद्रोहियों से समझौता करने के लिए बिबसा हो गई और ८ जनवरी को महापज मोहन समसर को एक सामन-मुबार की बोपना करनी पड़ी। महाराज मोहन समसर न नपाक की जनता का सम्बाधित करते हुए काठमान्डू से अपन बलत्तप्य न कहा कि एक नौ बार बय पहले महापज बांग बहापुर न महाराजबिराज तथा मपाक की जनता द्वारा छपि बाने पर सामन का पूरा बार उठाया। उस समय की एतिहासिक बदलावे सिपिबड्ड ह बज कि नपाक में सम्म्यसम्बा असाप्ति तथा कुभासन से नेपाल में बराजकना कोमी हुई थी और महाराज बांग बहापुर न चौपटापूर्वक नपाक से माप्ति तथा स्मिरता का दी थी।

बिगत मताप्ती में जो मफमताए मिली हैं उनका उम्मेक यद्यपि हममें नहीं किया गया है लेकिन सब भी यह तो निबिबाद बय में कहा ही जा सकता है कि महाराज बांग बहापुर तथा उनके उत्तरधिकारियों न केबक नपाक की असूय स्वाबीनता की स्थापना और बभता की सुरक्षा हो की है अपितु नपाक में प्रबति तथा स्मिर सरकार भी रखी है जो किमी राष्ट्र की नभुति तथा पलाई के लिए अपेक्षित है।

प्रधान मंत्री मोहन समसर ने अपनी बापबा में कहा कि समय की गति के बदलने के साथ यह बभिलापा रही है कि नेपाल की जनता शासन जैसे महत्तर कायों में भी लज। इनीमिए मबन् २ ४ का नेपाल सरकार का ऐक १४ अप्रेक मन् १९४८ ई०-बीछाज एक नबन् २ ०५-को मायु कर दिया गया। इनी दिन इस बार का प्रबल अनुच्छेद घोषित कर दिया और देश के सिम-बिब बाया के बीसी पाकों में पाम तथा बिबा पंचायतें स्थापित कर दी लह। केन्द्रीय बिबानमण्डल का तन्म यद्यपि अभी पूर्ण नहीं हो पाया था किन्तु पाकिबा श्रेष्ठ (ममन्) का उद्घाटन तो २२ नितम्बर, सन् १९५५ ई० को हो गया था और मंसु की प्रबल बैठक ही में बनेवा प्रमातन्त्र बना दिने मये न।

अब कठिन बाधमिक बाक ममाप्य हो रहा है और नेपाल की जनता प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होकर स्वयं प्रबालन की ओर बड रही हैं। मात्र तब जा भी मुबार अपनाय बये उनकी राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय बुष्टि से मूयम भ्याप्या करने पर यही निष्कर्ष निकलता

है कि बेरी सरकार और सरा सम्मेलन जलता में निरन्तर सम्पर्क स्थापित हो। हम मनुष्य हैं कि देश की स्थिरता की शान्ति एवं विश्व बिना हां नेपाळ में तीव्र प्रगति आई जा सकती है। इसी दृष्टिकोण से जनता की बेगभक्ति तथा बकादारी में बिस्वास रखन हुआ हम मार्गी ने यह निश्चय किया कि उसे अपने अत्यन्त पहुँचन के लिए कुछ निश्चित मुक्तिवा लागू करनी चाहिये। मुक्तियाँ इस प्रकार हैं—

१ एक विधान परिषद् की स्थापना प्रौढ महापिकार के आधार पर समामुख सीधे हा की जाय। इस कार्य के लिए समस्त देश की जन-मणता की जा रही है और मत दानाओं की मुक्तियाँ सीधातिसीधे ही बननी आरम्भ हो जायेंगी। यद्यपि यह कार्य महीन तथा जटिल है इसलिए यह आशा की जाती है कि विधान परिषद् की प्रथम बैठक मई १९५२ ई० तक हो जायेगी। इसका प्रमुख कार्य न्याय के लिए एक विधान प्रस्तुत करना होगा।

२ इस विधान परिषद् की स्थापना में देरी न हो इसलिए यह अनिवार्य है कि केन्द्र में एक मंत्रिमण्डल का निर्माण किया जायगा। इसमें बीसह मंत्री रहेंगे और जिनमें मान प्रतिनिधि जनता की विचारधारा व रहन जिनमें उनका पूर्ण विश्वास रहता। सरकार की अविगायी मन्त्रि मंत्रिमण्डल में रहना और बहु मन्त्रिमन्त्रि उत्तरदायित्व के सिद्धान्त पर कार्य करेंगे। यह अपने काम करने के लिए नियम भी बनायेंगे। मंत्रिमण्डल का निष्पन्न राजस्व पर रहना उसका साथ ही साथ बजट को पठानि भी प्रचालित होगी। मंत्रिमण्डल प्रशासकीय तबो में सामान्य योग्यता मान के लिए समस्त विभागों की कार्यालय भी कर सकना।

३ (क) अब तक विधान परिषद् द्वारा निर्मित तथा विधान समू नहीं हो जाता तब तक मंत्र २००४ का कार्य का प्रावधान उस समय तक लागू रहगा जब तक कि संविधान द्वारा इसमें कोई परिवर्तन न किया जाय। इसलिए मंत्र २००४ धारा के ग्याप सम्बन्धी अनुच्छेद के अनुसार एक एक्सेलेंस जनरल ( महापिकारता ) एक आर्डीनर जनरल ( महापिकार परीक्षा ) पब्लिक सर्विस कमिशन ( नाव-महा-आपाण ) तथा देश की जलाई के लिए आवश्यक अन्य बाने सीधातिसीधे ही नियुक्त होंगे।

(ग) लगभग दो सौ ग्राम तथा जिला पंचायतों अब तब स्थापित की जा चुकी है। अबगत पाँच सौ पंचायतों को मई १९५२ ई० के पहले ही तबो काम का बिना प्रयत्न किया जायगा।

४ (ब) सरकार की उम्मत अनिवार्य है कि शुभकला तथा पून हादिर महाराज की कारना उन्मत्त करन व लिए एक सम्मेलन में किया जा सम्मेलन देने शिक्षा में बिस्वास मान तथा ललाई कर है। जान व पञ्चात आम रिगार्ड कर वा आयगी। गुणम सम्मेलन तथा ललाई करन बान अन्तराविशो कर यह नहीं लागू होगा। यह आम रिगार्ड उन्मत्त बानों का सम्मेलन उचित ललाई करन बाने राजनीतिक बानों व लिए भी है।

(क) नेपाल में नेपाली नागरिका द्वारा निवमानुसार राजनीतिक संस्था खड़ी करने का प्रतिबन्ध नहीं रहेगा।

(ग) नेपाली नागरिकों की सभी राजनीतिक संस्थाओं जो वर्तमान काल में बाहर कार्य-सम्पादन कर रही हैं और ऐसी ही नेपाली प्रजा जो हिंसा से विमुक्त होकर अहिंसा को समर्थक है और यदि वह मलाई तथा अच्छी सरकार की अधिकारी है तो उनका मातृभूमि में स्वागत किया जायगा।

५ जिस परिस्थिति में श्री पांच ज्ञानम् और बिक्रम धाहू नेपाल के राज्य-सहायता पर बैठाय गये थे बहुसंख्यिकि है। नेपाल के किसी भी पड़ोसी देश ने जो उसमेकूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित किये हैं। तब श्री पांच सरकार को मान्यता नहीं दी और इसी लिये जनता में भ्रम तथा अस्थिरता फैल गई। इसी प्रसंग के पत्र-व्यवहार बुद्ध प्रवृत्ति के लोगों ने श्री पांच सरकार का नाम लेकर अस्थिरता फैलाने का प्रयत्न किया। श्री पांच सरकार अपनी अनुपस्थिति-काल में नेपाल सरकार से परामर्श लेकर अपना एक सरकार नियुक्त कर सकते हैं। ७ जनवरी सन् १९५१ ई० को इसपर विचार करने के लिए संसद् तथा मन्त्रिमण्डल की विशेष बैठकें बुलाई गईं। उन्होंने यह स्वीकृति दी कि इस परिस्थिति में नेपाल में अस्थिरता स्थापित करने के लिए श्री पांच विमुक्त और बिक्रम धाहू देश अपनी अनुपस्थिति में नेपाल सरकार की सम्मति लेकर अपना एक सरकार नियुक्त कर दें। जब मुझे यह पता लगा कि संसद् तथा मन्त्रिमण्डल के विचार तथा निर्णय को नेपाल सरकार मंजूर समझती है और इसको चुन ले करती है। मैं हजिवार सत्र हुए अपने और सभी भाइयों के लिए यह महसूस करता हूँ कि इस अवसर पर उनको एक विशेष संदेश है। देश के इस संकट तथा संघर्ष काल में आप लोगों ने बीछा एवं फैल-भक्ति की परम्परागत प्रतिष्ठा कायम रखी है। आप लोगों ने सरकार का साथ निरन्तर बिचकाम के साथ दिया है और आप लोगों ने अपने कार्यों तथा कर्तव्यों का पालन बड़ी ही बफारारी तथा उद्यम के साथ किया है। मेरे प्यारे भाइयो! मैं आप लोगों को यह विश्वास दिलाता हूँ कि आप लोगों की बफारी तथा साथ हम लोगों के हृदय में जैसा पहले था वैसा ही रहेगा। देश के प्रशासन के परिवर्तन के परभावों को हम लोग आप लोगों के अनुपस्थिति तथा अविचल उसी प्रकार रहें जिस प्रकार आप लोग अपनी सरकार तथा देश के प्रति रहे हैं।

यें अपनी सरकार तथा अपनी और मैं सभी सरकारी अफसरों की प्रशंसा तथा हृदय में सम्मान देना हूँ जिन्होंने इस संकट-काल में अत्यन्त बफारारी और उत्साह से हमारा साथ देकर आप कर्तव्यों का पालन किया है। यह मेरी आशा है कि कुछ देश-भक्ति की भावना में जो आप व्यक्त हुए हैं आप निश्चित रूप से जा रहे हैं नेपाल की अन्तर्गत स्थिति को। इसके लिए वह सरकार का हृदय में पूर्ण महसूस करेंगे जिससे कि प्यारी



(घ) नेपाल में नेपाली नागरिकों द्वारा नियमानुसार राजनीतिक संस्था खड़ी करने का प्रतिबन्ध नहीं होगा।

(ग) नेपाली नागरिकों की सभी राजनीतिक संस्थाएँ जो वर्तमान काल में बाहर कार्य-अभ्यास कर रही हैं और ऐसी ही नेपाली प्रजा को जिसा स विपुल होकर बहिष्ता की समर्थक हैं और यदि वह अन्तर्गत तथा अन्तर्गत सरकार की अधिकारी हैं तो उनका अनुमति में स्वागत किया जायगा।

५. जिस परिस्थिति में भी पांच आन्दोलन और विद्रोह बाह्य नेपाल के राज्य-विहासन पर बैठम पत्र व बहुसंख्यकित है। नेपाल के किसी भी पड़ोसी देश में या उसके कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित किये हैं नय भी पांच सरकार को मान्यता नहीं दी और इसी नाते अमता में भ्रम तथा अधान्ति फैल गई। इसी प्रसंग के फलस्वरूप गुप्त प्रकृति के लोगों ने भी पांच सरकार का नाम लेकर असान्ति सूट-फूट स्थितियों का अपमान निरपराध व्यक्तियों की हत्या की है। इसी नाते बाद-विवाह के समय भारत सरकार के मैत्रीपूर्ण सुझाव के अनुसार भी पांच विद्रोह नयान के महापञ्चायिराज बन रहेंगे। भी पांच सरकार अपनी अनुपस्थिति-काय में नेपाल सरकार से परामर्श लेकर अपना एक मन्त्रालय नियुक्त कर सकती है। ७ जनवरी सन् १९५१ ई. को इस पर विचार करने के लिए ससद् तथा माण्डारी की विधाय बैठक बुलाई गई। उन्होंने यह स्वीकृति दी कि इन परिस्थिति में नेपाल में सान्ति तथा स्थिरता स्थापित करने के लिए श्री पांच विद्रोह और विद्रोह बाह्य देश अपनी अनुपस्थिति में नेपाल सरकार को सम्मति लेकर अपना एक सरकार नियुक्त कर दें। अब मुझे यह कोपित करना है कि ससद् तथा माण्डारी के विचार तथा निर्णय को नेपाल सरकार समीर समझती है और इसकी दृष्टि भी करती है। मैं इतिहास स्पष्ट रूप अपन और सभी भाइयों के लिए यह महत्त्वपूर्ण कहता हूँ कि इस अवसर पर उनको एक विषय सचेत हूँ। देश के इस मकट तथा संघर्ष काल में जय लोगों न बीरता एवं देश-भक्ति की परम्परागत इतिहास कायम रखी है। जय लोगों के सरकार का पांच विद्रोह विद्रोह के माय दिया है और जय लोग न अपन कार्यों तथा कर्तव्यों का पालन बड़ी ही कफावारी तथा उद्यम के साथ किया है। मैं यहाँ माण्डारी। मैं जय लोगों को यह विचारना बिलाला हूँ कि जय लोग की अन्तर्गत तथा आज हम लोगों के हृदय में जैसा पड़ू या बैना ही राजा। देश के अमान्य के परिवर्तन के अन्तर्गत भी हम जय जय लोगों के अनुबद्धी तथा अधिकार सभी प्रकार रह्य जिस प्रकार जय लाल अपनी सरकार तथा देश के प्रति रहे हूँ।

मैं अपनी सरकार तथा अपनी माय में सभी सरकारों अन्तर्गत की प्रकृति तथा हृदय में सम्बन्ध बना हूँ जिन्होंने इन मकट-काय में अजयता अजयवारी और अजयता ने हृदय में जय लेकर अपन कथना का पालन किया है। यह मेरी आशा है कि गुप्त देश-भक्ति की भावना में जय व अमान्य सुधार घोषित किये जा रहे हैं नेपाल की अन्तर्गत उनका स्वागत करनी। इसके लिए यह सरकार का हृदय में प्रबल सहयोग करने जिन्होंने कि प्यारी

मातृभूमि के उज्ज्व भविष्यप्राप्त्य उन्नति तथा सम्मान प्राप्त हो सकें। हमें विश्वास है कि शासन के इस स्वतन्त्रीकरण के बड़े नज्म का प्रत्येक नेपाली नागरिक बहुत ही उज्ज्वला से प्रशंसा करेगा।

यह स्वरूप यह कि समस्त संसार की भाँति हम पर सगी हुई है। हमें संसार को यह दिखाना देना है कि नेपाल का भावी उज्ज्वल भविष्य नेपालियों के ही द्वारा बनाया जा सकेगा। बसूत हम लोगों का यह पवित्र कर्तव्य है कि हम भोग अपन देश का नाम गौरवान्वित करें। नेपाल के लोगों में स्वाधीनता तथा स्वायत्त के लिए अनेक घमर शेरों में जा बसूत कीर्ति प्राप्त की है और जिन्होंने पूर्ण क्षति के अपुठार अत्यन्त दुःखता साहम तथा पारम्परिक सहयोग से अपनी मातृभूमि की रक्षा की है वे सब बहाई के पात्र हैं।

मे इस भूमि तथा जनता के धी पसुपतिनाय तथा धी गुहास्वरी देवी के आशीर्वाद चाहता हूँ जिससे कि हम लोग अपन उज्ज्व भावनों तथा राष्ट्र के सुख तथा समृद्धि के लिए जो मंग मुबारों की बोपना की है उसको प्राप्त कर सकें। इस बठिन समय में प्रत्येक सच्चे नेपाली को अपने देश जिसे अपने देश की स्वायत्त बकिनता तथा स्वाधीनता पर सब है वे सज्ज हो।

प्रधान मंत्री मोहन समझर की सासन-मुबार की बोपना के सम्बन्ध में नेपाल के विभिन्न नेताओं में अपने अपने निम्न प्रकार के बक्तव्य दिये—

पश्चिमी नेपाल की बिग्रीही सरकार के प्रधान मंत्री की हैसियत से ९ जनवरी मन् १९५१ ई० को इन पंक्तियों के लेखक ने नई दिल्ली से महाराज मोहन समझर की मुबार सम्बन्धी बोपना की आलोचना करते हुए अपने बक्तव्य में कहा कि यह बोपना स्वाधीनता के लिए लड़ने वाले स्वयंसेवकों तथा सैनिकों को संतुष्ट नहीं करती। यह लौक है कि सन् १९५२ ई० के पहले नेपाल में एक विधान परिषद् की स्थापना हो जाय, किन्तु अब काठमाँ की सरकार अपने सितम्बर तक ही विधान परिषद् के लिए चुनाव कर सकती है तो क्या कारण है कि नेपाल में भी इसी वर्ष विधान परिषद् का चुनाव नहीं हो सकता? प्रधान मंत्री मोहन समझर ने अपनी बोपना में अन्तरिम सरकार की ओर कुरेखा बताई है वह आपत्तिजनक है। प्रस्तावित अन्तरिम सरकार के बोपह सत्रियों में आब-आप दलों तथा के प्रतिनिधियों की संख्या तथा महाराज मोहन समझर को ही प्रधान मंत्री बना रहना जनतात्मिक व्यवस्था नहीं बढ़ी जा सकती। बोपना में यह भी तो स्पष्ट नहीं किया गया है कि संशियों का चुनाव कौन करेगा और उनके विभागों का बँटवारा भी कौन करेगा। यह बोपना अर्धतोपकारी है। अतएव ऐसी परिस्थिति में यही उचित है कि नेपाल की स्वाधीनता के लिए लड़ने वाले सभी व्यक्तियों का चाह वह किसी भी राजनीतिक दल के हों एक सम्मेलन बुलाया जाय और उनमें यह बोपना विचार-विमर्श के लिए एकत्री जाय और सब उनी सम्मेलन द्वारा पास कराकर कोई अन्तिम निबन्ध दिया जाय। इसके पश्चात् ही लड़ाई बन्द करने का प्रसन्न उठ सकता है।

इसके अतिरिक्त भाभी अन्तरिम व्यवस्था के बारे में एक घोषणा भी पाँच सरकार द्वारा होनी चाहिए न कि प्रधान मंत्री महाराज मोहन शमशेर द्वारा।

इसी दिन बिस्मो रमज रेम्मी ने भी कलकत्ता से मोहन शमशेर की सुधार सम्बन्धी घोषणा की जानकारी करते हुए बक्तव्य दिया कि नेपाल के प्रधान मंत्री की घोषणा द्वारा भी पाँच सरकार को सन्नद्ध मान लेना बिधान परिषद बमाल के लिए सन् १९५२ ई० के पहले तक ठिबि निश्चित करना तथा समस्त राजनीतिक बन्धियों को मुक्त कर देना य तान घर्ते तो पूरी हो जानी है परन्तु दो माँगें तो अभी पूरी ही नहीं की गईं। प्रथम तो यह कि जनता को नागरिक अधिकार मिले और द्वितीय जनता के प्रतिनिधियों को महत्वमानी बिभाग भी मिले।

१० जनवरी सन् १९५१ ई० को नेपाली कांग्रेस के अध्यक्ष मस्तुका प्रसाद कोइराला न पटना से एक बक्तव्य दिया कि प्रधान मंत्री मोहन शमशेर की तत्काकषित घोषणा की प्रतिक्रिया नेपाली कांग्रेस ज्यों में केवल एक शब्द 'भ्रामक' द्वारा व्यक्त की जा सकती है। कोइराला ने कहा कि नेपाली कांग्रेस के जगह और उसके नेतृत्व के नीचे जो वर्तमान मयर्व चल रहा है उसका स्वयं केवल सामन्तवादी शासन को उखाड़ फेंककर नेपाल में पूर्ण प्रजातन्त्र स्थापित करना है। माहम शमशेर की घोषणा में सब से मुख्य बात ग्रीह मताधिकार के आधार पर बिधान परिषद् बड़ी करना की है लेकिन यह स्मरण रखने की बात है कि बिधान परिषद् उम्मी सरकार द्वारा बड़ी की जा सकती है जिसमें जनता का पूर्ण जेरबान हो। और यह स्वतन्त्र आयुमण्डल में ही संभव है। इस तत्काकषित घोषणा द्वारा बिधान परिषद् का निर्माण इस प्रकार बठिनाई ही से संभव हो सकेगा। कोई अन्तरिम व्यवस्था नेपाल सरकार को तब तक नहीं मान्य होगी जब तक वास्तविक रूप से शासन का मार जनता को न सौंप दिया जाय। यह तत्काकषित बापना जनता को इस प्रकार शासन का मार देने का बाधय ही नहीं प्रकट करती।

११ जनवरी सन् १९५१ ई० को पश्चिमी नेपाल को बिजोही सरकार के गवर्नर डाक्टर कुबेर इन्द्र मिश्र ने अपने बक्तव्य में कहा कि मैं भी पाँच सरकार से बिमम्भतापूर्वक अनुमय करता हूँ कि जब तक नेपाल में पूर्ण प्रजातान्त्रिक सरकार स्थापित नहीं हो जाती तब तक वह राजाओं द्वारा फैलाय हुए जाल में फँसकर नेपाल न जायें। मैं यह अनुमय करता हूँ कि जब सामन्तवादी राजाओं ने देखा कि अब अपनी तानाशाही की रक्षा करने का दूसरा मार्ग नहीं रह गया तो उन्होंने यही उचित समझा कि एक तत्काकषित प्रजा-तांत्रिक सरकार नेपाली कायम के तत्काकषित सरकार स्थापित नहीं हो जाती तथा राज्य-सामन पर बलाकर स्थापित कर दी जाय। वे अब भी अपनी शक्ति का ही और राज्य-सामन पर बलाकर नेपाली जनता का बहमा देना चाहते हैं। मैं राजाओं का माबबान कर देता हूँ कि नेपाल की भाभी तथा निर्धन जनता का बहबूक बनाने की उनकी यह बाल बहार मित्र होगी मैं नेपाली जनता तथा नेपाल के बाहर भाजारी के प्रमियों में अपील करता हूँ कि वे न

हम आपों की महापणा करें जिससे हम आज अपने देश की पूर्ति तक अबिराम संभव करने ही रहे ।

१४ जनवरी सन् १९१६ ई० को नपास के अंतर्मुख प्रधान मंत्री महाराज पद्म गणेश न राधी न अपना बलवत्त देन हुए कहा कि नपास के महाराजाधिराज का ही अन्तरिम सरकार के लिए सब मंत्रियों का चुनने का मार निया जाय । जनता का अन्तरिम सरकार में विश्वास आज के लिए नपासी कायम का ही महत्त्वपूर्ण विभाग माना जाय । मूम इस बात पर विचार प्रसन्नता है कि श्री त्रिमल्ल कीर विजय शाह देव ही नपास के महाराजाधिराज बन रहें । मौलानिक बुद्धि में मैं हम मुबार का जनश्रुतवाद की ओर बड़ा धुमा एक कहने मानता हूँ । यही तो मैं जब मैं नपास का प्रधान मंत्री हुआ तब मैं समझ कर रहा था । तब भी मैं जनश्रुती के रहा हूँ कि यदि हममें सच्चाई न रही तो यह बापणा भी स्वयं में परिभ्रष्ट हो जायगा । सच्चाई में रहने न विज्ञान-निर्माण की बात पराजित हो जायगी । मैं इस बात पर और बैसा चाहता हूँ कि श्री पांच सरकार का राज्य-निर्माण पर बापस आज के समय सब प्रकार की आवश्यक मासकानी बरती जाय और श्री पांच सरकार तथा मंत्रिमण्डल के सम्बन्ध भी स्पष्ट कर दिए जाय । श्री पांच महाराजाधिराज का ही पूर्ण अधिकार सम्पन्न राज्य का सर्वोच्च अधिकारी रहना चाहिए ।

इसी दिन नपासी कायम के अध्यक्ष माणुका प्रसाद काइराता न मोरखपुर में एक बलवत्त देन हुए कहा कि नपास में प्रस्तावित वैधानिक परिवर्तन बहुत ही अस्पष्ट हैं । प्रस्तावित अन्तरिम सरकार और विज्ञान परिषद् की पूर्ण जा बापणा में रखी नहीं है वह एसी नहीं है जो नपास में जनश्रुतवाद का मर्क । काइराता न कहा कि हम बापणा में तीन श्रुतिया है—

१ यह बापणा नपास के प्रधान मंत्री द्वारा न हाकर नपास के महाराजाधिराज द्वारा हुनी चाहिए ।

२ यह प्रश्न कि अन्तरिम सरकार में जनता के मतों मंत्रियों का नाम कौन देगा कौणा और कौन विभाग-वितरण करेगा तथा उनका अधिकार क्या रहे मैं यह अनिश्चित ही है ।

३ इस बापणा में राज्य की राजनीतिक संस्थाओं की जाय भक्ति दिया गया है जब कि नपास में बस एक ही राजनीतिक दल है और वह ही नपासी कायम ।

यदि यह संशोधन हुनाया नहीं गया तो स्वाधीनता-संग्राम परिस्थिति के अनुसार हितायक और अधिनात्मक दंग न हुना ही रहेगा ।

१६ जनवरी सन् १९१६ ई० का नपासी कायम के अध्यक्ष माणुका प्रसाद काइराता न अपने स्वयंसेवकों का सभी प्रतिनिधित्व बन्द कर देन को कहा । उन्होंने उन सबों ने यह बरीक भी की कि नपास में मासिक स्थापित की जाय । माणुका प्रसाद काइराता न कहा कि नपास के प्रधान मंत्री की बापणा मारन के प्रधान मंत्री की बरीक तथा



नेपाल के महाराजाधिराज के बक्तव्य से उत्पन्न परिस्थिति तथा भारत सरकार से पूर्ण विश्वास-विमर्श करने के पश्चात् हम ने यह तब किया है कि सब प्रकार की कार्रवाईयों को रोक बन्द करके समझौते के लिए अनुकूल परिस्थिति काई बाध। हम इच्छित सब काम कर्त्ताओं को सब प्रकार की सैनिक कार्रवाईयों को बन्द कर देने की जमीन करते हैं और सबों से जमीन करते हैं कि नेपाल में शान्ति स्थापित करण में सब महाबलता करें। हम भारत सरकार के उन सब कार्यों के लिए अनुबद्ध हैं जिससे नेपाल में सुधार और प्रगति जाई। इस विषय काल में हम भारत के प्रधान मंत्री का आदेश स्वीकार करते हैं और विश्वास करते हैं कि नेपाल की समस्या बिल्कुल ही सटीकपूर्वक हल हो जायगी। भारत सरकार के समस्त नेपाली कायस के सम्मुख मातृका प्रसाद कोइराला तथा उनके छोटे भाई विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला एवं नेपाली कांग्रेस के कोषाध्यक्ष जनरल सुब्बा ने शाखा सरकार के प्रतिनिधि मेजर जनरल विजय शमशेर तथा राजाजी के समर्थक सरदार तरेन्द्र शर्मा आचार्य दीक्षित के समस्त संधि शर्तों परकाई। संधि शर्तों में कोइराला बन्धुओं ने अल्प किसी धुन तथा राजनैतिक दल के नेताओं को सम्मिलित होने का अवसर ही नहीं दिया।

८ फरवरी सन् १९५१ ई. को 'काठमाण्डू-विस्ती संधि-शर्तों' समाप्त हुई और १५ फरवरी सन् १९५१ ई. को भारत सरकार ने महाराजाधिराज की उपस्थिति बहुत ही आदर के साथ अपन विशेष वायुयान द्वारा नेपाल की राजधानी काठमाण्डू बिहा कर दिया। राजधानी की लाजों बनता न तावर विमान पतन पर अपने महाराजाधिराज का अभूतपूर्व स्वागत किया।

१८ फरवरी सन् १९५१ ई. को महाराजाधिराज बिभुवन वीर विक्रम शाह देव ने नेपाल की राजधानी काठमाण्डू से अन्तिम सरकार से अधिकारों की घोषणा तथा जनता से सरकार का पूर्ण सहयोग करने की जमीन कर दी। फलस्वरूप नेपाल में सर्वत्र शान्ति स्थापित हो गई।

इसी दिन श्री पांच महाराजाधिराज बिभुवन वीर विक्रम शाह देव ने अपन माराजन हिट्री दरबार में सैकड़ों अधिकारियों को आमंत्रित करके नेपाली भाषा में ब्रह्म भाड़ी घोषणा की जिसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है—

स्वस्तिर्यः निरिदाम् चक ब्रह्ममणि नरनायकम्यादि विविध विद्वान्मनी निराज मान मालोमन श्रीरक्षो राजप्य श्रीरक्षक नपाल तारा श्रीरक्ष्म रामकृष्ण अनुम श्रुतिर्वर विमलिनपट्ट अतिप्रबल गारजा इतिनबाहु महाभिरति श्री मगमहाराजाधिराज श्री श्री श्री महाराज बिभुवन वीर विक्रम चंद्र बहादुर शाह बहादुर राजमेर जैन देवानाम् महा समर बिजयिनाम् ।

आज हमारे समस्त देस के भाइया भारत, गण-बहुल आरी प्रजा माह महाजन इत्यादि की यदाशित—

अखण्ड सन् १ १ मास में हमारे स्वर्गीय पूर्व प्रणिनामह श्री पांच महाराजा

विद्युत् सुरेन्द्र कीर बिजय माह न अपन मिहामन-काय में जतक सम्पीर तथा महात्मपुर्ण कार्यों में अपना तथा अपन उत्तराधिकारियों द्वारा देश का शासन-भार भी जग बहादुर राजा को सौंप दिया ।

अप्युक्त दो तीन महाराज जंग बहादुर राजा के उत्तराधिकारी हमारे पूर्वजों द्वारा नियुक्त होकर प्रधान मंत्री का हैमियन में राज्य का शासन चलाते आ रहे हैं और बनमान समय में भी तीन महाराज माह न समगर जंग बहादुर राजा हमारी तरफ से हमारे नाम में इस राज्य का शासन चलाते आ रहे हैं और अब हमारी इच्छा तथा निर्णय है कि हमारी प्रजा का शासन उन्हीं के निर्वाचित द्वारा एक वैधानिक बना खड़ी करके सनतशासनक विधान के अनुसार हो ।

और जब तक वह विधान तैयार नहीं हो जाता तब तक हमारा कार्य सम्पादन करना एवं महात्मता तथा सम्मति देन के निमित्त जनता का विश्वास प्राप्त करने के लिए जनता के प्रतिनिधियों की एक संविमण्डल संगठन करने की हमारी इच्छा और निर्णय है इसी लिए हमारी ओर से इस घोषणा-पत्र द्वारा हमारे कार्य-सम्पादन में महायत्नार्थ हमारे अति विश्वासपात्र तथा प्रिय भी तीन महाराज मोहन समगर जंग बहादुर राजा हमारे प्रधान मंत्री तथा परराष्ट्र मंत्री नियुक्त किये जाते हैं ।

श्री मंत्री बजर समगर जंग बहादुर राजा	रक्षा मंत्री
श्री विश्वरवर प्रसाद काइराथा	गृह मंत्री
श्री सुबोध समगर	अर्थ मंत्री
श्री चूडाचन्द्र समगर	जन विमोचन मंत्री
श्री सधामान सिंह	उद्योग तथा वाणिज्य मंत्री
श्री मृग जंग राजा	शिक्षा मंत्री
श्री मह कान्ही मिश्र	यातायात मंत्री
श्री यज्ञ बहादुर बस्नेत	स्वास्थ्य मंत्री
श्री सरन यश्वि धर्मा	लाघ तथा कृषि मंत्री

एक संविमण्डल संगठित तथा नियुक्त हो रहा है । अप्युक्त मंत्रायुध अपन-अपने माहनों पर रहें और संयुक्त रूप में हमारे प्रति जिम्मेदार रहें । हमारे प्रधान मंत्री का कर्तव्य होगा कि राज्य के शासन सम्बन्धी इत्यादि विषयों में संविमण्डल का निश्चय वादि हयें अवबल करने रहें और राज्य के शासन सम्बन्धी विषय इत्यादि के बारे में हमारी सम्मति लेकर उनका प्रतिक्रिया किए हम ने प्रकट करना उनका कर्तव्य होगा ।

और हम इसके द्वारा अपनी समस्त प्रजा को अपने तथा अपन उत्तराधिकारी के प्रति सबको बचावारी वाच्य करने के निमित्त आमंत्रित करने हैं । और हमारे सभी जगो निजामनो आधिकार इत्यादि तथा राज्य के बाधितों का आजाकारी हाकर हमारे मंत्रियों को अपने अपने कर्तव्य के सम्पादन में सबर तथा महात्मता देन का आदेश दिया जाता है ।

राजनीतिक अपराध में यह हुए सभी लोग २ जून १९५१ ई० तक अपन-अपन घर आकर सान्निध्य कार्य में लग जान पर उन लोगों की हम माफ़ी तथा विस्मृति और उस अपराध में अर्थ हुई सम्पत्ति को उन्हें वापस देन को हमारी शाही इच्छा है।

हमारे बान्धविक बाधा है कि इस तबौन व्यवस्था में सरकार तथा जनता मित्र-बुल कर नेपाल की उत्पत्ति एवं समृद्धि के निमित्त प्रयत्नशील होत। परमेश्वर हमें तथा हमारे अधिकारी वर्ग को हमारे प्रजा के हित के निमित्त हमारा उपर्युक्त इच्छा इयादि को पालन करने की शक्ति द।

नारायण हिंदी बखार,

काठमाण्डू

१८ फरवरी १९५१ ई०

### राणा-कांग्रेस संयुक्त सरकार

नई दिल्ली में समझौता-वार्ता के साथ ही साथ यह भी तय हो गया था कि समझौते के सबसे बोर बिरोधी डाक्टर के. आई. सिंह को पकड़ने के लिए भारत सरकार अन्तरिम सरकार की सैनिक सहायता भी करे। फलतः राही घोषणा के पहले ही भारतीय सेना जेरुसा के लिए कूच कर चुकी थी। दूसरे ही दिन १९ फरवरी सन् १९५१ ई० को जेरुसा के पास कर्बला नामक बिरोही भेना की फौजी छावनी पर नेपाल सरकार तथा भारत सरकार के सैनिकों की संयुक्त सैनिक कार्यवाही हो गई और डाक्टर के. आई० सिंह अपने तीन भी अस्त्री सैनिका के साथ जेरुसा की जल में बन्द कर दिए गए। इस संयुक्त सैनिक कार्यवाही का प्रभाव नेपाल की जनता पर बुरा पड़ा और नेपाली जनता की बहुत रोष हुआ कि महाराजाधिराज न जब अपनी शाही घोषणा में सब राजनीतिक अपराधियों को माफ़ी तथा विस्मृति ही दे दी थी तो फिर क्यों डाक्टर के० आई० सिंह संयुक्त सरकार द्वारा बन्दी बना लिये गये। इससे नेपाली जनता को यह विश्वास हो गया कि यह भारत प्रयत्न नेपाल की नयी सरकार केबल इस अभिप्राय से कर रही है किनसे कि डाक्टर के० आई० सिंह तथा उनके साथी राजा की सामर्थ्य न पा लके और उनसे भारत सरकार को बोले में डाक्टर के बिचार से ही उन्हें डाकू तथा लुनी होने की लाल मुचला दी और इसी आधार पर नयी सरकार ने भारत में सैनिक सहायता प्राप्त की।

इसी समय नेपाल-ज तथा जेहिहा क्षेत्र में भी बिरोही सेना ने समस्त सरकार को चुनौती दी। नेपाल सरकार की प्रार्थना पर ११ अप्रैल सन् १९५१ ई० का उत्तर प्रदेश सरकार की मान्य पुलिस की पाक बल्लिवा न बिरोही सेना का पीछा किया और १३ अप्रैल सन् १९५१ ई० को भारतीय सेना न नारायण पट्टककर बिरोही सेना का एक भन्ताह में बुचक करके अद्दानी बिरोहिवा को बन्दी बना लिया। संयुक्त सरकार ने

भारतीय नेता के सहयोग से प्रायः सभी विरोधी तरकों का कुचल ता दिया परन्तु भीतर ही भीतर बाग मूलमती ही रही और पूर्वी नेपाल के सिन्धु तथा किराणों ने ता सरकार के विरुद्ध समस्त विद्रोह कर दिया और जिस में काफ़ी जन जन की भी मर्ति हुई। १० अप्रैल सन् १९५१ ई० को गार्ला दम न काठमाण्डू में एक हजार के लगभग सुकरीबारी गोरखों का भयंकर जुलूम निवातकर गृहमंत्री बिष्णुदत्त प्रसाद कोइराला की काठी पर



भन्नाप्रसादी मिश्र



बिष्णुदत्त प्रसाद कोइराला

हमका किया। गार्ला दम का इरादा गृहमंत्री आदि को मारकर मत्ता हुषियाने का था। संयुक्त सरकार ने सभी अवस्था में गार्ला दम के मताओं को गिरफ्तार किया। २ मई सन् १९५१ ई० को रखा मंत्री जनरल बबर नामगर भी दसो दम में शामिल हुए के नात काठमाण्डू आन पर बोपी ठहराए गये। ८ मई का रखा मंत्री जनरल बबर नामगर पदच्युत कर दिया गया और रखा विभाग महाराज साहू नामगर को सौंप करके उस विभाग के बहुत से अधिकार कम करके प्रधान मन्त्री को दे दिए गये। रखा विभाग को नबम देम की रक्षाताति पर ही बलत दम का अधिकार दिया गया। इसके अतिरिक्त स्वायत्त नामग विभाग गृह विभाग के साथ-साथ मिर्चाई विभाग तथा विकास विभाग में से पृथक कर लाय तथा कृषि-विभाग में सम्मिलित कर दिया गया।

नेपाली काँग्रेस में गुटबन्दी बड़े ओरों में हा रही थी इसलिए १० जुन सन् १९५१ का मरत मंत्रि मर्मा के स्थान पर पूर्व प्रसाद उपाध्याय लाय तथा कृषि मंत्री निम्बुत्त दिये गये। इसी समय विन्नीस्मिन्त मपासी राजकुल कम्माडिङ्ग जनरल सिंह राजार के स्थान पर मेजर जनरल बिजय नामगर की नियुक्ति हुई और सिंह नामगर संयुक्त सरकार के नन विभाग के मंत्री बनाये गये।

जापनी यटबन्दी तथा रेश को विकास के माग पर न सेबा सकने के माते राजा-कावेम सरकार मजबूताने लयी कि इनी बीच महाराजाधिराज जिम्बुन बीर विक्रम शाह न भारत क प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू को काठमाण्डू आमंत्रित किया। १६ जून सन् १९५१ ई. का भारत के प्रधान मंत्री नेपाल की राजधानी में पहुंचे। महा नेपाली जनता तथा नेपाल सरकार ने उनका शानदार स्वागत किया।

महाराजाधिराज के समापतित्व में तुषीलक के मैदान में एक बिराट समा हुई जिसमें भारत के प्रधान मंत्री न यह घोषणा की कि भारत नेपाल के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहता और न ही वह नेपाल की किसी काम शक्ति का असाढ़ा ही बनने देना चाहता है। १८ जून को काठमाण्डू से आकाशवाणी द्वारा अपना भाषण प्रसारित करते हुए पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने दोनों देशों की एकता पर जोर देते हुए बोधित किया—“हम में तो कुछ आरम्भ करना चाहते हैं और न ही इस द्वारा को लेकर हमारे देशों में जाना चाहते हैं। हम स्वतन्त्र देशों की स्वतन्त्रता में किसी का हस्तक्षेप नहीं बर्दाश्त कर सकते। हिमालय पर्वत हमारा और नेपाल का संतरी है। इसके प्रथम गिज़र मित्र का स्वागत और सम्बन्धों का नेतावनी देने हैं। भारत और नेपाल का तिब्बत सम्बन्ध है। हमें अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करनी चाहिए। हमारे जाये आपने आवावेश न कहा कि ‘नेपाल जो पर्वतीय कटि प्रदेस है हिमालय की पुत्री है और भारत की छोटी भगिनी है। महा मे आया है। मे भारतीय जनता की सम्मानना लेकर आपक महा जाने की बड़ी पुरानी इच्छा पूरी करने आया है। नेपाली जनता न जो प्रेम प्रदर्शित किया है उनका मैं आभारी हूँ। उनसे व्यवहार मे मुम



जनरल मुबर्क शमसेर

ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मैं उन्हीं में से एक हूँ—बाहर नहीं हूँ। मे इस प्रगपूर्ण व्यवहार के लिए महाराजाधिराज प्रधान मंत्री तथा मन्त्रालय जनता का आभारी हूँ। मे स्वयं पर्वतीय प्रदेस का हूँ और पर्वतमाता का देवकर मरा हूँ व गह्वर हो जाता हूँ।

नेपाल के माहनी जीवन को मे बिदब की अनेक मुझ-मुमियों में क्यानि प्राप्त की है। जनएव उन्हीं नेपाल की स्वतन्त्रता की आज रक्षा करनी है। नेपाल में एक नवीन दिशा में बहम उगाया है और मन्त्रालय भारत की उनक साथ सहानुभूति है। मुने आया है कि मन्त्रालय प्रयासों ने और सहयोगपूर्ण कार्य में नवीन नेपाल की स्वतन्त्रता का शक्ति

माजी मन्त्रिमन्त्र प्रधान करण। पिछले महीनों नेपाल में जो घटना घटित हुई है वह अतिथीय और अपने तरह की एक निरासी है। और देशों की भाँति नेपाल भी समस्याओं से भरा है। जिस बात यह है जा पुराने बर्ष समय के साथ बहुत घरे और एक-दूसरे में सहयोग कर रहे हैं।

### डाक्टर क० आई० सिंह

जून सन् १९५१ ई० के अन्तिम मण्डाह की रात्रि में कुछ बन्दी डाकुओं ने भैरहवा जेल की दीवार में बहुत बड़ी मेंब समाकर सभी राजनीतिक बन्दियों को बाहर निकल आने के लिए अनुरोध किया। बिल्लु एक भी राजनीतिक बन्दी जिस में भयन के भिन्न उद्यत नहीं हुआ यद्यपि पाँच अपराधी जिस में बाहर निकल गए।

मधुवन सरकार ने डाक्टर क० आई० सिंह के पैर में बड़ी डाककर एक छात्र-भी कोठी में बन्द करके चारों ओर पहरा बैठा दिया और उनके सभी माचियों को जिस में बन्द कर दिया परन्तु तब भी जेलता डाक्टर क० आई० सिंह को ही अपना रक्षण माँगकर पुजारी भी। जेलता को जो भी कष्ट होता था वह डाक्टर के आई० सिंह की सिड़की पर जाकर फटियाद करती थी। डाक्टर क० आई० सिंह अपने बन्द कमरे के अन्दर में ही बापी तथा प्रतिबादी की फटियाद सुनकर उचित समझौता करा दिया करते थे।

बस्तुतः डाक्टर क० आई० सिंह ही पूरे जिले के समस्त मुहूर्तों का समझौता पंचायत तथा मन्त्र मन्त्रियों के आधार पर करा दिया करते थे और बापी तथा प्रतिबादी दोनों प्रमत्तापूर्वक उसी समझौते का मान लेते थे। इस प्रकार के समझौते करा देने से डाक्टर के आई० सिंह की प्रतिष्ठा दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती ही गई और निर्भय तथा प्रताडित जेलता डाक्टर के आई० सिंह की अपकार बनाकर उनकी रिहाई की माँग करती रहीं।

द्वार डाक्टर क० आई० सिंह ने जुलाई के प्रथम मण्डाह में बीमों हजार किसानों का भैरहवाबुलवाकर सबको सन्तिपूर्वक मिल-जुलकर रहने तथा महाराजाधिराज के प्रति कृतज्ञ बन रहने की शपथ लिखाई। उसी रात्रि में डाक्टर क० आई० सिंह ने बूटबस जिले के समस्त राजनीतिक कार्यकर्ताओं की भैरहवा के बड़े हाकिम रामेश्वर प्रसाद शर्मा के समक्ष सरकारी भवन में एक मोट्टी की। डाक्टर के आई० सिंह ने एक प्रतिज्ञा-पत्र लिखवाकर प्रत्येक राजनीतिक कार्यकर्ता से सम्पन्न में रखे हुए गंगाजल को उठवाकर मानुमुति तथा महाराजाधिराज के प्रति निष्ठावान बन रहने की शपथ लिखाई और सबका मन्त्राई के साथ किसानों की सेवा करने के लिए उत्प्रेरित किया। इस प्रतिज्ञा का प्रभाव कार्यकर्ताओं पर सुन्दर पड़ा और प्रत्येक कार्यकर्ता ने डाक्टर के आई० सिंह की राय सुकर अपने-अपने क्षेत्र में संगठन-काम प्रारम्भ कर दिया। राजनीतिक कार्यकर्ताओं के इस संगठन का ईश्वर करकारी कार्यकारी समीचीन-मै हा गया और डाक्टर के आई० सिंह के आदेशों का पूरातया पालन करने लग। अपराधी ने लेकर बड़े हाकिम तक सभी डाक्टर के आई० सिंह के प्रभाव को सही भाँति जानने लगे। सरकारी कर्मचारियों को यह विश्वास हो गया था कि

सभी बन्दी मुक्त कर दिये जायें और नरेश डाक्टर के • आई • सिंह को किसी ऊँचे पद पर नियुक्त करण । यही सोचकर सभी सरकारी कर्मचारी पहले ही से उनकी जी-हुकूमती में व्यस्त रहन सय और जब बड़े हाकिम साहब न अपनी कम्पा के बिबाह-संस्कार को सम्पन्न कराने के लिए अवकाश ले लिया तो १ जुलाई सन् १९५१ ई० को राजिने जेल का फाटक बाह्य दिया गया और सभी राजबन्धियों ने बाहर निकलकर भैरहवा के सरकारी भवन पर अपना झण्डा लहरा दिया । दूसरे दिन ११ जुलाई को पिपरहिया के बाग में पञ्चामा हवाय किसानों तथा सरकारी कर्मचारियों में अपनी स्वामी-भक्ति का अपना गवर्नर कोषित कर दिया । सरकार कर्मचारियों में अपनी स्वामी-भक्ति का प्रमाण एक प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करके दिया । इसके पश्चात् डाक्टर के आई • सिंह न जनता को घान्त रहन तथा अहिंसा से काम लेन की अपील की । डाक्टर के आई • सिंह न सरकारी कोष पर मोलहू मैमिकों का पहरा बैठा दिया । सरकारी मैमिकों में जब यह सुना कि डाक्टर के आई • सिंह न अहिंसात्मक ढंग से आत्मान बचान की अपील की है तो उन सब न बड़े हाकिम की कांठो में घरन ले ली । १२ जुलाई सन् १९५१ ई० को बस बड़े दिन में बड़े हाकिम के भवन में सब सरकारी मैमिकों न यह कहना मचा कि यदि हुबारों नि-सरन किमान बड़े हाकिम के भवन के सामन आकर हम लोगो का यह सबूत दे दे कि वे सोप मचमुच डाक्टर के आई • सिंह को अपना गवर्नर मानते हैं ना हम लोग भी डा के आई • सिंह को अपना गवर्नर मान सय । फलतः उगी दिन साय बार बड़े किमानो तथा मजदूरों का एक बृहत् जमूस सरकारी मैमिकों को मतान के लिए बड़े हाकिम के भवन की बार बड़ा और ज्यों ही जमूस सरकारी भवन के द्वार के समीप पहुँचा तथा ही सरकारी मैमिकों के शिकार बन और जनेवों बुगी तरह बायल हा गये । इसके पश्चात् डाक्टर के आई • सिंह न अहिंसा में काम लेन की अपील की । १३ जुलाई सन् १९५१ ई० को जब डाक्टर के आई • सिंह को यह पता चला कि भारतीय सेना उन्हें पकड़ने के लिए भारत-नेपाल की सीमा तक आ पहुँची है तो वह सरकारी कोष की रक्षा के लिए अपने मैमिकों का छोड़कर वहाँ से हट गय । १४ जुलाई का भारतीय सेना ने आकर सरकारी कोष को अपने बन्दे में कर लिया । भारतीय मैमिकों न पहलेवालों को बन्दी बना करके जेल में डाल दिया । इसके पश्चात् डाक्टर के आई • सिंह की मना में परामी पर बिना रक्तपात के पूरा आधिपत्य जमा किया और जब भारतीय सेना में परामी पर भी हमला कर दिया तो डाक्टर के आई • सिंह न जंगलों तथा पर्वत-पन्धरों में शरण ले ली । भारतीय सेना न बहा भी उनका पीछा किया परन्तु वह असफल रही । नरैकन सरकार ने २५ जुलाई सन् १९५१ ई० को डाक्टर सिंह माहि को डाकू तथा फरार घोषित करके उन्हें पकड़ने के लिए पांच हुबार गय का पुरस्कार रन दिया । इन पर भी जब नरैकन सरकार को नकामता नहीं मिली तो उनन तत्कालीन समाचारों

पर कब्ज़ा डाल दिया ।

इस अगस्त को नये विधान के अनुसार नेपाल प्रमाण व्यावसायिक के प्रमुख व्यापारीय नियुक्त किये गये । इस दिन डाक्टर के० जाई० सिंह तथा कर्मक सङ्ग बहादुर सिंह मुख्य अपने इस के तीस सैनिकों के साथ पाप्सा से साठ मील पश्चिम बोर्पाटन में—विस्वास-पाठ पूर्वक बन्दी बनाये गये ।

राजा-कायस्थ सरकार का सहजहाती देसकर महाराजाधिराज न २ अक्तूबर, सन् १९५१ ई० को पंचायतीस सदस्यों की एक सलाहकार समिति बनी की । इसके बावजूद भी सरकार संमेल नहीं सकी और राजधानी के विद्यार्थी उस उन्माद कलन के लिए उत्पन्न मचाते ही रहे । यह मंत्री विस्वस्वर प्रसाद कोइराला ने बिरोधी मतार्थों तथा कतिपय विद्यार्थियों को घुरसा कानून के अन्तर्गत नजरबन्द करके कड़ाई से काम लिया । प्रतिक्रिया-स्वरूप विद्यार्थियों ने उस रूप पारध किया किन्तु यह मंत्री ने उनको माकापपाव बनाने के लिए गोलीयाँ चलावाई और जिसमें एक विद्यार्थी भिनिया काभी सहिव हो गये । इसी गोलीकाण्ड को लेकर प्रधान मंत्री महाराज मोहन शमशेर तथा गृह मंत्री में मतभेद हो गया और दोनों न त्यागपत्र दे दिए । इसी घटना से राजा-कायस्थ सरकार अंग हो गई । १५ नवम्बर, सन् १९५१ ई०, को महाराजाधिराज ने अपनी प्रशस्ति के साथ निम्न प्रकार की एक वृत्तरी घोषणा की—

जागे हमारी प्यारी प्रजा सबको यथोचित,

उपरान्त मंत्रिमण्डल के पुनर्निर्माण के लिए दोनों पक्ष के मंत्रियों की चोड़ी बहुत सलाह देने और प्रमाण मंत्री महाराज शमशेर जय बहादुर तथा और अन्य मंत्रियों द्वारा त्यागपत्र पेश किये जान पर वर्तमान मंत्रिमण्डल का कायम रहना असम्भव हो गया है । इस मंत्रिमण्डल ने अपनी कार्य अवधि न निःसन्देह बहुत ही अच्छे काम किये हैं तो भी इच्छानुसार उभरति नहीं हुई ऐसा हमारा विश्वास है । हमन जैसा चाहा था वैसी सुखी और संतुष्ट हमारी प्रजा नहीं हो पाई है । हास न उपस्थित परिस्थिति के बहुत कारणों में ये निमक्त उत्तरदायित्व ही खायद एक प्रमुख कारण दिखलाई पड़ता है ।

देश को पूर्व प्रजातन्त्रात्मक ढंग पर से जाने वाली वैधानिक समा द्वारा निर्मित विधान-अनुसार हमारे देश का शासन चलाता हमारा घोषित इच्छा है । नियमपूर्वक निर्वाचन द्वारा हमारी प्रजा की चयन निश्चित हो जाने पर बहुमत पक्ष के नेता पर सरकार निर्माण करन का बहिमार हो जाता है । इस वर्तमान परिवर्तन में लोकप्रिय और जनता की इच्छानुसार चलन वाली सरकार बनी करन को हमारी इच्छा है । हमारी चेष्टा निमक्त उत्तरदायित्व तथा आपसी मतभेद हटाने वाली और यथाशक्ति हमारे देश की बहुत आवश्यक बातों का हित करने वाली प्रतिनिधि स्वरूप सरकार बनान की है । हमारे देश की मलाई और हित करने वाली सरकार का उत्तरदायित्व पुनरुप से बहन कर सकने वाले प्रधान मंत्री को नियुक्त करने की हमारी इच्छा है । स्वभावतः ऐसा प्रधानमंत्री हमारी प्रजा की दुष्मन्ता के सन्ने वाला होता चाहिए । हम अनुभव करते हैं कि निर्वाचन होने



तक और जनता की राय इस प्रकार निश्चित नहीं की जान तक सबसे बड़ी संस्था के नेता का चुन लेना हो आवश्यक तरीका है। इसे बहुतायें ने पसन्द भी किया है। यथार्थतः हमारे प्रधान मंत्री की संस्था के अनुसार अन्य मंत्री हमारे द्वारा नियुक्त किये जायेंगे। प्रधान मंत्री को यह ज्ञान रखना पड़ेगा कि मंत्रिमण्डल संसाधन के बहुत से विभाग एवं देश के विभिन्न भागों को संतुष्ट करने वाला ठीक प्रतिनिधि स्वरूप होना चाहिए और संस्थाओं के प्रति-रिक्त महत्त्व रखने वाले विभिन्न सांस्कृतिक तथा आर्थिक वर्गों का भी ध्यान रखना होगा। इन कारणों से विभिन्न तरीकों में सुझाव दी कि गणकी कार्य के समापति की मान्यता प्रसार बाइगंगा का प्रधान मंत्री पर का कमिश्नर हमारे द्वारा लेकर निम्न मन्त्री का भा मंत्रिमण्डल में हमारे द्वारा नियुक्त किया गया है।



मान्यता प्रसार कोइराला

प्रधानमंत्री साधारण राज्य-व्यवस्था तथा परराष्ट्र मंत्री।

श्री सुर्ज्य समशेर जंग बहादुर राणा —जब मंत्री।

श्री सूर्य प्रसाद उपाध्याय—गृह तथा बाध मंत्री।

श्री महाकाली मिश्र—यातायात मंत्री।

श्री यशोधर मानसिंह—इषि पशु-मरलाज तथा मृमि व्यवस्था मंत्री।

श्री केदार शमशेर जंग बहादुर राणा —रक्षा मंत्री।

श्री महेश्वर विक्रम शाह—उद्योग बाधिम्य रमज मंत्री।

श्री महाश्वर समशेर जंग बहादुर राणा—यातायात विकास ज्ञान बहन तथा विद्युत मंत्री।

श्री बहादुर मान सिंह—समदौष प्रबन्ध मंत्री।

श्री धारवा शमशेर जंग बहादुर राणा—शिक्षा मंत्री।

श्री नारदमणि सुब्बा—ज्वातीय स्वायत्त शासन मंत्री।

श्री मन्मथ प्रसाद सिंह—कानून मंत्री तथा म्याम मंत्री।

श्री नर बहादुर गन्त—उपमंत्री।

श्री बरें रत्न पौडेल—उपमंत्री।

हम इच्छा करते हैं कि हमारे नव प्रधान मंत्री जेदार राजनीतिज्ञतापूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे और मंत्रिमण्डल में जनता की निष्पक्षता सम्मानना तथा सच्चा

बनाय रखने के लिए मंत्रिमण्डल का कार्य सम्पादन करा सकेंगे। जनता की सुरक्षा तथा कानून व्यवस्था स्थापित करने के अतिरिक्त ये महासंघ जनता के नागरिक अधिकार स्पष्ट और निश्चय करना हमारे मंत्रिमण्डल का कर्तव्य होगा।

(क) शासन विभाग का प्रभाव विस्तृत ही न पड़ने का ध्यान रख स्वतन्त्र म्याम विभाग बढ़ा करना।

(ख) पब्लिक सर्विस कमिशन का अच्छी तरह कार्य सम्पादन करना।

(ग) महासंघ संवत् २००९ साल के अन्दर ही वैधानिक सभा जड़ी करने के लिए निर्वाचन का सीधे प्रबंध करना।

(घ) पुलिस तथा सेना का पुन संयोजन तथा उचित शिक्षा का प्रबन्ध करना।

हमारे भूतपूर्व प्रधान मंत्री महाराज मोहन लाम्छेर जंग बहादुर राणा ने अपने को नयी परिस्थिति में ढालने के लिए सज्जुन हो बसाधारण तरीके से काम किया है। हमारी ओर से उन्हें इस कार्य के लिए बधाई दी जाती है कि उन्होंने अपने प्राप्ति अधिकारों तथा अधिकारों को अन्त करके नयी परिस्थिति के अनुसार कार्य सम्पादन किया। हमारी ओर से यह भी आशा की जाती है कि प्रधान मंत्री न रहने पर भी वह नेपास को उन्नति के काम में ध्यान देते रहेंगे।

हम अपने प्रजा की आर्म्मित करते हैं कि वह मंत्रिमण्डल के समक्ष आये हुए कामों में पूरा सहायता तथा सहयोग दें। सरकारी कर्मचारियों को बिनापत्या होशियारी बरतनी है। उन्हें अपने को सरकारी कर्मचारी समझ



जमरल महाबोर लाम्छेर

कर ईमानदारी तथा आदर्श अनुशासन का पालन करना चाहिए। उन्हें हमारी प्रजा की सुविधा तथा भलाई के लिए उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करना चाहिए और अपने कार्य तथा स्वभाव से अच्छा बेशेबक बनने का परिचय देना चाहिए। सरकारी कर्मचारियों को राजनीतिक परिवर्तन की परवाह न करके व्यक्तिगत तौर से बड़ाशारी तथा बड़ापुनक प्रजातान्त्रिक देशों की प्रजातन्त्राद अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।

हम विश्वास करते हैं कि यह नया परिवर्तन स्वच्छ प्रजातन्त्र प्रति एवं समृद्धि की ओर बढ़ने का एक और कदम है।

वी परमेश्वर हमें और हमारे मातहत अधिकारी वर्ग को प्रजा की भलाई करने के लिए हमारे इच्छा पूरी करने में सक्ति प्रदान करें।

नारायण हिट्टी बरवार, काठमाण्डू।

इति संवत् २०८ साल मार्ग १ गते रोज ६ शुक्रम्।

## कांग्रेस सरकार

इस सरकार में नेपाली कांग्रेस के आठ तथा अन्य स्वतन्त्र सदस्य थे। यह सरकार नेपाली कांग्रेस के नेतृत्व में बनी थी और यह जनता के लिए कुछ प्रगतिशील काम भी करना चाहती थी। मन्त्रिमण्डल के इस कब की देखभाल उसी के भीतर रहने वाले बेसीपाहों तथा उनके मन्त्रों ने एक सूझ बाझ बनकर सरकार तथा संस्था के बीच डारें डाल दीं। इतना ही से उस जमात बिजय को सन्तोष नहीं हुआ। कामन्दर जसन फिर पैतरे बढे और जन-सन्निध को दूसरी ओर माइकर एक ऐसी परिस्थिति खड़ी कर दी कि न जनता की इच्छा पूर्ण हुई और न गरस की और न नेपाल के असम चाहन बाधे मित्रराष्ट्र की ही। परिणाम स्वल्प रेश तथाही को जोर डकेसा जाने लगा और उन्ही का आशय पाकर अनावश्यक इच्छा रखने वाले विश्व-मान्य के बाधक सेवा तथा सहायता के बहाने अपन आस फँकाने लगे। इस विधा में उन्होंने एक ओर राजनीति में हाथ बूसाकर सरकार का भारत की कठपुतली तथा निकम्मी साबित करने की चेष्टा की और दूसरी ओर वे छपबेधियों के आधिक जाल को आचार बनाकर भारत-विरोधी भावना फैकाने में जी-तोड़ कोसिस भी करते रहे। इस प्रकार टट्टी की भाइ से छिकार खेसकर देश मरेस तथा भारत को धोख में डालकर जनता के प्रतिनिधियों को बहनाम दिया जाने लगा। यह हुचकंडा न केवल मन्त्रियों के साथ अपितु संस्थाओं के साथ नेताओं पर भी इस्तेमाल होने को आया। इस प्रयास में प्रतिगामी बकिनया को कुछ सफलता का आभास मिला और वे सब एक होकर उन सगटनों को आपस में लडात लगे। इसका प्रारम्भ उस समय हुआ जब मङ्गलसी मिथ को मन्त्रिमण्डल में बाहर निकाल दिया गया और मातुका प्रमाथ कोइराका को हटाकर किसी दूसरे व्यक्ति को प्रधान मन्त्री बनान का प्रयत्न होने लगा।

## सयुक्त मोर्चा

नेपाली कांग्रेस की सरकार ने बाकर के आई मिह तथा उनके साधिया को कटार बण्ड देने की भूतिका तैयार की। दूसरी ओर सचाई को प्रकाश में लाके के लिए मण्डल प्रका परिषद् तथा नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी ने संस्थाओं को एक मच पर लाकर आनीय जनतागिर मयुक्त मोर्चा लड़ा किया।

## बाइमधान सिंह

इस मोर्चा में जलिय नेपाल किनाम मंथ नेपाल राष्ट्रीय दुइ मूनिमन बाबेस स्टूडन्ट



महिष्ठा सब युक्त संघ प्रवर्तिनीय अध्ययन मण्डल तथा समाज सुधार संघ भी सम्मिलित हुए।

राष्ट्रीय जनतान्त्रिक संयुक्त मोर्चा ने बिरेमो प्रभाव को रोकने तथा एक सर्व-होय सरकार की स्थापना की मांग की। उमन डाक्टर के ० आई० मिह को डाकू और खूनी न मानकर उन्हें नेपाल का राष्ट्रीय नेता माना। इसकी प्रतिक्रिया गारे देश तथा समग्र नेपाली जनता पर हुई और चांग मोर कांग्रेसी सरकार का सक्रिय विरोध होन लगा।

राजधानी की मुक्ति सेना तथा राष्ट्रीय सेना को पुरा पता था कि प्रतिक्रियावादी तत्त्व नरेश तथा मित्रराष्ट्र भारत को बरतन स्थिति में रखकर तबजात प्रजातन्त्र का पता बँट देना चाहते हैं। उन्हें देश के अस्तित्व के मजबूत तथा नेपाल को युद्ध का बलाहा बनने की भी आशंका हुई।

राष्ट्रीय जनतान्त्रिक संयुक्त मोर्चा बहुत ही शक्तिशाली सिद्ध हुआ। उमन कार्यकर्ताओं को रचनात्मक कार्यों में निमग्न करके सरकार का सक्रिय विरोध किया।

अक्तूबर में एक सर्वहोय प्रवर्तिनीय सम्मेलन द्वारा इसका घोषणा पत्र तैयार किया गया और टंक प्रसाद आचार्य इसके अध्यक्ष निर्वाचित किये गये। राष्ट्रीय जनतान्त्रिक संयुक्त मोर्चा का घोषणा-पत्र नेपाली भाषा में प्रकाशित किया गया जिसका अन्विकस हिन्दी अनुबाद इस प्रकार है—

जनता के राष्ट्रीय जनतान्त्रिक संयुक्त मोर्चा में सम्मिलित होन के लिए हम लोग विभिन्न राजनीतिक पार्टी जन और वर्गीय संगठन को अन्तिम ध्येय-प्राप्ति के लिए यद्यपि अपन-अपन विभिन्न कार्यक्रम और नीति हैं तो भी आज की ऐतिहासिक स्थिति न हम सबों को देश में वास्तविक जनतन्त्र की स्थापना के लिए एक ही मोर्चा में जड़ा किया है। एक ओर अंग्रेज-ममरीकी साम्राज्यवाद और भारतीय पूँजीवाद का दोषण पक्ष न उग्ररूप बरतन कर रहा है और दूसरी ओर नेपाली कांग्रेस के प्रतिक्रियावादी तथा सोम-बधीम सामन्तवाद के भाव मिलकर सब वर्गों के ऊपर दापण का बक भुमा रहे हैं। देश की मुक्त शान्ति प्रगति और मुक्ति रोकने वाले मही भीतरी और बाहरी प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ हैं। जब तक इन लोगों के पंखों से देश मुक्त नहीं किया जायगा तब तक जनता की क्रिया प्रकार को उन्नति नहीं हो सकती। तदर्थ, हम लोगों को इन लोगों से लड़ना है। आज की परिस्थिति में कोई भी संस्था अकेले लड़कर साम्राज्यवाद और सामन्तवाद गमाल नहीं कर सकती। अतः हम सब जनवादी तत्त्वों को एक ही मोर्चे में संयुक्त होकर साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष करके वास्तविक जनवाद के लिए लड़ना होगा। तब तक लम्बा जनतन्त्र नहीं हो सकेगा यह सिद्ध हो चुका है। अतएव हम संयुक्त मोर्चे में सम्मिलित होनेवाली सभी संस्थाओं जन और वर्गीय संगठनों की प्रवर्तिनीय राजनीतिक और आर्थिक

योजना होगा अत्यन्त आवश्यक है। संयुक्त मोर्चा कोई एक राजनीतिक पार्टी बनना जन या वर्गीय संगठन न नतुल्य में नहीं बना है। इसका सञ्चालन सम्मिलित सभी शक्तियों के नेतृत्व में होगा। इस संयुक्त मोर्चे के निर्माण में नेपाल की जनता की बहुत दिनों की इच्छा पूरी की है। देश के सब जनबाधों तर्कों को मिटकर सामन्तवादी साम्राज्यवादी और उनके दलाल प्रतिस्पर्धावाधियों के बिस्मृत करना होगा। यह मानना हमारे देश के अन्तिकारियों के मन में बहुत दिनों से उठ रही थी। इसलिए अपना-अपना कार्यक्रम और मोर्चा यद्यपि नहीं मिलते हैं तो भी किसी भी पार्टी बनना देश के नेतृत्व में नेपाल के प्रत्येक जनबाधों काम में नेपाल की जनता पार्टी और दल शुरू से ही सहयोग देते चले जायेंगे। नेपाली कांग्रेस के नेतृत्व में हुई गठ सघटन क्षमति में भी नेपाल के सभी दल जन और वर्गीय संगठनों ने सहयोग दिया था। उसी सहयोग के फलस्वरूप उस समय ने व्यापक रूप धारण कर लिया और सब तरफ जनता की जीत और राजाछाही की हार होती गई। उस संघर्ष का नेतृत्व सिर्फ नेपाली कांग्रेस के हाथ में ही नहीं बल्कि प्रगतिशील शक्तियों के हाथ में जाने लगा। इसके फलस्वरूप अंग्रेज-अमरीकी साम्राज्यवाद भारतीय पूँजीवाद मोहनपुट और नेपाली कांग्रेस के प्रतिस्पर्धावादी नेता वर्ग से लेकर श्री त्रिभुवन ने बढ़ाकर दिल्ली-समाप्ति किया। इस दिल्ली-समाप्ति का मुख्य अर्थ 'साम्राज्यवादी और सामन्तवादी शोषण को समाप्त करें'—कहकर आग बढ़ाना था नेपाल के प्रगतिशील तर्कों को बढ़ने में रोकना नेहरू सरकार के आदेशानुसार चलन वाली एक पिछड़ा सरकार नेपाल में खड़ी करना और साठ चीन और नेपाल की जनता की बढ़ती हुई जनवादी एकता में लालत डालना था। इस बात की पुष्टि आजकल की प्रत्येक सरकारी कार्रवाई में हम लोग पा रहे हैं। प्रत्येक बात में नेहरू सरकार का हस्तक्षेप रहता है। यहां तक कि प्रचार मंत्री से लेकर सभी मंत्रियों की छुट्टी भी नेहरू सरकार ही करती है।

देश के संयुक्त मोर्चा को बनाने के लिए हमारे देश के अन्तिकारियों ने जो बिठाया है उसी के अनुसार नेपाल प्रजा परिषद् कम्युनिस्ट पार्टी अन्य प्रगतिशील जन और वर्गीय संगठनों के प्रमाण न आज संघठित रूप धारण किया है। यह देखकर प्रतिस्पर्धावाधियों की नींद हरात होने लगी है। इस मोर्चे को तोड़ने के लिए उन लोगों ने सैद्धान्तिक और पुलिस द्वारा हमला किया। संयुक्त मोर्चे में सम्मिलित संस्थाओं और अन्य जन-संगठनों के बीच में फूट डामन के लिए उन्होंने यही तक बढ़कर प्रचार किया कि वह संस्था कम्युनिस्ट का रखा हुआ जान है। लेकिन देश की आजादी के लिए बढ़ने वालों को यह पता चला था कि संयुक्त मोर्चा न तो कम्युनिस्ट पार्टी का रखा हुआ जान है और न ही कम्युनिस्टों के हक में रखा हुआ है। इन संस्था का निर्माण तो नमस्त अन्तिकारी शक्ति और उनकी इच्छाओं का फल है और प्रतिस्पर्धावाधियों को नष्ट करने का एकमात्र बचम है। अनेकों तरीकों में आज रचना भी हमारी नातिवारी एकता में फूट डालने में जनमर्ग

होकर प्रतिश्रियावाधियों न हमारे उद्घाटन को असफल कराने के लिए हमारे समापति कॉमरेड टंक प्रसाध पर लूठा अभियोग लगाकर गिरफ्तार किया और हमारे अर्धी कॉमरेड गौरीशक्त को पकड़ने के लिए चारण्ट जारी किया और अनेकों साधियों को जल में भी डूँस दिया। बेसबाधियों न इसका जबाब सभा प्रदर्शन और हड़ताल से दिया। अपनी परम्परा की रक्षा करते हुए किसान मजदूर, सहिष्णु आदि सबों न संघर्ष में डटकर भाग लिया—विद्यार्थी विमकी परम्परा उज्ज्वल है—उन लोगों का संघर्ष में डटकर उसका नेतृत्व करना स्वाभाविक है। राजबन्धियों की मुक्ति के लिए और राणा-कोइराला मजि मंडल के विरुद्ध आन्दोलन स्रिष्ठ गया। कासकर राजधानी में इसने उध रूप धारण किया। बाहिरकार सरकार राजबन्धियों की मुक्ति के लिए ही बाध्य नहीं हुई बल्कि स्वयं भी हटी। यह प्रतिश्रियावाधियों की हार और प्रपतिधीन शक्तियों की विजय का मूर्त रूप है। मोहन और विश्वेश्वर को मजिमण्डल में रखकर 'जब जनता की भुसावे में रक्षता असंभव है' यह बात भीतरी और बाहरी प्रतिश्रियावाधियों न देखी। फिर जनता की आँखों में बुरा दासने के लिए मजिमण्डल में हेर-फेर करना निहान्त आवश्यक हो गया। ये सब हस्तक्षेप हमारे देश के लिए और उसमें रहने वाली समस्त जातियों के लिए एक भारी अपमान बनक है।

अंग्रेज-अमेरिकी साम्राज्यवाद और भारतीय पूँजीवाद हमारे देश में क्यों हस्तक्षेप कर रहे हैं ? इस प्रश्न का उत्तर समझना बहुत जरूरी है। कासकर अंग्रेज-अमेरिकी साम्राज्यवादी नेपाल को अपना तृतीय विश्वयुद्ध की योजना में जनवादी चीन के विरुद्ध फौजी अड्डा बनाना चाहते हैं और नेपाल के मुक्कों को अपनी फौज में मर्ती कर एशियाई जातियों के मुक्ति-आन्दोलन के विरुद्ध बही अपनी कछुओं पुन कायम रखना चाहते हैं। बिराटमगर आदि स्वानों में मिल जोलकर देश के व्यापार में पञ्चद्वार प्रतिष्ठ से अधिक खेपर हस्तगत करके भारतीय पूँजीपति लोग नेपाल की प्राकृतिक सम्पत्ति ज्ञान जगल इत्यादि में भी अपना एकाधिकार कायम करना चाहते हैं। इन लोगों के हस्तक्षेप करने का कारण यह भी है कि भारत चीन और नेपाल की जनता की जनवादी एकता में मुठारुबात करना।

जब तक हम अपने देश को अंग्रेज-अमेरिकी साम्राज्यवाद भारतीय पूँजीवाद और वैशीय सामन्तवाद के जंगल से मुक्त नहीं करेंगे तब तक हमारी उन्नति नहीं हो सकेगी। हमारे जनवादी कार्य में वे लोग बैसी ही बाधाएँ दे रहे हैं जैसी पहले से ही देते रहे हैं। अण्डर आत्मनिर्णय के अधिकार के आधार में सबका हित करने वाली सरकार खड़ी करने के लिए अंग्रेज-अमेरिकी साम्राज्यवाद, भारतीय पूँजीवाद और वैशीय सामन्तवाद के विरुद्ध संनद्धि होकर लड़ना नेपाल के विभिन्न वर्गों का प्रथम कर्तव्य है। सामन्तवादी (राजावादी) और साम्राज्यवादी शोषण से ही हमारे देश में संघर्ष संघटन और एकता का जमाव है। इस जमाव की पुति करना हमारा प्रथम लक्ष्य है।

हम सामन्तवादी भूमि-व्यवस्था का पूर्णतः विरोध करते हैं लेकिन उसके उन्मूलन के लिए हम क्रमशः कदम बढ़ाते हैं। फिरहास हम कृषक राणा और अन्य सामन्तों को भूमिहीन कर उन लोगों को मध्यवर्गीय जीवन स्तर में रखकर किसानों में बाँटते हैं। छोटे-छोटे जमींदार जिम्माबास और किराँत बान्तों की भूमि हम नहीं छूटते हैं, क्योंकि वे लोग भी बिदेसी साम्राज्यवाद और बड़े-बड़े राणा जमींदार, किराँत बान्तों से सहाएँ ही बाँटे हैं। अतः वे लोग भी हमारे संयुक्त मोर्चे में सम्मिलित हो सकते हैं। इसके लिए हम जमीन भी करते हैं। संयुक्त मोर्चे का ध्येय नेपाल में मजदूर किसान मध्य वर्ग और जातीय-पूँजी-पतियों का प्रतिनिधित्व करने वाले सच्चे जनवादी तत्त्वों के नेतृत्व में पूरी जनवादी सरकार कायम करना है। इस ध्येय की प्राप्ति के लिए नेपाल के विभिन्न वर्गों की मजबूती—एकता एक महान् हथियार है। इस हथियार को मजबूत न करने से अंग्रेज-अमरीकी साम्राज्यवाद और भारतीय पूँजीवाद को देश से निकालने और देशीय सामन्तवाद को समूल ध्वंस के लिए हम असमर्थता का अनुभव करेंगे।

बिदेसी साम्राज्यवाद के पक्ष में चलने वाली कोई भी सरकार हमें देश को मुक्त कर सकती है और न ही देश में जनतन्त्र ही कायम कर सकती है। भाषा-सरकार की यही हानि है। आज की हमारे देश की ऐतिहासिक स्थिति ने हम लोगों को एक ही मोर्चे में लड़ा हुआ देश को मुक्त करने और देश में जनतन्त्र कायम करने की जिम्मेदारी हमारे ऊपर रख दी है। इस ऐतिहासिक जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक निभाने के लिए संयुक्त मोर्चा निम्नलिखित उद्देश्यों को कार्यक्रम में परिणत करेगा—

१ अंग्रेज-अमरीकी साम्राज्यवाद भारतीय पूँजीवाद और देशी सामन्तवाद के ऋण से देश को मुक्त कर मजदूर किसान मध्यवर्ग बुद्धिजीवी और जातीय पूँजीपतियों की प्रतिनिधित्व करन वाली जनवादी सरकार सच्चे जनवादियों के नेतृत्व में सही होगी।

२ सामन्ती भूमि-व्यवस्था को खत्म करने की बात माने रखकर क्रमशः जाबरजब्र भूमि-सुधार करेगा। मजदूर को जीवन-निर्वाह के योग्य वेतन दिलाएगा और किसानों के लिए उन्हीं के सहयोग में सरकारी मंस्वातें लुप्तवाएगा। स्थानीय सरकारी कृषि बैंक लड़ा करके उसके द्वारा कम व्याज पर ऋण और कृषि के औजार दिलाएगा।

३ किसानों के ऊपर लड़ा हुआ सामन्ती शोषण का अनुचित कर्म खत्म कर जनता की एक तमस्फुट जाग जागरण लड़ी करके नाजायज तमस्फुट को रद्द करेगा।

४ देश को सच्चे तौर से औद्योगीकरण करने के लिए इच्छुक जातीय पूँजीपतियों के उद्योग-अर्थों को प्रोत्साहन देकर बढ़ाएगा। भारत में जाकर नेपाल में व्यापार करने वाले छात्र-छात्रे व्यापारी लोग नेपाल में कमाई हुई पूँजी को भारत में न भेज जाकर नेपाल के ही उद्योग में लगाने हैं तो उन लोगों के प्रति हमारा व्यवहार जातीय पूँजीपतियों की तरह होगा।

५ छोटे-छोटे व्यापारियों को उनके व्यापार में हर प्रकार से व्यापारिक मुक्ति

भीर मरवा दी जायगी।

६ मजदूरों को जीवन-निर्वाह के योग्य तमज्ज आठ घंटे का दिन बीसवीं सदी के दशक संगठन और हड़ताल करने का हक और उपयोग-बचा बचाने वाले बोर्ड में बराबर मान दिसाना। स्वतन्त्र काम करने वाले दस्तकारों के लिए तो ६ घंटे का दिन होगा।

७ महिलाओं को बराबर (समान) कार्य में समान वेतन दिलाएगा। आनीस जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के समान हक देस और इसकी योग्य बनाने के लिए हर संभव उपायों से उन लोगों की सहायता की जायगी। मजदूर-स्त्री के लिए प्रसव के पहले एक महीने और बाद की दो महीने सवेतनिक छुट्टी दिलाएगा।

८ बर्ग की जाड़ में होने वाले घोषण को समाप्त करेगा लेकिन पूजा-पाठ करने के लिए धार्मिक स्वतन्त्रता पूर्ण रूप से दिसाएगा।

९. बाल में अनिवार्य निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा अपनी मान्यता में दिसाएगा।

१०. उच्च शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय यदि मुक्तबाएगा।

११. जनता के मौलिक अधिकारों को पूर्ण रूप से सुरक्षित रलेया।

१२. देश की सभी बातें वचवा बर्ग के मनुष्यों में सेव माव न रलकर सामाजिक और राजनीतिक अधिकार समान रूप से दिया जायगा।

१३. स्वतन्त्र न्यायालय चुमाव करके लड़ा किया जावना परन्तु यदि निर्वाचित व्यक्तियों में भी अपनी जिम्मेदारी की पाबन्दी को ब्याक में न रलाता उन लोगों को बर्तन करन का अधिकार भी बोटों के आधीन होया।

१४. देश में महाभारी को रोकने के लिए पहले से बन्वोबस्त करने के लिए भीर जनता की स्वास्थ्य रक्षा के लिए केन्द्र-केन्द्र में बस्यताक और सुतिका-गृहों को चुनवाने का आयोजन करेगा।

१५. भारत और चीन से बिसेय राजनीतिक सम्बन्ध रलेगा और अन्य प्रजातान्त्रिक देशों से भी पारस्परिक लाभ के आधार पर सम्बन्ध कायम करेगा।

इस समय संयुक्त मोर्चा विम्वक्तित्त तात्कालिक माँगों की पूर्ति के लिए माँव करता है —

१. नपास में अंग्रेज-अमरीकी पूजी को घुमन मही दिया जाय लेकिन जनवादी चीन अन्य जनवादी राष्ट्र और भारत से भी अपने राष्ट्र के नाम के आधार में राष्ट्र का भीषोनी-करव करने के लिए पूजी सी जाय।

२. इस अन्तरिम काल के लिए समस्त ब्रतिसीत राजनीतिक दल जन और वर्गीय संघर्षों के प्रतिनिधियों की एक सलाहकार समिति का मठन किया जाय। यह समिति अपने में से एक मंत्रिमण्डल चुनेगी जिसके तात्कालिक में बिधान-मन्त्र को चुनाया जाय। मंत्रिमण्डल सलाहकार समिति के प्रति उत्तरदायी होगा।

३. राजा और सामन्तों की भूमि और कृषि-आवन उन लोगों को मध्यवर्गीय जीवन-



स्तर के अनुसार जीवनयापन करने के लिए जमीन देकर बिना मजबूती अथ किये जायें और गरीब किसान कोटिहर मजदूरों में बांटा जाय। परती जमीन को किसानों में बांट कर आबाद करने के लिए सरकार से सहायता ही जाम।

४ मजदूरों के संगठन और हड़ताल करने के मामले में सरकार की तरफ से कुठाराघात न हो। उन लोगों की इस समय की माँग को पूरा किया जाय। उन लोगों की छुट्टी भी बन्द की जाय।

५ सुरक्षा कानून प्रेस कानून तथा अन्य हमनकारी कानूनों को रह करके जनता को पूर्ण रूप से नागरिक अधिकार प्रदान किये जायें।

६ स्वतन्त्र न्यायालय की स्थापना सप्ताहकार समिति द्वारा की जाय और न्यायाधीश को बापस बुलाने का हक भी उसी समिति को दिया जाय।

७ मंत्री और अन्य अधिक बैठन पाव वालों आगीरदारों के बैठनों में कमी करके सभी प्यूनवेलनिक वर्मचारिया को जीवन-निर्वाह करने के उपयुक्त तलब कर दिया जाय।

८ पुरानी फौज को रखा इस की भाँति मुबिमा और तलब दिया जाय। रखा इस का किसी भी इस अथवा सस्था की सेना के रूप में न रखकर सरकारी फौज में मिलाया जाय। पुरानी फौज और रखा इस के आतंककारी रूप को हटाने के लिए उन लोगों को बेतसेबक रूप में बिकसित किया जाय।

९ सेना और पुलिस का कर्ष बटाकर शिक्षा और स्वास्थ्य में बढ़ाया जाय।

१० शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए स्कूल कालेज अस्पताल और भूतिका-गृह इत्यादि का प्रबन्ध किया जाय।

११ देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए वित्त आयोग नियुक्त कर विशेषी मुद्रा प्रचलन और स्फीति रोकने के लिए उचित कार्रवाई की जाय।

१२ देश भर में धीप्र ही मार्च अथवा यातायात का प्रबन्ध किया जाय। डाक के प्रबन्ध को सुव्यवस्थित करके—डाक के अभाव के स्थानों में उसकी पूर्ति की जाय।

१३ देश में पशुपालन पृह-उद्योग का प्रचार और बृद्धि की जाय। जंगल रखा का सुप्रबन्ध भी किया जाय।

१४ भारत के समत की गई ब्रिटिश-नपास फौजी मंथि को रह करके मिलाया से गोरगा फौज बुलाई जाय। इस फौज की रोटी-रोटी का प्रबन्ध भी किया जाय।

१५ जनबादी चीन स बीत्य और मंत्री सम्बन्ध धीघातिभीघ कायम किय जायें।

### समुक्त मार्चा और अन्तर्जातीय शोत्र

यह स्पष्ट है कि आज समार को भागों में विभक्त हो गया है। एक तरफ कमरीकी साम्राज्यवाद के अनुसार में विभिन्न साम्राज्यवादी और प्रतिजियावादी सरकार और उनक पिष्टुकी की जनबाद-विरोधी कैम्प है तथा दूसरी ओर सम्राजवादी और जनबादी देशों

के मनुष्य में साम्राज्यवाद विरोधी जनवादी और शान्तिवादी है। पहले कैम्प का मुख्य ध्येय अपना स्वार्थ के निमित्त दूसरों के देश का इस्तेमाल आतंक-आन्दोलन का हथियार और विश्व-शान्ति और जनवाद में बाधा डालकर तृतीय विश्व-युद्ध की तैयारी करना है और दूसरे कैम्प का मुख्य ध्येय विश्व में शान्ति और सुरक्षा कायम करना है। इसका अत्यन्त मोर्चा विश्व-शान्ति चाहता है। साम्राज्यवादियों के युद्ध को उपनिवेष्टों में बल रहे है वह उनका विरोध करता है। संयुक्त मोर्चा विश्व के इतिहासीक तथ्यों के प्रति और साथ ही मुक्ति-आन्दोलन के प्रति सदा सहानुभूति रखता है।

### संयुक्त मोर्चा और विश्व-शान्ति आन्दोलन

नेपाल विश्व-युद्ध की ओर से बच नहीं सका है। प्रथम और द्वितीय विश्व-युद्ध में हमारे लाखों माइनों के प्राण इन साम्राज्यवादियों की स्वार्थ-रक्षा के लिए बलिदान हो गये यह हम सबों को विदित है। इसका फल यह हुआ कि हमारी कितनी बहिन-बिहवा हुईं उन लोगों की विधवा बरबाद हुईं कितने ही बालक-बालिकाएँ अनाथ हो गये और कितने ही माँ-बाप पुत्र-सौक से बिछल हो गये। फिर लड़ाई के बाद भी आर्थिक संकट पूँजीवादी संसार में फैला उसकी चपट में जाने से नेपाल भी बच नहीं सका। आज नेपाल में अन्ध-तक आर्थिक संकट और दुर्बिधा है। पूँजीवादी संसार भर में यही हासल है। साम्राज्यवादियों की जनता की इच्छा से कोई मतलब नहीं किन्तु अपनी बीबी भरती है। अपनी स्वार्थ-रक्षा के लिए साम्राज्यवादी तृतीय विश्व-युद्ध को तैयारी कर रहे हैं। वे समाजवादी हथ और जनवादी चीज को अपना मुख्य ध्येय समझते हैं। इसलिये आज वे उन मुश्कों के चारों तरफ घेरी अड्डा बना रहे हैं। अधिक बलान की चपटा जारी है। इन्हीं घेरी अड्डों के अन्दर एक नेपाल की है। यदि नेपाल साम्राज्यवादियों का छोटी अड्डा बन गया तो क्या सोचे सोचियों और मछलो गली और सड़क मस्जिदों और मस्जिदों को बसम नहीं करेंगे। सब नेपाल की जनता व्यस्त होनी। नेपाल और नेपाल की जनता की इस तरह की बरबादी हम कदापि देख नहीं सकते। इसके लिए हम लोग आज ही से संघर्ष करेंगे और नेपाल को युद्ध का अड्डा किसी हाथ में भी नहीं बनने देंगे।

विश्व की शान्तिप्रिय जनता के संयुक्त-विरोध के कारण जपानी साम्राज्यवाद फारिया में अत्यन्त विराने की हिम्मत नहीं कर सका। उनकी आवाज उनके मन ही में बटक गई। यह शान्तिवादियों की महान् विजय है। विश्व-शान्ति कायम रखने के लिए हम तीन फ़ाँस बिलायत और अफ्रीका के बीच में शान्ति-मंथि डालनी चाहिए। यह विश्व-शान्ति के लिए शोचन आन्दोलन बना रही है। हम आन्दोलन का संयुक्त मोर्चा हरम में अमल कर रहा है और इसका और मजबूत बनाने के लिए नेपाल की जनता प्रतिज्ञा करती है।

संयुक्त मोर्चा की ऐतिहासिक आवश्यकता और देशवासियों के कर्तव्य

नेपाल का राष्ट्रीय मुक्ति-आन्दोलन आज नया चरण बढ़ा रहा है। जनता का प्रबल



करने तथा देश को विदेशी हस्तक्षेप से बचाने के निमित्त बढ़ा हुआ था। उसने नेपाली कांग्रेस की सरकार की जड़ें भी जोड़े ही समय में हिंसा की ओर अभिमण्डक भग होल को हास्य में परिवर्तित किया। यद्यपि वह मोर्चा बहुत घमस तक कायम नहीं रहा, तथापि उसने एक ऐसे वातावरण की सृष्टि कर दी जो कालांतर बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई।

### सिंह दरबार काण्ड

राजधानी की जनता नेपाली कांग्रेस की राष्ट्रवादी नीति से बहुत तंग आ गयी थी इसलिए उसने उसका सक्रिय विरोध किया। नेपाली कांग्रेस की सरकार डाक्टर के.आई. सिंह पारि को हथ देकर सारा अपराध भारत सरकार के ऊपर मढ़ देना चाहती थी। इस बात को राजधानी की जनता तथा राष्ट्रीय सेना समी मानि जानती थी। इसके बावजूद भी कांग्रेसी सरकार प्रांथनी पर आमादा की यद्यपि मुक्ति सेना डाक्टर के.आई. सिंह को अच्छी तरह से देखती थी।

नेपाल की राजधानी काठमाण्डू की जनता ने पञ्चोसी जनवादी मये चीन के साथ भी कूनीतिक सम्बन्ध स्थापित करण की मांग की। उसने अन्तरिम काल में एक सर्व राष्ट्रीय सरकार की भी मांग की। वह डाक्टर के.आई. सिंह को डाक तथा कूनी न मान कर नेपाल का राष्ट्रीय नेता मानती थी।



डॉ० लुडर ईंग्रिह्ट तथा कर्नल बहादुर सिंह मुक्त

२२ जनवरी सन् १९५२ ई. को साईं प्याण्ड बजे रात्रि में डाक्टर के.आई. सिंह तथा कर्नल बहादुर सिंह गुप्त तथा उनके अन्य साथी बेल से बाहर निकल पड़े। सिंह दरबार से निकलते ही डाक्टर सिंह ने बिना रक्तपात

रक्षा बल के सैनिकों की सहायता से सचिवालय सरकारी कोष रेडियो हाउस स्नागार, तोपखाना बाइबलाना तथा भोबर हवाई बन्दे का अपन अधिकार में कर लिया। रक्षा बल के सैनिकों ने रात्रि ही में अन्तरिम सरकार के सभी मंत्रियों को समाप्त र नारायण हिट्टी दरबार को भी तोप से चढ़ा देने की योजना बना ली थी किन्तु डाक्टर उग्र ने सभी सैनिकों को अहिंसा ही से काम सेने तथा राष्ट्रीय सेना का बिना रोक-टोक के बिचार के सेने की आज्ञा दे दी। छारी राजधानी पर डाक्टर सिंह का बाइबू बंटा आधिपत्य हुआ और वह नेपाल के सर्वोच्च रहे। सभी मंत्री साही भवन में सरण भिसे रहे। भुधरे दिन जादे तक ही उन्होंने एक प्रसाद आचार्य तथा मंत्री मनेसमान सिंह को बुला भेजा। त के बाद सिंह ने छारी स्थिति प्राप्त करने की दूरदृष्टि से काम किया। उन्होंने सन्धिपूजक समझौते द्वारा अपनी सारी माँगें पूरी कराने की कोशिश की। डाक्टर के बाद सिंह ने इसी अभिप्राय से 'शान्ति संदेश' देकर महाराजामिराज तथा सभी भयभीत मंत्रियों को जो नारायण हिट्टी दरबार में सरण भिसे हुए थे भयभक्तन दे दिया। डाक्टर के बाद सिंह ने एक प्रसाद आचार्य भुँवर कल्लू सिंह तथा मनेसमान सिंह के द्वारा अपनी माँग महाराजामिराज के पास भेजी। वह सभी प्रमतिधीन राष्ट्यों से मैत्री स्थापित करके नेपाल के पड़ोसी भारत और चीन के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध कायम करन बेश में एक सर्वोपरीय सरकार बनी करन एक राजनीतिक सम्मेलन बुला कर उनके निर्णय का मास्यता देने शान्ति से सब काम करन पंचवर्षीय योजना को

अविम्व्य कार्यान्वित करने तथा सर्वोपरीय के मार्ग को अपनाने के पक्ष में थे। सासन के सभी अंग डा सिंह के आधीन थे किन्तु उन्होंने रक्तपात बचाने के बिचार से राजधानी में उपद्रव नहीं होने दिया। कोई ही बप्टों में डा सिंह को ऐसा आभास मिला कि यदि उन्होंने तुरन्त ही अपने आधिपत्य का परिरक्षण नहीं किया तो काठमाण्डू में रक्तपात हुए बिना न रहेगा। इससे वह स्वयं स्वदेश छोड़कर तिब्बत की ओर प्रमाण कर गये। नेपाल सरकार ने तिब्बत सरकार से डाक्टर के बाद सिंह को पकड़कर नेपाल भ्रम देने की अपील की किन्तु ल्हामा की सरकार ने डाक्टर सिंह तथा उनके सभी साथियों की मय चीन



डा. के. आई. सिंह

की राजधानी पेरिंग भेज दिया जहाँ वह चीन की जनवादी सरकार के अधिधि बना

सिमे गये ।

### परामर्शदाता समिति

इस बीच में नेपाल में मानुका प्रसाद कोइराला की अध्यक्षता में जो नयी सरकार स्थापित हुई थी उसमें पारस्परिक मतभेदों के फलस्वरूप दिन-प्रति-दिन सगड़े बढ़ते ही गये और अन्त में महाराजाजि राज का बाध्य होकर उसका तथा सलाहकार सभा का अन्त कर देना पड़ा और शासन की बागडोर अपने हाथों में ले लेनी पड़ी । इस अवसर पर जो शाही घोषणा हुई वह इस प्रकार है—

हमारी प्यारी प्रजा

मंत्रिमण्डल के कुछ सदस्य तथा हमारे प्रधान मंत्री श्री मानुका प्रसाद कोइराला द्वारा अपने पदों का त्यागपत्र देने के कारण मंत्रिमण्डल भंग हो गया है । वर्तमान परिस्थिति में सहयोगपूर्णक प्रवृत्ति के लिए अच्छी तरह काम चलाने कायक तत्काल किसी नये मंत्रिमण्डल का गठन समझ मही है । किन्तु देश की इस घम्भीर और नाजुक परिस्थिति में शासन-व्यवस्था में किसी प्रकार की दिवाही और खोजकापन न आने देन के लिए तत्काल ही इसकी व्यवस्था भी अत्यावश्यक हो उठी है । अतः देश की विभिन्न वर्गीय जनता के हित को ध्यान में रखते हुए, अपन इस प्रिय देश का शासन संचालन-कार्य कुछ परामर्शदाताओं की सहायता से चलाने का निश्चय करते हुए हम ने पाँच सलाहकारों की नियुक्ति की है जिनकी नामावली इस प्रकार है—

- १ श्री जनरल केसर समसरा ।
- २ श्री मेजर जनरल महावीर समशेर ।
- ३ श्री अध्यक्षम सिङ्ग ।
- ४ श्री सेफ्टिनेष्ट जनरल सुरेन्द्र बहादुर बस्नेत ।
- ५ श्री काजी माणिक काम ।

उपरोक्त परामर्शदाताएँ हमारी इच्छानुसार अपने पदों पर कार्यम रहते हुए हमारे प्रति उत्तरदायी होंगे । सहयोगपूर्वक एक प्रकार से स्थायी हो सकने वाले कार्यक्षम प्रशासनात्मक तथा जन विश्वास और सम्प्राप्ति प्राप्त करके जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकने कायक किसी मंत्रिमण्डल का सहयोग और सहायता प्राप्त न होने तक हमारा यह उपरोक्त प्रबन्ध कार्यम रहेगा ।

हमारे विस्मयनायक प्रधान मंत्री श्री मानुका प्रसाद कोइराला के मृत्यु में भूतपूर्व मंत्रिमण्डल न जनता की सेवा करने का भरमक प्रयत्न किया है । अतः प्रत्येक मंत्री द्वारा किये गये उनके मुकाबलों की मैं प्रशंसा करता हूँ । भूतपूर्व प्रधान मंत्री और अन्य सभी मंत्रियों की उनकी भविष्य-पूर्व सेवा के लिए, हमारा कृतज्ञता है । आज मंत्रि-पर मर रहते हुए भी उनके द्वारा अपने-अपने क्षेत्र से भलाई और देश की सत्तरीसर वसति के लिए सरकार को प्रत्येक सक्षम सहायता प्राप्त होती रहेगी ऐसी मेरी

जाता है। यह विस्तृत स्पष्ट है कि प्रजा वर्ग से सरकार को उत्तरदायित्वपूर्ण तथा महत्वपूर्ण कार्यों में सम्पूर्ण सहयोग मिलता रहे और देश में शान्ति तथा सुखवस्था स्थापित रहे तभी हम उन्नति और प्रगति मार्ग पर अग्रसर हो सकेंगे। इस शक्ति और सुखवस्था को स्थापित रखने के लिए सभी का सम्पूर्ण सहयोग आवश्यक है। हमारी यह भी इच्छा है कि सभी सरकारी कर्मचारी अपने कार्यों को ईमानदारी, तत्परता और निष्ठापूर्वक करने में समर्थ रहें। प्रजातांत्रिक पद्धति में सरकारी कर्मचारियों को राजनैतिक संस्था और दलबन्धियों से सर्वथा पृथक् ही रहना पड़ता है तथा व्यक्तिगत काम और लाभ से अपने को मुक्त रखकर निष्पक्षता और राजनैतिक की परम्परा की स्थापना करनी पड़ती है। उच्चशिक्षा का उत्तरदायित्व अब और अधिक हो गया है। उसके सभी कर्मचारियों में अब उच्चतम प्रवीणता तथा बख्शता की आवश्यकता है। उन कर्मचारियों में अब इन गुणों का अभाव नहीं रहना चाहिए। हमारी इच्छा है कि देश और जनकल्याण के लिए 'नमक-हलासी' का समाप्त रक्त हुए, हमारी राजनैतिक सेना तथा पुलिस भी निष्पक्षता और ईमानदारी के साथ अपना-अपना कार्य करती रहे। हमारी राजनैतिक सेना का अधिकार राजनैतिक तथा ईमानदारी का इतिहास प्रसिद्ध है। देश और राजा के प्रति अग्रजगत भ्रष्टाचार हमारी सेना के जवानों ने और अफसरों ने धर्मीर और निष्ठा परिस्थितियों का सामना करते हुए अनेकों साहसिक विजय प्राप्त की है और इसमें हमें अब भी शक नहीं है कि हमारे पौरो जवान तथा सेना के अफसर वर्ग अपने उस गौरवपूर्ण इतिहास में किसी प्रकार का कमजोर और कमजोर न लगने देकर उसकी स्वतंत्र उज्ज्वलता को कायम ही रखेंगे। हमारे सैनिकों की बहादुरी संसारप्रसिद्ध है और हमें पूरा विश्वास है कि देश में शान्ति और सुखवस्था कायम रखने के लिए, जनता की भलाई और उन्नति के लिए उनका सहयोग और अधिकपूर्ण सेवा सम्पूर्ण मात्रा में प्राप्त होती रहेगी।

समाहकार समा का काम समाप्त हो चुका है किन्तु इस उन्नति के लिए शक्ति है। देश के विभिन्न भाग और क्षेत्रों से आने के कारण समाहकार समा के सदस्यों से देश के शासन राज्यपाल में प्रचुर सहायता प्राप्त हो सकती है। इस संकट काल में मंत्रिमण्डल में शून्य के कारण यद्यपि समाहकार समा से अपने उसी रूप में हमें सहायता नहीं मिल सकेगी फिर भी समा के सदस्यों से हमारी आशा है कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में सरकार और शासन को सहायता देंगे रहेंगे।

हमारी इन कुछ इच्छाओं को कार्यान्वित करने के लिए नेपाल अन्तरिम शासन विधान (संख २ ८) में दबानुकूल संशोधन और हो ही जायगा। हम जाना करते हैं कि सहयोग सद्भावना कायम रखते हुए, एक प्रकार से स्थायी हो लाने वाले सक्रिय और प्रभावशाली मंत्रिमण्डल के संघटन की संभावना न हो सके तक हमारी प्रिय प्रजा के हित और कल्याण के लिए किया गया यह प्रयत्न सुचारु रूप से चलता रहेगा।

इस जनमानस प्रयत्न के अनुसार शासन-व्यवस्था में सम्भव सभी का प्रयास के

निमित्त समुचित प्रयास करने का बूझबोरी 'प्रजाचार और नियुक्ति' में पञ्चपात की निर्मूल करने का जनता की तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने का मौलिक हक की स्पष्ट परिभाषा तथा व्याख्या करने का और संविधान मभा के लिए सम्मेलन शीघ्रता-पूर्वक बुलाव करवाने का सर्वप्रथम कर्तव्य होमा ।

श्री पञ्चपातिमात्र और श्री गृहसचरी माता से हमारी प्रार्थना है कि हमारी प्याी प्रजा और सभी की भलाई के निमित्त हमारे हाथ किये गये इस प्रयत्न को सुचारु रूप से चालने के लिए हमें और हमारे सभी मातहतों को बल प्रदान करें ।

नारायण सिंह हरिवार,

काठमाण्डू

सुभ सकल २००९ साल भाद्रप १० गते गेज ५ पुमम् ।

परामर्शदातु सरकार की नियुक्ति को राजनीतिक सम्भावों ने एक प्रतिक्रियावादी कदम ठहारा और वे सब एकस्वर होकर प्रजासत्ताग जाचार पर अभी एक सार्वजनिक मंत्रिमण्डल की माँग करने लगे । यह सरकार राजनीतिक सम्भावों के लिए एक चुनौती सिद्ध हुई । बाव में परामर्शदातु सरकार के प्रमुख मन्त्राङ्कार जनरल केसर समथर बसाए गये । यह सरकार भी बहुत दिनों तक नहीं चल सकी और वह भंग हो गई ।

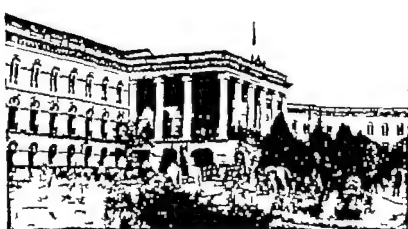
### नया मंत्रिमण्डल

गेरु ने मातृका प्रसाद कोइराटा से नया मंत्रिमण्डल बनाने को कहा । उन्होंने १५ १ १९५३ को अपने ही एक 'राष्ट्रीय प्रजा पार्टी' की नई सरकार बनायी । जिसमें त्रिपुरवर सिंह सूर्यनाथ राम गारुष मारदकुनि पुरुषुग महावीर समथर सभी हुए ।

राष्ट्रीय प्रजा पार्टी की सरकार में कुल पाँच व्यक्ति थे जिनमें चार सत्ता के तथा एक स्वतन्त्र सदस्य थे । केंद्रीय सरकार की कमजोरी ने जिनमें प्रजाचार तथा बूझबोरी की माता बड़ जली । राजधानी में भी सेपाली मुद्रा का विनिमय मात्र काफ़ी नीचे गिर गया । इनके अतिरिक्त सरकार की मधोनरी का पंगु पाकर सराई में किसान आन्दोलन भी जोर पकड़ने लगा । इस प्रकार के आन्दोलन सामन्ती शोषणों के विरुद्ध छिड़े । इनमें सरकार अपनी स्थिति संभालने में असमर्थ रही । पश्चिमी नेपाल के छोटी प्रान्त में बाजार जड़ों की घामनी और बूझबोरी से तमाम जनता उठ खड़ी हुई और केंद्रीय सरकार की विपक्ष होकर मातृ सरकार से वैयक्तिक सहानुभूति जेनी पड़ी । इस पक्ष में छोटी के शेर जीम बत पन्त के साथ उनके सभी साथी साहूब हुए । इनके बोड़े ही दिनों बाद महाप्रजाधिराज आरम्भ हो सब और अपनी जिम्मेदारी के लिए दस के बाहर जाना उनके लिए अनिवार्य हो गया । दूसरी ओर सामन में भी काफी लड़बड़ी थी । इनी अविश्राम से २० सितम्बर, सन् १९५३ ई०, को महाप्रजाधिराज ने अपनी अनुपस्थिति में कार्य-संचालन के लिए एक राजकीय परिषद् भी खड़ी की । इस परिषद् के सदस्य महाप्रजाधिराज तथा



प्रथम और द्वितीय महाराजियाँ नियुक्त किये गये। नरेश ने राजकीय परिषद् के लिए एक विभाग की स्वीकृति भी की जिसके अनुसार मन्त्रिमण्डल द्वारा पाठ किये विषयों पर आवश्यकतानुसार काम मोहर लयाने तथा उन पर स्वीकृतियाँ देने के अधिकार दिये गये। राजकीय परिषद् को मन्त्रिमण्डल सभ करने अथवा उसमें परिवर्तन करने के अधिकार नहीं दिये गये। इसके अतिरिक्त उसे पद-नियुक्ति पद-वृद्धि निस्सम्बन्ध स्थानान्तरण की कार्य बाधिया सभा परिणियमित पद इत्यादि विषयों पर आवश्यकतानुसार सरकारी सहमति देन के अधिकार दिये गये और मन्त्रिमण्डल के निर्णय के बिना राजकीय परिषद् को कोई कामवाही करने से रूकित रखा गया।



नारायण सिंह साही भवन

राजकीय परिषद् स्थापित करके नरेश अपनी चिन्तिया करान के लिए मूंगेय गये जहाँ बह बई माम रहे। इस बीच राष्ट्रीय प्रजा पार्टी की सरकार की स्थिति काबाडोक रही और प्रधान मंत्री अपनी सरकार को स्थिति सामान्ये ही में स्थित रहे। बह राजकीय संस्थाओं में महबोय करने की बात भी चलाने रहे। स्वदेश छोडने पर महाराज-पिराज में बस्तुस्थिति को लमझ उन्होंने एक दूसरी घोषणा इस प्रकार की कर दी—  
हवारी प्यारी प्रजा का यकीनित

इस सभो में जो प्रजापक्ष का मार्ग अनुसरण करने का सम्मीर और बुद्ध संकल्प किया का आज टीक तीन बर्ष पूरे हो गये। लम्बा या छोटा जो कहूँ इस तीन बर्ष की अवधि के भीतर, उक्त महान् संकल्प को पूरा करने की चिन्ता की ओर हम लोगों ने कौन-कौन

सफलता प्राप्त की अथवा कीज-कीज बात नहीं कर पाए इस सब बातों का लेना छोड़ा करने का समय हुआ जैसा बनता है। उक्त उद्देश्य का प्राप्त करने के प्रयत्न में हमें कुछ सफलता प्राप्त हुई तो भी अभी बहुत कुछ कार्य करना बाकी ही है। हमारे प्रधान मंत्री तथा अन्य अधिकारी वर्ग के पचासवित प्रयत्न होने पर भी संविधान सभा के लिए आम चुनाव अभी तक नहीं हो पाया है। एक समय की लड़ी हुई सत्ताहकार सभा को भी उस बल की परिस्थिति के कारण बिघटन करना पड़ा। उक्त सभा को फिर खड़ा करने का हमारा निश्चय भी विधि कठिनाइयों के कारण अभी तक कार्यान्वित नहीं हो सका है। तथापि आज हम ऐतिहासिक दिवस में उक्त पुनीत संकल्प को वाहराने हुए अपने मार्ग में अटक होकर जाये बड़ जाता चाहिए, यह महान् उद्देश्य किसी एक व्यक्ति अथवा एक समूह मान के प्रयत्न द्वारा प्राप्त नहीं हो सकता। इसके निमित्त तो प्रत्येक तथा सभी नागरिकों को सामूहिक प्रयत्न करना चाहिए। प्रजासत्तम में नागरिकों का बड़ा भारी उत्तरदायित्व होता है। प्रजासत्तम की बातें करते समय हमें कबल अपने अधिकार का मात्र खयाल रखकर अनन्य वर्तन का विस्मरण नहीं करना चाहिए। एक का अधिकार दूसरे का कर्तव्य होता है और सभी अपने कर्तव्य का पालन करें तभी अधिकार का उपयोग सम्भव होता है—यह बात सभी को याद रखनी चाहिए। जनसाधारण को इस बात की बोध कराना जो जिम्मेदारी राजनीतिक वर्गों के ऊपर भी है। ऐसा किये बिना हम काम अपने उद्देश्य में क्यापि सफल नहीं हो सकते हैं।

आज देश में राजनीतिक अस्थिरता तथा अनिश्चितता का जो वातावरण पैदा हुआ है वह देश तथा जनता किसी के लिए भी कल्याणकारी नहीं हो सकता है। वह अनिश्चितता बहुत समय तक रही तो देश के लिए बातक मित होगी। इसी बात को दृष्टि में रखकर देश में स्थिरता आये इस अभिप्राय से हमारे यह बहुत पहलू से ही इच्छा थी कि देश में क्या भी एक स्वतन्त्र और निष्पक्ष चुनाव सम्भव हो। पर दुर्भाग्यवश अनेक कारणों से जिसमें हमारे देश की भौगोलिक व्यवस्था और यातायात साधनों के अभाव मुख्य है वह कार्य बाधा द्वये हुए समय के भीतर पूरा नहीं हो सका। पर चुनाव-सम्बन्धी सभी कार्य पूरे किये जा रहे हैं। मतदाताओं की सामाजिकी बनाने का काम भी प्रायः समाप्त हो चुका है। चुनाव सम्बन्धी कार्य में किसी किस्य की घिबिलता न हो ऐसा आदेश हम वे चुक ह और हमें आया है कि देश की परिस्थिति में कोई विपरीत परिवर्तन न हुआ तो चुनाव जल्द हो पूरा हो पाएगा। हम सहस्रवर्ष कार्य में सभी का पूरा सहयोग प्राप्त होगा ऐसी आशा हमने की है।

किसी भी देश में प्रगति के लिए एकता और पारस्परिक सहयोग अत्यन्त आवश्यक होता है यह बात सर्वविदित ही है। पर देश की इस गाबुन और घम्भीर परिस्थिति में भी हमारे देश में एकता और सहयोग के वातावरण की आशा न देखकर हमें बहुत ही दुःख है। हमें कहते रहना नहीं है कि देश की वर्तमान स्थिति में छोटी-छोटी बात पर भेद-भाव तथा मन-मुटाव करने से देश का बड़ा भारी बलस्थान होगा। इतिहास बताता है कि देश की

स्थिति बाधक होने में केवल मसाल के महान् राष्ट्रीय के व्यक्तियों ने अपने व्यक्तिगत अपना दक्षता स्वार्थ को त्याग आपस के सभी भेदभावों को मिटाकर सम्पूर्ण राष्ट्र के बृहत्तर हित को दृष्टि में रखकर कार्य किये हैं। ऐसा करने वाले राष्ट्र उन्नति के पथ पर भी पहुँच गये हैं। हमें भी इतिहास का यह धक्का हमेशा याद रखना चाहिए।

देश की वर्तमान परिस्थिति को ही लेकर आज जनसाधारण में एक निराशा और उदासीनता फैली हुई है जैसा हमें महसूस होता है। पर इस भावना को बागे बदन नहीं देना चाहिए। अब तो सब को देश में बुन समान सभी इस उदासीनता को त्यागकर नवीन स्फूर्ति और बेतला के साथ देश को आप बड़ान के लिए बटिबद्ध होना चाहिए। देश कोई व्यक्ति अपना दक्ष की निजी सम्पत्ति नहीं है। यह तो सभी का सामा है और इसको उन्नति की ओर ले जाने की जिम्मेवारी भी सभी के ऊपर है। हमारा यह प्यारा तथा रमणीय देश छोटा होते हुए भी प्राकृतिक धनसाग्य सम्पन्न है। ऐसे देश को पाकर भी हम जोय इसकी विकसित नहीं कर पायें तो हमें अभिप्राय का सन्तति अपराधी मानित करेंगे उस बात को ध्यान में रखकर अद्यत्त उत्साह और दृढ़ प्रतिष्ठा के साथ देश की उन्नति में हम अपना शक्ति पर योगदान देना चाहिए।

देश में एकता बड़ इस अभिप्राय से सरकार को महासक्ति प्रतिनिधित्वपूर्ण बनाने के लिए हमारा किन्ना हुआ बबब प्रश्न प्रायः लोगों को मासूम ही है। उन्हीं प्रश्नों के फलस्वरूप आज राष्ट्रीय साधारण में एक बिल्टारित मंत्रिमण्डल की घोषणा करते हुए हमें खुशी हो रहा है। हमारे प्रधान मंत्री की निकारिष पर विचार कर हमने आपाद को गये २०१० साल के आपाद के अनुसार मंत्रिमण्डल का पुनर्गठन किया है। अब मंत्रिमण्डल निम्नलिखित होगा—

१. या. मातृका प्रसाद कोइराठा—प्रधान मंत्री
२. श्री महावीर राममेर—मंत्री
३. श्री नारयण मुनी बुधुड—मंत्री
४. श्री दत्त प्रसाद आचार्य—मंत्री
५. श्री बेनर रामसर—मंत्री
६. श्री बिन्तो रामब रौप्यो—मंत्री
७. या. यात्राकाशी मिश्र—मंत्री

और बाकी मौल नाम पीछे बाधित होंगे।

हमने बहुत बड़ा आपाद रखा है कि यह मंत्रिमण्डल सभी में पारस्परिक मन्त्रिच्छा तथा सहकारिता के आधार पर हमारे इन प्यारे देश की विकास तथा निर्माण के माय में अक्षर बनाने के आपाद। पर सरकार किन्ती ही अच्छी हो ता भी जनता का मन्त्रिय सहयोग पाय बिना मरुत और प्रभावशाली नहीं हो सकेगी। तर्ब देश की इस नाबल तथा बम्बीर परिस्थिति की राह दिशान हुए हम आप सभी लोगों से सरकार को अपना महासाधन

महोम बेन के लिए हृदय से हार्दिक अपील करते हैं।

सरकार के प्रति किये जाने वाली आलोचना के विषय में भी हम कुछ कहना चाहते हैं। सरकार की आलोचना करने का अधिकार सभी का है। सरकार न कोई भूल नहीं की है अबका वह नहीं कर सकती है यह भी हम नहीं कह सकते। भूल सब से होती है पर सरकार के प्रत्येक कार्य को केवल छिद्रान्वेष की दृष्टि से ही नहीं देखना चाहिए। सरकार द्वारा की हुई भूलों को अवश्य दर्शाया चाहिए, पर साथ ही उसकी सुधारण का उपाय भी दिखाना चाहिए। हमें विश्वास है कि हमारी सरकार इस क्रिस की रचनात्मक आलोचना का हमेशा स्वागत करेगी और उसके ऊपर उचित विचार भी करेगी क्योंकि मनुष्य भूल से ही गिरा सता है पर केवल व्यक्तिगत दोष मात्र दिखाने वाली आलोचना न कोई काम नहीं बन सकता है। वह केवल पारस्परिक बैमनस्य का एक कारण मात्र ही बन जाता है।

प्रधान न्यायालय के अखिलेश्वर इत्यादि के बारे में फिलहाल कुछ गलत धारणा से जन के कारण इस विषय में भी कुछ स्पष्टीकरण करना चाहते हैं। अभी सरकार के कार्य कारिणी मंत्र तथा न्यायालय के अधिकारों के बारे में कुछ भ्रम उत्पन्न होना से इन घटनाओं के निवारण के लिए गत मास सात गते को बोपभा करनी पड़ी और उसी कारण से अन्तरिम साधन-विभाग तथा प्रधान न्यायालय एन में कुछ संशोधन भी करना पड़ा। कागूज दाख और बाक्य की व्याख्या सम्बन्धी एक नया पल भी जारी किया है। प्रजासत्ता को आम बहाने तथा राष्ट्रीय मस्त्राओं को बलबलौ बनाने का हमारा और हमारी सरकार का बूढ़ मिश्रण है यह बात सबको समझनी चाहिए। दासत-यन्त्र को सुधार रूप में बलान के लिए तथा प्रधान न्यायालय की प्रतिष्ठ कायम रखकर न्यायाधीशों का दुनिया की निगाह में उच्च रज्ज के लिए आकर्षकतानुसार परिवर्तन मात्र किया गया है। हमें बाधा है कि ये परिषद देश के न्याय-बन्दोबस्त को बृहत्तर बलान में तथा दुनिया की पीर और मर्म हटान में सहायक सिद्ध होंगे।

व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में हम सब अपने इसम भाग की बोपभा में ही त्रिक किया है। हमारा और हमारी सरकार का व्यक्तिगत स्वतन्त्रता अपहरण करने का अभिप्राय न तो पहले था और न अब है। हमारी सरकार इस विषय में पहले से ही एक नय कानूनों का तर्जुमा कर रही है वह तर्जुमा पूरा होते ही वह ऐन अभिलम्ब जारी होगा।

२००७ साल मात्र मामलत तक के बन्ध और कैद की सजा पान वाले व्यक्तियों को हमस इस अवसर पर कुछ छूट देन का निश्चय किया है। इस बारे में और विवरण हमारे दूसरे आदेश में निकलेगा।

अन्त में हम सोम सभी के प्रति आज के इस राष्ट्रीय दिवस में अपनी हार्दिक शुभकामना प्रकट करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनके अनुग्रह से हमारा कदम अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ता जाय और प्रत्येक कदम में हमें सफलता प्राप्त हो। अम नपास।

## राष्ट्रीय सरकार

इसके बाद ही बिल बाह मन्त्रियों के विभाग के बँटवारे हुए जिसके अनुसार प्रधान मंत्री मानका प्रसाद कोहराका को राज्य-व्यवस्था और अर्थ टंक प्रसाद आचार्य को मुद्रा विम्भी रमल रेग्मी को विदेश विभाग स्वास्म्य तथा स्वायत्त धामन मद्रकाली मिश्र को कामून धानायात तथा मनहोष प्रबन्ध मिले तथा नारद मुनि बुङ्ग को बन तथा मास्मोत विभाग मिले। केयर समार को रक्षा मद्रावीर समार को योजना-विकास तथा भूमि-सुधार विभाग सीता गया। राष्ट्रीय सरकार के रिक्त स्थानों की पूर्ति के सिद्ध तरेण न अन्य मंत्रालयों में भी बर्गों बर्गों किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली और उल्टे उन्हें प्रधान स्वायत्त के कानून में अनधिकृत संशोधन करने एवं व्यक्तिगत स्वतन्त्रता अप हर्ष करण का क्रिमेदार मित्र किया गया।

इस सरकार में राष्ट्रीय प्रजा पार्टी तथा प्रजा परिषद् तथा राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त तीन सदस्य स्वतन्त्र भी थे। उद्भव को एका बनाव रखने के अभिप्राय से बर्गों १९ वने २ ११ साल को एक बर्गोत मूर्धो न्यूनतम कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जो इस प्रकार है—

## राष्ट्रीय सरकार का न्यूनतम कार्यक्रम

देश के राष्ट्रीय हित को ध्याम में रखत हुए और नेपाल के सम्मान और प्रगल्भता की बर्ध करण का दृष्टि में प्रतिन होकर हमारी स्वतन्त्रता तथा अलङ्घना को सुरक्षित रखते



दंक प्रसाद आचार्य



लक्ष्मी राम रेग्मी

हुए इनका इनके इतिहास संस्कृति और मौलिक नित्य के आवश्यकताओं का विकास एवं प्रगति के पथ पर संलग्न होने के लिए राष्ट्रीय सरकार में निम्नलिखित कार्यों का यथाशीघ्र कार्यक्रम से परिचित कराने का निश्चय किया है—

### (क) प्रशासनिक व्यवस्था का पुनर्गठन

इसका उद्देश्य इस व्यवस्था में सब प्रकार के अस्वास्थ्यकर प्रभाव तथा मुनाबों का हटाना नालाबारी तथा घाटाचार का दूर करने इसके माध्यम से मितव्ययी आधुनिकता और मिष्टाचारपूर्ण बनाना है।

१. निम्नलिखित विचारवादी चरित्रवादी व्यक्तियों द्वारा नियमित एक स्थायी समिति सभी नियुक्तियों तथा कर्मचारियों के कार्य का निरीक्षण करेगी और जवाबदायी उचित शिक्षा की कमी अकल में व्याप्त सभी बालों और इस सम्बन्ध में जा अनियमितताएँ बाँधे हैं उनका बारे में सरकारों मामलों की छानबीन करके दरबार में पेश करेगी। सरकार उस पर यथासमर्थ प्रतिक्रिया करेगी।

२. घाटाचार निरोधक विभाग—इसमें चरित्रवादी सम्पत्ति तथा अर्थ में इनका स्तर के माध्यम कर्मचारियों की नियुक्ति होगी। यह विभाग उपर्युक्त क्रिया व्यवस्था का सहयोग प्राप्त करके घाटाचार के मामलों पर निगरानी रखकर छानबीन करेगा। इस विभाग के उम्मेदवारों में प्रशासनिक अक्षरता अथवा व्यावहारिक सभी अक्षरता कानून के आधार पर मामलों का देखकर उचित तथा बड़ा दण्ड देगा। कानून के अन्तर्गत कोई कमी तथा छिद्र हो तो उसकी फौरन पूर्ति की जायेगी।

३. सरकारी कार्यों में सुविधा प्राप्त करने के लिए संभाव्य के विभिन्न कर्मचारी तथा बीच के अधिकारी बर्गों का अधिकार तथा कार्यक्षेत्र का अर्थ ही व्यवस्था की जायेगी।

४. सरकारी प्रचारार्थ स्थापित अर्थों का प्रशासन पूर्ण निष्पक्ष और तटस्थता के आधार पर किया जायगा और इसके सम्बन्ध में एक नीति सरकार बहुत जल्द निर्धारित करेगी।

५. नागरिकों के जीवन और पथ के उचित संरक्षण के लिए राज्य में व्याप्त और व्यवस्था कायम रखने के लिए हथियारबन्ध निगरानी तथा भूमि पुष्पियों का जा परीक्षित अनुसूचित मामलों कर सदन में समर्थ हो इस हेतु में ठीक आधार पर आधुनिक ढाँचा बनाया जायगा। इस सम्बन्ध में एक प्रशासनिक रिपोर्ट पेश होगी और स्वीकृत नीति पर सरकार माध्यम ही कार्यवाही करेगी।

६. देश का प्रशासनिक विभाजन अवैधानिक तरीके से घटाने हुआ है और कनिष्ठ इनके बहुत ही छोटे से होने में प्रशासन का सार्वजनिक मितव्ययी तथा माध्यम समान के लिए सरकार त्रिकों का पुनर्गठन करेगी।

७. सरकार नियुक्ति के सम्बन्ध में पब्लिक सर्विस कमीशन अर्थात् जनसभा

आयोग को सुचारु रूप में कार्य कराने की आवश्यकता होगी।

८. जिलों को प्रशासनिक दृष्टि से प्रभावी बनाना आवश्यक होगा।

### (ख) अन्य विषय

१. राष्ट्रीय मुद्रा व सार्वजनिक स्थिरता कानून का प्रयत्न होगा।

२. देश के औद्योगिक विकास के लिए राष्ट्रीय पूंजी को प्रोत्साहन और संरक्षण मिलेगा।

३. स्वदेशी व्यापारिक स्थावरोक्तों का समुचित संरक्षण होगा।

४. बेकारी की समस्या के समाधान के लिए नीतिगत नीतियों के तहत-तहत एक प्रधान कर्मियों के साथ-साथ तथा घटती बेकारी को कम करने के लिए औद्योगिक नीतिगत नीतियों के अन्तर्गत न माने जाने वाले तथा कम लाभ वाले उद्योग-व्यवसायों को कच्चा माल और अन्य सुगमता से उपलब्ध होने वाले अवसर पर स्थापित किये जायेंगे।

५. देश में व्यापक व्यवस्था वैज्ञानिक कम-कम-कम होने वाली की जायगी। अदालतों का 'बन्दी प्रत्यक्षीकरण' मानवसम्पत्ति मुक्तों का अधिकार रहेगा तथा इसी सम्बन्ध में बन्दी को अदालत में हस्तगत करने का आदेश भी जारी करने का अधिकार रहेगा।

६. वैज्ञानिक और उचित तरीके से डिमांड रखने तथा जान कराने की व्यवस्था कायम होगी।

७. नागरिक तथा राजनीतिक अधिकारों में गलत मतभेद लपेटे जाने वाली बातों को हटाने के लिए इनकी स्पष्ट व्याख्या की जायगी। इसमें देश के सभी नागरिकों की जाति विचारों तथा धर्म का सम्बन्ध न करते हुए राष्ट्रीय सार्वजनिक प्रशासन व्यवस्था तथा देश के अन्तर्गत आबादी के स्वतन्त्रता भी निहित रहेगी।

८. प्राथमिक शिक्षा को विस्तृत किया जायगा। विश्वविद्यालय शिक्षा-विद्यालय तथा वैज्ञानिक अनुसंधानालयों को स्थापित करने का प्रयत्न किया जायगा।

९. एक स्वतन्त्र व्यवस्था के द्वारा सार्वजनिक स्वतन्त्र और निष्पक्ष चुनाव किया जायगा।

१०. जिले की आवश्यकता का एक निश्चित प्रतिष्ठित जमीन इनके विकास में लक्ष्य किया जायगा और अल्प इनको को उचित महामता देने का व्यवस्था होगी।

११. परतः जमीन आवास करके निष्पक्ष भूमिहीन विमानों में निवास की व्यवस्था होगी।

१२. सरकार ने महापद्मार्थन लक्ष्य लक्ष्यों द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र में प्राथमिक जलाना का अर्थ देने की लक्ष्य प्रदान की जायगी तथा अन्तर्गत-वृद्धि के लिए वैज्ञानिक एवं न-बड़े-बड़े क्षेत्रों में लक्ष्य करने के लिए प्रोत्साहन दिया जायगा।

१३ किसानों को सीधे महासभा सेन के उद्देश्य से कानून बनाकर लागू किया जायगा। इसके अन्तर्गत बेदस्तों से बचने का अधिकार, जेत मालिक तथा बतिहर के बीच उपज के बिभाजन में कमी करके किसानों को फायदा पहुंचाने का प्रबन्ध तथा सभी प्रकार के सामान्य लोपण और बठ बमारी का अन्त होता।

१४ बमीन की ग्रापी और बर्ता करके उचित रूप में अच्छी और बराबर बमीन बनाने की जायगी।

१५. ग्रामाघोल का विकास किया जायगा।

१६ कानून द्वारा मजदूरी की मसाली और उनके हित का संरक्षण होगा।

१७. सभी सामान्य मुविषामो तथा बड़-बड़े विलो का अन्तिम रूप से समुल्लेख होगा।

१८ सरकारी पर तथा विला के सम्बन्ध में पिछड़ हुए प्रदेशों को प्रोत्साहन दिया जायगा।

१९. लोच ही स्थापित होन वाली सलाहकार-सभा में राष्ट्रीय जीवन तथा प्रादेशिक जन विचारधारा के महत्त्वपूर्ण अंगों को प्रतिनिधित्व दिया जायगा।

२०. नेपाल की संयुक्त राष्ट्र सम का सदस्य बनने का बयान होगा।

२१. वैश्वेदिक सम्बन्ध में नेपाल भौगोलिक और एतिहासिक मामलों को ध्यान में रखते हुए भारत के साथ बहा तक हो सके अधिक मित्रता कायम रखेगा। साथ ही मिन राष्ट्र तथा पड़ोसियों से भी मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रहेगा।

२२. अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में नेपाल सन्तुष्टिवादी दलों से सम्पर्क न रखकर पलिनीक स्वतन्त्र नीति अधिकार करके विषयों पर उनके महत्त्व के ऊपर निर्णय दिया जायगा।

### (ग) सहामता और सामाजिक मसाली की तात्कालिक योजना

१. राष्ट्रीय साधनों की खोज करने तथा सर्वांगीण विकासार्थ एक विस्तृत योजना तैयार करने के लिए एक 'राष्ट्रीय योजना आयोग' गठन किया जायगा।

२. एक मुद्रा आयोग मुद्रा समस्या की छानबीन करेगा। विशेषतः यह नेपाली विलों का ह्रास तथा देश में दो प्रकार के मुद्रा-मचलन स्थिति तथा उससे हमारे आयात-वियत में पड़ हुए कुप्रभावों का अध्ययन करेगी। मुद्रों का फटका तथा नाबाबज व्यापार स्थानीय बोधित किया जायगा।

३. सरकार आवास तथा वैश्वेदिक उपभोग के अन्य पक्षों की बढ़ती कीमत को रोकने के लिए फौरन कार्यवाही करेगी। साथ ही ऐसे कपटों को दूर करने के लिए सस्ते सामा में विभिन्न वाली दुकानें तथा इसी प्रकार के अन्य साधन खोले जायेंगे।

सरकार नेपाली मुद्रा के विविध मूल के ह्रास को रोकने के लिए कार्रवाई करने के साथ ही एक स्थिर दर में निर्धारित रखने के लिए उपाय और व्यवस्था करेगी।



४ सरकार सामूहिक विकास-योजनाओं को विद्यमान इलाकों में लागू करेगी और उत्पादन-वृद्धि करने के लिए सिंचाई-योजनाएँ तथा वैज्ञानिक खेती के तरीके कार्यरत में परिणत करेगी।

५ बिजली और पेय-जल की अधिक सुविधा का प्रयत्न किया जाएगा।

६ स्वायत्त शासन को प्रोत्साहन देने के लिए सबसे नीचे पंचायत और ऊपरी स्तर में प्रादेशिक बोर्ड स्थापित किये जायेंगे। इनकी अपने उचित क्षेत्र के अन्तर्गत विकास करने का पूरा मौका दिया जायगा।

७ सभी क्षेत्रों की जनता में अधिकारिक औपधिखा की सुविधा पहुंचाने की बात ध्यान में रखते हुए जमहु-जमहु पर औपधात्म्य खालने की योजना बाल की जायगी।

८ सरकार में पुन संयुक्त आधार पर सामूहिक धिखा की योजना बालने का विचार किया है। इसने श्री-राज्यता आन्धालन बाल-सिखा आदि समावेष्ट होंगे और उक्त योजना में देश में प्राप्त होने वाले सैलिक प्रतिभा बालों को सामिल किया जायगा।

९ बालों की मनमानों कटानी को रोकना सरकार का सधप्रथम काम है। योगा विकास के अरिष्ट लकड़ी उठा ले बाल का काम बाल करना और वैज्ञानिक बाल में जयल को देखबाल बाल को बालबाला शोध हो आरम्भ की जायगा।

१ देश को उन्नत व्यापारिक तुलना की स्थिति में पहुंचाने के उद्देश्य में निर्वात व्यापार को प्रोत्साहन देने हुए सरकार ऐसी बालबाला का कार्य शोध आरम्भ करेगी।

देश में कई बाल राजनीतिक परिवर्तन होने तथा प्रजातांत्रिक आधार पर सधि सधम की बाल में होने में लोगों की सध बाल बहुत बालनी रही। दूसरी ओर देश में विभागीय आधनिक तथा वैज्ञानिक कानून के बाल में भी बालों ओर ब्रुटिया बाल पडना बी। इन बलिप्रथम में सधप्रथम गण्टाय बाल तथा विभिन्न बालों के प्रतिविधिवा को लेकर गणाइकार सधा की बालनी हुई। इसके सध ही सध सधा का एक विधान में तैयार हुआ। गणाइकार सधा का प्रथम अधिवेशन ७ जून बाल १ ५४ ई को आरम्भ हुआ और जिसका उद्घाटन-बाल सधा का अलबाला के कारण युवराजाधिराज बालेष्ट और विधम गण्टा बाल हुआ जो देश का सधा सधसधा की पण प्रथम बालने हुए राजनीतिक वृष्टि में सधरशुर्ती है और जो इन प्रकार है—

गणाइकार सधा के माननीय बालबाल तथा सधसधा

बाइ इन बालबलि गणाइकार सधा के अधिवेशन में सध सधा का स्वायत्त सधबलि करण का बीडा बाल सध में गुना है। सध आता है कि सध के विभिन्न भागों में सधबलि सध सधा विभिन्न सधसधा की पर विचार-विधम कर देश को बाल बाल में देश का मुक्त और सधुद्ध बाल में सध सधा तथा सधासधा बाल। इन सधा पण राजनीतिक परिवर्तन के बाइ देश का प्रजातांत्रिक वृष्टि पर ल बाला जा सगी बृष्ट इच्छा तथा अधिभावा है बाल सध सधों को विधि ही है। पर इन सधा बालों में देश के लिए जिस राजनीतिक सधसधा और

सामूहिक प्रयास की आवश्यकता भी यह नहीं हो सकी। यह बोध सभी नेपाक्षियों का है। देश किसी काय व्यक्ति दल या वर्ग का नहीं है देश सबका है और इसकी जयजय उत्पत्ति का एक हम सबों को मुगतता है इसमें कुछ भी मन्वेह नहीं है। किसी व्यक्ति तथा दल का ध्यान न रखकर देश की सामूहिक उत्पत्ति तथा विकास को ध्यान में रखना समस्त देशवासियों का कर्तव्य जाना चाहिए। परिवर्तन के बाद इन तीन वर्गों में सरकार के गठन में कई प्रयोग हुए पर कोई स्थायी न होने से देश में जा उत्पत्ति होनी चाहिए भी यह नहीं हो सकी वा नहीं की गई वा करम का मौका नहीं मिला। सर्वप्रथम दो वर्गों की संयुक्त सरकार स्थापित हुई। आपस की छीनाझपटी तथा एक दूसरे पर दोषागोपन करने से उसका अन्त हुआ। इसके बाद एकदलीय सरकार बनी और आपस की गई कि सरकार कुछ काम करेगी। प्रथम सलाहकार मन्त्री का अधिवेशन भी उसी समय आयोजित किया गया। पर इसके पूर्व कि सरकार कुछ काम करे सरकार बनाम बासे एक में ही आपसी मतभेद हो जाने से उसका भी अन्त हुआ और उसने साफ़ ही माथ सलाहकार बना का भी। अन्त में मुझे बाध्य होकर अपने ही हाथ में सामन सेना पड़ा और कुछ परामसदाताओं के परामर्श से कुछ महीने दासत चला। मुझ आशा थी कि इस बीच विभिन्न राजनीतिक दलों में सौहार्द तथा सहजायता उत्पन्न होनी और देश के राजनीतिक वातावरण में कुछ परिवर्तन आयेगा पर विभिन्न प्रयास के बावजूद भी सफलता नहीं मिली। इसी बीच मेरा स्वास्थ्य अतिरिक्त गिरने लगा और उपचार के लिए मुझे बिदेश जाना पड़ा। मेरी इच्छा आधानुसार विभिन्न दलों को मिष्टाकर सम्मिलित सरकार गठन करने की थी पर यह संभव नहीं हो सका और स्थिति अनुसार अपने भूतपूर्व प्रयास मंत्री को फिर से सरकार गठन करने की अनुमति दनी पड़ी। उस समय भी मेरी आशा तथा अविश्वास यही थी कि विभिन्न राजनीतिक दल आपस में सौहार्द और सहजायता बढ़ाकर सरकार में सम्मिलित होकर प्रजातन्त्र को दृढ़ बनाम का उत्तरदायित्व लें। मेरे प्रयास मंत्री के अनवरत प्रयास करने पर भी कुछ महीनों तक यह संभव नहीं हो सका। अन्त में तीन विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं से समझौता हो गया और आज की यह सरकार इसी अल्पक प्रयास के फलस्वरूप आई है। दूसरे राजनीतिक दलों को भी प्रयास मंत्री ने अवकाश दिया था पर उन लोग ने यह उत्तरदायित्व सौमार्जन से झकार दिया।

आम निर्वाचन में जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा संगठित सरकार जब तक स्थापित नहीं होती तक वह एक अन्तरिम अवधि में किसी-न-किसी प्रकार की सामयिक सरकार आवश्यक ही है। विभिन्न दलों में हम सब कहने का मापदण्ड बिना जयता की इच्छानुसार मत धिये में सलाह को मानू। बात सभी दलों के मिलकर काम करने से जनता स्वतः समाधान होत देखकर मेने राष्ट्रीय सरकार के लिए बराबर आर दिया है। आज इस सलाहकार मन्त्री के गठन से मुझ आशा माथ ही नहीं बल्कि विश्वास है कि सरकार बनाने की जिम्मेवारी वित्ततः रूप से जनता के प्रतिनिधियों को दे दी गई है। सबों के

परिभ्रम सङ्ग्राहना तथा सहयोग-बल को प्राप्त कर हमारी सरकार पूर्ण रूप से प्रजातान्त्रिक सिद्धान्त को जिसमें समबोध प्रजातन्त्री को सर्वहिताय के लिए सन्विष्टता से स्तर पर सं जाने की दृष्टि इच्छा है। देश और दुनिया के कल्याण के निमित्त हम लक्ष्य और ध्येय का सफल बनाने के लिए सबों के निस्वार्थ सेवा-सहयोग को परमत्वस्वकता है। जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों को संविधान सभा जब तक नहीं मही हो जाती तब तक इस अन्तरिम समय में जनता को अधिकाधिक सरकार के मामले में शरीक तथा लोगों को संविधान की प्रणाली का ज्ञान कराने का अभिप्राय है इस सभा का निर्माण हुआ है। देश के लिए इस प्रकार की व्यवस्था नहीं मही होना पर भी जमी-जमी माय हुए प्रजातन्त्र का मुख्य तथा प्रबल बनाने के लिए इस सभा के सदस्यों पर बड़ी जिम्मेवारी रहेगी।

पुरानी सलाहकार तथा से इनका बृहत्तर बनाकर सभी अन्न वन तथा वनों के प्रतिनिधियों के समावेश करने के मेरे विचारानुसार और आह्वान पर कुछ हम तथा व्यक्तियों ने इनमें भाग लेना भी स्वीकार नहीं किया। सरकार की स्वयं आलोचना करने का अवसर देने पर भी इस अवसर को काम में नहीं लाने पर मुझे उत्तरदायित्व न लेना जैसा लगता है। सदस्यगण निस्वार्थ सेवा-सेवा की भावना को अपनाकर केवल देश और जनता को बृहत्तर उत्पत्ति मलाई का ही ध्यान में रखकर अपने कर्तव्य अच्छी तरह निभायें—एसी मूल भाषा है। देश में कुछ प्रजातान्त्रिक प्रजातन्त्री को पनपन करने में आप लोग पूर्ण रूप से कोशिश करेंगे यह भी मेरी भाषा है। साथ तथा स्वार्थरहित आलोचना द्वारा बेसोप्रति तथा मलाई के काम में मेरी सरकार का सहयोग तथा सहामता करना इस सभा का मुख्य कर्तव्य होगा।

वर्तमान जगत में कोई भी राष्ट्र अकेला पूरक जीवन नहीं धारित कर सकता—यह बात निर्विवाद है। वारम्परिक सहयोग ने निकटतर सम्बन्ध स्थापित करके राष्ट्रों को मानव मात्र की जलाई करने के अभिप्राय में प्रगति को आर अवसर हाकर उत्पत्ति करनी चाहिए मही मुग की जाग है। अतएव हम लोगों को भी उम्मी माय का अवलम्बन कर सबों में मैत्री तथा सहृदयता रखकर पुढेवनी में अलग रहकर हमारा मानवीय सभा की अकुटित रखकर प्रगतिशील हाकर उत्पत्ति करनी है। इसी नीति के अनुसार प्रगतिशील देशों में मैत्री-सम्बन्ध बढाकर उन्ही लोगों की सहायता स्वीकार कर भरपूर संबंधोमुखी उत्पत्ति के लिए कोशिश करने में ही हमारा कल्याण है। विज्ञान में प्रगतिशील विचारधारा ईंग्लैण्ड अमेरीका प्रभृति देशों में विद्यमान तथा एसी ही दूसरी सहायता प्राप्त हो चकी है। हमारे अनेक छात्र उच्च देशों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजे गये हैं। प्राचीन मित्र पड़ोसी भारत में भी मैत्री हा आवश्यक सहायता की गई है। भारत में प्राप्त सहायता हमारी मौलिकता सांस्कृतिक तथा साहित्यिक कारणों से दूसरों में प्रचुर है। इस राष्ट्र में हमारा निरंतर सम्बन्ध हुआ हम दोनों देशों की वारम्परिक समान स्थिति ध्येय नीति इत्यादि के कारण ही है। तथा पड़ोसी पड़ोसी के दुःख-मुग की समी बातों में शरीक हाकर एक दूसरे

## प्रजातन्त्र की मोर

का अधिक महत्त्वपूर्ण हल्ला स्वाभाविक तथा हित की ही बात होना निश्चित है। हमारे बहुत से नागरिक विदेश का भ्रमण करते जाते-परिधि-परिवर्तन कर रहे हैं। विदेश के नागरिक या नपाक के प्रति पारस्परिक सौहार्द तथा सहानुभूति काम में मचेष्ट है। ईराक की अर्थव्यवस्था जापान की भाँति के उच्च व्यक्तिगत नपाक मात्र ही रहे हैं। हमारे भी छात्र पूर्णतः आधुनिक जापान प्रभृति मुद्रा देना में निष्ठा प्राप्त हो कर रहे हैं। पिछड़े देशों का प्रगतिमान देश में सहायता देना प्रगतिमान देश का बिना दान या बिना बन्धन सहायता देना युग का नैतिक माना गया है। इसमें पिछड़े हुए देश को मदद देना न तो हम को ही बात है और न सहायता देने पर कोई अड़थेकना हो कर सकता है। इस प्रकार पारस्परिक सहायता के क्षेत्रों में सम्बन्ध को हस्तगत-ना नमस्कार करना अनिवार्य रूप से बर्तमान युग का परिणाम देना मात्र है यह आप सोचेंगे कि बिना ही है। किन्तु देश-विदेश मात्र में सहायता लेकर अन्य में सम्बन्ध स्थापित नहीं किया जाता तो ध्यान इस प्रकार का आसप समुचित होता। परन्तु नपाक विभिन्न राष्ट्रीय समस्याओं के बीच विषय-सम्बन्ध में ए. ए. ए. सी. सी. कोलम्बो प्लान यू. एस. ओ. ए. (पारस्परिक) इत्यादि में भी सहायता प्राप्त कर रहा है और संयुक्त राष्ट्रमण्डल का महत्त्व हम के लिए सक्रिय है। नपाक बिलायत अमराका पास हिन्दुस्तान के साथ सौहार्द स्थापित कर चुका है एवम् उत्तर के पड़ोसी में भी हमारा सम्बन्ध अच्छी तरह है और वास्तविकतानुसार इस सम्बन्ध को मजबूत कर हमारे देशों में भी सम्बन्ध स्थापित करके। नगरों में मानवीय सत्ता का सतत संरक्षण करके सबों के साथ मैत्री-भाव रखकर किमो क प्रसार में तथा गुटबन्धी में न पड़कर नपाक को अग्रगामी बनाना हमारी वैदेशिक नीति है। इस सहायतायुक्त नीति को जाल-बुझकर भी बदनाम करना सर्व से पारगमन रत्ना स्वतः मिट्टी हाँपा ऐसे आधा करते हैं।

हमारी आर्थिक स्थिति सौख्यमयी है फिर भी इसके सुधार के लिए हम सहायक प्रयत्नशील हैं। सर्वसम्मति सेवों को भी जाबो का निष्का सामू रखना बलित होता है फिर हमारे देश में गरीबों के लिए क्या बात? अब कम्युनिस्टों का सिक्का बाजू हो गया है। इस चीज की वजह होकर काफी साम होने का अनुमान किया गया है। सन् १९५० के साल सरकार के साथ की गई वाणिज्य-संधि को लागू करने तथा अन्तःमुखी बाजार को नष्ट करने के लिए यथोचित कार्रवाई हो रही है।

अन्तःमुखी बाजार होना और किसी नये टैक्स के न लगाने से करीब साठ लाख रुपय की सरकार को अधिक आय होने का अनुमान किया गया है। चुंगी की बाय जो इधर उधर हो जाती है उसे रोकने के लिए आधुनिक तरीके से चुंगी सुधार सम्बन्धी कार्य हो रहा है। टैरिफ बोर्ड काही होम से एक ही मास में दो-तीन जगह चुंगी लगने की परिस्थिति हटाकर नगरपालिका की सुविधा के लिए योजना बन रही है। हमारी मुद्रा-स्थिति से अब सम्पूर्ण की बलबली मची हुई है। पुराने शासन में सरकार

कम खर्च करने तथा को प्रचलन में न आने और अन्यत्र ही जाने के कारण मुद्रा का भाव वैसा ही था। प्रजाशासन के बाह्य दम की सब आय वैसा ही न खर्च होने से मुद्रा प्राचुर्य तथा जनता में कष्ट प्रविष्ट बड़ जान में स्कीति होने का अनुमान होना अनुरी बात नहीं है। प्रचलन में आये हुए नेपाली मुद्रा का यदि नेपाल भर में प्रचलित किया जाय और हमारे मुद्रापूर्व तथा पश्चिम पहाड़ में जहाँ अभी अभी नेपाली मुद्रा का प्रचलन हुआ है और इसके पश्चात् समग्र देश भर में यदि वही प्रचलन किया जाय तो तब बालास करोड़ नेपाली मुद्रा मुगमता में हाँ इस में प्रचलित हो आयगी। इस दृष्टिकोण में समुचित प्रयास हाँ रहा है और वर्तमान अवस्थान स्थायी नहीं होगा ऐसी भाशा और विश्वास है।

स्वास्थ्य सम्बन्धी उन्नति के लिए भी हमारी सरकार ने अपन साधन तथा विवेची महायत्ना के लिए काफी प्रयत्न की है। इक्कीस डिस्मरी हाल ही में बढ़ाई जानवासी है। नपास के अस्पताल के लिए भारत सरकार की ओर से सामान सक्ति पाँच भी बिस्तरे मुफ्त प्राप्त हुए हैं। मलेरिया काकावर फाइतेरिया इत्यादि के नियंत्रण के लिए विश्व-स्वास्थ्य नव में भी महायत्ना मिली है। मरी की ट्रनिंग भी यवासीय शुरू होने वाली है। आयुर्वेद के पुनरुत्थान के लिए असग डाइरेक्टर नियुक्त होकर कार्य प्रारम्भ हो गया है।

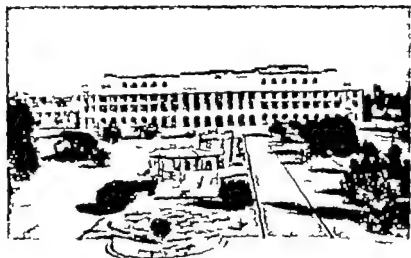
स्वास्थ्य सम्बन्धी सार्वजनिक काम करने वाली सरकारी संस्थाओं को यथासंभव आर्थिक तथा दूसरी प्रकार की सहायता देकर गैरसरकारी संस्थाएँ भी सुदृढ करने का प्रोत्साहन दिया गया है।

नपास में मिट्टा का निरान्त जमाव होने में उसकी पूर्ति के लिए सरकार के साधन सीमित हैं फिर भी यवासीय कारवाई हाँ रही है। नपास के लिए उपयुक्त घिसा-योजना के लिए घिसा-आयाम निर्धारण किया जा चुका है। जहाँ पाठशाळाएँ नहीं हैं वहाँ बाँकी पचीस पाठशाळाएँ लगाने की व्यवस्था होकर कुछ तो सहायता भी पा चुकी है। प्राइवेट स्कूलों की भी यवासीय सबब बी गई है। हाई स्कूल कावेज सम्पूर्ण महाविद्यालय इत्यादि भी अभी अभी खोले गए हैं। विदेश में विद्यार्थीय करने वालों को छात्रवृत्ति बी गई है। कोलम्बो प्लान एफ ए को प्राप्ति द्वारा छात्रवृत्ति पाकर लैकडो नेपाली छात्र छात्राएँ विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेज गए हैं। घिसा अतिरिक्त महत्त्व का विषय होने में सरकार ने उसके लिए भरलक प्रयत्न किया है तथापि अभी तक सक्रमता प्राप्त करने में समुचित मान वा अन्येयक हाँ रहा है।

देश के प्राकृतिक साधन तथा सामग्री के लिए हमारी सरकार यवासीय कोशिश कर रही है। विभिन्न प्रकार के भौमिक इन्धन तथा खनिज यवासीय इत्यादि के निरीक्षण तथा बाहरीक्षण होने में हमारे इंजीनियरों द्वारा हाता प्राप्त जमखण्ड-आवा पर प्रगतिनीय देशों में महायत्ना की जाति अपमान में तब इस काम में बिन्नी विद्यार्थीय में बहुमुख महायत्ना मिली। मोहावरी कम्पौक डाडा में जादे की खानें जिनमें नवाल की मोह की मोह पूरी होने की भाशा है। डाक्टर हागत नावद रिचन विद्यार्थीय में 'विद्यार्थीय और नपास' नामक

रिपोर्ट तैयार की है। इसमें मित्र-सहयोग में हमारी विन-विन साना का काम हो सकेगा बाध-बधना है रही है। काठमाण्डू उपत्यका में मित्र-सहयोग का उपयोग कुछ हिस्सा में हुआ था फिर भी वैज्ञानिक तरीके से काम नहीं हो पाया था। अब पक्की ईंट बनाने के काम में इस्तेमाल की काफी बचत होन लगी है और अधिक मात्रा में इसका उपयोग कर लकड़ी की बचत कर जंगल सुरक्षित रखने का प्रयत्न होगा। रापतिबना में चौबुट काम मूछी समान्तर रूपसे एक साथ एक साथ उत्पादन करने की योजना यथाशीघ्र कार्यान्वित होन वाली है। रापति सम्बन्धी कार्य एक-एक से जाय हुए बिनापत्र मुल्यम र्गनापत्रक रूप में कर रहे हैं। इति तथा ग्रामाद्याय विकास व लिए निम्नवत ग्राम विकास योजना चालू हो गई है। काली के लगे में बचन के लिए भारत सरकार को कोटी बाब बनाने की इजाजत दी गई है। इन बाब में हमारे देश का बाध्य काम होन का विश्वास किया जाता है। बीम महीन के अन्दर सामान्य मी किसानों विकास उत्पादन के हनु एक वर्षसे प्लास्ट कागमागु में नियोजित होन बाधा है। निम्नवत विविधा दुधोरा योजना तराई में महोदेव खोला मिर्चाई योजना उपत्यका में ट्यूबवेल योजना आदि इति सम्बन्धी योजनाएं भी चालू हो गई हैं। उपत्यका विकास के काम का हमारे मापन तथा कामकाज प्लाट टी बी ए एक आ आदि से प्राप्त न्यायता सम्पत्ति कर यथासम्भव तीव्र सर्वतोमुखी विकास काम के लिए समुचित प्रयत्न हो रहा है। निम्नवत राजपथ तथा बिजली योजना व लिए कुछ करीब चार करोड़ रुपय व्यय होन का अनुमान किया गया है और आ कोलम्बा प्लाट के अन्तर्गत भारत द्वारा प्राप्त होन बाधा है। निम्नवत राजपथ करीब-करीब बन चुका है और सामाजी मीमन में चालू होन का अनुमान किया गया है। यातायात तथा मंचार की सुविधाओं में भी देश की उन्नति में काफी मात्रा में बाधा डाली है अतएव इस ओर भी सरकार ने यथासम्भव ध्यान दिया है। मङ्गल-निर्वाण वैदेशिक न्यायता से कराने की नीति अपनायी गई है। प्राइवट मङ्गलें बला के लिए भी नेपाली नागरिकों को काफी मङ्गलियनों दी गई हैं बायुमल के लिए पोष-जात अण्डों पर हवाई अड्ड भी तैयार हो पये हैं और पहाड़ तराई के सभी प्रमुख स्थानों पर उड़ानों के अड्ड बनाने की योजना है। पत्थरा में बुटवल और हवा तक टेली फोन की लाइन का विस्तार हो चुका है। कायलाबासी में दाग तक टेलीफोन-साइन-विस्तार करने के लिए कार्यवाही निम्नवत हो चुके हैं। कायलाबासी के पहाड़-जात स्टेशन चालू हो चुके हैं। बेम के प्रमुख स्थान में विमाने टर्नीफोव या बाकायाबासी हो सकेने। यथाशीघ्र सम्बन्ध स्थापित करने की योजना कार्यान्वित हो रही है। भारतीय नीमा मित्र के प्रमुख नेपाली पोष आदिनों को एकत्रित डाकघरों में परिणत करने के लिए भारत सरकार के साथ निष्ठा-नर्त हो रही है।

काठमाण्डू उपत्यका में राजधानी में रेकी-कोन बाधकर अविच्छिन्न रूप से बचाने के लिए और कभी भी कुछ मङ्गलियों में होन वन और बाध हो सर्वसाधारण जनता भी इसका



सिंह बरबार

उपयोग कर सके इस हेतु से पूर्वा के सीधे तार से जाने की व्यवस्था के लिए लगातार काम हा रहा है। और जो अस्व ही सम्पन्न होने वाला है।

उद्योग वाणिज्य में देश किता पिछड़ा हुआ है यह बात दुबारा कहने की आवश्यकता नहीं है। हमारा देश पिछड़ा हुआ होने में कच्चा माल निर्यात और तैयार माल आयात होता है। बिराटनगर की डा जट मिलों में से एक जूट मिल बिराटनगर जूट मिल पाट का आब बाट जान से बाट में रहकर कुछ महानों तक बाट रहा। इस तरह मछी भ्रांति बालू हुआ मिस फय हान से देश के उद्योग में बढ़ा आयात मयता है। इसलिए हमारी सरकार ने महानुमुनिपूवक मिस की मदद कर फिर से बालू किया है। दूसरी मिस रत्नपति जूट मिल में भी मैनेजिंग एजन्सी की मदद गल पाच वर्ष में मगडा हुआ मिस बस नहीं पा रहा था। देश के प्रमुख उद्योग हान के कारण और उसमें हमारे नागरिकों के बहुत पैसे फंसे हान से उन्हें बरबार हान के दर में मयदा समाप्त करवाकर मिस का बालू कर साक्षीबारी तथा देश के हित के लिए मिस की मैनेजिंग एजन्सी राइट भी लरीकर उस बला दिया गया है। आया है इस डा प्रमुख मिला के बालू के बाद दूसरी मिसों का भी उन्नति करन में सुविधा होगी। अब उद्योग बालू करन का कामिज करन में बालू किसे हान उद्योगों का बरबार करना ही बहतर समझकर सरकार ने यह बचम उठाया है।

वाणिज्य के बिजय में भी मवास का वाणिज्य अविचलन भारत में ही होता आया है इसलिए भारत-मोशन वाणिज्य लवि जा कुछ वर्ष पहले हुई थी पर परिणत अभी तक नहीं हा पायी थी इसी महीन के अन्तर कार्यकरण में परिणत करन की व्यवस्था भी गई है।

‘रुद्र बन नेपाल का बन’ यह बात आप लोगों को मालूम ही है। हम लोग इस बन का पुनर्वनेज वैज्ञानिक छद्मपयोग नहीं कर पाये हैं। स्थिति को संभालने के लिए भारत से बन विषयज्ञ मैथिलकर इस विषय में कार्रवाई हो रही है। विधेयक की रिपोर्ट प्राप्ति के बाद ही यथाशीघ्र वैज्ञानिक डी से इस बन के संरक्षण तथा संवर्धन करने की सरकार की नीति को कार्यरूप में परिणत करने के लिए सरकार ने निर्माणात्मक सुझाव के लिए सबसे अनुरोध किया है। तब बने जैसा इस बने की बन महोत्सव मनाने की आवश्यक कार्रवाई हो रही है।

गत अक्टू १५ को हम सब जनतन्त्रवा दिवस भी मना चुके हैं। पूर्व तरफ जनगणना का काम २००९ साल में ही समाप्त हो चुका है। पश्चिम ओर यह काम ओर-ओर में हो रहा है। यह बात आप लोगों को मालूम हो गई।

निर्वाचन इच्छित समय में करने की कोशिश हो रही है। अभी तक जो नहीं हो पाया यह दुःख की बात है। निर्वाचन नेपाल के लिए जपूठा बात होने तथा प्रजा में सिंगा की कमी होने, उचित अक्षर न सहयोग प्राप्त न होने और काम भा महान् होना से काफी समय सम्म रहा है। चुनाव अक्षरों को तालीम देना का काम भी हो रहा है। चुनाव के लिए बिम्बों को जनसंख्या के आधार पर अक्षरों में विभक्त करने का काम भी हो रहा है। अब तक ३ ८९,१०८ मतदाताओं को नामावली तयार हो चुकी है। अब बरूनी ही निर्वाचन होने की आशा है।

मातृप्राप्त मुझे भूमि हस्ताधिक की जटिल समस्या समाधान के लिए सम्बन्धित विभाग क्रियाशील है। क्याइस्टक सर्वे कराने का निर्णय होकर उत्सम्बन्धित योजना आधिकार्य में कार्यरिणित भी हो चुकी है। इन सब से भूमि-मुबार तथा मातृप्राप्त मुबार के लिए भी काफी सबब मिलन का आधा का गई है। समस्या अतिथय जटिल और महान् हाग स—आकोलित कर साध ही मिलने की बटिनाई स्वाभाविक ही है। इस पर भी इस महान् कार्य में जनता का सहयोग प्राप्त होने पर सफलता प्रत्याशित समय के पहले ही मिल सकती है। भूमि-मुबार कमाशन ताल अधिवेशन कर चुका है और फिर अधिवेशन आगामी आपाइ में करने का योजना है।

अमीदार तथा किसान की बीबातानी सुननाकर उचित व्यवस्था करने के लिए एक भूमि-मुबार-बीबात बरूनी ही जानू करने के लिए बरूनी-किरूनी अदायमें मजने की कार्रवाई सरकार कर रही है।

मोबाइल कोनों के नियम तैयार हो जान के बाद गुरत ही उन्हें बिजे-बिजे में खेदकर बीबीदारों तथा किसानों की बीबातानी दूर करने की आधा की गई है।

देस का आर्थरंतरिक तथा बाह्य गुरत के लिए उच्छ्रेमा और पुलिस को उपयोवित्त सर्वविधित हो है। नय बखर्कना तथा सेना के कमीकरध पुनर्वहन कर उस तालीम देन की बात आप लोगों को विधित हो है। पुलिस भी राष्ट्र के आन्तरिक गुरत तथा व्यवस्था का र्ग



होने से इसका भी उचित पुनर्गठन बांझनीय होने से काम जोरों के साथ चालू है। राष्ट्र के लिए पुलिस संघटन में विभिन्न तरीके इकाइयाँ होने से सबको एकीकरण के साथ वर्गीकरण करने का काम अच्छी तरह हो रहा है। इस सिलसिले में हमारे पुलिस आधिकारियों में से एक माउन्ट आबू के ट्रेनिंग कालेज से आई पी की तालीम तथा आठ मुराबाबाब पुलिस ट्रेनिंग स्कूल से शिक्षा प्राप्त करके आ गये हैं।

जिले-जिले में शांति भंग करने वाले तत्वों को यथोचित रूप से पकड़न और बन्दी करने के लिए बड़े हाकिमों को सुरक्षा कानून प्रयोग करने के अधिकार दे दिये गये हैं। यह अधिकार परिस्थितिवश अत्यावश्यक होने से दिये गये हैं। फिर भी प्रधान न्यायालय ने इसका विरोध करके तत्वों को मुक्त कर भविष्यजस का कार्यकारिणी अधिकार नहीं है ऐसा निर्णय फरक बेंच द्वारा देने में देश में ऐसे तत्वों को प्रोत्साहन मिलने से सरकार की कार्य कारिणी शक्ति की अक्षमता का जानें और देशव्यापी विप्लव हो जाने की भी आशंका से प्रधान न्यायालय के कानून में मशौघन करना आवश्यक हो जाने से प्रधान न्यायालय के कानून में मशौघन कर दिया गया है।



लखार महेश्वर और विप्लव दाह

व्यक्तिगत स्वतन्त्रता अपहरण करने की निराधार आकांक्षा का खण्डन करते हुए हमने व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का अपहरण नहीं हुआ है यह सुरक्षित है—बहुरा पास्चुन ७ २०१० में बोल्पा की थी। इसका समर्थन हम यहाँ भी करते हैं। शासन के प्रत्येक घम विधान तथा कानून के बगल हो जाने यही मेरा अभिप्राय है।

स्वाधीन स्थापित शासन में भी काफ़ी प्रगति हुई है। बाठमाण्डू, मकलपुर, ललितपुर, बिराटनगर में नगर पालिकाएँ स्थापित हो चुकी हैं और धीरे-धीरे न्यायपर्यव मद्रपुर आदि में स्थापित

करने की योजना है। समय-समय पर नगर पंचायतों में चुन गई है। बिराटनगर, बीरभंज

जैसे प्रमुख स्थान में बारम्ब रक्षक की योजना तैयार हो चुकी है। म्युनिसिपैलिटी मैन्युअल बाधित बना करके म्युनिसिपल मैन्युअल बाधित बनाने का काम भी हो रहा है।

राजनीतिक परिवर्तन के साथ ही आधुनिक विधान परिवर्तन के लिए भी 'नई कमीशन' बिधि बाधित का भी पद चुकी है। इस कमीशन में नेपाल के कानूनों को आधुनिक और प्रजातान्त्रिक भाषा में डालकर नेपाल के लिए उपयुक्त भाषा के विकास का कार्य प्रारम्भ हो चुका है।

नेपाल सरकार का प्रचार विभाग तथा गोरखा पत्र 'रेडियो नेपाल' की ओर मुखाह्वय से बचाने के लिए सुझाव पेश करने के हेतु एक पब्लिसिटी कमीशन का गठन हुआ है। बाधा है इस कमीशन की रिपोर्ट काफ़ी मरदा होगी।

नेपाल की आम स्थिति सुधारन के लिए अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन दोनों प्रकार के सुझाव देने के निमित्त आचार्य सफ़ट निवारण समिति का गठन हुआ है। उपलब्धता की अल्प-सफ़ट से बचाने के लिए एसी परिस्थिति का मुकाबिला करने के लिए मरदा स्पीर भी रखा गया है।



प्रधान मन्त्रालय

हमारी सरकार द्वारा अल्पकालीन गरीबी-निवारण को कार्यान्वित करने के लिए जो करम लगाया गया है उसका विवरण करते हुए अब मैं उस करम का भी बकेत कर रहा हूँ। यह करम म्युनिसिपल कोषिका के नाम से २०१० साल और २१ बने के गोरखा पत्र में प्रकाशित हो चुका है।

बेस-सवा के भाव में प्रेरित होकर समा में सम्मिलित आप सब से इन निर्देशक सर्वमान्य मित्राभा की सेवा के साथ ही कार्यन्वित करने में क्यासक्ति सहयोग देंगे। आपा की जाती है कि प्रजातामिक भावना कार्यक्षमता आदि विषय के लिए भी समग्र देश का हो आप भाग उठाहरणस्वरूप तथा प्रेरक भी होंगे।

श्री पद्मपतिनाथ हम सम्पादक समा को सकल बतार्ने यही मंगी हार्दिक प्रार्थना है। जय नेपाल।

### राज्य परिपद्

अक्तूबर मत् १९५६ ई. में तार्गे मुबराजों का एक राज्य परिपद् स्थापित करके महाराजाधिराज अपना बिचित्रता कथन के लिए बिशेष गय। राज्य परिपद् के लिए एक बिबान गवाह ब्रजा। उन सरकार में परिवर्तन करने आदि के भी अधिकार दिये गये।

पिछले दिनों में एक साध अनेक अप्रत्याशित परिवर्तन हुए हैं। सम्राट सिद्धार्ज लेड में बीमार बेचि अचानक रोग ने भीषण रूप बरण कर लिया और १३ मार्च १९५६ को मूरिज में उनका देहावसान हो गया। सम्राट लोकप्रिय थे किन्तु अस्वस्थता के कारण स्वयं राज्य का काम नहीं कर रहे थे। जब भी मातृका प्रभाव कोहरामा ने मनिमदल के आपसी भीमनस्य के कारण त्याग-यत्र दिया तो मुबराज महेश्वर (वर्तमान सम्राट) अपने स्वर्गीय पिता से परामर्श करके सिद्धार्जलेड मये थे और वहा से लौट कर उग्रहाने मनिमदल का त्याग-यत्र स्वाकार करके स्वयं ही समस्त अधिकार ग्रहण कर लिये थे।

वर्तमान सम्राट महेश्वर बुद्धल और बिबकसील व्यक्ति हैं। आपा की जा रही है कि वह भीषण है आम बुताब कराने की ब्यवस्था करेंगे और आबस्यकता हुई तो मनिमदल के लिये भी एमे इन का आमंत्रित करेंगे या उन उत्तरदायित्व को बहन कर सकें और जिस बहुमन ही मही लोकमान का बिश्वास प्राप्त है। आज हुआ है कि इन सब में बानबोन कम भी रही है।

देश का आर्थिक यावना सुधारण तथा निर्माण का यावनाएँ नये नान के समग्र समारोपण है। उनका कार्यन्वित और सकल करने के लिए मित्रराष्ट्रों का सहयोग भी नान का प्राप्त है। उन अबनर परण्ड सिबर एबं प्रवतिमान सरकार हा तयाम महादताओं और अदन यावनी का सहुपाय करके फलदा उठा मचना है। अग्रिम काल में राज नीतिज्ञ मचन बना रहना जिस हालत में भी देश के हित में अच्छा मही बना या मचना। एमा परिस्थिति में जनता के प्रतिनिधियों की सरकार तथा विधान परिपद् के स्थापित करने के प्रयत्न कम बहुराज नहीं रहे जिसके पूरा है बिना नान का धामन-ग्रहस्था निमी शासन में भी टाक नहीं है मचना और म ही देश को जनता हा उनम सहपाय कर मचनी है।

## संस्थाएँ

एकदम पारिवारिक शासन की समाप्ति के बाद नेपाल में माना प्रकार की राजनीतिक सामाजिक तथा वर्गीय संस्थाएँ उत्पन्न होकर देश में जागृति लाने की चेष्टा कर रही हैं। नेपाल जैसे एक छोटे से राज्य में जिसमें अभी तक प्रजातन्त्र की नींव ही नहीं पड़ सकी है। इतनी अधिक पार्टियों का होना कोई अच्छी बात नहीं कहनी या सचटो। इनमें यद्यपि समझ-समझ पर समझौते संयुक्त मोर्चे तथा बहिर्गोकरण की बातें आपस में चलती रहती हैं तथापि इनमें देश का वातावरण स्वच्छ होने की अपेक्षा बुरासा हो जाता जाता है और जनता भी संस्थाओं से ऊँचकर उमम विचार्य बहिराधि नहीं रखती। इस समय नेपाल में जो प्रमुख प्रमुख संस्थाएँ हैं और अपन विमान के अनुसार काम कर रही हैं वह इस प्रकार हैं—

## नेपाल प्रजा परिषद्

नेपाल प्रजा परिषद् नेपाल की सबसे पुरानी राजनीतिक संस्था है। इसकी स्थापना मध्य २० गते संवत् १०९३ साल की हुई। आरम्भ ही से इस संस्था ने अपन पक्षों और सेकों द्वारा राजासाही के विरुद्ध जनता में राजनीतिक जागृति लाने की कोशिश की किन्तु थोड़ा दिनों के बाद ही यह संस्था राजासाही के दमन-शक्त का शिकार हुई। इसके बहुत से कार्यकर्ता पकड़ गये, कुछ मरे गये और पानी डेकर मार डाले गये। तब भी काम नहीं रुका और किसी न किसी रूप में चलता ही रहा। परिषद् के जीवनपर्यन्त बन्दी नेताओं की प्रेरणा से नेपाली पक्षों तथा विचारों स्वतन्त्र भारत में राजासाही के विरुद्ध प्रचार करते रहे। संसद भवन में भी प्रजा परिषद् के कार्यकर्ताओं ने सक्रिय भाग लिया। सभी सरकार द्वारा जनता की भलाई होते न देखकर परिषद् के नेताओं न बल से मुक्त होने के पश्चात् उनका पुनर्स्थापन किया। नेपाल प्रजा परिषद् का अन्तिम लक्ष्य सब प्रकार के शोषकों को समाप्त कर देश में सबलोगों का विकास के साथ-साथ वर्गहीन समाज की स्थापना करना है। यह नेपाल में विदेशी साम्राज्यवाद के उन्मूलन स्वदेशी सामन्तवाद के नाश तथा पूर्ण जनवाद की स्थापना के लिए प्रयत्नशील है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसका जय राष्ट्रीय नार आर्थिक और रूप जनवादी है। इसके संघर्ष का आधार जनताधिकार केन्द्रियता है या किसानों और मजदूरों का अपना स्वतन्त्र माननी है।

नेपाल प्रजा परिषद् साम्राज्यवाद और उसके परिणाम युद्ध से विरोध तथा देशों की सभी जनता और जन आन्दोलनों के प्रति मैत्री-भाव रखती है।

यह परस्पर लाभ के आधार पर सभी प्रतिभाओं एवं जनतन्त्रवादी दलों के साथ व्यापारिक तथा कूनीतिक सम्बन्ध स्थापित करने के पक्ष में है। पड़ोसी भारत और चीन

के साथ यह विशय मिश्रता का सम्बन्ध चाहती है। नेपाल प्रजा परिषद् किसी भी देश का बचाव अथवा अनुचित हस्तक्षेप अपने देश पर नहीं होने देना चाहती।

### नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस

नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना सन् १९४६ ई० में जनारण में हुई। इसने नेपाल में कई बार सत्याग्रह छड़कर सफलता भी प्राप्त की किन्तु कुछ ही दिनों के भीतर यह बो-डीन टुकड़ों में बिभक्त हो गई। यह सार्वभौम स्वतन्त्र प्रजातन्त्रात्मक राष्ट्र की स्थापना तथा शक्तिशाली सैनिकों के साथ पूर्णतया मुकाबला करना चाहती है। यह भारत के साथ ऐतिहासिक सामूहिक और औपनिवेशिक सम्बन्ध निरन्तर होने के कारण मध्य में भी इसी आधार को लेकर निरन्तर सम्पर्क रखने दुनिया की समान प्रगतिशील शक्तियों के साथ मेल रखने तथा कम और कम को समाधायकवादी शक्ति मानने के पक्ष में है।

### नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी

नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी बुद्धों की सभ से मुपछित तथा सक्रिय राजनीतिक संस्था है। समस्त जर्मि के पहले से ही इसके कार्यकर्ता प्रत्येक जन-आन्दोलन में सक्रिय भाग लेते रहे और अन्य समस्याओं के कार्यकर्ताओं में कमी भी पीछे नहीं रहे। कुछ दिनों तक नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी और नेपाल प्रजा परिषद् जाति जातीय अन्तर्जातीय संयुक्त मोर्चा बनाकर एक साथ काम करते रहे किन्तु मोर्चा भंग हो जाने के बाद फिर सब अलग अलग हो गये। डाक्टर के आई मिह के मिह बरबार काण्ड के समय ही से नेपाल सरकार ने इस पार्टी पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। तब से कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता जनजातीय संगठनों में सम्मिश्रित होकर कार्य कर रहे हैं। यह देश के सामने उपस्थित राजनीतिक समस्या को मुलजान के लिए फीरो गरीबों पर निषेध लग के किए देश की समान अन्तर्जातीय राजनीतिक पार्टियों जन व जन संगठनों तथा व्यक्तियों द्वारा अन्तर्जातीय एक प्रतिनिधि मन्त्रालय तथा उसके द्वारा एक न्यूनतम कार्यक्रम निर्दिष्ट करते जनता का फीरो मुक्ति प्रदान कर सकने तथा जन प्रति उत्तरदायी एक अन्तरिम मन्त्रिमण्डल का चुनाव कराने के पक्ष में है। नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी देश की अन्तर्जातीय सार्वभौम सत्ता सम्पन्न सरकार में सभी देशों में उनकी राजनीतिक व्यवस्थाओं के अन्तर्गत के अन्तर्गत अन्तर्गत स्थापित करने तथा अपने आर्थिक पुनर्निर्माण के लिए किसी भी देश में नेपाल की स्वतन्त्रता सार्वभौमिकता तथा सामाजिक न्याय में मेल न रखने वाले राजनीतिक या अन्य शक्तियों को स्वीकार किये अन्तर्गत में भी पूर्ण सहायता देने विषय पर अन्तर्गत नाम तथा देश के अन्तर्गत नामों में हस्तक्षेप न करने की शक्तों पर आधारित होन आवश्यक होय में कोई अज्ञति नहीं करेगे। वह अपने राष्ट्रीय भाग्य और जन की जनता के साथ सौम्य सम्बन्ध स्थापन करके अपने सामूहिक तथा आर्थिक सम्बन्धों का विनिर्माण करना चाहती है।

## नेपाली कांग्रेस

नेपाली कांग्रेस की स्थापना अप्रैल सन् १९४८ ई० में कलकत्ता में हुई और उसके आह्वाण पर सारे देश में एकतावादी तथा सरकार के विरुद्ध सशस्त्र आन्दोलन छिड़ी। नेपाली जनता का सहयोग प्राप्त करके यह संस्था किसी दिन बहुत शक्तिशाली हो गई थी किन्तु सत्ता मित्र के साथ ही साथ इसमें दरारें पड़ने लगीं। कोइराला बन्धुओं के बीच पारस्परिक मतभेद काफ़ी गीपन रूप धारण कर गये। इन को दूर करने के लिए अबप्रकाश मारवाह की अध्यक्षता में एक समिति हुई जिसकी प्रतिमिति इस प्रकार है—

## संक्षेप

देश की वस्तुस्थिति को दृष्टि में रखते हुए, हम यह अनुमन कर रहे हैं कि कांग्रेस के ओहवों में मनमुटाव बांझनीय नहीं। देश को सबल बनाने के बिचार और सान्तिपूर्ण प्रजातान्त्रिक सशक्ति के लिए यह परम आवश्यक है कि कांग्रेस में एकता हो। देश की वीर्य उत्पत्ति के पथ पर के आग की जिम्मेदारी केवल हमारी संस्था ही ले सकती है। गुजरे दिनों में हमारे परिवार में देश की उत्पत्ति के लिए बहुत कुछ किया है। और हम यह महसूस करते हैं कि हमारे आपना फूट से हमारे पूर्व उत्पत्ति को नुकसान पहुंचेगा। समय पक्ष की आग से बहुत ही ऐसी बातें कही गई हैं जिसने हमारे बाप को लाल बछ्छा बना। ऐवम स्थापना के उत्पत्ति से हमने यह निश्चय किया है कि हम समझौता कर में और निम्नलिखित धर्म उममत स्वीकृत हुई हैं—

१. काठमाण्डू में कार्यकर्ताओं की आपसी बैठक में प्रधान मंत्री तथा अध्यक्ष के विरोध में जो प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था उसे अस्वीकृत समझा जाय और इस कार्रवाई के लिए सब प्रकट किया जाय।

२. सद्भावना का वातावरण सुबल किया जाय मन्त्रिमण्डल में हम दोनों में से किसी के विरोध में जो भी सरस्य प्रवर्तन होना वह हम दोनों के हाथ बुलार दिया जायगा तथा आवश्यक हान पर उनके विरुद्ध अनुशासन की कार्रवाई की जायगी।

३. कांग्रेस पार्टी तथा सरकार में सशक्त प्रतिमिति में एकमुखता का स्थापन।

४. अध्यक्ष के निबिरोध निबिचन का निश्चयोकरण।

५. काम मुक्त रूप से चलाने के लिए अध्यक्ष तथा प्रधान मंत्री के सब बलन बनाने।

६. गम्मतफहमी तथा असामंजस्य से बचन के लिए पार्टी सरकार की नीति के कार्बान्वित करने में निरपप्रति दबकनबाजी नहीं करेगी तथा शासन प्रबन्ध में सरकार पार्टी के हस्तभय में स्वतन्त्र रहेगी।

७. कांग्रेस के आदेश और कार्बकम को स्थापित करने के लिए सरकार कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में निर्धारित नीति के अनुसार चलना स्वीकार करेगी। कांग्रेस एक वय

के लिए कार्यक्रम निर्धारित करेगी जिस सरकार कार्यान्वित करेगी।

८. कार्यमिति में उचित प्रादेशिक प्रतिनिधित्व रहेगा तथा सदस्यों की नियुक्ति संयुक्त परामर्श से होगी।

इसके बावजूद भी मानूँ कि सरकार और नेपाली कांग्रेस में मही निमी और कांग्रेस की कार्यमिति में सरकार में सम्मिलित शक्तियों की संस्था से निष्पत्ति निकल कर दिया। परिणाम स्वल्प सरकार बंग हो गई और नेपाली कांग्रेस को भी पक्षभ्रष्ट होना पड़ा। इसके पश्चात् इस संस्था का एक भाग मानूँ कि प्रसार कोइला के मन्त्र में नेपाली कांग्रेस से पुनर्ज हो गया।

नेपाली कांग्रेस अपने को अन्तिकारी संस्था मानकर संसदीय प्रजातन्त्रवाद तथा महाराजाधिराज की वैधानिक शासक मानती है। वह अपने पड़ोसी चीन और भारत से अनिष्ट सम्बन्ध स्थापित करके अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भारत को अपना शत्रु मानती है। वह मनुष्य राष्ट्र सभ की मान्यता की वृद्धि साम्राज्यवादी औपनिवेशिक नीति का अन्त तथा न्याय में घोषणाहित प्रजातान्त्रिक समाजवादी व्यवस्था की कल्पना करती है।

### नेपाल राष्ट्रवादी गोरखा परिपक्ष

नेपाल राष्ट्रवादी गोरखा परिपक्ष का जन्म राणा शासन की समाप्ति के बाद हुआ। यह अपने को राष्ट्रवादी संस्था सिद्ध करके मजबूत अन्तर्राष्ट्रीयता वृद्धि के लिए विश्व के सभी राष्ट्रों को अपने हाथ में जीवन बिताने अपनी मस्तुति और मान्यता के अनुसार चलते हुए समानता का पक्ष प्राप्त करने और परस्पर आक्रमण की विज्ञा से बचने को परमावश्यक मानती है। इसी विचारधारा पर वह अपनी वैदेशिक नीति भी निर्भर रखती है। वह संसार में शांति के लिए अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करने हुए माना राष्ट्रों के किसी मुद्दे से कोई बातना नहीं रखे तथा नेपाल की वैदेशिक नीति में कहीं से भी हस्तक्षेप न होने देन के पक्ष में है।

नेपाल राष्ट्रवादी गोरखा परिपक्ष भारत में अपना सम्बन्ध नदी मघि पर निर्धारित करती है। वह निष्पक्ष के साथ ही जातीय और मास्तुनिक समानता मानकर अपनी मित्रता जारी रखन की घोषणा करती है। गोरखा परिपक्ष अपने को बिरोधी पार्टी सिद्ध करके देश की मजबूत शक्ति तथा मजबूत देश का शासनाधीन से बचाना आवश्यक समझती है। वह नेपाल के लिए मिमी-जुकी आर्थिक व्यवस्था तथा मजबूत समिति की सम्पत्ति के मित्रान को अपने घोषणापत्र में बिगलना देती है।

### नेपाल तराई कांग्रेस

नेपाल तराई कांग्रेस का जन्म उस समय हुआ जब नेपाली कांग्रेस मजबूत थी और वह बर्तुदा में विभक्त हो रही थी। तराई कांग्रेस प्रत्येक क्षेत्र की आत्मनिर्भरता का अधिकार और स्वायत्तता मानती थी एक मूल में आकर करके 'नेपाल युनियन' की स्थापना करना चाहती है। वह भारत औपनिवेशिक और आर्थिक तथा सामाजिक मंगलों के आधार पर

पड़ाई और तराई को दो या दो से अधिक प्रान्त कायम करने और उन्हें आन्तरिक शासन का पूर्ण अधिकार देने के पक्ष में है।

नेपाल तराई कांग्रेस मिश्रित तथा मिश्रित अर्ध-स्वतन्त्रता को इस के लिए उपयुक्त तथा हिन्दी भाषा की नेपाल की राष्ट्रभाषा मानती है। यह अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धी से न्याय को पृथक् रखने का समर्थन करती हुई संसार के सभी स्वतन्त्र देशों के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करने को अधिक दृष्टि से मर्मर नहीं मानती। यह अपने घोषणा-पत्र में केवल द्वि-पक्षीय और निराला आवश्यक देशों के साथ कूटनीतिक तथा व्यापारिक सम्बन्ध कायम करने का आवश्यक मानती है।

### अखिल नेपाल जन कांग्रेस

अखिल नेपाल जन कांग्रेस नेपाली कांग्रेस से निकली हुई एक राजनीतिक मस्या है। यह सर्वोद्योगवाद व बिस्वास करके देश को सच्चे प्रजातन्त्र की ओर अग्रसर करने के पक्ष में है। जन कांग्रेस अपने घोषणापत्र में दो सिद्धान्त बिरोधी ए-का-अमरीको एवं सोवियत रूस मूट के समाज को दृष्टि में रखते हुए नेपाल की अपनी लोकशाही के शीर्ष में अपने सीमित साधनों को काम में लाकर उसे काम करने के लिए प्रबलशील होने का विचार प्रकट करती है। यह दुनिया के समान देशों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करके देश में सर्वतोमूखी विकास चाहती है। अखिल नेपाल जन कांग्रेस नेपाल की भूमि समस्या को भीम की भूमि समस्या से भिन्न नहीं समझती। उसे मुक्ताने के लिए भीम की भूमिवादी से प्रेरणा एवं प्रोत्साहन प्राप्त करेगी।

### राष्ट्रीय प्रजा पार्टी

राष्ट्रीय प्रजा पार्टी नेपाली कांग्रेस से निकली हुई नेपाल की सब से नयी राजनीतिक मस्या है। परमार्थवादी समिति के पश्चात् इसी राष्ट्रीय प्रजा पार्टी का मंत्रिमण्डल बना जिसमें कई स्वतन्त्र सदस्य भी थे। देश की परिस्थिति न संभाल सकने के कारण प्रजा पार्टी को विघटन होकर अन्य संस्थाओं का भी सहयोग लेना पड़ा। यह यद्यपि नेपाली कांग्रेस से ही जातिर्भूत हुई है तथा भी लोगों की नीति और कार्यक्रम में काफी भिन्नता है। नेपाली कांग्रेस वहाँ अपने को जातिकारी और समाजवादी संस्था मानती है वहाँ राष्ट्रीय प्रजा पार्टी अपने को सुधारवादी तथा प्रजातन्त्रवादी। नेपाली कांग्रेस की अपेक्षा यह राष्ट्रीयता पर भी अधिक भार देती है।

राष्ट्रीय प्रजा पार्टी आर्थिक प्रजापति को प्रथम देकर द्वि-पक्षीय की औद्योगिकता को प्राथमिकता देती है। यह राष्ट्रीय युजीवितियों को प्रोत्साहन देकर देश का औद्योगीकरण करना चाहती है।

राष्ट्रीय प्रजा पार्टी स्वतन्त्रता की नीति बरत करके मिश्रणियों से अच्छे सम्बन्ध स्थापित रखना चाहती है। यह भारत से नजिद सम्पर्क रखने के भी पक्ष में है।



## मैत्री संघ

नेपाल-भारत मैत्री संघ नेपाल-भोज मैत्री संघ तथा नेपाल-भूटान सद्भावना समिति भी नेपाल में स्थापित हैं। ये एगियाई जनता की अविच्छिन्न एकता को सुदृढ़ करके विश्व-व्यापक तथा सांस्कृतिक अन्त्युत्थान के लिए प्रयत्नशील हैं।

## वर्गीय संगठन

अखिल नेपाल किसान संघ नेपाल ट्रेड यूनियन कांग्रेस समाज मुजार संघ विद्यार्थी संघ महिला संघ तथा युवक संघ आदि वर्गीय संगठन हैं। इनके अतिरिक्त बहुत सारे भी संगठन हैं जो केवल किसानों तथा नगरों ही तक सीमित हैं और नेपाल के पर्वतीय तथा तराई प्रदेश में काम करते हैं।



- (क) बाक और प्रकाशन स्वतन्त्रता
- (ख) छान्तिपूर्वक और बिना हथियार लिये सम्मेलन समा करना
- (ग) संस्था या संघ बना करना
- (घ) नेपाल राज्यभर में बिना रोक-टोक बिचरण करना
- (ङ) नेपाल राज्य भर में जिस किसी भाग में भी निवास करना और घर बसोना

सेना

- (ब) सम्पत्ति जर्जन करना उपभोग करना करीब-बिची करना और
- (छ) कोई पेशा राजगार, उद्योग या व्यापार करना।

१७ राज्य द्वारा निश्चय दिवाने की व्यवस्था—

(क) कोई व्यक्ति भी उस समय में प्रचलित कोई एक बिस्य कुछ काम करने के सिवाय और किसी अपराध का शोषी नहीं माना जायगा और अपराध करने के समय जारी क्रिय हुए उन में निश्चय बिजे मये वण्ड से अधिक दण्ड नहीं दिया जायगा।

(ख) किसी व्यक्ति के ऊपर एक ही अपराध में एक बार से अधिक मुकदमा नहीं चलाया जायगा और दण्ड मज्रा नहीं दिया जायगा।

(ग) किसी अपराध के शोषी व्यक्ति को अपने बिस्य गवाह होने के लिए बाध्य नहीं किया जायगा।

१८ सार्वजनिक हित के लिए कबला सार्वजनिक छान्ति काममें रखने के लिए या राज्य-सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा बनाय गये एक कयबा नियम से स्थापित की गई रीति के बिपरीत किसी व्यक्ति की भी जान या व्यक्तिगत स्वतन्त्रता नहीं छीनी जायगी।

१९ (क) मनुष्यों की करीब-बिची और बेकारी प्रथा तथा इसी प्रकार के खर्बन्त काम कराने का मनाही किया गया है। किसी के द्वारा इनके बिपरीत किया हुआ शाबित होने पर बानुनन मज्रा होगी।

(ग) इन बाराभा में उन्निनिन बानों रा लाक प्रयोजन के निमित्त काम अनिवार्य करने में राज्य का बाधा बर्हमा नहीं होगा। ऐसा करने में बर्म जाति जान (बर्ब) या बर्ग हत्यानि किसी बात के जरिय भेदभाव नहीं किया जायगा।

२० १४ बप में बम उठ ब किसी भी बालक का कारणान या जान के बाम में कबला बध्य किसी जानिम के बाम में नहीं लबाया जा मरता है।

### भाग ३

#### परिच्छेद २—कार्यकारिणी अधिकार

२१ (क) राज्य का कार्यकारिणी अधिकार श्री पाब महाराजाधिराज और मौमूक के संनिमण्डल की मौता गया है। मौमूक उस अधिकार बयानिम बाम करने के समय

मंत्रियों की सलाह लेकर इस ऐम के अनुसार, स्वयं या मंत्रिक के मातहत के कर्मचारियों द्वारा करेंगे।

व्याख्या—धी ५ महाराजाधिराज से किया जायगा कहने का मतलब धी ५ से मंत्री जबकि मंत्रियों की सलाह से किया जाने वाला समझना चाहिए।

(ख) ऊपर वाले में उल्लेख की गयी बातों को बाबान पड़ने के तौर पर नपास की जंगी चीज का सर्वोच्च कमान्डर-इन-चीफ का पद धी ५ महाराजाधिराज में व्यवस्थित रहा है। उक्त पद सम्बन्धी काम और कार्यों का संचालन ऐम बमोजिम नियमित होगा।

२२ (अ) निम्नलिखित मुकदमों में किसी अपराध के दौरी ठहराये गये किसी व्यक्ति की दण्ड सजा माफी करना बिरुद्ध करना बटाना या बदलावा या मुक्तगी रखन का अधिकार धी ५ महाराजाधिराज का होगा—

(क) सेना न्यायालय (कोर्ट मार्शल) में दण्ड सजा किया गया

(ख) नेपाल के कार्यकारिणी अधिकार लागू होने के विषय सम्बन्धी एम के विरोध में किये गये अपराध की दण्ड सजा दी गयी।

(ग) बाल सजा का दण्ड किया गया।

(घ) क्लॉ (१) के उपदफा (क) में उल्लेख किये गये बातों से नेपाल की सशस्त्र सेना का जिस किसी अधिकार को एम से दिया गया सेना न्यायालय से किया गया बहादेरी मुक्तगी रखन माफी देने या बदलने के अधिकार में वाया नहीं हो जायगी।

२३ (क) धी ५ महाराजाधिराज के शासन सम्बन्धी किये जाने वाले कार्य सम्पादन में सहायता सलाह देने के लिए एक मंत्रिमण्डल रहेगा जिसके प्रभावमेंती मुख्य होंगे।

(ख) मंत्रियों द्वारा धी ५ महाराजाधिराज को कोई सलाह दी गई है या नहीं और यदि दी गई है तो क्या सलाह दी गई यह बात किसी महाद्वार में हो नहीं पड़ी जायगी।

२४ मंत्रिमण्डल सामूहिक रूप में धी ५ महाराजाधिराज के प्रति उत्तरदायी होगा।

२५ (क) नेपाल सरकार की कार्यकारिणी सम्बन्धी सभी काम धी ५ महाराजाधिराज के नाम में किये जायेंगे।

(ख) धी ५ महाराजाधिराज के नाम में तैयार होकर कार्यान्वित किया गया आर्डर आदेश (डिर्ती) और अन्य अधिकार पत्र (समाप्त समझे) धी ५ महाराजाधिराज में दिये गये निम्न बमोजिम प्रमाणित किये जायेंगे और इस तरह प्रमाणित किया गया आर्डर, डिर्ती या अधिकार पत्र उचित है या नहीं ऐसी बातों में धी ५ महाराजाधिराज से कार्यान्वित किया गया अपवा तैयार कठपा गया आदेश या अधिकार पत्र यह नहीं है कहकर सवाल-जवाब नहीं किया जायेगा।

(ग) नेपाल सरकार के कार्य कार्यवाही अधिक सुगमता से चलाने के लिए यह

काय मंत्रियों में विमर्शित करने के लिए थी ५ महाराजाधिराज से नियम और आदेश बताया जायगा ।

२३. प्रधान मंत्रियों का कर्तव्य—

(क) नेपाल के शासन सम्बन्धी विषयों में मंत्रिमण्डल द्वारा किया गया सभी निश्चय थी ५ महाराजाधिराज के समक्ष पेश करेगा ।

(ख) नेपाल के शासन-सम्बन्धी विषयों में भी ५ महाराजाधिराज से मांगी गयी ह्रास लबर मौजूद के समक्ष पेश करेगा ।

(ग) एक मंत्री में निर्बंध किया गया परन्तु मंत्रिमण्डल से बिचार नहीं किया गया कोई विषय भी ५ महाराजाधिराज मंत्रिमण्डल में बिचार कराना चाहें तो मंत्रिमण्डल में पेश करेगा ।

### आर्थिक विषय की कार्य प्रणाली

२७ थी ५ महाराजाधिराज से हुके आर्थिक रूप के लिए नेपाल सरकार का अनुमान किया गया सामग्री लक्ष का एक बिबरन तैयार किया जायगा । इस बिबरन को आर्थिक आर्थिक बिबरन का बजट कहा जायगा ।

२८. यह बिबरन थी ५ महाराजाधिराज और मौजूद के मंत्रिमण्डल से मंजूर होने पर ही मुतिविधित किया जायगा ।

२९ (क) जिस किसी समय में भी थी ५ महाराजाधिराज से मंत्रिमण्डल के मसाले अनुसार ठाकास ही कुछ करने की परिस्तिती आयी है ऐसा समयन में आवश्यक आदिनस्त जारी किया जा सकता है ।

(ख) इस नियम अनुसार जारी किया गया आदिनस्त मुक्त में जारी किये कये अन्य एंग की तरह होगा परन्तु ऐंगी प्रत्येक आदिनस्त—

(ग) जब उपरान्त में बरत बाणा विधानानुसार रीतिपूर्वक बताया गयी व्यवस्था पिका मन्त्री की बैठक बैठक के तीन महीना पूरे हो जान पर सारिज होगा ।

(ब) थी ५ महाराजाधिराज द्वारा उक्त आदिनस्त मंत्रिमण्डल की मसाले से कभी भी सारिज किया जा सकता है ।

### परिच्छद छीम—स्वाय-प्रबन्ध

१० (क) प्रधान स्वायत्त मुक्त का सर्वोच्च स्वायत्त होगा । उसमें एक प्रधान स्वायत्त और थी ५ महाराजाधिराज के द्वारा मंत्रिमण्डल के मसाले अनुसार निश्चित नियम अन्य स्वायत्त भी रहेंगे ।

(ग) प्रधान स्वायत्त के प्रधान स्वायत्त और प्रत्येक स्वायत्त थी ५ महाराजाधिराज द्वारा मंत्रिमण्डल की मसाले कर नियुक्त नियम आयोग और वेतन बर्ष के उम्मीद होने तक के जान पर में रहेंगे ।

प्रधान न्यायाधीश को छोड़कर अन्य न्यायाधीश को नियुक्त करने के समय प्रधान न्यायाधीश से सलाह भी चायगी ।

न्यायाधीश धी ५ महाराजाधिराज के समक्ष अपने हस्ताक्षर पत्र लिखकर पदत्याग कर सकते हैं ।

(ग) नेपाल के नागरिक न होकर और (घ) कम से कम १० वर्ष तक नेपाल में कोई इस्तीफा करने के पद पर बहाल न होकर वा (ब) कम से कम १० वर्ष तक प्रधान न्यायालय में बकील न होकर कोई भी व्यक्ति प्रधान न्यायालय का प्रधान न्यायाधीश न न्यायाधीश के पद के लिए योग्य नहीं माना जायगा । परन्तु प्रधान न्यायालय का प्रधान न्यायाधीश वा न्यायाधीशों के पद में नियुक्त करने के लिये नेपाल के नागरिक न मिछने की समस्या में गैर नागरिक भी नियुक्त हो सकेगा ।

(ब) प्रधान न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश और अन्य न्यायाधीश धी ५ महाराजाधिराज के मंत्रिमण्डल की सलाह अनुसार नियमित सम्बाह पायग । उन्हें मर्ती होकर के बाद उनका नियुक्ति छत इन तरह नहीं बदला जायगा जिसमे उन्हें बाधा पड़ ।

(ङ) प्रधान न्यायालय का प्रधान न्यायाधीश वा और कोई न्यायाधीश सराब न्याय का वा अयोग्य ठहरान पर मंत्रिमण्डल के कम से कम तीन सद के दो खंड बहुमत से उनको बरिज किया जाय ऐसी राय धी ५ महाराजाधिराज के समक्ष दिया गया तो मौखिक की बाब्रामात्र से वे अपन पद से बरिज होंग अन्यथा नहीं ।

११ मायका मुकदमा सम्बन्धी काम-पत्र मिसिद रखने का आफिस प्रधान न्यायालय होमा न्यायालय की अवहकता सम्बन्धी सबा देने का अधिकार और उक्त आफिस का समी व्यस्थितार इस प्रधान न्यायालय को होमा ।

१२ प्रधान न्यायालय का अधिकार और कार्यप्रणाली एम बमोजिम जब तक न बदली जायेगो तब तक पूर्ववत् रहेगी ।

## परिच्छद ४-नेपाल का नियन्त्रक (कण्ट्रोलर)

### महालेखा परीक्षक (आडिटर-जनरल)

१३ (क) नेपाल में एक नियन्त्रक महालेखा परीक्षक रहेगा जिसकी धी ५ महाराजाधिराज मंत्रिमण्डल की सलाह अनुसार नियुक्त करेंगे ।

(ख) नियन्त्रक महालेखा परीक्षक की सम्बाह और लोकरी की अन्य मर्ते प्रधान न्यायालय के न्यायाधीश के मुताबिक होंगी ।

१४ नेपाल सरकार का स्याहा येस्ता हर हिसाब धी ५ महाराजाधिराज की स्वीकृति सहित नियन्त्रक महालेखा परीक्षक द्वारा निश्चित बिन्ने मने रूप में रखा जायगा ।

१५. नेपाल सरकार का स्याहा येस्ता हर हिसाब सम्बन्धित नियन्त्रक महालेखा परीक्षक की रिपोर्ट धी ५ महाराजाधिराज के समक्ष पेस होनी चाहिय ।

## भाग ४

३६ (क) मुक्त का एन अमिलेस (रेकार्ड) और ध्याम संबंधी कार्यवाही को सारे नेपाल में पूर्ण विश्वास और सम्मल दिया जायगा।

(ख) नेपाल की अशाकतो द्वारा किया हुआ अन्तिम फ़ैसला का आदेश एन बमोजिम सारे नेपाल में जहाँ कहीं भी कार्यान्वित होया।

## भाग ५

३७ नेपाल के लिए एक पब्लिक सर्विस कमीशन (बोर्ड सेवा आयोग) रहेगा। उसमें एक समापति और भी ५ महाराजाधिराज से निश्चित किये हुए अन्य सदस्य भी रहेंगे।

३८ पब्लिक सर्विस कमीशन की सभाह अनुसार भी ५ महाराजाधिराज पब्लिक सर्विस कमीशन के समापति और अन्य सदस्यत्व की नियुक्ति करने।

३९. पब्लिक सर्विस कमीशन के समापति और सदस्यों के वेतन और नौकरी की शर्तें प्रधान स्यायामस्य के स्यायाधीशों के अनुकूल होंगी।

४० (क) नेपाल सरकार की सभी जागीरों नौकरियों में नियुक्ति के लिए जांच करना का कतम्य पब्लिक सर्विस कमीशन का होगा।

(ख) निम्नलिखित विषयों में पब्लिक सर्विस कमीशन से सभाह लेनी पड़ेगी—

(अ) निजामती पद और नौकरी में नियुक्ति करने के तरीके-सम्बन्धी विषयों में

(आ) निजामती नौकरी और पद में नियुक्ति करने और बदलने बढ़ाने के सिद्धान्त में और उक्त नियुक्ति और बदलने-बढ़ाने से सम्बन्धित सम्मदबारी की घोषणा के विषय में

(इ) नेपाल सरकार के निजामती जागीरदार के अनुमानन सम्बन्धी सभी विषय और इससे सम्बन्धित स्मृति-पत्र विस्तृत उजुरी का निवेदन-पत्र सहित सभी विषय में

और सरमस्वाह के निमित्त पेग किया गया तथा भी ५ महाराजाधिराज द्वारा सभाह मागे जाने पर जिस किसी विषय में सभाह लेने का काम पब्लिक सर्विस कमीशन का होगा। परन्तु भी ५ महाराजाधिराज से इस विषय में साधारणतौर से वा विद्यपत अनुकूल विषयों में वा अनुकूल परिस्थिति में पब्लिक सर्विस कमीशन से सभाह लेनी आवश्यक नहीं है बहकर नियम द्वारा निश्चित किये जाने पर वैसा ही होगा।

## भाग ६

## निर्वाचन (चुनाब)

४१ नेपाल के लिए एक विधान बनाए जायें विधान परिषद् का निर्वाचन करने के लिए अरनच जम्ही उच्च परिस्थिति का मुकदमा अन्तरिम सरकार का ध्येय होगा।





## भाग ७

७ संवत् २००४ (सन् १९४८) को नेपाल सरकार वैधानिक कामन छान्दिस किया गया है ।

नोट—इस विभाग में समय-समय पर संशोधन आदि भी हुए हैं जिससे इसका रूप परिवर्तित होता गया है ।

## सप्ताहकार सभा का विधान

स्वस्ति श्री गिरिराजचक्रबुद्धामणि नरनारायणरेयादि विविध विद्याभक्ति विराज  
मलमानोदित ओजस्वी राज्य प्रोज्ज्वल संपादितारा ओ३मुरामपट्ट अनुलब्धोतिर्मय  
त्रिपठितपट्ट यति प्रबल मोरसायसिमावाह महाविपति सर्वोच्च कमाण्डर इन्-चीफ  
श्री मम्महाराजाधिराज श्री श्री श्री महाराज विभुवन कीर विजय जंग बहादुर रामसेर  
जंग देवानाम् सदा समर विजयीताम् ।

नेपाल के निमित्त एक सप्ताहकार सभा का गठन करने के लिए नेपाल अन्तरिम  
शासन-विधान २००७ को संशोधित करने के निमित्त

### एक ऐन

प्रस्तावना—ऐन के सामान्य प्रवन्ध में जनता के प्रतिनिधियों को अधिक सम्मिलित  
कराने के लिए श्री ५ महाराजाधिराज तथा मौलुक्त के संविमण्डल को अपने कार्य-सम्पादन  
में सहायता और सप्ताह ऐन के लिए एक सप्ताहकार सभा का गठन आवश्यक तथा वांछ-  
नीय होने के नाते देशवास के अधिनियम आदि बनाये गये हैं—

१ (क) इस ऐन का नाम नेपाल अन्तरिम शासन-विधान (द्वितीय संशोधन)  
२००९ होगा ।

(ख) यह ऐन तुरन्त लागू होगा ।

### परिभाषा

२ प्रसंग से दूसरा अर्थ में लगान के समय तक इस ऐन में—

प्रधान ऐन—नेपाल अन्तरिम शासन-विधान २००७ को कहा जायगा ।

सभा—सप्ताहकार सभा को कहा जायगा । अन्य सर्वों के जिनकी परिभाषा यहाँ  
नहीं दी गई है वही अर्थ तथा महत्त्व होंगे जो प्रधान ऐन में हैं । प्रधान ऐन के भाग ३ के परि-  
च्छेद १ कार्यकारिणी अधिकार के साथ निम्नलिखित दूसरा परिच्छेद जोड़ा जायगा ।

परिच्छेद १ (क) सप्ताहकार सभा

### साधारण

२८ क (१) नेपाल में एक सप्ताहकार सभा का गठन होगा जिसके सदस्यगण  
श्री ५ महाराजाधिराज द्वारा नेपाल के प्रामाणिक मानदिकों के बीच से मनोनीत होंगे तथा  
जिसमें नेपाल सरकार के सभी मंत्री राज्य मंत्री तथा उपमन्त्री पदेन सम्मिल होंगे ।

(२) संविधान सभा के गठन के पश्चात् सप्ताहकार सभा का अस्तित्व समाप्त  
हो जायगा ।

२८-अ सभा के और सरकारी सदस्यों में अबासख देश के विभिन्न भाग वर्ग तथा विचारधारा का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों को चुना जायगा।

२८-ब (१) नेपाल के नागरिक

( ) २५ वर्ष की आयु तथा

(३) २८ व में दिये हुए अपोम्यताग्रहित न होने से कोई भी व्यक्ति सभाहकार सभा के सदस्य मनोनीत होने के योग्य नहीं होय।

२८-ब (१) निम्नलिखित व्यक्ति सभाहकार सभा के सदस्य के अपोम्यताग्राह्य—

(क) नेपाल सरकार के मातहत किसी भाग के पद को धारण करने वाले व्यक्ति

(ग) अबासख द्वारा नैतिक विवृति तथा भ्रष्टाचार के अभियोग में दोषी सिद्ध हुए तथा

(न) विभाग लराह वाले व्यक्ति।

किन्तु इससे नेपाल के पश्चिम इलाके के सदस्य राज्य मंत्री अथवा उपमंत्री को काम का पद धारण करने वाला व्यक्ति नहीं माना जायगा।

(२) वापस नहीं प्रेषण करने के समय तक कोई व्यक्ति सभा का सदस्य नहीं माना जायगा।

२८-ब (१) सभाहकार सभा के सदस्य भी निम्नलिखित किसी अवस्था में अपना स्थान रिक्त करना माने जायेंगे—

(क) अपने हस्ताक्षर से सभा के अध्यक्ष को लिखित त्यागपत्र पेश करने अथवा

(ग) कक्षा २८ ग में दिये अपोम्यतानुसार अथवा

(ग) सभा की अनुमति बिना सभा की बैठक में २५ दिन की अवधि तक म्याताग्र अनुपस्थित रहने में।

किन्तु इस २५ दिन की अवधि की गणना में समा-स्वात-काल यदि लगातार ४ दिन में अधिक रहे तो यह सम्मिलित नहीं किया जायगा।

(२) कोई सदस्य कक्षा २८ ग में बर्जित अपोम्यता का भागी है अथवा नहीं इस प्रश्न का निर्णय श्री ५ अंतराजाधिराज के समक्ष पद होया और मौखिक का निर्णय अन्तिम होगा।

२८-ब सभा के सदस्य बैठक का और सभा श्री ५ अंतराजाधिराज द्वारा निर्णय अन्तिम होगा।

उ यदि कोई व्यक्ति वापस प्रेषण करने के पक्षे अथवा अपनी सदस्यता के निमित्त वापस नहीं है अथवा अयाग्य है या जान ताते हुए भी सभा की बैठक में सदस्य की हानियन में बैठता है अथवा मन देता है तो उस व्यक्ति का सभा में भाग लेने अथवा मन देने से प्रत्येक दिन के लार्की की गणना की जाएगी और उसका राज्य देय अक्षर के रूप में बसूल करेगा।

## सलाहकार समिति का विधान

२८-अ समिति में कोई स्थान रिक्त होने पर उसकी पूर्ति करने का अधिकार भी ५ महाराजाधिराज का है।

### समिति के पदाधिकारी

२८-अ भी ५ महाराजाधिराज द्वारा माने हुए सदस्य अथवा व्यक्ति के समापत्तिव में सलाहकार समिति अपने अधिवेशन की प्रथम बैठक में दो सदस्यों को क्रमशः अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष चुनगी पीछे भी जैसे-जैसे अध्यक्ष अथवा उपाध्यक्ष का पद रिक्त होगा अन्य सदस्यों को स्थिति अनुसार अध्यक्ष अथवा उपाध्यक्ष चुनगी। अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का चुनाव समिति में उपस्थित सदस्यों के बहुमत से होगा तथा परेन सदस्य इन पदों के चुनाव के निमित्त उम्मीदवार खड़े नहीं हो सकते।

२८-अ सलाहकार समिति के अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष का पद धारणकर्ता—

- (१) यदि सलाहकार समिति के सदस्य रहना न चाहें तो अपना रिक्त करेंगे।
- (२) अपने हस्ताक्षर में लिखित भी ५ महाराजाधिराज का सम्बोधित पत्र देने से पद त्याग हो सकेगा।

(२) समिति में उपस्थित सदस्यों के तीन अर्द्ध में से दो अर्द्ध के बहुमत से पाठ हुए प्रस्ताव द्वारा हटाए जा सकेंगे।

२८-अ (१) समिति के अध्यक्ष का पद रिक्त होने पर अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष के पद के रिक्त होने पर भी ५ महाराजाधिराज द्वारा नियुक्त सदस्य इस प्रयोजन के निमित्त उस पद के कर्तव्य का पालन करेंगे।

(२) समिति की किसी बैठक में अध्यक्ष भी नहीं अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष की अनुपस्थिति में कार्यविधि के नियमानुसार समिति द्वारा निर्धारित व्यक्ति अध्यक्ष के रूप में कार्य करेगा।

२८-अ समिति के अध्यक्ष के निमित्त अथवा अध्यक्ष रूप में कार्य करने वाले उपाध्यक्ष अथवा अन्य किसी व्यक्ति को प्रथमतः मत देने का अधिकार नहीं होगा किन्तु मत बराबर होने की स्थिति में अपना निर्णायक मत देने का अधिकार होगा।

२८-अ अध्यक्ष को हटाने का प्रस्ताव विचाराधीन काल में अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष को हटाने का प्रस्ताव विचाराधीन काल में पेशासीन नहीं होने पाएंगे।

२८-अ अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष को पाने का बैठन और भत्ता भी ५ महाराजाधिराज द्वारा नियत किये हुए बमोजिम होगा।

### समिति का आह्वान तथा अधिवेशन

२८-अ (१) सलाहकार समिति प्रत्येक वर्ष में कम से कम दो बार आवाहन करेगी तथा एक अधिवेशन की अन्तिम बैठक तथा दूसरे अधिवेशन की प्रथम बैठक के बीच में ५ महीने का काल व्यतीत नहीं होना पाएगा।

(२) उपयुक्त बज्र (१) के अधीन थी ५ महाराजाधिराज द्वारा समय-समय पर—

(क) उपयुक्त स्थान तथा समय का आवाहन हो सकेगा।

(ख) सभा का अधिवेशन भंग हो सकेगा।

२८ न थी ५ महाराजाधिराज द्वारा प्रत्येक अधिवेशन के प्रारम्भ में सभा का सम्बोधन होया जिसमें सभा के आवाहन का कारण ज्ञात कराया जायगा।

२८ ब (१) थी ५ महाराजाधिराज द्वारा सभा का सम्बोधन हो सकेगा। इस प्रयोजन के निमित्त सदस्यों की उपस्थिति होनी होगी।

(२) थी ५ महाराजाधिराज द्वारा सभा के लिए सभा के समक्ष प्रस्तुत विषय जबका किसी विषय के सम्बन्ध में मसौदा पढ़ाया जा सकेगा तथा सभा उस संदेश में निहित विषय के ऊपर सुविधानुसार समारोह विचार करेगी।

### सभा का कार्य-संचालन

२८ इ सभा के प्रत्येक सदस्य अपना आसन ग्रहण करने के पहले थी ५ महाराजाधिराज अवका मौजूद द्वारा उस काम के निमित्त नियुक्त व्यक्ति के समक्ष पहली अनुमति की अनुसार तपस ग्रहण करेगा।

२८-य (१) इस एन में जयमा निम्ने हुए के अतिरिक्त सभा की बैठक में प्रश्नों के निम्न अध्यास अवका अध्यास का काम करने वाले व्यक्ति के अतिरिक्त अन्य उपस्थित तथा मत देने वाले सदस्य के बहुमत द्वारा होगा।

(२) सभा के किसी स्थान के रिक्त होने अवका किसी अनधिकृत व्यक्ति के सभा में मन इन अवका अन्य किसी प्रकार में भाग लेने का पता चम्ने पर सभा की कार्यवाही अमान्य नहीं होगी।

(३) सभा की बैठक के निमित्त सदस्यों का अनिवार्य उपस्थिति २५ होगी।

(४) सभा की बैठक काल में अनिवार्य उपस्थिति मस्या कम निम्न होने पर अध्यास अवका अध्यास का काम करने वाले व्यक्ति आवश्यक उपस्थिति संख्या न पहुचने तक सभा की कार्यवाही रोस्ट मरने अवका सभा की स्थगित कर सकेगी।

### सदस्यों का विनयाधिकार

२८ न (१) इस एन तथा सभा की कार्यविधि के नियमों के अन्तर्गत सभा में वाक्-स्वतन्त्रता होगी।

(२) सभा में अवका सभा की किसी समिति में नहीं हुई बात अवका दिये हुए मत के सम्बन्ध में सभा के किसी सदस्य के विरुद्ध म्दावायय में भी कोई कार्यवाही नहीं हो सकेगी। किसी व्यक्ति के विरुद्ध सभा की अधिपति अवका ममाधीन किसी रिपोर्ट पत्र-मन तथा कार्यवाही का प्रस्तावित करने के सम्बन्ध में इस प्रकार की कार्यवाही नहीं हो सकेगी।

### सलाहकार सभा की शक्ति

२८-य सलाहकार सभा निम्नलिखित बातों के अतिरिक्त सरकार के व्यवस्थापक तथा कार्यकारिणी दृष्टियों में सम्बन्धित किसी विषय के ऊपर विचार विमर्श कर सकेगी—

(१) जिससे मयास सरकार के किसी विदेशी राष्ट्र के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध में लाभ पड़े सके ।

(२) वी ५ महाराजाधिराज तथा मौसूफ के परिवार के सदस्यों के व्यक्तिगत आचरण सम्बन्धी बात ।

(३) एसी बात जिसके प्रकट होना में सार्वजनिक अहित होना की सम्भावना हो जैसे सेना की नियुक्ति तथा गतिविधि ।

(४) किसी मंत्र अथवा सम्पूर्ण मंत्रिमण्डल के ऊपर भविष्यवाणी का प्रस्ताव ।

२८-झ सलाहकार सभा में बिना विचार-विमर्श हुए तथा मत मिले कोई भी कानून वी ५ महाराजाधिराज की स्वाकृति के निमित्त मौसूफ में समझ पैदा नहीं हो सकेगा ।

२८-ब सलाहकार सभा के कोई सदस्य भा दफ्तर २८-ब में लिखी बातों के अतिरिक्त सरकार व्यवस्थापक तथा कार्यकारिणी दृष्टियों में सम्बन्धित आवि किसी विषय के बारे में भी प्रश्न पूछे जा सकेंगे ।

२८-स सभा के कोई सदस्य वी अख्यक की अनुज्ञा तथा सभा की कार्यविधि के नियमानुसार सभा के विचारार्थ किसी जिस में प्रस्ताव प्रस्तुत कर सकेंगे ।

२८-म वी ५ महाराजाधिराज द्वारा अपना विवेक से सभा में पास हुए बिना प्रस्ताव के ऊपर भी अस्वीकार की अनुमति दी जा सकेगी अथवा उचित समझकर स्वयं हेर-फेर तथा संशोधन सहित सभा में पुनः विचारार्थ वापस किया जा सकेगा ।

२८-न सभा यदि किसी सरकारी बिना अथवा प्रस्ताव का स्वीकार करती है अथवा वी ५ महाराजाधिराज द्वारा प्रस्तावित हेर-फेर तथा संशोधन को स्वीकार नहीं करती है तथा यदि सार्वजनिक हित की दृष्टि में उचित मिला होने पर उस बिना प्रस्ताव में हेर-फेर, तथा संशोधन को वी ५ महाराजाधिराज सभा में पास करवाकर प्रमाणित कर सकेंगे ।

२८-र वी ५ महाराजाधिराज द्वारा इन ऐन की दफ्तरों के मधीन सभा की कार्य विधि तथा काम-अन्वय के सम्बन्ध में नियमावि बनावे जा सकेंगे ।

४ प्रचल ऐन का दफ्तर २८ रई किमा जाता है तथा उसके स्वाम पर निम्नलिखित २८ रखा जायगा ।

२८- कापिक आधिक विवरण या बजट सलाहकार सभा के समझ रखा जायगा तथा सभा को आधिक विवरण या बजट के ऊपर विचार-विमर्श अथवा मत देने का अधिकार होगा ।

परन्तु, वी ५ महाराजाधिराज के व्यक्तिगत क्रोध अथवा ऐसे सम्बन्धित विषयों पर जना बहुत नहीं कर सकेंगी ।

तथा बफ २८ व तथा य म के नियमादि हम दफ के अधीन बाधों के ऊपर भी काय हो सकेगा ।

५ बफा २८ का उपबफा (२) क रू करके उसके स्थान पर निम्नलिखित उप बफ २ क रखा जायगा ।

मलाहकार ममा का अधिवेशन शुरू होने के तीन माह के व्यतीत हुान पर सारित होगा ।

### अनुसूची

१ मंत्री राज्यमन्त्री तथा उपमन्त्री के निमित्त पद दापय का विवरण—

मे ईश्वर के नाम से शपथ लेता हूँ/सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करता हूँ कि मे भी ५ महाराजाधिराज मौमूक के उत्तराधिकारियों तथा कानून द्वारा स्थापित अन्तरिम विधान के प्रति भ्रष्टा तथा निष्ठुर रवूना तथा मयाम क मंत्री/राज्यमन्त्री/उपमन्त्री के रूप में अपने कर्तव्य का पालन अडापूर्वक तथा शुद्ध अन्त करन मे कबंगा तथा भय वा परापात अनुराग या द्वेष न रखने हुए सब प्रकार के व्यक्तियों के प्रति विधान तथा कानून के अनुसार ग्याय कबंगा ।

२ मंत्री राज्यमन्त्री तथा उपमन्त्री के निमित्त गोपनीयता के दापय का विवरण—

मे ईश्वर के नाम से शपथ लेता हूँ/सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करता हूँ कि मे किसी भी ऐसी बात का कि मंत्री/राज्यमन्त्री/उपमन्त्री क रूप में मेरे पाम विचारार्थ जाण्मी अबबा मुम जान हागी उस मे अपने कर्तव्यपालन के अतिरिक्त अन्य किसी अवस्था में किसी को भी श्रपय अबबा अपत्यज रूप मे सूचित अबबा प्रकट नहीं कबंगा ।

३ मलाहकार ममा क सदस्य के निमित्त दापय का विवरण—

मलाहकार ममा का सदस्य मनोनीत हुआ मे ईश्वर के नाम से शपथ लेता हूँ/सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करता हूँ कि मे भी ५ महाराजाधिराज तथा मौमूक क उत्तराधिकारियों के प्रति कानून द्वारा स्थापित अन्तरिम विधान के प्रति भ्रष्टा तथा निष्ठुर रवूना और अपने दहन नियम पद के कर्तव्यों का पालन अडापूर्वक कबंगा ।

## परिशिष्ट

१

नेपाल के साथ वाणिज्य संधि—१ मार्च १७९२ ई०

महाराज रणबहादुर शाह बहादुर रामखर्वांग की नाम मोहर द्वारा यह संधि प्राप्ति कारित की गई। यह उस संधि के अनुसृत है जिसका पारपत्र मिस्टर जोनाथन डन्कन बंगाल के रेजीडेंट ने राइट आनरबुल चार्ल्स जर्ज बार्नबालिस क की परिपत्र सहित नवंबर अक्टूबर की ओर से किया तथा उक्त अधिकारी द्वारा उक्त महाराजा से वाणिज्य संधि सिद्धि करने की समता प्राप्त की और आनरबल इन्फिन्ट कंपनी तथा नेपाल राज्यों की प्रजाओं द्वारा मुस्को की प्रवेष्टा निश्चित एवं संविशेषित की उक्त महोदय क उत्साहपान में नेपाल की प्रजा द्वारा मुस्को की प्रवेष्टा का एवं उदनुकप म पूर्वोक्त महाराजा को कंपनी की राज्य प्रजा द्वारा नेपाल को मुस्को की प्रवेष्टा निश्चित हुई। उक्त संधि मुझे (उक्त महाराजा) मौलवी अब्दुल कादिर का पूर्वोक्त महोदय के कहीन बचवा अधिकारी ने सौंपी। इसकी प्रतिलिपि मन्दास राज्य द्वारा सिद्धि गई और उक्त का महोदय को सर्वत्र की गई जैतो मोचे सुष्ठु रूप में बलिता है—

अभिपारा १—साधारण कम्पान के अतिनिश्चित का विमर्शन करने एवं व्यापारियों व व्यवसायियों के मुक्त व सतौर के लिए, कंपनी और नेपाल दोनों राज्यों के प्रशासकों की क्वालि को मनाजोब कर, यह सम्मत एवं स्थिर किया जाता है कि दोनों देशों के आयात पर २१ की सदी के अनुपात में शुल्क किया जायगा। यह शुल्क व्यापारियों के पास मार्ग के बीजकों की राशि पर लगाया जायगा। उक्त व्यापारियों को सिध्दा बीजकों के प्रवेष्टन से निवारण करने के लिए उक्त बीजकों के पुटो पर दोनों देशों के नियन्त्रण कर गृह को मुक्त अधिकृत कर बी जायगी उसकी प्रतिलिपि रत्न की जायगी तथा मूम लिपि व्यापारियों का प्रत्यक्ष कर ही जायगी। व्यापारियों के पास मूम बीजक न हान की बचवा में निवारण कर गृह के अधिकारी बाजार दर के अनुसार निर्धारित मूम पर २॥ की सदी शुल्क लगा देंगे।

अभिपारा २—दोनों देशों की सीमा के आने-सामने के निश्चित स्थान शुल्क कमाने के लिए निर्धारित कर दिये गये हैं। इन स्थानों पर व्यापारियों का शुल्क बना होना और एक बार शुल्क देन पर तथा उसका रक्कम प्राप्त कर लेने पर किसी अन्य प्रकार का या अधिक शुल्क दोनों देशों बनवा अधिकारियों में देन की आवश्यकता न होनी।

अभिपारा ३—दोनों ओर के अधिकारियों में जो कोई निश्चित बातें के अविधान में अतिपदन करेगा अथवा शुल्क में बन्धुर्क आशय करना उसे समुष्ट शासन द्वारा



उदाहरण प्रदर्शित कर दिया जायगा जिससे अन्य ऐसे अपराधों के कारण से निवारित हों ।

अभिधारा ४—व्यापारियों के मास के जारी अथवा लट जान की वषा में फौजदार अथवा उस स्थान का अधिकारी अपने उचित अधिकारी शासन को प्रज्ञापित करके उक्त स्थान के जमींदार अथवा सरकाधिकारी को अतिपूर्ति के लिए बाधित करेगा जो हुए वषा में निश्चयात्मक रूप में व्यापारियों को दे दिया जायगा ।

अभिधारा ५—शेना देशों व व्यापारियों पर किसी प्रकार की हिंसा अथवा दमन हान की वषा में उस स्थान के अधिकारी पहा पहा घटना पठित होगी तुरन्त पीड़ित व्यक्तिगता की परिबंदना पर विचार एवं अनुसंधान करना तथा निरपेक्षतापूर्वक विचार करके अपराधियों का दंड देना ।

अभिधारा ६—निपुण धुन्ड रे देन के परभातु वानो देशों के व्यापारी अपना मास एक या दूसरे राज्य के अधिकारियों में बेचने के लिए ले जा सकेंगे । यदि उनका मास एक राज्य में बिक गया तो ठीक है अन्यथा यदि व्यापारी अपना मास एक राज्य की सीमा से बाहर दूसरे राज्य में परिबहन करने के इच्छुक होंगे जो इस संधि के अंतर्गत है तो परवर्ती राज्य के अधिकारी व प्रजा उस मास पर अधिक या अन्य वार केवल उतने के अतिरिक्त जो प्रथम प्रवेष्ट पर दिया जा चुका है न ले सकेंगे । इस पर बून मुस्क का बलात् ग्रहण न होया एवं किसी प्रतिशोध के उनका मास मुरखित रूप में बाहर जाने दिया जायगा ।

अभिधारा ७—यह सबि दोनों राज्यों के वर्तमान एवं भविष्य सामन्तकर्त्ताओं पर पूर्ण रूप में बाध्य एवं बंध होगी । दोनों ओर से वाणिज्यिक संबंध के रूप में विवेचित किये जाने के कारण दोनों राज्यों में पारस्परिक ऐक्य की भित्ति होगी तथा सदा के लिए अन्तः के साथ और मैत्री की उन्नति के लिए होगी ।

५वीं रजब १२०६ हिजरी और फरवरी पश्चिमी का ११०९ वर्ष तबनुसार १ मार्च १७०२ ईसवी अथवा २२ फाल्गुण १८४८ संवत् के दिनांक को दो संवियां एक ही अभिधारा में दोनों प्रसविदा पक्षों के निमित्त लिखी गई । इन्हा परस्पर अभियोजित किया है कि ३ बैशाख १०४० संवत् में शेना राज्यों के अधिकारी अपने शासकों की आज्ञानुसार इस तुरंत कार्यक्रम में परिपत करेंगे तथा उपरान्त अभिसंविदा का प्रतिपादन करेंगे तथा किसी एवं अन्य संबंध निर्देश की प्रतीक्षा न करेंगे ।

२

नेपाल राजा के साथ संधि, १८०१

उक्त अभिधान वनों मस्तिशानी राजदो एवं सामन्तकर्त्ताओं के ज्ञान दीप्त होय का यह सम्पादक श्रुति कथमान धुन्ड है कि सर्वशक्तिमान परमात्मा ने राज्यों को विरक्त की रक्षा एवं शासनभार बरन् किया है जिसका प्रतिपक्ष ग्याप है और आपस में मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने में मार्चमौस मुल और नपुडि प्रतिभूत होगी है और जिनने

ही इन्हीं में से एक के सम्मुख होने लगती है। इन्हीं सम्मुख सम्पर्कों द्वारा ही इन्हीं परिस्थितियों को विचार में लाना हुआ कि एक-दूसरी पर न बलितान परन्तु उनका सम्बन्ध बनने की इच्छा तथा महाराजा नानक जी की ओर राजा नानक के सम्मुख ही पड़ने को मानना ही है तथा निम्न अविचारों को स्वीकृत किया है—

अभिप्राय १—दोनों राज्यों के प्रधान और अधिकारियों के निम्न २४ अविचारों में से प्रत्येक ही कि दोनों राज्यों की सीमा को सुदृढ़ करने में अधिकार प्रदान कर और सम्पूर्ण रूप से तथा निरन्तर बाध से राज्य और दोनों प्रधानों की अनुष्ठिति और वास्तविक इच्छा है।

अभिप्राय २—विवादों के जो हमारे पारस्परिक संबंधों के विद्यमान हैं सम्पूर्ण रूप से और सम्पूर्ण रूप से सम्पादित करने पर बिना अनुमति और प्रमाण के कोई मतवादी नहीं किया जाएगा।

अभिप्राय ३—दोनों राज्यों के प्रधान और अधिकारी अपने राज्य के मित्रों और शत्रुओं को दूसरे राज्य के मित्रों और शत्रुओं से भ्रष्ट भावों से सम्मुख। इस उद्देश्य की समस्त सामर्थ्य को से सम्मुख रखेगी।

अभिप्राय ४—यदि दोनों में से किसी राज्य की कोई पक्षीय शक्ति किसी प्रकार की उत्पत्ति के बिना, कोई तक-विच्छेद विवाद या अविचार सम्पूर्ण रूप से दोनों में से किसी एक के प्रवेश को हथियारों के लिए प्रारम्भ करेगा और उस देश को जाने के लिए अनुमत अविचार का पोषण करेगा हमारे स्वस्थ राज्य के बकील साथ विचारण राज्य के स्वामी को विदित करेगा जो दोनों राज्यों में अवस्थित किसी बाध्यता के कारण उक्त विचारण मुक्त के बाद उचित उत्तर एवं प्रतिक्रिया होगी।

अभिप्राय ५—यदि किसी दोनो देशों के बीच सीमा या प्रदेश का विवाद उत्पन्न हो जाय तो उसका समाधान अपने निज के बकीलों अथवा अपने अधिकारियों द्वारा स्वयं और अधिकार के सिद्धांतों के अनुसार होगा और उक्त सीमा पर सीमा-चिह्न तथा विवाद मानना और अधिकार रखेगा जिसे वर्तमान और भविष्य के अधिकारी अपना पक्ष प्रदर्शक समझें और अधिकार हस्त न करें।

अभिप्राय ६—वे स्थान जो पञ्जाब-बकीर और नेपाल के अधिकारियों के सीमांत पर हैं तथा उनके कारण कोई विवाद उत्पन्न हुआ हो तो वे विवाद नेपाल राज्य और परम्प्रेष्ठ पञ्जाब बकीर के एक-एक बकील के सम्मुख तथा कम्पनी की ओर के बकील की सम्मुखता द्वारा तय किया जावेगा।

अभिप्राय ७—मुकामासिनपुर के कारण इतनी संख्या में हाथी नेपाल के राजा कंपनी की भेजते हैं और इसलिए गवर्नर जनरल ने नेपाल के राजा के पर्यटनवर्धन के लिए, उक्त सीमा सम्मुख तथा इस नई सीमा का विचार करते हुए, ऊपर उल्लिखित राज्य का अवधान व पर्यटन करते हैं और निर्दिष्ट करते हैं कि कंपनी के वर्तमान व

अधिव्य अधिकारी बंशानुबंश तक जबतक इस संघि का नियमन अनोक्त रहेगा (जबतक इस संघि के नियम लागू होंग) राजा से कमी मी बन्पूर्वक हावी न होंगे ।

अधिवारा ८—यदि इन देशों का कोई प्रतिपाकित या अधिकासी परामन कर इसने देश में आप्रव से और एने व्यक्ति के लिए नबर्नर-जनरल के सम्मुख उपस्थित नेपाल राज्य के संस्थापित बकील द्वारा प्रार्थना की जाय या कम्पनी राज्य की ओर से उसके नेपाल स्थित प्रतिनिधि द्वारा तो एसी दशा में यह पारस्परिक समझौता किया जाता है कि यदि एसा व्यक्ति अपने राज्य के नियमों को अमान्य करके पलायन कर जाय तो दोनों राज्यों के प्रधानता के लिए यह अपरिहार्य है कि उने अपने यहाँ स्थित बकील को तुरन्त खीप द और बहु पुरी मूर्खित दशा में अपने देश की सीमान्त पर भेज दिया जाय ।

अधिवारा ९—यहाउहा नेपाल में मंजीकार किया है कि स्वामीजी को उनके सर्वे के लिए विशेषाधिकार को अथवा बामिक कृत्यों के निमित्त प्रधान की भूमि को छोड़कर एक परगना उमने संकल्प भूमि सहित प्रधान कर दिया जाय । यदि स्वामी जी बभारस में निवास करे या कम्पनी राज्य के किसी प्रांत में रह तो नियमित किस्ती में उन्हें बगुनी की रकम दी जाय करनेगी । बहु वन के अपने आवश्यक खर्चों में व्यवहार कर सकत ह तथा नियमों के अनुसार अपने बामिक कृत्यों का प्रतिपादन कर सकत है । ये नियमन पीतल पत्र पर खुद है या उम्हान राय को त्यागने समय खगानार किये से तथा जिनका स्वात्ताधिकार मुम प्राप्त है । पर यदि वे निश्चय कर कि वे अपनी जागीर में निवास की व्यवस्था करेंगे और बगुनी स्वयं अपने अधिकारियों द्वारा करवा ता वे किसी प्रतिफल मनुष्य को नीकर नहीं रखेंगे और सो मनुष्यों तथा पारिवारिकों के अतिरिक्त किसी व्यक्ति को सैनिक की हुंमियत से न रख सकेंगे ) अपने अवरसकों के रूप में वे नेपाल सरकार के सेना सैनिक रख सकेंगे इनका बतन राजा नेपाल बन । उन्हें मावधानी बर्तनी चाहिए कि किसी प्रकार के भक्त या बाकी द्वारा प्रतिफल कारंबाई न करें न उन्हें नेपाल बरा के बिनाही तथा समझों को आप्रव सेना होगा और न नेपाल की प्रजा पर झुमार न कराया जाय करना होगा । यदि दोनों राज्यों का उनका अग्रपक्ष के प्रमाण सिद्ध जायेंगे तो कंपनी को महापता और सुरक्षा उन पर न हुदा सो जायगी और उन दशा में राजा नेपाल की इच्छा पर यह निर्भर होगा कि उनकी जागीर अन्न कर दी जाय ।

यहाउहा न यह भी अपनी ओर न स्वीकार कर दिया है कि यदि स्वामी जी कंपनी के प्रांत में निवास कर और नेपाल के अधिकारियों को भूमि को व्यवस्था सोय में तथा प्रांतों के अनुसार बिन्न न हो जाय या वे अपनी उमी जागीर में बने और नेपाल के अधिकारी उन्हें या उनका परामने के निवागियों को गनाय ता उन दशा में कंपनी के परमेश्वर जनरल उषा बरविन का गीन बन के लिए निन्ता-नई करेंगे । नबर्नर जनरल राजा के नामों का पूरा करन का अधिकार लेन है और महाराजा गुरल ही ऊपर मिली गणों न अनुसार उन मनुष्य को नबर्नर जनरल को भौर देंगे । परमन की बगुनी में यदि साम

## परिणित

की प्राप्ति होगी या अधिकारियों का समावधानी से उसमें हाथ होगी तो उसमें राजा-  
न्याय का कोई मरोह न होगा ।

**अभिप्राय १०**—इस संबंध में निम्न अन्य कतिपय अभिप्रायों को कार्यरूप में परि-  
णत करने के लिए, और अन्य मौखिक सभियां का मन्त्रण करने के लिए गवर्नर-जनरल  
और राजा न्याय अपनी इच्छा और मनोप न एक विद्वत् व्यक्ति को एक दूसरे के पास  
बकाव नियुक्त करना है व अपने अपने दामनी व सम्मुख उपस्थित रहेंगे । वे उपराष्ट्र  
वर्गिक कार्यों का प्रतिपादन करेंगे तथा राजा राज्या के बाह्य संबंधों का दुरु करने में  
समर्थ रहेंगे ।

**अभिप्राय ११**—दोनों राज्यों के मुखिया राजा न्याय अधिकारियों के लिए यह बाध्य है  
कि वे दूसरे राज्य के बकावों का उनके पक्षानुसार जैसा अन्तराष्ट्र में प्रचलित है समाहर  
एवं सम्मान करेंगे । तथा व निम्नर इसका प्रयास कर कि व पूरा रूप में सुरक्षित मुक्त व शांति  
में अपना कर्तव्य पालन करेंगे तथा बिद्वत् में अपने अपने राज्या की प्रतिष्ठा स्थापन  
कर सकें ।

**अभिप्राय १२**—दोनों राज्यों के बकावों का यह कर्तव्य होगा कि वे दूसरे देश की  
प्रजा व निवासियों व किसी प्रकार का संपर्क न रखें । एसा वे वहाँ के अधिकारियों द्वारा  
कर सकेंगे । बिना उन अधिकारियों की आज्ञा व वे किसी प्रकार की निष्ठा-मंडी उनसे  
नहीं कर सकेंगे । यदि किसी व्यक्ति द्वारा कोई पत्र उन्हें मिले व उसका उत्तर बिना  
उन राज्य के अधिकारियों के ज्ञापन न दें । तथा उस पत्र का पूरा ज्योरा उन्हें संचित कर  
दें बिना हमारे बीच में सौहार्द एवं मैत्री की सम्मानता रहे ।

**अभिप्राय १३**—मुखियाओं और अधिकारियों के लिए यह आवश्यक है कि इस  
संधि के वास्तविक तत्त्व को समझें व उनका धर्म और बिद्वत् पर समावृत्त रहे । इसका प्रति-  
पादन बंगालुवग हाया तथा इसके प्रतिकूल कोई कार्य न हाया । जो कोई इसे मंग करेगा  
उसे इस संधि में तथा अधिकारियों में परमात्मा दण्ड होगा ।

गवर्नर जनरल न परिपक्व सहित इसका अनुमोदन १० अक्टूबर, १८०१ ई० को  
तथा नेपाल सरकार के अनुसार २८ अक्टूबर, १८०२ ई० को किया ।  
दार्तापुर में राजा नेपाल द्वारा निष्पत्ति संधि की पुण्य अभिप्रायों  
२६ अक्टूबर, १८०१

महाराजा इत्यादि इत्यादि में हित व्यक्तिमें परम उत्तर गवर्नर-जनरल के साथ  
पुनर्विहारी गुजरात स्वामीजी महाराजा के महान् पिता के जीवन यापन के विषय में  
निम्नलिखित संधि अंशित हुई—  
बापिक आसन्नो या पत्नी निवृत्त के अनुसार ब्यापनी हजार रुपया है इस में से  
बहुतर हजार नगद और इस हजार में हाथी दाम व परिचारिकायें दी जायेंगी । यह स्वामी

को क पारिवारिक व्यय के लिए बिनय सब के रूप में है और जगह १८५८ से यह भी आयती । इसको देने के लिए बीजापुर का परगना उसकी सारी भूमि गहिर (कमल सनात भाद भूमि धानिक या अन्य बान संस्थाओं को अर्पित भूमि बापीर या बिमका विवरण अन्यत्र दिया है) स्वामी जी को प्रदान किया जाता है । इसकी कर्तों ये है । स्वामी जो क बनारस में बाम करन पर, या माननीय कंपनी के प्रदेश में रहने पर, और उक्त बापीर की बसुली नेपाल राज्य के अधिकारियों द्वारा किये जाने पर, बहुत ही जल्द सबे नवव तथा इन हजार रुपय हाथियों के मुख्य म उन्हें प्रति बप ठीक समय और नियत किस्त पर भिन्न रहें । इसकी प्राप्ति से स्वामी जी अपनी घोषणानुसार परमात्मा की आराधना म काय्यापन कर । यह राज्य को महाराज के लिए छोड़ते समय पीतल पत्र पर सुदबाया गया था । यदि वे अपनी जागीर में रहें और बसुली अपन अधिकारियों द्वारा प्राप्त करें, तो यह आवश्यक है कि वे अपनी सेवा में बिजोही व शांतिमंग करन बाम व्यक्ति न रहें । वे भी मनुष्य और परिचारिकाओं से अधिक नहीं रख सकते हैं तथा अपनी अंगरक्षा के लिए किसी प्रकार का सैनिक नहीं रख सकते हैं । अपनी अंगरक्षा के लिए तथा परमन की बसुली के लिए वे राजा नेपाल म दो सी सैनिक ले सकते हैं । इनका वेतन महाराजा नेपाल दें । उन्हें लिखित या कथित कोई ऐसा कार्य नहीं करना होगा जिससे उक्त बना फैस म अपन पाल बिजोही या नेपाल म मान हुय व्यक्तियों का प्रभव बना होना और न उस राज्य में कूटपात करनी होगी । यदि दोनों दलों को इसका निश्चय हो जायगा कि उन्होंने कोई ऐसा अपराध किया है तो माननीय कम्पनी का सरपाणा हुग किया जायगा और महाराजा नेपाल की इच्छा पर उनकी जागीर की बसुली रहेगी । महाराजा ने यह भी स्वीकार किया है कि यदि स्वामीजी माननीय कंपनी के प्रदेश में बलना म्भिर करें, और नेपाल राज्य के अधिकारियों को अपनी जागीरदारी की बसुली मीरे और अपर निर्दिष्ट नियमों के अनुसार उन्हें किस्त न मिले बचबा वे अपनी जागीर में रहें और नेपाल की राजा उक्त या रीत का मनाये गयी बसाओं में गवर्नर-जनरल तथा माननीय कंपनी को राजा नेपाल से क्षतिपूर्ति करन का पूर्ण अधिकार होगा । गवर्नर जनरल राजा नेपाल म इस बात का प्रतिपादन करन का बाध्य है । और गवर्नर जनरल को प्राप्ति पर महाराजा गुरुत अपर निर्दिष्ट सचि की बागओं का प्रतिपादन करें । स्वामीजी के अधिकारियों के प्रतिपादन से यदि बसुली में वृद्धि होगी या किसी विपरीत कारण से उसमें ह्रास होगा तो इसमें महाराजा का कोई सरोकार न होगी । महाराजा ने स्वीकार किया है कि बीजापुर के परमने को स्वामीजी के अधिकारियों को व देने के परचात् बार्तिक जाय पन्ना निवृत्त के बहुत ही जल्द रुपय होंग यदि इनमें बसी हुई तो वह उसे बुरा कर दें और बड़नी की दमा में उनके अधिकारी स्वामीजी हूय ।

गवर्नर जनरल ने पण्डित महिन ३० अक्तूबर, १८०१ ई० को तथा नेपाल दरबार के अनुसार २८ अक्तूबर, १८ २ ई०, को अनुमोदित किया ।

३

मानरबुल ईस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराजा विक्रमसाह के मध्य मैत्री संधि । इस मानरबुल कम्पनी की ओर सलफिटल बर्नल बंडरा न जिनहू हिज एक्सिलेंसी राइट मानरबुल कमिश्नर माइरा के अर्से नाइट ऑफ बिमोन् सांबुल आर्बर ऑफ मार्नर, जो हिज मजस्ती क परम आदरनाम राज-ममा सचिव हैं और जिनकी नियुक्ति मानरबुल कंपनी के कोर्ट ऑफ डाइरेक्टरों न ईस्ट इंडीज के मिहेंतल और शासन के बिष्ट की और श्री गुल मजराज मिय और चंद्रशेखर उपाध्याय न गौरीन मुल विक्रम साह बहादुर, रामचरनजी और से उक्त अधिकार प्राप्त करन पर राजा नेपाल की ओर से प्रति पारित किया— २ दिसम्बर, १८१५ ई ।

मानरबुल ईस्ट इण्डिया कम्पनी तथा नेपाल के राजा में मुल कड़ गया है और दोनों ओर के इस शांति और मैत्री की पुन स्थापना के इच्छुक हैं जो सम्प्रति मैत्रय के पूर्व दोनों राज्यों के मध्य संस्थापित न तथा निम्न संधि की दस्त स्वीकृत की जाती है—  
अभिधारा १—मानरबुल ईस्ट इण्डिया कम्पनी और राजा नेपाल के मध्य फिर स्थायी शांति मैत्री रखी ।

अभिधारा २—मुल के पूर्व दोनों राज्यों के बीच जिन प्रदेशों के लिए बाहानुबाद का नेपाल के राजा उम्मा पट्टियाग करते हैं । और उन प्रदेशों पर मानरबुल ईस्ट इण्डिया कम्पनी क एकाधिपत्य का अधिकार स्वीकार करते हैं ।

अभिधारा ३—नेपाल के राजा मानरबुल ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रति निम्न मूचित भूमि संबंध विरम्भावी रूप से परिपाम करत हैं अर्थात्—  
प्रथम—झाडी और राप्ती सरिताओं के मध्य की समस्त नीची भूमि

द्वितीय—राप्ती और गण्डक के मध्य की समस्त नीची भूमि ( बुटवल ताम को छोड़कर )

तृतीय—गण्डक और कुमाहू के मध्य की समस्त नीची भूमि जहाँ ब्रिटिश शासन का अधिकार प्रारंभ हो चुका है अथवा प्रारंभ होन का रहा है ।

चतुर्थ—मेची और जिस्ता सरिताओं के मध्य की समस्त नीची भूमि और

पंचम—मेची सरिता के पूर्वी पर्वतमालाओं का समस्त भूमिक्षेत्र जिसके उत्तरगत गलती का दुर्ग न भूमिक्षेत्र है और नगरकोट का मिरिब जो मोरंग से पर्वतों से गया है तथा बहु भूमिक्षेत्र का उत्तर मिरिब और नवरी के मध्य है । उपरोक्त भूमिक्षेत्र को गुल्मा ममा इस निधि से बालीन दिनों के मन्दर बाली कर देगी ।

अभिधारा ४—नेपाल राज्य के प्रमुखों और भारदारों की क्षतिपूर्ति के लिए, जिनके स्थायी का पिछली अभिधाराओं में वर्णित भूमि के हस्तांतर से हानि पहुँची है, ब्रिटिश शासन न उन प्रमुखों को सम्मिलित रूप से दो लाख रुपया पेंशन देना स्वीकार किया है जो नेपाल के राजा द्वारा प्रवरम दिव्य आदेशों और जिसका अर्थ राजा स्थापित करेगा ।

प्रवरण हो जाने के पश्चात् पेंशन के लिए गवर्नर-जनरल की मुद्रा और हुस्ताशर सहित उनमें प्रधान की जामेरी ।

अभिधारा ५—राजा नेपाल अपनी ओर से अपने दामादों और उदात्त अधिकारियों की ओर से उन प्रदेशों से सम्बन्धित जो काली सल्ला के पश्चिम में हैं समस्त अधिकारों का परित्याग करते हैं और उन प्रदेशों में अबका बहा के निवासियों से किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखना अनीकार करते हैं—

अभिधारा ६—नेपाल के राजा सिक्किम के राजा को उनक प्रदेशों के अधिकार के बारे में किसी प्रकार का सत्ता या धातिर्मय न करना अनीकार करते हैं परन्तु यह स्वीकार करते हैं कि यदि नेपाल के राज्य और सिक्किम के राजा के या उनकी प्रजा के मध्य कोई विवाद होगा तो वह विवादस्वरूप विषय ब्रिटिश शासन की मध्यस्थता के लिए प्रेषित किया जायगा और उनका निर्णय नेपाल के राजा को मान्य होगा ।

अभिधारा ७—नेपाल के राजा अनीकार करते हैं कि अपनी जमीनों में कोई ब्रिटिश प्रजा या किसी यूरोपीय और अमेरिका की प्रजा को बिना ब्रिटिश शासन की सम्मति के नहीं रहेंगे ।

अभिधारा ८—दोनों राज्यों में मित्रता और धाति के सम्बन्धों को सुदृढ़ और उत्तम करने के लिए यह स्वीकार किया जाता है कि एक राज्य के विश्वासपात्र सभी दूसरे राज्य में रहेंगे ।

अभिधारा ९—यह संधि जिसमें १० अभिधाराएँ हैं नेपाल के राजा द्वारा इस दिनि से पंद्रह दिन में अनुमोदित की जायगी और उनका अनुमोदन सफिमेंट कर्नल बीडगा को दे दिया जायगा जो गवर्नर-जनरल का अनुमोदन राजा को तीन दिनों के अन्दर या उससे पीछे दे देंगे ।

२ दिसम्बर, १८१५ को निपौली में स्याकिन हुई

परिम बीडगा—जेफ्री क पी ए

नेपाल के राजा का भार में उनक अधिकर्ता बहादुर उपाध्याय ने यह संधि हार्द बज मध्याह्नोत्तर ४ मार्च १८१४ को मिनी और संधि की प्रतिकृति ब्रिटिश शासन की ओर से उन्हें प्रधान का ।

ओ की जागरणोनी

एकद गवर्नर-जनरल

४

नेपाल के राजा की स्वीकृति और अनुमोदन के लिए स्मरण-पत्र

८ दिसम्बर १८१६ को अर्पित

१ नेपाल के राजा के माध जेजी और बिरबान के कारण ब्रिटिश शासन निपौली को

संवि की कुछ कमियाँ में सामान्यनुसार कमी करना चाहते हैं जिनका पालन राजा के लिए कठिन है।

२ एक विषय पर जो राजा के मन में शक है और उन्हें संतुष्ट करना है ब्रिटिश शासन तटार के हस्तगत प्रदेश को उन्हें दे देना चाहता है। तटार का बहु प्रदेश जो कूवा और गंडक के बीच में है केवल तिरहुत और सारन के विजावास्प्य प्रदेशों को छोड़कर, तथा उन ऐसे प्रदेश के भागों को छोड़कर जो सीमा निर्धारित करने के लिए छोड़े जायेंगे तथा उस भूमि को छोड़कर जो ब्रिटिश शासन के अधिकार में आया है। यदि राजा इस प्रदेश का दूसरे प्रदेश के बदले लेना चाहते हैं तो यह स्पष्ट कर दिया जाता है कि तिरहुत जिसे के उस विस्तृत भूभाग को जो काफी समय तक विवाद का विषय रहा है १८१५ ई० का समझौता तबमूतार १८१६ ई० मान्यता प्राप्त हुआ तथा अन्य विषय छोड़ दिए जायेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि उस समय के समझौते और संधियों इस मामले में मान्य होंगी।

३ ब्रिटिश शासन गंडक और राप्ती के बीच की तराई बर्माद गंडक से योगेशपुर जिले की पश्चिमी सीमा इसका बाप मुटसम व शिवराज को विवाद के पूर्व नेपाल के पास वा उन्हें दे देना चाहता है। इसमें तटार के विजावास्प्य प्रदेश तथा सीमा निर्धारण के लिए भूमि शामिल नहीं है।

४ बिना आपत्तों के किन्हीं दोनों देशों की सीमा तय हो जाना असम्भव है इससे यह टीका हुआ कि दोनों ओर से कमिशनर नियुक्त किये जायेंगे जो विभिन्न विषयों के अनुसार सीमा निर्धारण करें और सीमाओं की सीधी रेखा निर्धारित कर जिसमें दोनों देशों के प्रदेशों का अधिकार विभाजन हो जाय। नेपाल का उत्तर में ब्रिटिश राज्य का इतिहास।

५ यदि ऐसा हो कि भूमि के स्वामी दोनों सामान्यों पर अवस्थित हों तो वे नेपाल के राजा के तथा ब्रिटिश शासन की प्रजा समस्त अवयव जिसमें दोनों राज्यों में विस्तारवाद व विवाद न बने। कमिशनर आपस में तय करके उन्हें एक राज्य की प्रजा बनाने का प्रयास करें।

६ तटार का भूभाग कमी की विषय बात पर नेपाल के राजा को शायिक दो लाख रुपये देना कम हो जायगा जिसे ब्रिटिश शासन ने कुछ बारूहदारों के लिए देना स्वीकार किया था।

७ इससे अतिरिक्त नेपाल के राजा ने स्वीकार किया है कि तटार के निवासी को रईस में, जब उस पर उष्ण प्रभाव हो जाय क्योंकि इन्होंने मुझ के समय ब्रिटिश राज्य को सहायता दी थी। और कस्तूरदासों को छोड़कर यदि कोई कम्पनी की सीमा में आता है तो उसे रोका न जाय।

८ इन सबों का मताने के बाद सीमा-निर्धारण का कार्य किया जायगा और



सीमा बिम्बु स्या दिव्य बायेने । सत्यवाद् बाबो बेच सनद तैपार कर और मुहर लगाकर एक दुसरा को हों और स्वीकार करेये ।

एडवर्ड माइजर

रेडीवेंट

नेपाल के राजा के एक पत्र का सारांश—११ दिसम्बर, १८१९ ई० अनिवादन के पत्रवात्—

मैंने ८ दिसम्बर १८१९ अर्थात् पौष ४ १८७३ संवत् का महीना पढ़ा जिसमें आपने कुमा और राप्ती के बीच की तराई देना ठक किया है । यह हमारे सतीय और मैत्री को देखने उचित है । मैं भियमों को स्वीकार करने पर तराई की शिर्षी सीमा बही हो जायगी मैत्री इस शासन की भी । मुझे आपकी सधि की बातों स्वीकृत हैं । आपने यह भी सूचित किया कि विवादास्पद भूमि को छोड़कर तथा कमिशनरों द्वारा सीमा-निर्धारण भूमि को छाड़कर बाकी प्रदेश दे दिया जायगा । इन तथा अन्य विषयों पर आप को आई करें । सिंगीली की संधि का हवाला देकर आपन यह कहा है कि मेरी मैत्री बल्क के कारण आप उसकी कुछ शर्तें हटा देना चाहते हैं । मैं पूर्ण रूप से समझता हूँ कि हृदय में आप मेरी भिन्ना दूर ही करना चाहते हैं तथा आप ऐसा काम करेंगे जिसमें इस बेस की भलाई होसी तथा बाला राज्या में मैत्री सुदृढ़ होसी ।

मैं उस आज्ञा की प्राप्ति सूचित करता हूँ जो हमारे राज्य की सासमाहुर द्वारा मंजूर है जो गंढक तथा राप्ती के बीच की तराई के अधिकारियों को संबोधित है जिसमें उनके बही में इन्तर्न का तथा तराई के बह का आदेश है । यह आपकी धानेकोश पर मिली भी और आपने मेरे सहाय के लिए लौटा दी है ।

५

ठगो के आत्म-समर्पण के विषय में दरबार से प्राप्त बागज

२० जनवरी १८२७

जब कोई अनुमादनकारी ठग बिग हाथ या भला पाइकर किसी हत्या की मूचना देवे और हत्या करने वाला बपाक का निबानी हो मूचना में हत्या करने वाले की पूरी हस्तिया उसके परिवार की संख्या बार्न्-संबंधी गाब का नाम इत्यादि का पूर्ण विवरण हो और बहो के स्थानीय अधिकारियों द्वारा जाच-गहनान् करने पर यह विदित हो कि अभियुक्त उस स्थान का स्थायी अधिकारी नहीं है उसके परिवार का पता-ठिकाना नहीं है उसके बरण-पोरण का टीक-गिबाना नहीं है परन्तु वह गुप्तबूझक बीबल वालन करता है अथवा यह पता चले कि वह आम-गाम तीन-चार महीनों तक रहता है भरण-पोरण का टीक-गिबाना न करने पर भी वह अधिकार रखे है और जब अनुमोदनकारी के बताने माने या थोड़ी बार्न्-बाँने इन में मगना जाये तब नेपाल राज्य ऐसे व्यक्ति को बिटिय

## परिशिष्ट

राज्य में न्याय बढ़ने के लिए सौंप देगा। इससे बिपरीत बरा में यह आशा की जाती है कि ब्रिटिश राज्य के मजिस्ट्रेट ऐसे व्यक्तियों को ठहराई देंगे जो नेपाल पदाधिकारियों को न्याय बढ़ने के लिए समर्पण कर देंगे और नेपाल द्वारा यदि अनुमोदनकारी की सूचना प्राप्त "प्रस्ताव पर ठीक न निकलेगी तो समर्पण रोक लिया जायगा।

६

महाराजा नेपाल का रेजीडेंट को पत्र—लाल मुद्रांकित ममझोते का अनुवाद—

६ नवम्बर १८३९

भाषा (रेजीडेंट) प्राबंता के अनुसार तथा दोनों राज्यों में मैत्री बिराज्वायी करने के लिए और प्रतिपादन का काम मुबारक रूप से चलत रहने के लिए, निम्न पद स्थिर किये जाते हैं—

2779

- १ समस्त बातां बहु या मिश्रित गण्य पद्वय बिरुद्ध बन्द कर दिया जायें।
- २ नेपाल राज्य कम्पनी पर निर्भर संग-पर मित्रराज्यों से कोई सम्बन्ध न रखेगा किन्तु संधि द्वारा संपर्क रखने की मनाही है, ऐसा रेजीडेंट के आवेदपत्र व स्वीकृति में किया जायगा।
- ३ गंगा के इस पार के जमींदारों व बागुजों से जिनका नेपाल के राजबंशने से (बाह्य सम्बन्ध है) नेपाल राज्य से व्यक्तिगत व पत्रों द्वारा संपर्क रहेगा।

४ दोनों सरकारों के पत्र प्रवर्तन के लिए यह स्वीकार किया जाता है कि न्यायाधिकारियों में अवैयक्तिक मामले जहाँ के होंगे वहीं निर्णय किये जायेंगे। नेपाल राज्य ने स्वीकार किया है कि ब्रिटिश प्रजा नेपाल की कबहूरी में अवैयक्तिक मामलों में बबरदस्ती बकाकृत करने के लिए बाध्य न किये जायेंगे।

५ नेपाल राज्य ने स्वीकार किया है कि जहाँ तक न्याय प्रबन्धों का सम्बन्ध है ब्रिटिश प्रजा नेपाल प्रजा के समकक्ष रहेगी तथा नेपाल की रीति के अनुसार उनका भी न्याय होगा।

६ नेपाल राज्य ने स्वीकार किया है कि एक प्रामाणिक बिबरणी रेजीडेंट को भी जायसी बिधमें नेपाल में लगाए सुल्कों का ब्यौरा होगा। इसके बाद ब्रिटिश प्रजा पर कोई अन्य निर्वात-कर जो इस बिबरणी में नहीं है न लगाया जायगा।

७

एक इकरारनामा का अनुवाद इस पर गुरुओं मुखियों इत्यादि ने ले हस्ताक्षर किये। १ तिथि शनिवार पूस सुवी ९, १८९७ सदानुसार जनवरी १८४१

हम निम्न हस्ताक्षरित मुखिया इत्यादि पूर्ण रूप से निम्नलिखित बातों का जमावर स्वीकार करते हैं—

नपास और ब्रिटिश राज्यों में उत्तरोत्तर सुदृढ़ मैत्री की अभिवृद्धि हो। और इस लिए कम्पनी ने मन्त्री सम्बन्ध बढ़ाने के प्रत्यक्ष कार्य को प्रोत्साहन देना चाहिए। रेजीडेंट के साथ महा और सर्वथा मन्त्रीपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। यदि किसी कारण ऐसी बटना घटित हो जिससे हमारे वास्तविक मैत्री सम्बन्ध बिगड़बिगड़ हों या काठमाण्डू में अशांति और गड़बड़ी हो तो उसका दायित्व हम पर है।

१४ मुनियों द्वारा हस्ताक्षरित

८

आनन्दबुद्ध ईस्ट इण्डिया कम्पनी व हिज हाइनेस महाराजाधिराज सुरेन्द्र बिजयसाह बहादुर नेपाल के राजा में सवि—१० फरवरी १८५५

आनन्दबुद्ध ईस्ट इण्डिया कम्पनी व हिज हाइनेस महाराजाधिराज सुरेन्द्र बिजयसाह बहादुर समन्वयगत राजा नेपाल के मध्य मंत्री हुर्न जिसे एक ओर मेजर जनरल रैमसे रेजीडेंट जिन्हें मोल्त मोबुल जम्स एण्ड मार्चिबल ऑफ इण्डोबी ने अधिकार दिया तथा दूसरी ओर जनरल जग बहादुर कुँवर राजा जी—नेपाल के प्रधान मंत्री ने जिन्हें महाराजाधिराज सुरेन्द्र बिजय साह बहादुर जंग नेपाल के राजा ने अधिकार दिया मिण्डि की।

अभिधारा १—दोना राज्य निम्नलिखित आदान-प्रदान का पालन करेंगे

अभिधारा २—सामग्री किसी ऐसे व्यक्ति को जो माँगने वाले राज्य की प्रजा नहीं है नहीं सौंपिया।

अभिधारा ३—कोई राज्य किसी जूही या अर्धनिक अपराधी या ऐसे व्यक्ति को या अभिधारा ४ के अन्तर्गत दोषी की मुचो में नहीं आता है नहीं सौंपेगी।

अभिधारा ४—झार सिद्धी अभिधाराओं के अतिरिक्त यदि कोई राज्य एम व्यक्ति को माँगता या दूसरे राज्य की सीमा में होगा और इन अपराधों को करगा तो नीत दिया जायगा। अपराध में हैं—हत्या हत्या का प्रयास बलात्कार, अंगहीन करना छीन डकैती राजमार्ग पर चोरी चिपटना चोरी और धाव मगाना।

अभिधारा ५—जिन राज्य में अभियुक्त का प्याय हो सकता है उसके भागने पर तथा पर्याप्त प्रमाण मिल जान पर डि जजमें अपराध दिया है वह पकड़कर दूसरे राज्य में सौंपा जायगा।

अभिधारा ६—कोई व्यक्ति जो नेपाल की प्रजा न हो तथा रेजीडेंट की सीमा में रहता हो उस सीमा में बाहर नेपाल की सीमा में होगा अपराध करे जो नेपाल राज्य द्वारा संरक्षित है ता वह परदूत ब्रिटिश रेजीडेंट को प्याय के लिए सौंप दिया जायगा। परन्तु एनी दया व नेपाल की प्रजा को नेपाल राज्य-जुद्ध के लिए नहीं सौंपेगा। यदि कोई हिन्दु स्त्री व्यापारी या नेपाल सीमा में रहता है और रेजीडेंट की सीमा में बाहर अपराध करता

## परिशिष्ट

है जो नेपाल राज्य में बंढनीय है और रेबीडैनी सीमा में गरण लेता है उसे नेपाल राज्य में स्थाय बंढ के लिए मीन दिया जायगा।

अभिधारा ७—अगर बंढित बाराजों में जो राज्य अपराधी का मांगया बही मा  
अप्य उस कार्य में बहन करेगा।—

अभिधारा ८—यह संधि उस समय तक बलेयी तब तक काई किसी बार का उच्छ  
पनाधिकारी उसके समाप्त हान की मूचना न दया।  
अभिधारा ९—किसी संधि के प्रतिफल होने के अतिरिक्त मनी बर्तमान संधियों  
आन्य समझी जायेंगी।

९

नेपाल से संधि १ नवम्बर १८६०

मन् १८५७ में बगल की दली ममा के बिद्रोह के कारण जो उत्पान हुए उसमें  
महाराजा नेपाल न मियौली की संधि जो मैत्री और शांति स्थापित करने के लिए हुई  
की उसका पूरा रूप से प्रतिपादन किया और ब्रिटिश अधिकारियों की महायता के लिए  
सीमान्त देगों पर शांति स्थापना रखन के लिए सेना की महायता थी। बाब में रजनक  
का पुनः हस्तांतरित करने के बिद्रोहियों के दमन के लिए ब्रिटिश सेना को सैनिक सहायता  
देकर सहयोग प्रदान किया। इन प्रयत्नों के समाप्त हो जान के बाब बायमराय बगलन  
बनरस न उनको इस महायता के पुरस्कार में उन्हें काफी सरिता ब मारकपुर जिले के  
बाब को समस्त लीची भूमि कौटा बम का नियन्त्रण किया है जो १८१५ में ममा के आधीन  
थी और उक्त संधि के अनुसार ब्रिटिश राज्य का प्राप्त हुई थी। ये प्रदेश कमिस्तर  
की बेक-रस में है तथा सोमा पर स्वायत्त बिल्ह बना दिये गये हैं जो बोलों बसों की सीमा  
निर्दिष्ट करत है। नेपाल राज्य को स्वायत्त रूप से इन प्रयोगों पर अधिकार रखन के लिए,  
और उक्त प्रदेश के पुनः देन की संमीरता का विचार करन निम्नलिखित संधि दोलों  
दोनों के बीच निम्नलिखित की जाती है—

बारा १—महाराजा नेपाल और ब्रिटिश शासन के बीच अब तक की सब संधियों का  
बंयोद्धत यादों के बरत के आइस संधि द्वारा बढली जायें स्वीकृत की जाती है।

बारा २—ब्रिटिश शासन महाराजा नेपाल को काली और राप्ती सरिताओं के बीच  
की समस्त लीची भूमि प्रदान करत है तथा राप्ती सरिता और पोरखपुर जिले के बीच  
की समस्त लीची भूमि भी देने है। ये १८१५ तक महाराजा नेपाल के आधीन थी और  
ब्रिटिश शासन में मियौली की संधि के अनुसार यादों को ७ दिसम्बर के उमी बर्त में हुई।

बारा ३—काली सरिता या शारदा में बंयोद्धत के उत्तरीय पर्वत मूकला के लीचे  
तक जो सीमान्त रेखा ब्रिटिश कमिस्तरों ने स्थापन रूप में निर्धारित की है अब स ब्रिटिश  
प्रांत अबध और महाराजा नेपाल के प्रयोगों के मध्य की सीमा होगी।

हिङ्ग एक्सिमैसी राइट आनरबल चार्ल्स जॉन अर्से केनिंग बायसराय और मबनर बनरस की ओर से नियुक्त कप्तानट कर्नल आर्से रेमसे और महाराजाधिराज गुरेय बिस्म घाह बहादुर रायसदर जंग की ओर से नियुक्त महाराजा जंग बहादुर राणा ने इस संबंध पर हस्ताक्षर किये। हस्ताक्षर के बाद तीस दिनों के भीतर इसका अनुमोदन काठमाण्डू में होगा।

१११ १८९० तदनुसार ३ कार्तिक बसौ १९१७ वि  
जी रेमसे से क नेपाल के रबीडेंट—

यह संधि हिङ्ग एक्सिमैसी गवर्नर-जनरल द्वारा कम्पकसे में १५ नवम्बर, १८९० को अनुमोदित हुई।

ए आर. यंग  
ब्रिटी सेक्रेटरी भारत सरकार

## १०

२३ जुलाई, १८९९ का स्मृति-पत्र—नेपाल राज्य के साथ १०-२-५५ की संधि का परिपूरक। आपस में भोषकथ अपराधियों की सीपने का बिजय उक्त संधि की चौथी अभिवारा म पशु चुरान जन परबिकारियों द्वारा अपहरण और दुरतर चारों क अपराधों का संकलन— २३ जुलाई १८९९।

हिङ्ग एक्सिमैसी ब राइट आनरबल सर जॉन एडवर्ड मेयर लॉगि हर मजेली के ब्रिटिश आगन के बायसराय ब मबनर-जनरल द्वारा प्राधिकारित कर्नल आर्से रेमसे नेपाल राज्य में रबीडेंट और महाराजाधिराज बपास द्वारा प्राधिकारित महाराजा जंग बहादुर राणा नेपाल के प्रधान मंत्री ब संसदपति के मध्य यह निर्णित और निष्पत्ति हुआ।

१० फरवरी १८५५, तदनुसार ८ फागुन १०११ सं० को काठमाण्डू में जो संधि हुई थी उसकी सब चारायें मान्य करत हुए, तथा भीमान्त दामदों का रोचने के लिए, और, भीष्मातिभीष पशु अपहरण जनपदाधिकारियों द्वारा अपहरण और दुरतर चारों को रोचने का इच्छा म जिनमें चारों किया जन मर्यापिक हो या मारीरिफ हिंसा की गई हा य आराध भी अपराधों की सूची में मभिबिष्ण किये जायेंगे जिनमें कोई भी सामन मौन देन की मांग कर सकतो है। य अपराध उक्त संधि की चौथी अभिवारा में संकल्पित किये जा रहे हैं।

२३ जुलाई १८९९ तदनुसार २६ भाषा १०२३ सं० को काठमाण्डू में निष्पत्ति हुई।

जी रेमसे कर्नल  
नेपाल के रबीडेंट  
जॉन आरेंग  
मबनर-जनरल

हिंदू एक्सिमेंटी यवर्नर-जनरल ने पिमला में इस संबंध को १ अगस्त १८६६ को अनुमोदित किया ।

डब्लू म्यूर

यंत्रणी भारत सरकार

११

नेपाल के साथ संधि—७ जनवरी १८७५

हम दोनों अफिमेट कर्नल आई. ए. मक एड्डू म्यालापम मौलापुर के कमिश्नर और ब्रिटिश गवर्नर को जार में मंगल साका निर्देश करने को नियुक्त कमिश्नर और कनक निदमान सिंह माहब बहादुर राज मंडारी बपाक राज्य की ओर से नियुक्त बूबका पर्वत माया की सीमा नियुक्त करने वाले एकमत हुकर लिख कर रहे हैं कि दोनों राज्यों की सीमा बूबका पर्वतमाया पर से आठ अगिला म लकर बबीरा ताक क ऊपर की पर्वत श्रृंखला क गीतबाहु तक जहां से मैदान में मिलती है निम्न नियमनों पर तय होती है—

एक—ब्रिटिश राज्य की प्रजा को पहाडा में लया लम आपगा जब वह उमी बन की छाती पर मिली जीमो लम्बीपुर में बी ।

बा—अब भाषकारी द्वारा निर्णीत पर्वत क नीच की सीमा बपाक राज्य को माय्य होपी ।

आई. ए. मक एड्डू ल. क.

७ जनवरी १८७५

कमिश्नर ब्रिटिश सरकार

नेपाली अतारों में हस्ताक्षरित

१२

१० फरवरी १८५५ ई० तदनुसार १०११ मंज की संधि और २३ जुलाई, १८६६ ई० तदनुसार २६ भाषा १०२२ के स्मरण-पत्र का पत्रपूरक अपराधियों को पीने क लिए तय हुआ—२४ जून १८८१ ।

हिंदू एक्सिमेंटी माकिम बाक रिज बायनराय ब गवर्नर-जनरल ब्रिटिश भारत द्वारा प्राधिकारित जार्ज एडवर्ड रिज ने नेपाल के एबीटेंट और यमुनाबाधिराज नेपाल द्वारा प्राधिकारित महाराजा रा राहीरसिंह राबाबहादुर नथाल क प्रबाल मंत्री क सेनापति यह अनोहार करत है कि बंद-मुपगत की अवधि में यदि कोई व्यक्ति बंद पाने के बाद माग आता है तो वह अपराध उक्त मंत्रि की बीबी अमिबाउ के अन्तर्गत मनोनीत हुआ ।

काठमाण्डू में २४ जून १८८१ तदनुसार १३ भाषा १९३८ को निव्यति हुआ ।

जार्ज एडवर्ड रिजल्टन में

नेपाल एबीटेंट

रिज भारत के बाइसराय तथा यवर्नर-जनरल

१३

ग्रेट ब्रिटेन और नेपाल के मध्य मन्त्रा संधि । यह काठमाण्डू में निष्पादित हुई और २१ दिसम्बर १९२३ को हवियार भेजने के विषय में मोट लिखा गया ।

### संधि

ब्रिटिश राज्य और नेपाल राज्य के मध्य मैत्री और शांति स्थापित हो चुकी है । निम्नोली की संधि के बाब (२ दिसम्बर, १८१५) नेपाल राज्य उत्तरोत्तर मित्रता प्रदर्शित कर रहा है और ब्रिटिश राज्य भी अपना स्वरूप प्रदर्शित करता रहा है । अब दोनों राज्य और अधिक मूमन्त्रण स्थापित करने की इच्छुक है जो लगातार एक दूसरे से बसे जा रहे हैं । अतः यह संधि दोनों ओर से निष्पादित की जाती है—

धारा १—ब्रिटिश राज्य और नेपाल राज्य में विरह्यायो मैत्री व शांति रहेगी । शान्त राज्य परस्पर एक दूसरे की अंतर्बहिर् स्वाधीनता का मान्य रखेंगे ।

धारा २—अब तक की सब संधियाँ निधम-मग स्वीकृतिपत्र सिमीली की संधि (१८१५) सहित पुनः निष्पादित की जाती हैं । वर्तमान संधि द्वारा बाढ़ा-सा परिवर्तन किया जाता है ।

धारा ३—जबकि शान्त देशों की सीमा एक स्थान पर मिलती है और मैत्री व शांति की आवश्यकता दोनों ओर अति आवश्यक है एक दूसरे को सूचित करने के लिए यह निर्णय लिया जाता है कि यदि किसी कारण परस्पर बाद-विबाह हुआ काम जो मैत्री में बाधक हो या हर प्रकार से भाग्य की नागमनी बुर करने की चेष्टा की जायगी ।

धारा ४—दोना ओर से यह चेष्टा की जायगी कि एक दूसरे की सीमा परस्पर हानि के लिए व्यवहृत न हो ।

धारा ५—दोनों देशों में जो महा मंत्रों व शांति रही है उसे विचार में रखते क्या पशुपती क्षेत्र व तन मुलम्बा बनावे रखने के लिए ब्रिटिश राज्य यह तय करता है कि तनम्बा राज्य ब्रिटिश भारत व नेपाल में हर प्रकार के हवियार, गोला-बारूद सैनिक सामग्री तथा अन्य सामान जो नेपाल का मुद्रा बनान में सहायक हावा न जा सकना है । और यह प्रत्यक्ष उस समय तक बाधू रहता जबतक ब्रिटिश राज्य का पूर्णतः इसका विचार तथा कि नेपाल राज्य के विचार मैत्रीपूर्ण हैं और भारत का सभी वस्तुओं के विनिर्माण व बर्दा भव नहीं है । तनम्बा राज्य यह पाम्म करने का बाध्य है कि कोई सैनिक सामग्री तनम्बा की सीमा से बाहर तनम्बा राज्य या अन्य व्यक्तियों द्वारा नहीं भेजा जायगा ।

धारा ६—तनम्बा राज्य द्वारा बाहर जब माह पर ब्रिटिश बंदरगाहों पर कोई निषेधाज्ञा कर नहीं पड़ता । इनके लिए अधिकारियों द्वारा तनम्बा निदेशन-मग निषेधाज्ञागृहों पर जो बोली रास्ता द्वारा लम्बे-समय पर बर्दाभित्त बाधू रहेगा निषेधाज्ञा बाधू । निर्दिष्ट

पत्र में यह सूचित हुआ कि मास नपाक राज्य का है तथा नपाक राज्य की जनसेवा के लिये है और नपाक को नपाक राज्य की आज्ञा से प्रेरित किया जा रहा है। यह मास सुरक्षित काठमाण्डू भेज दिया जायेगा।

भारा ७—यह संधि ब्रिटिश राज्य की ओर से मे० ए० डब्ल्यू० डी० कानर नेपाल में ब्रिटिश राजदूत द्वारा तथा नपाक राज्य की ओर से जनरल महाराजाधिराज बन्धुसमर्थन और बहुरुर तथा नेपाल के प्रधान मंत्री व सेनापति द्वारा मनोनीत होगी और उसका विनिमय काठमाण्डू में सीधे हो होगा।

काठमाण्डू में हस्ताक्षर किए गये व घोड़े रखी। ति २१ दिसम्बर, १९२३ ई०  
तबनसार १ पीप १९८० सं।

डब्ल्यू० एफ० टी० ओ० कानर  
ब्रिटिश राजदूत  
नपाक के लिए

(स्वामीय भाषा में अनुवाद)  
बन्धु समर्थन  
प्रधान मंत्री नपाक सेनाध्यक्ष

नोट—नेपाल के मंत्री की ओर से नेपालस्थित ब्रिटिश राजदूत को।

नपाक दिसम्बर २१ १९२३

प्रियवर कर्नल श्री कानर,

नेपाल की सुरक्षा एवं अकाई के लिए नेपाल राज्य जो हथियार व युद्ध-सामग्री करीबता है और उस समय प्रवेशों में ब्रिटिश भारत द्वारा मंचता है जा पाए ५ वीं दोहों धर्मों के बीच की संधि के अनुसार है। नेपाल राज्य यह नियम करता है कि हथियार ब्रिटिश बन्दरगाहों में निर्यात करने के पूर्व उसका पूरा विवरण नेपालस्थित ब्रिटिश राजदूत को सूचित कर दिया जायेगा जिसमें ब्रिटिश साठन बंदरगाह के अधिकारियों को इस विषय में उचित आदेश दे सके और उनका नियति इस संधि की छठा भाग के अनुसार हो सके।

मन्त्रीय

बन्धु

के क डब्ल्यू० एफ० टी० ओ० कानर सी आई ई०, सी बी ओ० नेपालस्थित ब्रिटिश राजदूत की सेवा में।

१४

भारत सरकार और नेपाल सरकार के बीच शांति और मंत्री की संधि

भारत सरकार और नेपाल सरकार इस तथ्य का प्रत्यक्षिक करते हैं कि सीमाग्रन्थ से दोनों देशों में अवस्थियों से प्राचीन बन्धन विद्यमान हैं। इन बन्धनों का और अधिक प्राबल्य एवं विस्तार करने की इच्छा से तथा दोनों देशों में विरम्बायी शांति स्थापित करने के निमित्त



परस्पर छाति बँधी की संधि के प्रवृत्त करने में कृतसंकल्प होते हैं और इसके निमित्त निम्न व्यक्तिता की पूर्वाधिकारी नियुक्त करते हैं अर्थात्

भारत सरकार

परमपूज्य जन्मेश्वर प्रसाद नारायण सिंह नेपाल में भारतीय राजदूत

नेपाल सरकार

मोहन धामनर बंधू बहादुर राणा महाराजा प्रधान मंत्री तथा सर्वोच्च महा नेता-पति नेपाल

जिन्होंने एक दूसरे के अभिमानपत्र परीक्षण किया और उन्हें अपना और निश्चित भूतलावद्ध पाकर निम्न बातों में सम्मत हुए—

धारा १—भारत सरकार व नेपाल सरकार में विद्यमान छाति बँधी रहेगी। दोनों सरकार एक दूसरे के सम्पूर्ण धर्म्य प्राथमिक आवश्यकता और स्वतन्त्रता को स्थापित और सम्मान करने के लिए परस्पर सम्मत हैं।

धारा २—दोनों सरकारें किसी प्रतिबंधी राज्य में विपक्षित संधि या छाति विमर्श बना सरकारों के संपूर्ण सम्बन्ध में बिच्छेद होना को समझना हैं परस्पर सुचित, करना अनिवार्य करने हैं।

धारा ३—धारा १ में निर्दिष्ट सम्बन्धों को कुछ एवं समर्थन करने के लिए दोनों सरकारें परस्पर प्रतिनिधियों द्वारा कूटनीतिक सम्बन्ध अवस्थित करना अनिवार्य करते हैं और इसके सुचारु रूप से कार्यान्वित होने के लिए आवश्यक कमजारी रख सकते हैं।

अंगीकृत प्रतिनिधि और उनके कर्मचारीगण के सब कूटनीतिक शिवागमिकार और विमुक्ति उपभोग करण जो सामान्य अन्तर्राष्ट्रीय विधान के अन्तर्गत प्राप्त हैं तथा ये किसी देश में इनके कम न होने जो अन्य राज्यों के उन्हीं पर पर व्यक्तियों को जान है जहाँ सामान्य पर परन्तर कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित हैं।

धारा ४—दोनों सरकारें महावाणिज्यदूतों वाणिज्यदूतों उप-वाणिज्यदूतों, तथा अन्य वाणिज्यदूताधिकारियों की नियुक्ति के लिए सम्मत हैं। जो परस्पर स्वीकृत प्रवेश के समान पत्रों तथा अन्य स्थातों में आवागमन करने। महावाणिज्यदूतों वाणिज्यदूतों उप-वाणिज्यदूतों और वाणिज्यदूताधिकारियों की नियुक्ति के लिए वाणिज्यवर्तियों या अन्य रूप प्राधिकारों की व्यवस्था होगी। ये प्राधिकार आवश्यकता पड़ने पर निर्बंध होने के लिए प्राधिकारित हो सकते हैं प्राधिकार करने के कारण अब समाविष्ट होना निर्दिष्ट कर दिये जायेंगे।

ऊपर उल्लिखित व्यक्तिता को प्राधिकारिक अधिकारों विभागाधिकारों में मुक्तिता और विमुक्तिता का प्राधिकार द्वारा जो उन्हीं परही के व्यक्तियों को अन्य राज्य में प्राप्त होंगे।

धारा ५—भारत सरकार भारत के प्रदेश द्वारा अस्त्र-नास्त्र मुद्राकरण या मुद्रा-नामों या नाम विपरीत नेपाल की राजा के लिए आवश्यकता हो प्रवेदन

करने को स्वाधीन होगा। इस व्यवस्था को काम चला में देने की प्रणाली दोनों सरकारें आपस में सलाह द्वारा सम्मेलन करेंगी।

भारा ६—भारत और नेपाल में अतिवैदेशी शक्ति के विप्लवस्वरूप दोनों शासन दूसरे राष्ट्रों को अपने प्रदेश में औद्योगिक और आर्थिक विकास में राष्ट्रीय व्यवहार प्रदान करेंगे और उस प्रदेश के विकास के लिए सुविधाएँ और दे देंगे।

भारा ७—भारत सरकार व नेपाल सरकार प्रति व्यवहार की मिति पर एक देश के राष्ट्रों को दूसरे प्रदेशों में वसुध की सम्पत्ति के स्वत्वाधिकार की, वाणिज्य-व्यापार में योगदान की तथा इसी प्रकार के अन्य विमर्षाधिकारों के लिए सम्मत होते हैं।

भारा ८—बड़ा तक हममें सम्मिलित शक्तियों का सम्बन्ध है—यह संधि इसके पूर्व की समस्त संधियों मविदाओं और जंगलार पत्रों को रद्द करती है—जो भारत की ओर से ब्रिटिश सरकार और नेपाल सरकार में हुई थी।

भारा ९—दोनों सरकारों के हस्ताक्षर करने की तिथि से यह संधि लागू होगी।

भारा १०—इस संधि की समता उस समय तक रहेगा जब तक कोई वस एक वर्ष की सूचना देकर उसे समाप्त नहीं कर देगा।

काठमाण्डू में ३१ जुलाई, १९५० की प्रतिक्रिया में प्रस्तुत हुई।

जम्बरुदर प्रसाद नारायण सिंह

मोहन रामसर वंश बहादुर राणा

भारत की ओर से

नेपाल सरकार की ओर से

१५

## भारत और नेपाल की सरकारों की बीच व्यापार और वाणिज्य की संधि (१९५०)

भारत और नेपाल की सरकारों ने अपने-अपने राज्य-क्षेत्रों के सम्मिलित एक दूसरे के व्यापार और वाणिज्य के सुविधाजनक विकास के लिए तथा उनकी अभिवृद्धि के विचार से एक व्यापार और वाणिज्य-संधि पर हस्ताक्षर करने का निश्चय किया है और इस उद्देश्य से इन में निम्नलिखित अधिकारियों को संधि-पत्र पर हस्ताक्षर करने की स्वीकृति प्रदान की है—

भारत सरकार की ओर से—

जम्बरुदर प्रसाद नारायण सिंह, व्यापार-सिद्ध भारतीय राजदूत।

नेपाल सरकार की ओर से—

महाशय मोहन रामसर वंश बहादुर राणा प्रधान मंत्री और नेपाल के प्रधान सेनापति।

इस महानुभावों ने एक दूसरे के प्रमाण-पत्रों की परीक्षा करके और उनको निजमा मुक्त पाकर निम्नलिखित बातों से सहमति प्रकट की है।

धारा १—भारत सरकार नेपाल सरकार को पूर्ण अधिकार देती है कि वह व्यापार के लिए जाव और तैयार सामान भारतीय राज्यक्षेत्र या बन्दरगाहों से होकर बरोकटाक नेपाल से जाय जैसा कि नीचे की २ ३ और ४ धाराओं में निहित है।

धारा २—दोनों सरकारों ने बीच स्थिर नियम के अधीन भारत सरकार को अपने किसी बन्दरगाह पर उतरे माल को जो नेपाल को निर्यात के लिए होगा उसे नेपाल राज्य-क्षेत्र के अन्तर्गत दोनों देशों के बीच ठहराए गये स्थानों को भेजना स्वीकार होया। इस प्रकार के मंड हुए माल में नेपाल सरकार को अपने किसी माल के लुप्त होने का डर नहीं होया और न उसे किसी भारतीय बन्दरगाह पर कोई शुल्क ही देना पड़ेगा।

धारा ३—दोनों सरकारों के बीच स्थिर नियम के अधीन नेपाल में उत्पन्न मालों की यदि भारतीय राज्यक्षेत्र से होकर नेपाल के अन्तर्गत किसी एक निश्चित स्थान से दूसरे निश्चित स्थान को जाया है तो उसके लिए भी नेपाल को किसी प्रकार का आयात-कर या शुल्क नहीं देना पड़ेगा।

धारा ४—दोनों सरकारों के बीच स्थिर नियम के अधीन नेपाल सरकार को यह अधिकार होया कि वह अपने देश में बने या उत्पन्न माल को नेपाल के निश्चित स्थानों में ले जाकर भारत के राज्य-क्षेत्र या बन्दरगाहों पर से बिदेष्टों को निर्यात करे।

धारा ५—नेपाल सरकार को यह मंजूर है कि वह नेपाल के लिए बाहर से भारत होकर जाने वाले माल पर या नेपाल से भारत के बाहर भेजे जाने वाले माल पर भारत में तरफ़ाज प्रचलित कर के मुताबिक ही चुकी स्थिर करेगी। नेपाल सरकार को यह भी मंजूर है कि नेपाल में उत्पादित या बनाय गये मालों पर जो भारत को भेजे जायें उतनी चुकी का हिस्से उनके भारत में विद्यमान भारत के बने मालों जिन पर केन्द्रीय अंत-शुल्क भी लागते हैं के विषय को पक्का न पहुँचे।

धारा ६—भारत और नेपाल की सरकारों को यह स्वीकार है कि वे एक दूसरे की अर्थ-व्यवस्था के लिए आवश्यक मालों को अपने-अपने देश में जहाँ तक संभव हो प्रदान करेंगी।

धारा ७—दोनों देशों को यह स्वीकार है कि वे एक दूसरे की व्यापारिक संस्थाओं की मदद से मालों के प्रसार करने और आवश्यक सामग्रियों के आयात-निर्यात के लिए जमी बुनियाद देंगे। इसके अतिरिक्त दोनों सरकारों को यह भी मंजूर है कि वे एक दूसरे के देश की व्यापारिक संस्थाओं को माल के जान और ले जान के लिए आवागमन के सब से किशाय और बुनियादगढ़ कार्यों का सौजन्य प्रदान करेंगे।

धारा ८—एक दूसरे देश के व्यापारिक (Civil) वायुमार्गों को नागरिक अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली के अनुसार एक दूसरे देश के ऊपर उड़ने की अनुमति होगी।

धारा ९—जहाँ तक यहाँ बिज का दुई बातों का सम्बन्ध है यह संधि-पत्र ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत का भारत से नेपाल के साथ की गई अब तक की संधियों समझौतों और अन्य प्रकार के संधि-पत्रों को समाप्त करता है।

धारा १०—यह संधि संधि-पत्र पर दोनों राज्यों द्वारा हस्ताक्षर होने की तिथि से तीन महीने बाद लागू हो जाएगी। प्रथमतः यह संधि दस वर्ष तक लागू रहेगी और उसके बाद यदि दोनों में से कोई एक इसका अन्त चाहेगा तो उसे इसके लिए एक वर्ष पूर्व लिखित सूचना भेजनी पड़ेगी। ऐसा न होने पर संधि की अवधि और दस वर्ष के लिए बढ़ जायेगी।

इस संधि पर मन् १९५० को ३१ जुलाई को दोनो देशों के मनोनीत प्रतिनिधियों द्वारा हस्ताक्षर हुए।

१६

### ज्ञापन पत्र (Memorandum)

(भारत और नेपाल सरकारों के बीच व्यापार और वाणिज्य-संधि की धाराओं को और तीन)

#### भाग अ

इस संधि की धारा २ में उल्लिखित व्यवस्था इस प्रकार व्यवहृत होगी—

१. जब कोई मास भारत में उतरता है जो नेपाल को निर्यात के लिए है तो उस मास के मैदाने वाले को चुंगीघर में मास उतारने पर—

(क) यह घोषित करना होगा कि जो मास उसने मैदाने है वे नेपाल भ्रमण के लिए है और नेपाल के वाले समय बीच में वह उन्हें और किसी देश को नहीं भेज देगा।

(ख) एक काम धर्म में मार्गों के विवरण की चार प्रतियां देनी पड़ेंगी और इस विवरण को इस काम के लिए नियुक्त एक नेपाली अधिकारी से चढ़ी करना पड़ेगा। इस धर्म में यह भी बतलाना पड़ेगा कि किसी प्रामाणिक स्वयं मास से सामान काया बायमा और भारत के किसी सीमान्त चुंगीघर में निष्कासकर मास नेपाल लाया जायगा।

(ग) उस मास पर—ब्रितना भारतीय पम्प शुल्क (Tariff) कम सकता होवा उसके बराबर की पूजी बना करनी होगी या किसी बिस्वासपात्र बैंक में जमानत रितबानी होगी जो कि उसे बाध्य करेगा कि वह मास के किसी काम के नेपाल के चुंगीघर से नियुक्त शुल्क बैंक पर भी निष्कास न होने पर मास के उस बैंक पर शुल्क देगा।

२. अगर कहीं बाटों के पूरा होने पर मास पर बहिष्पुस्त कार्यालय (Customs House) की नीज भवनी और उसके बाद उसे मैदाने वाले को विवरण-पत्र की मूस प्रति के साथ लौटा दिया जायगा। विवरण-पत्र की दूसरी तथा तीसरी प्रतियां उसी समय जैसा कि ऊपर (१) (ख) में उल्लिखित है चुंगीघर के स्वयं बहिष्पुस्त अधिकारी (Land Customs Officer) को बच दी जायेंगी।

३ बहिर्मुख अधिकारी जिसके सामन मास माया बापगा सीमा की परीक्षा करेगा और यदि वह टूटे-फूट न होंगे तो इस बात के लिए प्रमाणपत्र देगा कि मास भारत की सीमा का पार करके नेपाल की सीमा में सीमा के सहित पहुंच गये। विवरण-पत्र की मूल प्रति मास के मासिक को नेपाल के बुगीधरों में प्रस्तुत करने के लिए दे दी जायगी। विवरण-पत्र की दूसरी प्रति पुष्ठांकित करके जिस बुगीधर से वह आई थी उसी को वापस कर दी जायगी और तीसरी प्रति पुष्ठांकित करके नेपालस्थित भारतीय दूतावास को भज दी जायगी।

४ ऊपर जिन पूर्वी को जमा करने की बात कही गई है उस वापस लेने के लिए या पैराग्राफ (१) (ग) के अन्तर्गत जो बॉर्डर प्रस्तुत करने की बात कही गई है उसे रख करान के लिए व्यापार करने वाले व्यक्ति या उसके किसी अभिकर्ता (Agent) को चाहिए कि उस आगम का एक आवेदन-पत्र व जा मूल विवरण-पत्र से पुष्ट हो और पैराग्राफ (३) के ब्यवधानानुसार स्वयं बहिर्मुख अधिकारी द्वारा प्रमाणित हो कि मास भारतीय सीमा का पार कर गया है और तब बहिर्मुख कार्यालय द्वारा प्रमाणित हो कि यह साबुत भारतीय सीमा के माथ नेपाल पहुंच गया है और जिन सामानों का विवरण विवरण-पत्र में है उनका निबान के लिए उन्होंने बहिर्मुख लेकर अनुमति प्रदान कर दी है।

नेपाल बुगीधर द्वारा दिये गए प्रमाणपत्र पर नेपाल सरकार द्वारा इस कार्य के लिए नियुक्त एक विधायिका की प्रतिहस्ताक्षर होगा। विवरण-पत्र की मूल प्रति भारतीय बुगीधर में ६ महीने के अन्दर-अन्दर पहुंचनी चाहिए यह जबकि भारतीय बहिर्मुख प्रमाणन द्वारा बतार् भी जा सकती है। यदि उन्हें यह सतोप हो जाय कि बिस्मय अनुभव कारण से हुआ है जिनके ऊपर मास मेंगत वाले का कोई अधिकार नहीं था।

५ जमा की हुई पुरो को लीजने या बॉर्डर को रख करान के पहले बुगीधर के सम्बन्धित अधिकारी का यह काम है कि वह विवरण-पत्र की मूल प्रति की तुलना सम्बन्धित बहिर्मुख अधिकारी से प्राप्त विवरण-पत्र की दूसरी प्रति से कर ले।

### भाग 'ब'

सामन की मुबिबा की दृष्टि से क्रिपहास भारत सरकार इस संबंध की धारा ३ में जिस व्यवस्था के लागू होने की चर्चा की गई है उनका लागू करने की आवश्यकता नहीं समझती। किन्तु जब बन्दी भी भारत सरकार इसकी आवश्यकता समझकर लागू करना चाहे जिस व्यवस्था का भाग 'ब' में वर्णन है वह संबंध की धारा ३ में भी आवश्यक परि बन्धों के साथ लागू होगी।

### भाग 'म'

जहां तक मणि की २ और ३ धाराओं का सम्बन्ध है दोनों सरकारें नेपाल राज्य क्षेत्र के अन्तर्गत निम्नलिखित क्षेत्रों के निकटवर्ती प्रदेशों का मान्यता देती है —

१ रक्तौक २ बोलबानी ३ नेपालमंज ४ नीलमबा और ५ जयनगर ।

इस आपन पत्र पर हुस्तामर की तिथि २१ जुलाई, १९५० है और हुस्तामरकर्ता जमना भारत और नेपाल की सरकारों की ओर से बनारस प्रभाव माधव सिंह और महापद्म मोहन रामसेर जंग बहादुर राणा हैं ।

१७

### आपन पत्र (Memorandum)

(भारत और नेपाल सरकारों के बीच हमारा और बाणिज्य सचि की बारा बारा)

भाग 'अ'

मंजि की बारा ४ में कथित व्यवस्था इस प्रकार होगी—

१ नेपाल में बने सामान या तैयार माक को भारत में लावे जायें किन्तु बिना अप्रति निर्गत भारत के बाहर किसी देश को हो ता उस स्थिति में उक्त साम को भारतीय राज्य-क्षेत्र से गुजरने की पूर्ण सुविधा होगी । इस सुविधा के अन्तर्गत भारतीय बहिष्मुख (Customs duty) उपकर (Cess) वा उत्पादन-मुक्त (Excise duty) से विमुक्ति भी निहित है । इसके अतिरिक्त उक्त साम के सम्बन्ध में भारतीय आपन-निर्गत नियन्त्रण नियम के पालन की भी आवश्यकता नहीं होगी । यदि ऐसा हो कि माक बाहर लेजने वाला व्यक्ति वा उसका कोई प्रमाणित अभिकर्ता (Agent)

(क) भारतीय स्वतः बहिष्मुख प्रवेश बन्दरा (Indian Land Customs Station of Entry) को नियत फार्म में एक बोलबारा के रूप में दे दे कि जो माक वह नेपाल से भारत के माया है वह भारत के बाहर किसी अन्य देश को निर्गत के निर्गत है

(ख) मार्गों का विवरण एक नियत फार्म में देकर और उस विवरण-पत्र पर, जिसकी बारा प्रतियां होती आवश्यक है एक इसी नाम के लिए निपुष्ट नेपाली अधिकारी का हस्ताक्षर करके यह लिखित स्वीकरण दे दे कि वह माक को किस-किस प्रमाणित स्वतः-मापों में के जा रहा है और भारत से बाहर किस भारतीय बन्दरगाह में भेज रहा है और

(ग) भारतीय कस्टम पत्र मुक्त (Indian Customs Tariff) के नियम के अनुसार जितना शुल्क उसके माक पर लपने की संभावना हो उसके बराबर की पूर्वा भया कर दे या किसी विशिष्ट बैंक में एक वॉरंट प्रस्तुत करे जिसके अन्तर्गत जमानत की व्यवस्था हो जो समय पड़ने पर उक्त माक के किसी एक एम बंड पर शुल्क देन को बाध्य करे जित ऊपर (ख) में कथित बन्दरगाह का चुनौती पर किसी कारण से निष्कापने की आज्ञा न दे ।

२ उपर्युक्त विवरणों का पालन करने के उपरान्त मार्गों पर भारतीय स्वतः बहिष्मुख कार्यालय (Indian Land Customs Station) की भीत लगाकर

जैसा कि ऊपर १ (क) में निखिष्ट है उन्हें व्यापार करने वाले या उसके अधिकर्ता को विवरण-पत्र जो नियमानुसार भरा हुआ और रजिस्ट्री किया हुआ होगा की मूल प्रति के साथ दे दिया जायगा। विवरण-पत्र की द्वितीय तथा तृतीय प्रतियां उसी समय और ऊपर के पैराग्राफ १ (क) में निखिष्ट निबन्ध के अनुसार उक्त भारतीय बन्दरगाह के चुगीपर को भेज दी जायगी जहां से माल को भारत में बाहर जाना है।

३. माल के एक भारतीय बन्दरगाह से किसी और देश को भेज जाने वाले पहले बन्दरगाह के चुगीपर का अधिकारी देखता कि उन पर जो सीमें लगाई गईं हैं वे सामूहिक हैं या नहीं और उनके सही होने पर यह प्रमाण-पत्र देता कि माल बन्दरगाह में बहाल पर बहाल जान के लिए जब समय हो उसकी सीमें सामूहिक थी। मालों के ठीक-ठीक भेजे जाने के बाद विवरण-पत्र की मूल प्रति उसके मास्कि को एक प्रमाण-पत्र के साथ कि सामानों का पुनर्निर्माण हो गया वापस कर दी जायगी जिसमें कि वह उसे स्वयं बहि शुल्क कार्यालय के अधिकारियों को दिया मक। विवरण-पत्र की दूसरी प्रति पृष्ठांकित होकर स्वयं सीमा शुल्क कार्यालय का वापस हो जायगी और तीसरी प्रति पृष्ठांकित होने के बाद चुगीपर में गैरार्थ के लिए रत्न भी जायगी।

४. जमा की हुई पूंजी को वापस लेने के लिए या पैराग्राफ १ (घ) के अन्तगत शामिल किया गया बॉण्ड को रद्द कराने के लिए माल बाहर भेजने वाले या उसके अधिकर्ता (Agent) का चाहिए कि वह उक्त जमाय का जाबेदगार है जिसके साथ वह विवरण पत्र की मूल प्रति का भी जिस बन्दरगाह से उसका सामान बाहर गया वहाँ के चुगीपर में प्रमाणित करके कि माल का पुनर्निर्माण भारत में बाहर हो गया साथ में लम्बी कर दे। विवरण-पत्र के मूल को स्वयं सीमा शुल्क कार्यालय के सामने माल भजन के १ महीने के भीतर या बन्दरगाह के चुगी अधिकारियों द्वारा प्रमाणित एसी बड़ी हुई अवधि जिसका बहाना परिस्थितियों अनिवार्य हो जाय के अन्दर प्रस्तुत करना चाहिए।

५. जमा की हुई पूंजी की वापसी की अवधि बॉण्ड को रद्द करने की स्वीकृति देने के पूर्व स्वयं सीमा शुल्क कार्यालय का सम्बन्धित अधिकारी माल भेजने वाले व्यापारी द्वारा प्रमाणित विवरण-पत्र के मूल प्रति की सम्बन्धित चुगीपर में प्राप्त विवरण-पत्र की प्रति से तुलना करके ज्ञान को अनुष्ट करता है।

#### भाग 'ब'

जहां तक बधि की धारा ४ का सम्बन्ध है—बोर्लिंग सरकारों तथापि राज्य-गोत्र के अन्तर्गत निम्नलिखित नियमों के निष्कर्षों प्रदेना को माय्ना देनी है—  
(१) रक्सीन (२) जोगबनी (३) नवापगञ्ज (४) गीनतवा और (५) जयनगर।  
य ज्ञान पत्र पर हस्ताक्षर की तिथि ३१ जुलाई १९५१ है और हस्ताक्षरकर्ता जमाना जमान और नवाप की सरकारों की ओर से चाण्डेवर प्रसाद नाथपण सिंह और माराज बोर्लिंग हस्ताक्षरित जमानपुर राणा है।

## परिशिष्ट

१८

संयुक्त राज्य सरकार और नेपाल सरकार के मध्य संधि  
हस्ताक्षरित ३० जनवरी, सन् १९५० ई० काठमाण्डू

महा ब्रिटन और उत्तरी आयरलैंड की संयुक्त राज्य सरकार और नेपाल सरकार  
ने प्रतीतिष्ठ किया है कि शांति मैत्री और सहभाव सौम्य काम में दोनों देशों में

इसका विमल किया है कि बाबरन राज्य भारत और पाकिस्तान के प्रतिष्ठापन  
में काठमाण्डू में २१ दिसम्बर, सन् १९०३ ई० का संयुक्त राज्य और नेपाल सरकार के  
मध्य हस्ताक्षरित संधि के अनुरूप प्रावधान तथा प्राचीन संधियों प्रयोजनीय नहीं रह गई  
है—अभिधातना की कि अब तक विद्यमान सम्बन्धों को और अधिक मजबूत और परिपूर्ण  
किया जाय और इसलिए संकल्पन किया कि एक नवीन संधि करण हो।

निम्नलिखित स्थापन किया—  
पारा १—संयुक्त राज्य की सरकार और नेपाल सरकार के मध्य शांति शांति

और मैत्री रह्या।  
पारा २—दोनों प्रसिद्धा पत्र एक दूसरे की बाह्य एवं आन्तरिक स्वाधीनता को

बाहर एवं साम्यता देना परस्पर स्वीकार करने हैं।  
पारा ३—संयुक्त राज्य की सरकार और नेपाल सरकार के मध्य शांति और मैत्री

के प्रतिष्ठ सम्बन्धों का निरापद और समुपन करण के विचार में दोनों देश एक दूसरे के  
यहां धर्मता-प्राप्त अन्तर्गत प्रतिक्रिया नियम करण और मुक्त रूप में काम  
संचालन के लिए आवश्यक कर्मचारों रखें।

पारा ४—दोनों प्रसिद्धा पत्र अपना आवश्यक बाणिज्यिक सम्बन्धों का  
तः अन्तर्गत विधि-विधानों के अनुसार परस्पर सामवायक बाणिज्यिक सम्बन्धों का  
पिपित और विकसित करें।

पारा ५—(क) प्रत्येक प्रसिद्धा पत्र के राष्ट्रियों का दूसरे प्रदेश में जिन पर यह  
पारा लागू है प्रवेश यात्रा निवास और छाड़न का अधिकार होगा जब तक के उक्त राज्य  
में सब बिदेसियों के ऊपर कायू प्रवेश यात्रा निवास और छाड़न के नियमों का पालन एवं  
महाभान करें। प्रत्येक प्रसिद्धा पत्र के राष्ट्रियों का दूसरे राज्य में जिन पर यह पारा  
लागू है अन्तर्गत विधि-विधानों के अनुसार व्यवहार और समाहर होगा। उन्हें उस राज्य  
में व्यक्तिगत सम्पत्ति और अधिकारों और उन सब विषयों पर जिनका सम्बन्ध बाणिज्य  
में उत्पन्न न तथा किसी प्रकार का व्यापार करण न है व्यवसाय और कृषि के संचालन में  
सम्पत्ति का उपार्जन स्वाभिन्न और बिनाप करा के संग्रह तथा कर संग्रह की प्रयोजनीयता  
में किसी बिदेसी को राष्ट्रीय में कम सुविधाजनक व्यवहार नहीं मिलेगा।



## नपास की कहानी

(ख) इस सविदा के प्रयोजन के लिए, जहाँ तक संयुक्त राज्य सरकार का किसी विदेशी का राष्ट्रीय के साथ व्यवहार का प्रश्न है विशेष से अभिप्राय उस किसी देश से है जो निम्न तालिका में अंकित नहीं है—

महा ब्रिटेन और उत्तरी आयरलैंड का संयुक्त राज्य  
कनाडा

आस्ट्रेलिया का समधि-राज्य  
यूजीएसए

इसिओ अफ्रीका का संघ

भारत

पाकिस्तान

रुक्का

वर्तमान संधि के हस्ताक्षरित होने के दिन से संयुक्त राज्य सरकार, आस्ट्रेलिया का समभिराज्य यूजीएसए और इसिओ अफ्रीका का संघ और आयरलैंड का गणराज्य अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के राज्यों के लिए उत्तरदायी है।

(ग) इस धारा के प्रावधान अभी आपे नपास सरकार को उन कामों के निम्न में लागू न हाय या समझ देना से सीमांत क्रय-विक्रय द्वारा प्राप्त हों।

धारा ६—(क) धारा ५ के प्रावधान का प्रयोग इस पर होगा—  
१ संयुक्त राज्य सरकार के सम्बन्ध में महाब्रिटेन और उत्तरी आयरलैंड और किसी राज्य में क्रियम धारा ५ के प्रावधान का प्रसार इस धारा के लच्छ (ख) के अनुसार किया गया है।

२ नपास सरकार के सम्बन्ध में नपास को।

(घ) वर्तमान संधि के हस्ताक्षरित या पुष्टीकरण के समय से या उसके पश्चात्, संयुक्त राज्य सरकार अभिभूचना द्वारा नपास की सरकार को घोषित करेगी कि धारा ५ उन राज्यों में लागू होगी जिनके अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के लिए संयुक्त राज्य उत्तरदायी है और धारा ५ अभिभूचना के प्राप्त होने के समय से उसके सम्मिलित राज्यों में प्रसारित होगी।

(ग) इस धारा के लच्छ (ख) के अन्तर्गत प्रावधान करम के बाद संयुक्त राज्य सरकार धारा ५ को उन राज्यों पर भी प्रचारित कर सकती है जिनके अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के लिए वह उत्तरदायी है और वह नपास सरकार को अभिभूचना द्वारा घोषित कर सकता है कि धारा ५ अभिभूचना में सम्मिलित किसी राज्य के लिए प्रचारित न होगी और अभिधारा ५ अभिभूचना के प्राप्त होने के समय से उक्त राज्य में लागू नहीं होगी।  
धारा ७—वर्तमान संधि में 'राष्ट्रीय' शब्द का अर्थ संयुक्त राज्य के सम्बन्ध में यह है—

१ संयुक्त राज्य और मण्डलों के नागरिक को अपनी नागरिकता की व्युत्पत्ति इस धारा में लागू सम्बन्ध से प्राप्त करते हैं ।

२ सब ब्रिटिश रक्षित व्यक्ति को धारा ५ में लागू राज्यों के सम्बन्ध से सम्बोधित है ।

३ यदि ब्रिटीश रोडेशिया पर यह धारा प्रमाणित की जाय तो ब्रिटीश रोडेशिया के नागरिक ।

और (ख) नेपाल सरकार के सम्बन्ध में नेपाल के समस्त राष्ट्रीय ।

धारा ८—२१ दिसम्बर, १९३५ के पूर्व की समस्त संधियाँ अमिपुनित्यता और संविदा को संयुक्त राज्य सरकार और नेपाल सरकार के मध्य निष्पादित हुईं और उस विधि को हस्ताक्षरित काठमाण्डू में संधि उस निमित्त से समाप्त हो जायेगी जिस विधि से यह संधि लागू होगी । कहा तक संयुक्त राज्य और नेपाल से इसका सम्बन्ध है ।

धारा ९—वर्तमान संधि का पुष्टीकरण होगा और संधि उस विधि से लागू होगी जब से पुष्टीकरण बिलेसो का आदेश-प्रदान होगा । काठमाण्डू में पुष्टीकरण विरोध छोड़ आवाजित प्रदानित होगा ।

धारा १०—वर्तमान संधि अमिपुनित्यता काल तक लागू रहेगी । प्रसंगिक पक्ष में किसी के हुम्मे को एक वर्ष की लिखित अभिमूचना देने पर समाप्त हो सकेगी ।

अपनी सरकारों द्वारा प्राधिकारित निम्न हस्ताक्षरितों ने वर्तमान संधि अंग्रेजी और नेपाली में हस्ताक्षरित की है । दोनों मूल बचन प्राधिकारित हैं । अंग्रेजी के मूल बचन अभिप्रायी होंगे ।

१० अक्टूबर, सन् १९५० ई० तदनुसार १४ कार्तिक २००७ वि० को काठमाण्डू में प्रतिक्रियाओं में हुई ।

(हस्ताक्षर) जार्ज फौलर (से० क०)

नेपाल के ब्रिटिश सभाओं के राजदूत

(हस्ताक्षर) मोहन रामसर

नेपाल के प्रधान मंत्री और सर्वोच्च यज्ञ सेनापति

११

### नेपाल-अमरीकी सम्बंध

संयुक्त राज्य अमरीका तथा नेपाल की सरकारों ने वाणिज्य और काठमाण्डू निरत अपने कूटनीतिक कार्यवाहकों को राजदूत पदों पर बृद्धि करना स्वीकार कर लिया है तथा वे आपस में राजदूतों का आदेश-प्रदान करेंगे ।

संयुक्त राज्य सरकार ने १९४७ में नेपाल सरकार का प्रसंगिकरण किया था । और २५ अप्रैल १९४७ में काठमाण्डू में वाणिज्य और मंत्री का संविदा सम्पादित हुआ था । सन् १९४८ में वाणिज्य और काठमाण्डू में प्रधान नेपाली और अमरीकी मंत्रियों ने अपने

अभिमान पर समर्पित किये थे। वर्तमान काल में किसी राजद्रोह का कायमिन्म ब्रह्म सरकार का राजबागी में नहीं है। अमरीकी संघी जो भारत में भी राजद्रोह हैं मयी बिरुद में रहते हैं तथा मयाको मयी आ लन्दन में बास करते हैं संयुक्त आत्मि देस में राजद्रोह हैं माना है कि इन काय में संरक्षण राज्य (अमरीका) और नेपाल में बनिष्ठ सम्बन्ध को समिद्ध होया।

मिन्बर न० १०५१ ई०

नेपाल सरकार और संयुक्त राज्य अमरीका की सरकार में औद्योगिक सहकार्य के लिए अनुसूची सामान्य सविदा।

मन्त्र राज्य अमेरिका और नेपाल की सरकारों ने यह स्वीकृत किया है। पारा १ सहायता और सहकार्य—१. नेपाल के आर्थिक संसाधन तथा उत्पादक शक्ति की अनुमति एवं माफ़्य उपरति के अभाव के लिए संयुक्त राज्य अमरीका और नेपाल की सरकारों ने आपस में औद्योगिक ज्ञान और शैक्षणिक आदान प्रदान स्वीकार किया है। बिना औद्योगिक सहकार्य कार्यक्रम और योजना अन्य निश्चित संविदाओं के आदान प्रदान अनुसार सम्पादित होंगे जो नेपाल के संयुक्त नामोद्वृष्ट प्रतिनिधियों और संयुक्त राज्य अमरीका के प्रायोगिक सहकार्य प्रणाली द्वारा या अन्य व्यक्तियों, अभियन्ता या मकाना द्वारा स्वीकृत होयी।

नेपाल सरकार अपने नामोद्वृष्ट प्रतिनिधियों द्वारा और संयुक्त राज्य अमरीका के औद्योगिक सहायक प्रणाली के प्रतिनिधियों द्वारा और संयुक्त राज्य अमरीका के प्रतिनिधियों द्वारा सब प्रकार के औद्योगिक सहायक कार्यक्रम के सम्पूर्ण मन्त्र का प्रयत्न नेपाल में करेगी।

२. नेपाल सरकार औद्योगिक ज्ञान एवं शैक्षणिक आदान प्रदान उन देशों में करेगी जो इन शिवाज अन्तर्गत औद्योगिक सहायक कार्यक्रम में सम्मिलित हैं।

३. संयुक्त अमरीका के सहयोग में नेपाल सरकार नेपाल में औद्योगिक विस्तार के परिणाम का प्रभावी उपयोग करेगी।

४. एक दूसरे की प्रार्थना पर दोनों सरकारें इन शिवाज के अन्तर्गत योजनाओं की प्रवृत्ति पर परस्पर विचार-विनिमय करेगी जबकि एने किसी प्रवृत्ति के विषय में जो इन शिवाज के कारण व्यवहार में आया जायगा।

पारा २ सूचना और प्रकाशन—१. नेपाल सरकार संयुक्त राज्य अमरीका को परस्पर शैक्षणिक और निम्न मन्त्र पर निम्न बातें सूचित करेगी—

(क) योजनाओं अन्तर्गी सूचना कार्यक्रम आपस और प्रवृत्ति जो इन शिवाज

## परिशिष्ट

के अन्तर्गत होंगे इसके अन्तर्गत धन राशि का उपयोग सामान उपकरण तथा सेवाचर्य भी माने जायेंगे ।

(क) औद्योगिक सहायता की सूचना जो अन्य देशों अथवा अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों से भी आ रही है या जिसके लिए प्रार्थना की गई है ।

२ कम से कम वर्ष में एक बार नेपाल और संयुक्त राज्य अमरीका की सरकारें इन सविदा के अन्तर्गत औद्योगिक सहायक कार्यक्रम के सम्पन्न होने के विषय में परस्पर विचार-विनिमय द्वारा उसे प्रकाशित करेंगी । इन विवृत्तियों में अनुराशि सामान करण तथा सेवाचर्य के उपयोग का विवरण भी होगा ।

३ संयुक्त राज्य अमरीका तथा नेपाल सरकार परस्पर समझना करके इस श्रमिका के अन्तर्गत औद्योगिक सहायक कार्यक्रम के ध्येय एवं उन्नति को पूरी तौर से प्रकाशित करेंगी ।

बारा ३ कार्यक्रम और योजना सम्मेलन—१ उमर बारा १ कृषिका १ में उल्लिखित कार्यक्रम और योजना सम्मेलन के अन्तर्गत नीति सम्बन्धी प्रावधान प्रशासक कार्य प्रणाली धन-राशि का वितरण व विवरण प्रत्येक इस का कार्यक्रम और योजना के परिष्कृत में सहयोग-धन तथा उपयुक्त वित्तबारा २ कृषिका १ में उल्लिखित कार्य ३ श्रमिषेय एवं सूक्ष्म सूचना होगी ।

२ इस कार्यक्रम एवं योजना के अन्तर्गत संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा नेपाल को प्रकृत वित्त-राशि सामान तथा उपकरणों पर संयुक्त राज्य अमरीका की सरकार पर किसी प्रकार का कर, सेवा-प्रभार और विनियोग या निस्साधन आवश्यकताये न लागू होंगी और वह विविध आय-व्यय से मुक्त होगा ।

३ परस्पर समझौते के अनुसार नेपाल सरकार औद्योगिक सहायता कार्यक्रम और योजना में उचित परिष्कृत बहुत करेगी ।

बारा ४ सेवाचर्य—१ सहकार, औद्योगिक सहायता कार्यक्रम और योजना के सम्बन्ध में संयुक्त राज्य अमरीका के समस्त कर्मचारीगत जिन्हें नेपाल में काम करने के लिए सेवा आयया तथा उनके अनुसरणी परिवारा पर नेपाल का आय-कर निम्न बातों में लागू न होगा । संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा दिया वेतन एवं परिभ्रम और कोई और वेर नेपाली आय जिस पर संयुक्त राज्य अमरीका को आय-कर अथवा सामाजिक रक्षण-कर दिया जाता है ।

२ ऐसे कर्मचारी और उनके परिवार के व्यक्ति निराश्रय और प्रवेशन कर से व्यक्तिगत गृह-सम्बन्धी और व्यावसायिक सम्पत्ति तथा एक स्वतन्त्राही (मोटरकार) मुक्त होंगे । इनमें उन्हें नेपाल सरकार के विदेश विभाग को यथासं सूचना देनी होगी कि यह सम्पत्ति उनके व्यक्तिगत तथा पारिवारिक व्यवहार के लिए है । एनी किसी वस्तु पर दण्ड देना बाध्य होगा जो बिना कर के लाई गई है या तीन वर्षों के भीतर निर्यात

हई है परन्तु यदि ऐसी वस्तुएँ इसी अवधि में पुन निष्कासित की जाती हैं तो बाध्यता होगी।

पारा ५ प्रस्ताव में आता संशोधन अवधि (सामू होता) — १ यह संविदा हस्ताक्षर होने के दिन से लागू माना जायगा। यह सरकारों के लिखित सूचित करने के पश्चात् कि उनका विचार इस संविदा को समाप्त कर देने का है उस दिन से तीन मास तक लागू रहेगा।

२ इस संविदा के जीवन काल में यदि कोई सरकार यह समझती है कि इसमें किसी संशोधन की आवश्यकता है जो वह दूसरी सरकार को इसकी सूचना देगी और दोनों सरकार विचार-विनिमय करके संशोधन स्वीकार करेगी।

३ महायुद्ध योजना और दूसरी स्वीकृतियाँ और प्रबन्ध बिनाकी निष्पत्ति हो जाय इस संविदा के समाप्त होने के पश्चात् भी दोनों सरकारों के प्रबन्धानुसार लागू रह्य।

४ यह संविदा पुरक है तथा दोनों सरकारों के बीच वर्तमान समझौते की बरि उनसे इसके प्रतिकूल कोई विषय न हुआ तो स्वतन्त्र्य नही करेगा।

अपनी सरकारों की ओर से पूर्वकथित अधिकृत होकर निम्न हस्ताक्षरित व्यक्तियों ने वर्तमान संविदा पर हस्ताक्षर किये।

२३ जनवरी सन् १९५२ ई की मयी दिल्ली में प्रतिनिधियों में मित्रा गया।

नैपाल सरकार की ओर से—

नरुल राय अमरीका की सरकार की ओर से—

(हस्ताक्षर) गिह

(हस्ताक्षर) सर्व हम्पु डेन्डरसन

कमान्डर जनरल

नैपाल में नरुल राय अमरीका के बंधी

गिह रामधर जग बहादुर राया

नैपाल के राजकुल

२१

औद्योगिक सहकारिता में नैपाल और स्विट्जरलैंड के सम्बन्ध में संविदा

औद्योगिक सहायता के लिए स्थान सम्बन्ध समिति में

तथा

नैपाल राज्य की सरकार में

नैपाल के औद्योगिक विभाग में स्थान विभागों की सहकारिता सम्बन्धी

सन् १९५५ में नैपाल राज्य की सरकार और स्थान सम्बन्ध समिति द्वारा विद्युल स्थान-जाल अधिनियम १९५५ में औद्योगिक सहायता के लिए स्थान विभागों द्वारा पत्र और अन्य-स्थान निर्माण और विभाग सम्बन्ध के सम्बन्ध में हृदि हस्ताक्षरित आता में बाध्यक यात्राया के लिए स्थान सम्बन्धी स्थान कर की है अन्तर्गत देश के औद्योगिक विभाग के

## परिशिष्ट

लिए अन्य स्विस विशेषज्ञों के अवसरों होने की संभावना है।  
मठएन औद्योगिक विकास पर स्विस समन्वय समिति और नेपाल राज्य की सरकार  
न इस सहकारिता के निमित्त निम्न सामान्य व्यवस्थाकरणों का स्वीकरण किया है—

नेपाल को अपवहन में स्विस विशेषज्ञों का निर्धारण  
बारा १—औद्योगिक सहायता के लिए स्विस समन्वय समिति सिद्धान्ततः बिशपनों  
को नेपाल के अवहन में निर्धारित करने को उद्यत है।

बारा २—औद्योगिक सहायता के लिए नेपाल सरकार स्विस समन्वय समिति  
(इसके पश्चात् यह स्विस समिति उल्लिखित होगी) को स्विस विशेषज्ञों के विषय में  
नी अधीन सूचित करेगी।

बारा ३—नेपाल सरकार की प्रार्थना स्विस समिति के प्रधान द्वारा स्विस सेविगों  
: उपलब्धियों के सहाय्य द्वारा सम्पादित होगी।

बारा ४—निपुणता के नियम और प्रत्येक बिशपन्न का कायमार, नेपाल सरकार  
और बिशपनों के मध्य बिशप प्रशिक्षण में संनिबधित हूंग। बिशपन्न इसके सामान्य  
निर्देश यथापूर्व स्वीकार कर सेंग तथा अवश्य रूप में स्विस समिति की निपुणता के नियम  
स्वीकार हूंग।

बारा ५—वर्तमान संविदा के अन्तगत नेपाल में काय करम जाला प्रत्येक स्विस  
बिशपन्न स्विस समिति के प्रशासन में रहेगा तथा उसी के प्रति उत्तरदायी होगा।

बारा ६—वर्तमान संविदा के अन्तगत नेपाल में अवस्थित प्रत्येक बिशपन्न अपनी  
औद्योगिक सक्रियता के लिए स्विस समिति से सौधा सम्पर्क रखेगा।

बारा ७—वर्तमान संविदा के अन्तगत नेपाल में अवस्थित बिशपनों में स एक  
बिशपन्न निर्वाचित होगा जो भारत में स्विस दूतावास द्वारा नेपाल सरकार और स्विस  
समिति के संस्पर्ध से उन औद्योगिक प्ररतों को जो नेपाल में तलाबीत अवस्थित बिशपनों के  
अधिकारालय से बाहर हूंग स्वायी निरन्धय प्रदान करेगा।

बारा ८—नेपाल और स्विस सरकार के मध्य औद्योगिक सहकारिता के साधारण  
प्रकृति के सभी प्रस्न भारत में स्विस दूतावास द्वारा स्विस समिति को बिचारार्थ भेजे  
जायेंगे और बारा ७ में उल्लिखित बिशपनों को सूचित कर दिया जायगा।

बारा ९—नेपाल सरकार बिशपनों का स्विस सरकार से नेपाल तक की यात्रा और  
उनके वहाँ रहने का परिष्वय समर्थन करेगी है। इसके अतिरिक्त वह उन्हें वेतन की  
सहायता देगी जो अंशतः स्विस सरकार को सन्मग्न हावा।

बारा १०—प्रत्येक वर्ष के अन्त में या अन्य अवधि के लिए नेपाल सरकार सूचना  
देगी। उदाहरण के लिए, वर्षा १९५० तक, या दूसरे वर्ष के लिए स्विस बिशपनों के व्यय  
एवं वेतन के लिए सम्पूर्ण बत-राशि। संभवतः प्रत्येक वर्ष के लिए या उनके वर्ष के लिए  
प्राप्त बत राशि के अनुसार कायक्रम निश्चित कर दिया जायगा।

धारा ११—प्रत्येक विधायक या नेपाल के अपबद्धन में है उनके बारे में निम्न निर्दिष्ट विचार करने की कि निम्नलिखित में कड़ा तक के समान अंशगत के अधिकारी है।

सामूहिक की विधि अबधि सुसोचन

धारा १२—यह विधि हस्ताक्षर होने के दिन से लागू होगा। इसकी अबधि निम्नलिखित है।

धारा १३—इसे कोई एक द्वितीय समय अस्वीकार कर सकता है परन्तु वर्तमान विधि के अन्तर्गत नेपाल में काम करने वाले विधायकों के अविधि के समाप्त होने तक यह लागू रहेगा।

धारा १४—कोई एक किसी समय सुसोचन प्रस्तावित कर सकता है। सुसोचन के आगमन में वर्तमान विधि के अन्तर्गत नेपाल में कार्य करने वाले विधायकों पर यह लागू नहीं होगा परन्तु जो बाद में नियुक्त होंगे उन पर लागू होगा।

नेपाल राज्य को सरकार के नाम पर

१ फरवरी मन् १९५२ ई०

बीबीओफिक सहायता के लिए

विश्व सहायता समिति के नाम पर  
अध्यक्ष

२२

ब्रिटिश सेना में गुरुक्षा सैनिकों की भरती के लिए ब्रिटिश सरकार और नेपाल सरकार के बीच अन्तरिम सन्धि

नेपाल सरकार ने तथा ब्रिटिश सरकार ने सम्मत किया है—

(क) कि नेपाल युधि पर पुरखों की भरती के लिए सैनिक अर्द्ध स्थापित होय।

(ख) वे अर्द्ध नेपाल सीमान्तर्गत होंगे।

(ग) नेपाल के सैनिक अर्द्धों में ब्रिटिश सेना के लिए पोरखों की भरती प्रवणत पाव बयौं तक लागू रहेगी। इन प्रवणत को आगे स्थापित होने का कोई विचार, इसी अवका अवधि उपरान्त पर, उसके समाप्त होने के पूर्व परिचालित कर लिया जायगा। इन सन्धि के स्थापित काल में यदि नेपाल सरकार या ब्रिटिश सरकार के विचार में इनके सन्धि पर कोई परिवर्तन उचित समझा जायगा तो दोनों सरकार उसे उचित परामर्श द्वारा निर्धारित करेंगी।

११ जुलाई मन् १९५३ ई०

२३

प्रत्यक्ष की संधि

भारत सरकार और नेपाल सरकार में

भारत सरकार और नेपाल सरकार दोनों देशों के बीच अवधि की प्रवणत को नियन्त्रित करके रखने की इच्छा है और प्रत्यक्ष की सन्धि का स्वरूप करने के लिए निम्न व्यक्ति को पूर्ण अधिकार प्रदान करती है—

## परिशिष्ट

परमघोष्ठ भाकबन्ध कृष्ण गोखले मेपास में भारत के राजदूत और भारतीय भी  
 मानुका प्रसाद काइरसा मेपास के प्रधान मंत्री जो एक दूसरे के अभिमान-युक्त परीक्षण  
 कर उन्हें यथार्थ बन्धुताबद्ध पाकर निम्न शाराओं में सम्मत् हुए ।

शारा १—शान्ति सरकारें परस्पर स्वीकार करती हैं कि वे अपराधी या दण्डित  
 व्यक्ति या एक सरकार के प्रदेश में अपराध कर दूसरी सरकार के प्रदेश में पाप पापों  
 अपनी सरकार को मौज दिय जायें इसकी परिस्थितियों तथा नियम उस मणि में  
 निर्दिष्ट हैं ।

शारा २—कई सरकार उस व्यक्ति को मौज करने वाली सरकार को नहीं मीपेगी  
 यदि वह उसका राष्ट्रीय नहीं है । इन शारा में छूट उन व्यक्तियों के सम्बन्ध में हावी  
 विन्दुन अभिप्राय ३ के खण्ड (१) में निर्दिष्ट अपराध किये हैं ।

शारा ३—इस मणि के अनुसार निम्न अपराधों के लिए प्रत्येक मापू हागा—

- (१) हत्या या प्रयास या हत्या करने का प्रयत्न
- (२) बन्ध-बन्धित मद्य मानव-हत्या
- (३) चार उपपात
- (४) बलात्कार
- (५) बकैरी
- (६) राजपत्र पर मुद्रण
- (७) हिमा के माप मुद्रण
- (८) चारो या मंच मयाना
- (९) गृहदाह
- (१०) मद्यस्य सेना में पलायन

- (११) निष्क्राम्य और प्रवेस्य बस्तुओं की रोक के नियमों के विरुद्ध अपराध
- (१२) जन अधिकारियों द्वारा उन हरण
- (१३) गुप्तार चारो बर्तान् चोरी की वह दशा जिसमें हिमा का व्यवहार हो या
- (१४) चोरी किये माल का मुख्य पात्र मो रूप से अधिक हो और पम्प-हरण
- (१५) अपहरण या बालापहरण
- (१६) कूटकर्म और उनका व्यवहार जो कूट है मुद्रा कूटकरण या उनमें आपरि-
- (१७) कूटकरण या आपरिचित मुद्रा का प्रचार या प्रचलित करना
- (१८) लोक सेवा द्वारा उत्पन्न सेना और
- (१९) खण्ड (१) में (१६) में निर्दिष्ट अपराधों के लिए दण्ड पात्र पर मोपने
- (२०) की दशा में रक्षण से भागना ।



धारा ४—किसी भी देश में कोई सरकार उस अपराधी व्यक्ति को संपन्न के लिए बाध्य न होवे जब तक उसके लिए उस सरकार द्वारा प्रार्थना न की जायगी जिसके प्रदेश में अभिकल्पित अपराध किया गया है तथा ऐसे अपराधिक प्रमाणों के आधार हाथ या उस देश के नियमों के अनुसार जहाँ अपराधी पाया जाय उसका बोध स्पष्ट हुआ और बहुत अन्याय करने पर वह बोधो माना जाय हो।

धारा ५—कोई सरकार उस व्यक्ति को समपन्न करने को बाध्य न होवे यदि उसका अपराध राजनैतिक रूप का हुआ या यदि वह इसे प्रतिपादन कर देता कि उसके समर्पण की माँग राजनैतिक अपराध में दण्ड देने के लिए की गई है।

धारा ६—यदि कोई व्यक्ति दूसरी सरकार में प्रत्यय के अपराध में दण्ड भोग चुका है और कृ नवा है या वकित है या विचारणीय है तो किसी सरकार में प्रत्यय का अपराध नहीं माना जायगा।

धारा ७—यदि कोई व्यक्ति जिसके प्रत्यय की एक सरकार माँग करती है और वह दूसरी सरकार के प्रदेश में किसी अन्य अपराध के लिए विचारणीय है तो विचार समाप्त तक इसका उद्घरण स्थगित कर दिया जायगा।

धारा ८—समान्य व्यक्ति किना देश में भी उस सरकार के प्रदेश में किसी अन्य अपराध के लिए रोका या विचार के लिए उपस्थित नहीं किया जायगा और समपन्न किया गया है। वह केवल प्रत्यय के अपराध के लिए हा होया या जब तक वह उस देश में प्रत्यय न कर जहा में वह मौजूद था।

धारा ९—व्यक्तिगत व्यक्ति के गिरफ्तार होने के दिन से या मान तक यदि उचित प्रमाण उसके प्रत्यय के नहीं मिलते हैं या सरकार हाथ अनुमति दिय समय के भीतर तक के नहीं मिलते हैं या उस स्यायाजद में जहा प्रमाण उपस्थित करने है जो छोड़ देया।

धारा १०—इस संधि के अन्तर्गत गिरफ्तारी के राज्य के अबका तर्जों के समान रूप रही सरकार करेगी या मौपने की प्रार्थना करेगी।

धारा ११—यह संधि इन विषय पर समस्त पूर्व समिती संधिओं और अन्य कार पत्रों को रद्द करती है।

धारा १२—यह संधि बिना अनुमोदन के स्वाकार करने के दिन से एक बहीन बाध लागू मजबूती जायगी और एक रूप की सूचना देकर कोई एक इन समाप्त कर सकेगा।

काठमाण्डू में २ अक्टूबर, १९५१ को प्रतिलिपि में प्रस्तुत हुई।

बी के बोमरे

भारत सरकार की ओर से

मालूका प्रसाद कोइराला

नेपाल सरकार की ओर से

२४

## कोसी योजना

२१ अप्रैल १९५४ ई० को नेपाल राज्य की सरकार (जाने इसका निर्देश 'सरकार' होगा) से और भारत सरकार (जाने इसका निर्देश 'संघ' होगा) में यह संधिबा हुआ ।

## विषय

संघ पुर नियंत्रण के लिए, अबष्टम सीपकर्म और अन्य उपायय काम कोसी संगिता में अनुमाननपर से तीन मील प्रतिसेक पर पुर तटों नहरों और रखक कामों को नेपाल राज्य की भूमि पर, पुर नियंत्रण सिंचन बह-विद्युत-शक्ति-जनन और नेपाल की तरिता के बाहिले तट की भूमि को अपराधन से बचाने के निमित्त हस्तक है । (जाने इसे 'योजना' निर्देशित किया जायगा ।)

और सरकार ने उक्त अबष्टम सीपकर्म और अन्य सम्बन्धित कामों को संघ के और जाग परिषद पर, उससे होल बूके कामों का विचार में रखकर स्वीकार किया है ।

पक्षकारों ने निम्न बंदीकार किए हैं—

## योजना विस्तार

१ (क) अबष्टम का स्थितिनिश्चयन अनुमाननपर से तीन मील प्रति सेक होगा ।

(ख) अबष्टम का सामान्य रेखांकन बाहिले तट के क्षेत्रफल पुर तट अन्य और संचार की रेखायें इस संधिबा से अनुबद्ध मातृनि में 'अनुबन्धन A' में दिखाई गई है ।

(ग) इस संधिबा के ३ और ८ कणों के लिए बह जलाशय के क्षेत्रों के अन्तर्गत भूमि और सीमाएं जो उपर्युक्त उपबन्ध (ख) के मातृनि में निर्देशित है बलमान समझी जायगी ।

## प्रारम्भिक अनुसन्धान और भूमापन

२ (क) सरकार संघ के नहर और अन्य अधिकारियों को या अन्य व्यक्तियों को जो इन अधिकारियों के आदेश से काम करेंगे पूरी सुविधाएं, आवश्यक व्यक्तियों पक्षों सामान पावप र्थों और आवश्यक औजारों के साथ किसी भूमि में प्रवेश करने देगी जिसकी आवश्यकता इस योजना के लिए अनुसन्धान और भूमापन की होती ।

बिहार सरकार सिंचाई विभाग के मुख्य अभियांत्रिकी प्रो-कर्म-विभाग (कोसी योजना) योजना के सम्बन्ध में उनके निर्माण के पूर्व पश्चात् और होने की अवस्था में भी या का लेंगे ।

इन अनुसन्धानों और भूमापनों के अन्तर्गत भौतिक और भूमापन आम्मत सरल-विधीय सरलीय और भीमकीय मापन साथ में बणिबबिबों का निर्माण तल और

उत्पन्न के लक्ष्योपयोगों के लिए संचार के लिए अनुसंधान तथा यन्त्रों बहिरेकी अवलोकन का निर्माण और उसकी सुरक्षा तथा योजना के अन्तर्गत धारे विपणन होंगे ।

(क) सरकार आवश्यक सुविधाएँ, कोमी या उसकी सहायक सरिताओं के जल को सक्रिय रखन या संकलन के अनुसंधान भूमि रक्षा उत्पादन जैसे अवरोधन अवरोधन, इत्यादि या अधिक्य में कोमी की समस्याओं के समाधान के लिए होनी प्रदान करेगी ।

अधिकांसी कार्य का अधिकार, भूमि तथा अन्य सम्पत्ति पर अधिकार

३ (क) सब का संशोधन प्राप्त करने के साथ तथा सब को सरकार को सूचना देने के साथ सरकार सब को योजना या उसके कुछ अंशों के निर्माण का अधिकार देगी । यह मुख्य अधिकारिक तथा अन्य सब अधिकारियाँ कर्मचारियों मनुष्यों पशुओं, यावों मशीनों, और आवश्यक उपकरणों के साथ जिनकी आवश्यकता योजना की कार्यान्वित करने में होनी उन स्थानों तथा भूमि पर प्रयोजनीय समय तक जाने की और कार्य करने की सुविधा प्रदान करेगा ।

(ख) लच्छ ३ (क) में उल्लिखित भूमि सरकार द्वारा प्राप्त कर ली जायगी और सब द्वारा उनका शक्तिपुति लच्छ ८ में उल्लिखित नियम के अनुसार होगा ।

(ग) सरकार सब के अधिकारियों को अधिकार देती कि वे अवलोकन की सीमा या उससे ऊपर भूमि पर जाकर किसी क्षुण्डता के होने की संभावना को रोकने के लिए उचित कार्रवाई कर सकें । हर दशा में सब भूमि के अधिकारियों या अधिकारियों को शक्तिपुति देगी । यह कार्य सरकार के द्वारा लच्छ ८ में उल्लिखित नियमानुसार होगा ।

(घ) सरकार सब को योजना के कार्यान्वित करने के लिए सब परान बाजार या न्याय के अन्य स्थानों में उत्पन्न की सुविधाएँ देगी ।

### जल और शक्ति का उपयोग

४ (क) सब को कोमी सरिता के जल नियमन या अवलोकन के स्वाम पर तथा सक्रिय उत्पादन के लिए योजना को कार्यान्वित करने का अधिकार होगा । इन कार्य में न्याय की सीमा के लिए जल-व्यवहार करने के अधिकार में कोई कमी नहीं होगी ।

(ख) सरकार ५० प्रतिशत जल-व्यवहार-शक्ति के उपयोग की अधिकारी होगी । इसके लिए सब योजना शुल्क देनी जिनका सरकार और सब में तय हो जायगा ।

### समयमूल्य-सम्पन्नता और अधिकार-क्षेत्र

५ लच्छ ३ में उल्लिखित नियमों के अनुसार सरकार द्वारा प्राप्त भूमि पर सब का अधिकार होगा उनका सब को हस्तांतर हूँगा तथा लच्छ ४ (क) में अनाधिकार प्राप्त का भी ।

इन हस्तांतर के सरकार के सर्व-वस्तु-सम्पन्न अधिकारों में कमी नहीं होगी ।

## अधिकार शुल्क

१ (क) शक्ति के प्रयोग में और भारतीय संघ द्वारा उपयोग करने में सरकार उस पर अधिकार शुल्क लगी। इसकी दर परस्पर निर्धारित होगी। नेपाल का बेशी शक्ति पर कोई अधिकार शुल्क नहीं मिलेगा।

(ख) परवर, कंकड़ और तिमार पर जो नेपाल में राज्य से निकाला जायगा और योजना ने निर्माण में तथा भविष्य संभारण में उपयोगी होगा सरकार संघ को अधिकार शुल्क देनी जिनकी दरें आपस में अंगीकृत कर ली जायेंगी।

(ग) सरकार द्वारा उपार्जित और संघ को हस्तांतरित भूमि में उसे मिट्टी बांधू और भूमि को किसी प्रतिरोध के हटाने की स्वाधीनता होगी।

(घ) समतोलन क्षेत्र के पश्चात् नेपाल के बनों से योजना के लिए लकड़ी के व्यापार की अनुमति होगी। उन लकड़ियों पर समतोलन नहीं दिया जायगा जो नेपाल में बाहिरें छट पर व्यापार के लिए काम में लाई जायेंगी तथा वनों सरकारों में इस पर स्वीकृति हो जायगी। सरकार द्वारा उपार्जित और संघ को हस्तांतरित बनों की लकड़ियों पर कोई अतिपूर्ति नहीं दी जायगी।

७ योजना के निर्माण में या उससे सम्बन्धित अन्य कार्यों के निर्माण में या उनके संधारण में किसी वस्तु या सामान पर सरकार निःशुल्क गृह कर या अन्य कोई कर नहीं लगी।

## भूमि और सम्पत्ति के लिए समतोलन

८ (क) संघ की सरकार की श्रेष्ठ में समतोलन के अतिनिर्धारण के लिए

(ख) अनुच्छेद ३ (ख) और अनुच्छेद ९ (क) में उल्लिखित योजना विस्तार के लिए भूमि पर

(आ) निम्न भूमि पर निम्न मामलों में विभाजित होंगे—

१ इपि भूमि

२ वन भूमि

३ साम्य भूमि और घर तथा अन्य उन पर स्थावर सम्पत्ति और

४ जेप्य भूमि।

वह समस्त भूमि जो नेपाल राज्य में पंजी-बेकन में शान्तिक इपि भूमि पंजीकृत होगी इपि भूमि मानी जायगी।

(ख) संघ उस पर नमोवास्तु देगी।

(ग) उस क्षेत्र पर जो सरकार ने हटा ली गई है तथा उन पर उपार्जित कच्चे माल निकाला जायगा निम्न आता था।

(आ) बिना किसी में भूमि मरदान या स्वाधर सम्पत्ति योजना के लिए की गई है और सब को हस्तांतरित की गई है ।

क्षतिपूर्ति का अभिविचार और उसका घोषण सरकार और संघ में परस्पर बंटी-हुन होगा ।

(ग) योजना के निमित्त समस्त भूमि का माप सरकार और संघ के अधिकारियों द्वारा माप-माप होगा ।

### संचार

(क) सरकार बंटीकार करती है कि संघ सब ट्राम पब रेल पब रजुमार्य इत्यादि का निर्माण योजना के लिए कर सकती है उसके लिए खण्ड ८ में उल्लिखित भूमि क्षतिपूर्ति क घोषण के बाद प्राप्य होगी ।

(ख) सरकार के प्रादेशिक अधिकारों के अन्तर्गत उनके पर्वों, ट्राम पर्वों रेल पर्वों पर संघ का स्वामित्व व अधिकार रहेगा । संघ के लिखाई बिधाम के से वैधानिक पब होये और नापिथिक व अबापिथिक बानों द्वारा उनका उपयोग उन्हें मातापात का कोई अधिकार नहीं देगा ।

(ग) सरकार उसी विधियों पर बंटी बूसरी को देगा है, सब पर्वों जल-मापी तथा नपाक व अन्य संचार-साधनों को अवच्छेद के निर्माण तथा अन्य कामों क व्यवहार के लिए प्रदान करेगा ।

(घ) अनुमान गपर अवच्छेद का मनु जमसाधारण के लिए लता रहेगा परन्तु समक बीनोंद्वार के लिए उस बन्ध करने का संघ की अधिकार होगा ।

(ङ) योजना के निर्माण व संधारण के लिए सरकार नेपाल में तार, टेलीफोन और रेडियो संचार लताका स्वीकार करती है ।

(च) योजना-क्षेत्र के अन्तर्गत संघ अपने अधीन कर्मचारियों को आन्तरिक टकी फल व तार व्यवहार में लाने की अनुमति देनी है उनका व्यवहार बिना भी दगा में योजना-विधान में रखावट नहीं डाल सकेगा ।

### नदी बाहुन का उपयोग

१० नपाक में कोणी गरिमा में नीतरण के समस्त अधिकार सरकार के हैं । बिना नदी बाहुन का उपयोग जैसे मनीन बाहुन वा काष्ठ बाहुन अवच्छेद में दो बीस तक नहीं बनाय वा मरने है जब तक ऐसा करने के लिए अवच्छेद के मुख्य अधिकारी द्वारा आज्ञा व आज्ञा कर ली जाय । अधिकार बाहुन का उपयोग करने वाला दण्ड वा भागी होगा ।

### मात्स्यिकी अधिकार

११ नेपाल में कोणी गरिमा के समस्त मात्स्यिकी अधिकार, अवच्छेद से २१

सीमा की सीमा छोड़कर, नेपाल सरकार के होंगे। अवलम तथा शीर्ष कम से दो-दो मील की सीमा में यकली नहीं पकड़ी जायेगी।

### नेपाली धमिक का उपयोग

१२ संघ नेपाली धमिक सेवा बर्ग और ठेकेदारों को जहा तक वे प्राप्य हो सकेंगे और राजमा के निर्माण में उपयोक्ती हूँ अभिमान देगा परन्तु आवश्यक सब बर्गों के धमिक बाहर में भी भेजा सकेगा।

### नेपाल में योजना-क्षेत्र का प्रशासन

१३ नेपाल में योजना क्षेत्र के अन्तर्गत संघ ऐसे जगहों को जैसे विद्यालयों की स्थापना उनका प्रशासन चिकित्सात्मक जल की सुविधा विद्युत् नाली ट्राम लाइने तथा अन्य नागरिक सुविधाएं प्रदान करेगा।

१४ नेपाल राज्य के अन्तर्गत योजना-क्षेत्र में सरकार ग्याय और अधिकार का संभारण करेगी। सरकार और संघ समय-समय पर उचित व्यवस्था इसके लिए करेंगे।

१५. संघ की इच्छा से सरकार योजना क्षेत्र में विषय ग्यायालय या ग्यायालयों की स्थापना स्वीकार करती है। ये योजना-क्षेत्र शीघ्र मुकदमे लय करेंगे। सरकार की इच्छा से संघ इनका व्यय बहुत करेगा।

### कोसी नियंत्रण कमिशन का भविष्य

१६ यदि और अनुसन्धान यह निर्देश करें कि कोसी और उसकी सहायक नदिया में भूमि-संरक्षण की रीति के एकत्र रखने की आवश्यकता है तो सरकार उसी नियमों पर जो यहाँ उल्लिखित है उन्हें अपनी स्वीकृति प्रदान करती है।

### मध्यम्य निर्णयन

१७ यदि कोई प्रश्न मेर या किसी प्रकार की आपत्ति उठ जायें होगी जिस का सम्बन्ध इस संविधा या उसके किसी अंग के तात्पर्य में होता या किसी पक्ष के अधिकार कर्तव्य या देयता से तो ऐसे विषय मध्यम्य निर्णय के लिए दो व्यक्तियों को एक सरकार द्वारा तथा दूसरा नव द्वारा नियुक्त मौप दिये जायेंगे। इनके निर्णय सर्वमान्य होंगे। दो मध्यम्य के बीच बन्धीकृत होन की दशा में विचारणीय विषय उनीय मध्यम्य व्यक्ति को दोनों मध्यम्यों द्वारा नियुक्त होमा मौप दिया जायगा।

१८. सरकार और संघ के अधिकारी प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर करने की तिथि से यह संविधा लागू होगा।

इस संविधा पर अपनी सरकारों द्वारा अधिकारित निम्न व्यक्तियों ने काठमाण्डू में हस्ताक्षर किये।

(हस्ताक्षर) महाश्वीर समशेर जंग बहादुर राणा नेपाल सरकार की ओर से  
(हस्ताक्षर) मुकुन्दारीकाज तन्पा भारत सरकार की ओर से

## कोसी योजना के लिए सहकार-समिति

१ कोसी योजना के दीर्घ कार्यान्वित होने के लिए तुरन्त निर्णय करने तथा साधारण उपकोसी समस्याओं के विचार-विमर्श के लिए एक विचारधर्मा की आवश्यकता प्रतीत हुनी है और इसके लिए भारतीय संघ व नेपाल सरकार राष्ट्रीय सहकार समिति की स्थापना के लिए सम्मत हने हैं। समिति में हर क्षेत्र के तीन प्रतिनिधि हुए जो अपनी सरकार द्वारा मनोनीत किये जायें। यह भी ठय किया जाता है कि समिति का प्रधान नेपाल सरकार का एक मंत्री होगा और सचिव कोसी योजना का प्रशासक होगा। समिति साधारण योजना के समस्याओं की विषयों पर विचार करेगी जिसके अन्तर्गत मृत्ति संरक्षण, वनस्पतियों का पुनर्वास, विविध व व्यवस्था का संस्थापन, मूलका के निवर्तन तथा अन्य विषय जो समिति का विचार करने के लिए नेपाल सरकार व भारतीय संघ द्वारा समय समय पर प्रेषित किय जायें।

२ समिति आवश्यकता पड़ने पर समय-समय पर काठमाण्डू में या बाणेश्वर के स्थान पर या किसी ऐसे स्थान पर जहाँ समिति ठीक समझती मिलेगी।

३ समिति के साथ करने पर उसका कार्य-विधय भारतीय संघ अपने सभी प्रचलित नियमों के अनुसार होगा।

४ समिति के कर्मचारीयों के अन्य व्यवसाय बहुत करेगा।

भारत तथा नेपाल सरकारों में सम्बन्धित योजना और समुच्चय-प्रणाली योजना पर सविदा।

एक दूसरे के साथ सहकारिता की योजना में तथा नेपाल की आर्थिक उन्नति की बढ़ाने के विचार में तथा भारत सरकार की न्याय सरकार को सहायता की इच्छा है—आर्थिक सहायता द्वारा (बाह्य व अन्तर्गत का कार्य) तथा सामान और वस्तु के विविध सहायता से स्वीकृत योजनाओं का आ न्याय के आर्थिक विभाग में सहायता होगी—यह स्वीकार करने है—

कारण १—भारत सरकार पञ्चायत आनन्द (आर्थिक मंत्रालय में) देवी आचार्यों में समु १९५४-५५ में दिया जायगा। वह नेपाल में समु विपन्न योजना और समु अन्तर्गत योजना के लिए है।

कारण २—सहायता का उदाहरण दत्त म. हावेल—

(क) योजना के लिए धूमि देने में एक तथा सामान के प्राप्य वस्तु में

(ग) मान सामान वस्तुओं को तथा योजना का सहायता के माध्यम व मोक्ष

(ग) इन योजनाओं के लिए नेपाल सरकार द्वारा नियुक्त अधिकारियों के बेतन-मते मार्ग-व्यय में

(घ) भारत से भेजाये गये ऐसे व्यक्ति के व्यय में इन योजनाओं के निर्माण की सहायता या सहाह के लिए और समान अभियान योजनाओं में ।

धारा ३—सरकार द्वारा (ब) तथा मास सामान करपुर्जों का व्यय बहुत करेवी और पचास लाख रुपये से बह पुरतक समामोजन सारा काट लिया जायगा । योजना जयबा योजनाओं पर जो तथास में होंये समय-समय पर सब-अन्ति ही बापगी तथा नेपाल सरकार के प्रमाण पर जयबा वास्तविक प्रगति देखकर और व्यय दिया जायगा ।

धारा ४—जह सचिवा नेपाल सरकार तथा भारत सरकार के वास्तविक प्रति-निधियों के निष्पादन से सामू होगा ।

निम्न हुस्तारिख भारत तथा नेपाल सरकार के उचित प्रतिनिधि हैं और उन्होंने अपनी सरकार की ओर से काठमाण्डू में १४ जुलाई १९५४ को बंग्रेजी भाषा में प्रतियिवा की दो प्रतिनिधियों पर हुस्ताशा किये ।

बी. के. योसके

बी. के. मिथ

ए. एस. मेहता की उपस्थिति में

मार्. पी. मानन्जर की उपस्थिति में

२७

### कोल्म्बो योजना

मार्च सन् १९५२ ई० में नेपाल कोल्म्बा योजना का सार्वज्य बना । इस योजना का मूल उद्देश्य दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया के बर्द्ध-विकसित देशों की सहायता देना है । इसके सदस्य राष्ट्रों की विकास-कार्य में प्राथमिक तथा आर्थिक सहायता देने की व्यवस्था है ।

एक ही बार बयों तक नेपाल एक ऐसे स्वदेशी कीलावी पत्रों में जकड़ा हुआ था कि वह विकास की बार कुछ भी अप्रसर नहीं हो सका था । इसने निजकले के बाद नेपाल को इस योजना से लाभ उठाने का अवसर मिला और इस विषय में भारत सरकार का उस विषय सहाय्य प्राप्त हुआ । नेपाल की भारत से अब तक सगपन सात करोड़ रुपये की सहायता मिल चुकी है । इसके अतिरिक्त मित्रराष्ट्रों से भी देश को और पर्याप्त सहायता मिलाने की सम्भावना है । नेपाल को राष्ट्रों से प्राप्त सहायताएं बिना किसी कर्त के मिली हुई हैं और जिसे नेपाल सरकार स्वेच्छानुसार कार्यान्वित कर रही है । राज्य की सारी आयबनी बार करोड़ रुपये से कम ही है इसलिए बिना ऐसी सहायता भिय नेपाल की आर्थिक स्थिरता ही नहीं अन्य आर्थिक विकास-योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए उपयुक्त आर्थिक वातावरण भी उत्पन्न करना होगा ।



विकास-कार्यों के लिए वारस्परिक आधार आवश्यक है तथा विनी बिशिष्ट विकास योजना की सफलता या असफलता उसकी बहुमुखी योजना की सफलता पर निर्भर करती है। अतः अभाव के कारण नेपाल के लिए, बहुत राष्ट्रीय योजना बनाने के साथ में वधि प्रचुर कठिनाइयाँ हैं जिन्हे उन समाजों से परिचित रहने हुए भी नेपाल सरकार में उनसे अन्तर्गत को पूरा करने का प्रयास हम प्रकार किया है—

(क) अन्तर्देशीय तथा विदेशी प्रवासकों के सहयोग से सामान-व्यक्ति में सुधार,  
(ख) जनसंख्या व्यापार, उत्पादन आदि तथा ऐसी ही अन्य आवश्यक ओंकों को संकलन

(ग) प्राकृतिक साधनों की हवाई तथा मैदानी सर्वे  
(घ) विभिन्न अन्तर्गतोय संस्थाओं तथा विदेशी राष्ट्रों द्वारा प्राविधिकियों की प्राप्ति और उम्मीदवादी को दिया देने के लिए विदेश भ्रमण के सम्बन्ध में प्रवृत्त तथापना की उपस्थिति और

(ङ) आप पर कर लगाने के नये उपायों का लागू करने तथा आयवनी के अन्य आयदा की सोज।

बहुत योजनाओं को सुम्पवस्थित करने का काम होते हुए भी निम्नलिखित कार्य शुरू कर दिए गए हैं—

(१) यत्नायत और संचार में सुधार—

(क) नेपाल की राजधानी और भारत की सीमा को संबद्ध करने वाली पक्की सी और अन्य संचार करने वाली सड़क नेपाल तथा भारत के संयुक्त प्रयास में भी प्रस्तावपूर्वक बनाने का रही है।

(ख) पहाड़ तथा तराई के मुख्य बाँध जिसे से नेपाल की राजधानी काउन्सिल हवाई यात्रा में दिया भी गई है। अन्य जिलों से हवाई यातायात स्थापित करने के लिए सम्बन्धी साध की जा रही है।

(ग) अरबन्त दुपद जिला के साथ ही देश भर में आकाशवाणी (बामरलेम) स्थानी की स्थापना और आबदसवातानुसार इसके विकास की व्यवस्था हो रही है।

(२) भूमि-सुधार को लागू करने के विषय में—

एक भूमि-सुधार कमीशन का गठन हो चुका है जिसके द्वारा बहुत भूमिदाय को जो नेपाल की कुल जनसंख्या का १५ प्रतिशत है भूमिकारी अधिकार दिखान और आर्थिक विकास दूर करने की दिशा में सीधेतापूर्वक काम हो रहा है।

(३) विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षण (बहुताम) —

(क) समस्त देश का हवाई कोला मैप का कार्य हो रहा है। इस पड़नाम के सम्बन्ध में जाने पर एक सुवर्णित नक्शा बनाया गया है।

(ब) यू एन टी ए ए द्वारा निर्धारित एक स्विस त्रियोमोबिल (भुगर्भवेता) नेपाल के त्रियोलाजिकल स्थिति की परीक्षा (मर्थे) कर रहे हैं। एक पेट्रोल विरोध निपुण करने के सम्बन्ध में यू एन टी ए ए से बातचीत चल रही है। इन दोनों विषयों के प्रयास में नेपाल के भूगर्भस्थित खनिज संपदाओं की जितने सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार की विचारवाचक चल रही हैं, स्थिति और परिमाण का पता लग जायगा।

#### (४) ग्राम्य-विकास—

टी सी ए द्वारा प्राप्त प्राथमिक तथा मासिक सहायताओं में नेपाल सरकार द्वारा ग्राम्य-विकास योजना चल रही है। इस योजना में वर्तमान ३,८० ग्रामीण कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है। इन कार्यकर्ताओं के बिम्बे एक मास अथवा एक मास समूह होया। इस तरह कृषि की नयी पद्धतियाँ और विभिन्न प्रणालियों का अवलम्बन करने से उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि होने की बात भी इन्हीं कार्यकर्ताओं द्वारा जनता को बताई जायगी।

#### (५) प्राथमिकियों की संख्या-वृद्धि—

प्राथमिकियों (टेक्नीशियन्स) की अत्यधिक कमी तथा उनकी प्राप्ति की आवश्यकता का अनुभव करके सरकार ने संभवतः अधिक संख्या में छात्रों को भारत तथा अन्य देशों में विभिन्न विषयों का प्रशिक्षण देने के लिए भेजने की नीति अपनायी है।

भारत तथा कोकचो योजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय द्वारा स्थापित सहायता तथा सुवैय्या कोष तथा यू एन टी ए और एफ. ए. ओ. तथा भारत और अमेरिका द्वारा दी जाने वाली प्राथमिक सहायता कम से हमारी उपर्युक्त पैप्राएँ और भी बढ़कर होंगी बिम्बु देश की लगातार राजनैतिक अस्थिरता के कारण स्वभावतः जाकाशित प्रयत्न में अत्यन्त खूब हुआ है।

मासिक बहुमुखी योजनाओं की अपेक्षा मासिक विकास-योजनाओं की उत्तमता का पूर्ण विश्वास होने के कारण सरकार ने उपर्युक्त कार्यों के अतिरिक्त कुछ अन्य विकास कार्यों को भी कार्यान्वित किया है। जिनका विवरण इस प्रकार है—

#### कार्यान्वित की गई विकास-योजनाएँ

##### १. यातायात और संचार—

##### (क) सड़कें—

नवम्बर, १९५२ में ७० मील लम्बी 'काठमाण्डू से भैरव' तक मोटर चलने लायक सड़क का काम प्रारम्भ हुआ था और अब भी मोटर गाड़ी चलने योग्य सड़क तैयार हो गई है। इस सड़क के पूर्ण रीति से तैयार हो जाने पर मध्य नेपाल और भारत के मध्य अबाध व्यापार बाध हो जाने की आशा की जाती है। सड़क के निर्माण में अत्यन्त देव-दो

## नेपाल की कहानी

बिनास-कालों ने लिए पारस्परिक आचार आवश्यक है तथा किसी विशिष्ट विकास योजना की सफलता या असफलता उसकी बहुमुखी योजना की रूपरेखा पर निर्भर करती है। जनकों अभावों के कारण नेपाल के लिए, वृद्ध राष्ट्रीय योजना बनाने के रास्ते में यद्यपि प्रचुर कठिनाइयाँ हैं किन्तु उन अभावों से परिचित रहने हुए भी नेपाल सरकार ने उनमें से जनकों को पूरा करने का प्रयत्न इस प्रकार किया है—

- (क) अन्तर्वेशीय तथा विदेशी प्रशासकों के सहयोग में शासन-व्यवस्था में सुधार
- (ख) जनगणना व्यापार, उत्पादन आदि तथा ऐसे ही अन्य आवश्यक आवश्यकता का संकल्पन
- (ग) प्राकृतिक साधनों की हवाई तथा संचालनीय
- (घ) विभिन्न अन्तराष्ट्रीय संस्थाओं तथा विदेशी राष्ट्रों द्वारा प्राविधिकित्री की प्राप्ति और उम्मीदवारों को मिला देने के लिए विशेष भेजने के सम्बन्ध में प्रबल सहायता की उपलब्धि और
- (ङ) जाय पर कर कमान के नये उपायों को लागू करने तथा आमदनी के अन्य साधनों की खोज।

वृद्ध योजनाओं को सुव्यवस्थित करण का काम होते हुए भी निम्नलिखित कार्य शुरू कर दिये गये हैं—

- (१) वास्तविक और संचार में सुधार—
- (क) नेपाल की राजधानी और भारत की सीमा को संबद्ध करने वाली पक्की और जल अवरुद्ध करने वाली सबक नेपाल तथा भारत के संयुक्त प्रयास से शीघ्रतापूर्वक बनाई जा रही है।

(ख) पहाड़ तथा तराई के मुख्य पाँच जिलों से नेपाल की राजधानी काठमाण्डू हवाई मार्ग से मिला दी गई है। अन्य जिलों से हवाई यातायात स्थापित करने के लिए तत्सम्बन्धी घोष की जा रही है।

(ग) अत्यंत दुर्गम जिलों के साथ ही देश भर में आकाशवाणी (बायरसेम) स्थानों की स्थापना और आवश्यकतामुसार इसके विकास की व्यवस्था हो रही है।

- (२) भूमि-सुधार की लागू करने के विषय में—

एक भूमि-सुधार कमीशन का बटन हो चुका है जिसके द्वारा कृषक समुदाय को जो नेपाल की कुल जनसंख्या का ९५ प्रतिशत है भूमिवासी अधिकार बिलाने और आर्थिक विपणन शुरू करने की दिशा में शीघ्रतापूर्वक काम हो रहा है।

- (३) विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षण (पड़ताल) —
- (क) समस्त देश का हवाई फोटो लेने का कार्य हो रहा है। इस पड़ताल के सम्बन्ध

हो जाने पर एक मुर्मगटिड नक्शा उपलब्ध किया जा सकेगा।

(ख) यू एन टी ए ए द्वारा निवारित एक स्वयं नियोजित (मूणर्बेस्ता) नपाक के त्रियोन्मित्रिक स्विनि की पड़ताल (मनें) कर रहे हैं। एक फेटोए बिसेपस नियुक्त करन के सम्बन्ध में यू एन टी ए ए में बाठबीठ चल रही है। इन दोनों बिसेपसों के प्रयास व सेपास के भूयर्मस्थित कनिज सामना की बिनके सम्बन्ध में बिभिन्न प्रकार की बिचारबाराएं चल रही हैं स्विनि और परिमाण का पना चल जायगा।

#### (४) ग्राम्य-विकास—

टी सी ए द्वारा प्राप्त प्राबिधिक तथा आर्थिक सहायताओं में नपास सरकार द्वारा ग्राम्य-विकास योजना चल रही है। इस योजना के अंतर्गत ३८० ग्रामीण कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है। इन कार्यकर्ताओं के बिन्ने एक गांव अथवा एक ग्राम समूह होया। इस तरह कनी की नवी पड़तिया और बिगप प्रशास्त्रियों का अवलम्बन करने व उत्पादन में अर्थविक बृद्धि हान की जान भी इन्ही कार्यकर्ताओं द्वारा जनता का बछाई जायगी।

#### (५) प्राबिधिकियों की संख्या-वृद्धि—

प्राबिधिकियों (टेक्नीशियन्स) की अर्थविक कमी तथा उनकी प्राप्ति की बाध व्यवस्था का अनुभव करके सरकार ने समस्त आर्थिक संस्था व छात्रों की भारत तथा अन्य देशों में बिबिध बिपयो का प्रशिक्षण देने के लिए योजना की नीति अपनायी है।

भारत तथा कोलम्बो योजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय द्वारा स्थापित सहायता तथा शुमेन्डा कोष तथा यू एन टी ए ए और एक. ए. ओ. तथा पागल और कमरीका द्वारा सी जाने वाली प्राबिधिक सहायता कम में हमारी उपयुक्त केप्टाए और भी अवसर होती बिन्नु देश की क्वालिटर राजनैतिक अस्थिरता के कारण स्वभावन आकाशित प्रगति में अल्पबरोप हुआ है।

आर्थिक बहुमुखी योजनाओं की अपेक्षा आर्थिक विकास-योजनाओं की उत्तमता का पूर्ण बिदबाम होन के कारण सरकार में उपयुक्त कार्यों के अतिरिक्त कुछ अन्य विकास कार्यों की भी कार्यान्वित किया है बिनका बिबरण इस प्रकार है—

#### कार्यान्वित की गई विकास-योजनायें

##### १. मातायात और संचार—

##### (क) सड़कें—

नियम्बर, १९५२ में ७० मील लम्बी 'कास्त्राङ्गू म मेने' एक माटर चलन लापक सड़क का काम शरम्भ हुआ था और अब बीप माटर गाड़ी चलन पाय सड़क तैयार हो गई है। इस सड़क के पूरा रीति में तैयार हो जाने पर मध्य सेपास और भारत के मध्य अबाध व्यापार कायू हो जाने की आशा की जाती है। सड़क के निर्माण में कमजग उड़-दो

## २ नल-कूपों की सिर्चाई—

नेपाल सरकार ने अमरीकी सरकार के सहयोग से पश्चिम तराई में सिर्चाई के लिए १० नल-कूपों को पाड़ने का प्रस्ताव किया है। इनसे १० वर्गमील जमीन की सिर्चाई होगी और इनमें २५ ०० बामर तथा ३ ०० बयों का व्यय हुआ।

## ३ डीजल लिफ्ट पम्प (डीजल तेल द्वारा संचालित सिर्चाई-पम्प) —

इस योजना का सम्बन्ध नेपाल के मिश्र-मिश्र भागों में सिर्चाई का काम के लिए १२० हलके सठरी डीजल पम्पों की व्यवस्था करती है। इन पम्पों से एक बंट में २५,००० से ४५ ०० गैलन तक पानी निकाला जा सकता है और प्रत्येक पर ३ ०० बयों का व्यय होगा। इन पम्पों को बेच की वजह से बेचकर विकास-योजना के लिए सहायता कोष का प्रबन्ध किया जायगा।

## ४ राष्ट्रीय बाटी विकास योजना—

यह एक वार्षिक सावन संघन नदी-बाटी है। मलेरिया नियंत्रण हो जाने पर इस योजना से लगभग ५ ० एकड़ पर्यन्त अनुत्पादित भूमि में खेती की जा सकेगी। राष्ट्रीय बाटी में मलेरिया निवारण तथा उसकी स्थिति सम्बन्धी पड़ताल (सर्वेक्षण) का प्रबन्ध किया जा चुका है। अनुमानित १९५५ ई० में पूरी होन वाली इस योजना पर १ ० ० रुपये खर्च होंगे।

एक पञ्चवर्षीय समय के भीतर क्रोसम्बो योजना के अंतर्गत भारत-नेपाल सरकार को छोटी सिर्चाई योजनाओं के लिए ५ लाख रुपये देने की स्वीकृति दे चुका है। इस रकम द्वारा निम्नलिखित सिर्चाई योजनाओं का काम चालू करने का निश्चय किया जा चुका है—

योजना विवरण

अनुमानित सम्पूर्ण व्यय

हो सकने वाली सिर्चाई की भूमि बीघा-संख्या

योजना विवरण	अनुमानित सम्पूर्ण व्यय	हो सकने वाली सिर्चाई की भूमि बीघा-संख्या
(क) बिजयपुर (पश्चिम नं० ३)	३५४९७५	१३०
(ख) बतार (पश्चिम नं० १)	२,९१५८६	१५०
महादेव कोला (काठमाण्डू बाटी)	७००	३०
तुमसिंग टार (चैतपुर इलाका जिला बलकुटा)	८०००	३०
रिपका हजारी बेंद्री और बिगला फेंदी (पूर्व नं० ४)	५००	१६०
मयवीसपुर बल-संघय कुम्ह (वीलिहवा) का पुनर्निर्माण	२७४५०	२००
गङ्गी योजना (सप्तरी)	१२७,२७९	४००

## परिशिष्ट

(क) यू एन टी ए ए द्वारा निर्धारित एक स्थिर त्रियोलोजिस्ट (यूएनबीए) नेपाल के त्रियोलोजिस्ट स्थिति की पड़ताल (सब) कर रहे हैं। एक पेट्रोल त्रियोपत्र नियुक्त करने के सम्बन्ध में यू एन टी ए ए से बातचीत चल रही है। इन दोनों त्रियोपत्रों के प्रवास में नेपाल के भूगमस्थित खनिज साधनों की जिनके सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार की विचारवाराएँ चल रही हैं स्थिति और परिमाण का पता चल जायगा।

## (४) ग्राम्य-विकास—

टी सी ए द्वारा प्राप्त प्राथमिक तथा आर्थिक सहायताओं से नेपाल सरकार द्वारा ग्राम्य-विकास योजना चल रही है। इस योजना के अंतर्गत ३८ ग्रामीय कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है। इन कार्यकर्ताओं के बिना एक गांव अथवा एक ग्राम समूह होगा। इस तरह कृषि की नयी पद्धतियाँ और विषय प्रणालियों का व्यवसाय करने से उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि होने की बात भी इसी कार्यकर्ताओं द्वारा जनता का बताई जायगी।

## (५) प्राथमिकीयों की संख्या-वृद्धि—

प्राथमिकीयों (टेक्नीशियन्स) की अत्यधिक कमी तथा उनकी प्रशिक्षण की आवश्यकता का अनुभव करके सरकार ने संभवतः अधिक संख्या में छात्रों को भारत तथा अन्य देशों में विभिन्न विषयों का प्रशिक्षण देने के लिए भेजने की नीति अपनायी है।

भारत तथा कोलम्बो योजना के अन्य सदस्य राष्ट्रों द्वारा स्थापित सहायता तथा यूनेस्को काय तथा यू एन टी ए ए और एफ. ए. ओ. तथा भारत और अमरीका द्वारा दी जाने वाली प्राथमिक सहायता जम से हमारी उपयुक्त चेष्टाएँ और भी अप्रसर हूँगी किन्तु हम की कमातार राजनैतिक अस्थिरता के कारण स्वभावतः आकांक्षित प्रगति में विलंबित हुआ है।

मासिक बहुमुकी योजनाओं की अपेक्षा आर्थिक विकास-योजनाओं की उन्नतता का पूरा विश्वास होने के कारण सरकार में उपयुक्त कार्यों ने अतिरिक्त कुछ अन्य विकास कार्यों को भी कार्यान्वित किया है जिनका विवरण इस प्रकार है—

## कार्यान्वित की गई विकास-योजनाएँ

## १. यातायात और संचार—

## (क) सड़कें—

सितम्बर १९५२ में ७ मील लम्बी 'काठमाण्डू से भैरह तक' माटर चलने लायक सड़क का काम प्रारम्भ हुआ था और अब जीप मोटर गाड़ी चलने लायक सड़क तैयार हो गई है। इस सड़क के पूर्ण रीति से तैयार हो जाने पर मध्य नेपाल और भारत के मध्य आवागमन व्यापार बहू हो जाने की आशा की जाती है। सड़क के निर्माण में लगभग षड्-बा

करोड़ रुपये के खर्च का अनुमान है और जो भारत नेपाल को अनुदान के रूप में दे रहा है। इसका नाम 'विद्युत राजपथ' रखा गया है।

### घासू विकास सम्बन्धी योजनाएँ

(क) भारत सरकार से सौगात गम इन्जीनियरों की सहायता से लगभग ४० मील लम्बी मोटर कार्रवाय चलाने योग्य सड़कों के लोके की पड़ताल सम्पन्न हो गयी है। हर मौसम में काम देन वाली नयी सड़कों का विशेष विमाय द्वारा सड़क सम्बन्धी सब का बहसिया ठेकार कर लिया गया है।

(ख) नेपाल में हवाई यातायात के विकास को आर्थिक महत्त्व दिया गया है। १९५२-५३ में नेपाल के पाच प्रमुख जिले हवाई सविन के द्वारा सम्बन्ध कर दिये गये हैं। नेपाल में बिरेछी और अन्तर्देशीय हवाई यातायात के लिए 'एयर नेपाल लिमिटेड' नाम की एक नई सरकारी कम्पनी की स्थापना की गई है। हवाई सविन के विकास के लिए भारत सरकार से ब्रकोडा विमानों की माँग की गई है।

(ग) एक नया 'मीडियम डिक्लेन्सी ट्रान्समिशन' स्टेशन काठमाण्डू में कोला जा चुका है। इस योजना पर नेपाल सरकार के २० लाख खर्च हुए हैं।

(घ) केबुल की ७ मील लम्बी २०० लाइन सेन्चुर बैट्री बोहरी एक्स्प्रेस टेलीफोन सविन का प्रबन्ध भी किया गया है। तत्सम्बन्धी कार्य के लिए ५ लाख रुपये का टेलीफोन का सामान भारत से भेजा गया है। काठमाण्डू से पोचर हवाई अड्ड तक मोटर चलाने लायक पाच मील लम्बी सड़क-निर्माण के काम में २० लाखों के व्यय का अनुमान है।

### २ कृषि—

#### (क) अनुसन्धान—

टी सी ए विद्येपत्रों की देखरेख में नेपाल के विभिन्न ज्वालामुखी पर होने वाले पेड़ नई बास आदि के प्रकारों का खोप हो रहा है। प्रयोगों के परिणाम भी प्राप्त हो रहे हैं।

#### (ख) बुधसालाओं और मधेसियों की उत्पत्ति—

बुधसालाओं और पशु उद्योगों के लिए नेपाल एक उपयुक्त क्षेत्र होने के कारण एक निवस बुधसाला विद्येपत्र की देखरेख में ऊँचे पहाड़ी क्षेत्र में 'स्विच' पद्धति पर एक छोटी बुधसाला की स्थापना की गई है। साथ ही काठमाण्डू में भी एक 'केन्द्रीय पशुसाला विकास पथ' कोला गया है। स्वाधीन मधेसियों की नस्लों में सुधार करने के लिए कृषि से किन्ही कार्य और साँझ में दिये गये हैं। इन मधेसियों की नस्ल-सुधार योजना पर ११ लाखों के सरकारी खर्च का अनुमान किया जा रहा है।

#### (घ) मत्स्य-पालन—

नेपाल देश नदियों और झीलों से भरपूर पड़ा है। मत्स्य-उद्योग के लिए यह देश बहुत उपयुक्त-समता से परिपूर्ण है। हाल ही में कृषि-विभाग के अधीन सरकार ने एक मत्स्य-

## परिशिष्ट

बिभाग का भी संगठन किया है। प्रयाग और पर्वीसम के लिए सरकार ने काठमाण्डू में मशी प्राप्य तासाबों का बिहार से मंगाई गई बड़ी जालि वाली रोहू मछलियों से भरवा दिया है। अब तक बिदेष्ट से मछलियों के बार लाख छोटे बच्चे मंगाये जा चुके हैं। मत्स्य पाकन प्रयोग के परिणाम प्रचुर उत्साहवर्द्धक है।

### (घ) सिंचाई—

२५ ०-२५०० एकड़ भूमि को सींचन लायक वो छोटी महुरों का निर्माण हो रहा है। अमेरिकन सरकार से उस बड़े नल-कूप (ट्यूब-वेस्त) मध्य तराई के बास्त महुर और बार स्थानों पर नदी से सिंचाई करने का सर्वे करने के सम्बन्ध में समझौता हो गया है। इस योजना के अनुसार ८७३१० स्वया और १४०००० डालर के लक्ष पर १९००० एकड़ जमीन की सिंचाई होगी। काम बालू करने के लिए बाबस्थकीय प्रबन्ध किये जा चुके हैं।

### ३ विद्युत-शक्ति

राजधानी में बिजली देने के लिए सरकार द्वारा १५० किलोवाट बिजली उत्पन्न करने वाले एक डीजल-संचालित विद्युत-यंत्र स्थापित किया जा रहा है। यह एक तात्कालिक शक्ति-परिणाम है। समुची विद्युत-विकास योजना पर समय २००० रुपये के लक्ष का अनुमान है।

### ४ जन-स्वास्थ्य—

नेपाल सरकार द्वारा टी सी ए योजना के सहयोग से कीटानुबन्धित महामारियों का नियन्त्रण-कार्य नेपाल के पांच स्थानों में शुरू कर दिया गया है। मलेरिया नियंत्रक सामान डी डी टी रीमुवीन टे सेट और पिचकारी आदि के लिए १४०००० डालर टी सी ए अमेरिका द्वारा प्राप्त हुआ है। समझौते के अनुसार नेपाली छात्र भारत की मलेरिया-प्रशिक्षण संस्थाओं में मलेरिया-नियंत्रक प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। नेपाल में ५ बरों के भीतर मलेरिया का मुलुम्मेद करन के लिए बलाई गई इस योजना पर ५,३९,७०० डालर तथा १६४२०० रुपये व्यय होंगे।

### ५ जल-स्रोतक यंत्र—

राजधानी में पीने वाला पानी स्वच्छ करने के लिए नेपाल सरकार ने डा जल-याचक योजनाओं को १९५० ई० से बालू किया था। अब तक इन योजनाओं पर ४७९०० रुपये लक्ष किये जा चुके हैं। उक्त योजनायें लवमग समाप्त-भाय है।

### ६ ग्राम-विकास योजना—

भारत की सामुदायिक योजना जैसी ही नेपाल में भारत तथा जपानी सरकारों के सहयोग से एक पंचवर्षीय योजना बालू की गई है। पहाड़ी क्षेत्रों के लिए काठमाण्डू में और तराई क्षेत्रों के लिए परकीजी में दो प्रशिक्षण-कन्द्र खोले गए हैं। इनमें एक छात्र



पचास ग्राम्य नेताओं को १ सहीन के समय में इपि-पद्धतियों और प्रविधियों पर प्रशिक्षण दिया जाता है। इस वाचना के अंतर्गत पाच साल में ३८ ग्राम-विकास कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षणपूर्वक तैयार करना है।

इस योजनानुसार नेपाल १ केन्द्रों में विभाजित किया जायगा। प्रत्येक केन्द्र में विशेषज्ञ प्रशासनिक व्यवस्थापक १ सुपरवाइजर और १ ग्राम-विकास-कार्यकर्ता होंगे। प्रत्येक कार्यकर्ता के बिम्बे पाच से अधिक परिवारों का एक समूह संभालेगा।

पाच साल की इस वाचना में नेपाल सरकार के ११८१२०० रुपये के व्यय का अनुमान है जिसका एक भाग टी सी ग कूल करेगा। सन् १९५२-५३ में १० लाखों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। बिम्बे में ८ की निम्नलिखित पाच विकास-केन्द्रों में हो चुकी है, जो कुल ३७ ग्रामों में सेवा कर रहे हैं।

नेपाल राज्य में पाच पैदा किये जाने वाले क्षेत्रों का भूमि परमाणु समय ३५८९ हजार एकड़ है। देश की भूमि में बाबर की पैदावार प्रमुखता रखती है। ग्राम विकास योजना के अंतर्गत बाबर की १ प्रतिघात गेहू की २० प्रतिघात मकई की २ प्रतिघात और आलू की १ प्रतिघात उपज बढ़ाने का अनुमान है। इस योजना के सफलता-पूर्वक पूर्ण होने पर नेपाल के इपि-उत्पादन में कई गुनी वृद्धि हो जायेगी तथा यह जनता के जीवन-स्तर को उन्नत में सहायक होगी।

### ७ भूगर्भ सम्बन्धी सर्वेक्षण—

भारत सरकार और यू एन टी ए ए के सहयोग से नेपाल में सर्वप्रथम भूगर्भ सम्बन्धी सर्वेक्षण नियमित रूप से हो रहा है। सम्पूर्ण नेपाल में भूगर्भ-सर्वेक्षण का काम समाप्त हो चुका है। इस सर्वेक्षण की प्रगति ऐसी ही रही तो १९५५ के पहले ही पूरे नेपाल राज्य में यह काम सम्पन्न हो जायगा। इस कार्य से देश के खानीय स्रोतों की ठीक जानकारी का सामान प्राप्त हो सकेगा। खानों के स्वामी और विदेशी इन्जीनियरों सहित मूलत्वनेताओं की एक टोली सर्वेक्षण रिपोर्टों की संभावना की वृद्धि करती है। अब तक सम्पूर्ण नेपाल में कोहे और टाम्ब के खान होने की रिपोर्ट आ चुकी है। उनकी विस्तृत और ज़ोरदार परीक्षण करने का प्रस्ताव विचारधीन है। इस योजना पर सरकार के १५३९३ रुपये खर्च होंगे।

### ८ हवाई सर्वेक्षण—

कोसम्बी योजना के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा दी गई सहायता से नेपाल की २० वर्गमील की हवाई परीक्षा पूरी हो गई है। हवाई फोटोग्राफ और मुस्तफ़ा सुविचारित हवाई नक्शे अब प्राप्त हो जायगे। नेपाल में सड़क नहर बांध और नय सहरों की स्थापना में ये आवश्यक सहायक सिद्ध होंगे।

## परिशिष्ट

## ९ प्रचार और प्रसारण—

पांच किलोवाट का एक उच्च शक्तिशाली प्रसारण यंत्र (हाई फ्रिक्वेन्सी डाइनास्ट्रॉमीटर) और १,२५० वाट का मध्यम शक्ति प्रसारण यंत्र (मीडीयम फ्रिक्वेन्सी ट्रांसमीटर) की योजना पर सरकार के २४० • रूपयों के अतिरिक्त तत्सम्बन्धी अन्य व्ययों का मिलाकर कमभ्रम पांच लाख रूपयों के व्यय का अनुमान है।

९. जिलों के विकास-कार्य के लिए जिला सफ़रों के निवेदन पर नेपाल सरकार ने निम्नलिखित धन की स्वीकृति दी है। यह सम्पत्ति १९५२-५३ के स्वीकृति बजट के अतिरिक्त राष्ट्र-निर्माण के लिए दी गई है।

विषय	रूपयों की संख्या
१ जन-स्वास्थ्य	९३ •
२ सड़क और पुल	१३१५००
३ नक्क कूबां ताकाब और मल-कूब (ट्यूब-वेल्स)	१५७९००
४ शिक्षा	८१९००
५ मरम्मत और निर्माण	१०२८००
६ महर	४१०००
७ टेलीफोन	५०००
८ नवीन प्रकृत शौक्तियां	११२४४
९ मरी बाध	१ •
१० डाकखाना	१४०००
११ साधारण हवाई यातायात तथा अग्नि-काण्ड से बस्त नाशबाय	२००००
	<u>५,८९,२४४</u>

## प्रस्तावित विकास योजनायें

निम्नलिखित योजनायें टी सी ए के अंतर्गत अमरीकी सरकार के पूर्व नियोजित सहायक आचार पर पूर्ण की जाने वाली है। इस सम्बन्ध में एक तात्कालिक समझौता भी हो गया है।

## १ नदी सिंचाई योजना—

नेपाल सरकार ने सन् १९५४ में टी सी ए की सहायता से मध्य नेपाल में एक नदी-निर्वाह योजना के विकास का प्रस्ताव किया है। उपर्युक्त योजना पर अमरीकी और नेपाल सरकारों का कमरा-५९ • डालर तथा ११५३ ५९४ रूपयों का व्यय होगा। महर को पूरा करने में दो साल लगेगे। इसके द्वारा १००० एकड़ भूमि की सिंचाई हो सकेगी और इससे प्रचुर उत्पादन-बृद्धि होगी।

## २ नर-कूपो की सिर्चाई—

- नेपाल सरकार ने जमरोकी सरकार के सहयोग से पश्चिम तराई में सिर्चाई के लिए नर-कूपो को वाइन का प्रस्ताव किया है। इनसे १ बर्गमोल जमीन की सिर्चाई होगी और इनमें १५ ०० डालर तथा ३ ०० ०० रुपये का व्यय होगा।

३ डीजल लिफ्ट पम्प (डीजल तेल द्वारा संचालित सिर्चाई-यंत्र) — इस योजना का मध्य नेपाल के निम्न-निम्न भागों में सिर्चाई के काम के लिए १२० हफ्ते सफरी डीजल पम्पो की व्यवस्था करनी है। इन पम्पों से एक घंटे में २५,००० से ४५,००० गैलन तक पानी निकाला जा सकता है और प्रत्येक पर ३ रुपये का व्यय होगा। इन पम्पों को देश की जनता से बेचकर विकास-योजना के लिए सहायता कोष का प्रबन्ध किया जायगा।

## ४ राष्ट्रीय घाटी विकास योजना—

यह एक अत्यधिक साधन संपन्न नदी-वादी है। मलेरिया निर्वन्धन हो जाने पर इस योजना से लगभग ५०० एकड़ परछी अनुत्पादित भूमि में सेतो की जा सकती। राष्ट्रीय घाटी में मलेरिया निवारण तथा उसकी स्थिति सम्बन्धी पड़ताल (सर्वेक्षण) का प्रबन्ध किया जा चुका है। अनुमानत १९५५ ई० में पूरी होने वाली इस योजना पर १ ० ० रुपये खर्च होंगे।

एक पंचवर्षीय समय के भीतर कोलम्बो योजना के अंतर्गत भारत नेपाल सरकार को छोटी सिर्चाई योजनाओं के लिए ५० लाख रुपये देने की स्वीकृति दे चुका है। इस रकम द्वारा निम्नलिखित सिर्चाई योजनाओं का काम चालू करने का निश्चय किया जा चुका है—

योजना विवरण

अनुमानित सम्पूर्ण व्यय

हो सकने वाली सिर्चाई की भूमि बीघा-संख्या

योजना विवरण	अनुमानित सम्पूर्ण व्यय	हो सकने वाली सिर्चाई की भूमि बीघा-संख्या
(क) विजयपुर (पश्चिम में १)	३५४९७५	११०
(ख) बत्तर (पश्चिम में १)	२९१५८६	१५०
महादेव सोघा (काठमाण्डू वादी)	७०००	३
सुनक्षिप टार (चैतपुर इलाका जिला बनकुटा)	८००	३०
विगला हजारी बैदी और विगला छोरी (पूर्व में ४)	५००	१६
जगदीसपुर जल-संचय कुण्ड (वीरगञ्ज) का पुनर्निर्माण	२७४५	२
जगदीसपुर (पश्चिम में १)	१२७२७९	४०

महोदयपुर (मार्ग)	२० ०००	१० ०००
मिर्बाई बांध (मार्ग)	११ ०००	३ ०००
कनजीया बांध (मार्ग)	९ ००	४ ०००
पानी बिचोर रकन बांध कृष्ण का माधान २५ पर्सिमेंट कृष्ण (तराई)	८९ ९००	५ ००
	<u>११ ३३ २१०</u>	<u>२२ ९००</u>

#### ५ जल विद्युत-शक्ति—

काठमाण्डू के लिए बिजली-शक्ति की प्राप्ति अत्यावश्यक हो उठी है। साढ़े पांच लाख की जनसंख्या वाले काठमाण्डू शहर के लिए वर्तमान में प्राप्ति १० दिनोंवाट मात्र की बिजली शहर की मांग के अनुसार बहुत कम है। अतः शहर के मजबूत ही ५,००० से १० किलोवाट तक की विद्युत-शक्ति उत्पादन करने वाले जल-विद्युत संयंत्र का तुरन्त स्थापन अत्यावश्यक हो उठा है।

विद्युत-शक्ति उत्पन्न करने के लिए काठमाण्डू में कक्षा ५ और १५ मीटर की दूरी पर अवस्थित नारायण गढ़ और त्रिभुली बाजार पर्युक्त स्थान माने गए हैं। सर्वप्रथम के एक मताह्वयता इन्जीनियरिंग कार्य—“प्रीम काई यू एण्ड रायडर” द्वारा नारायणगढ़ की पूरी जांच-पड़ताल की जा चुकी है। इनके स्थान का भी प्राथमिक सर्वेक्षण हो गया है।

समय मर्याद की आर्थिक उन्नति में अत्यन्त सहायक उपर्युक्त दोनों योजनाओं में सहाय्य करने के लिए कोसम्बा योजनास्तगत स्थलों में जलसंचयन किया गया है। साथ ही बुटवल के लिए एक बहुमती योजना और मर्लाही तथा जनकपुर की दो प्रवाही मिर्बाई योजनाओं की रिपोर्ट भी कोसम्बा योजनास्तगत देग बं मरवा जलसंचयन-प्राप्ति के लिए अधिकार पत्र की जा चुकी है। नेपाल की उन्नति में रुचि रखने वाले (कोसम्बा योजना के) सदस्य राष्ट्र तत्त्वस्थानी जल बढ़ाने के लिए आशंकित हैं।

आम्र योजनाओं पर होने वाले खर्चों की संक्षिप्त रूप-रेखा

नं	विषय	रकम	आवक
१	ट्रान्स्फॉर्मर और कम्युनिकेशन	११ ००० ०	
	टलीकोल	५ ००० ०	
२	कृषि	१ १८० ०	
३	मिर्बाई	८०२ १००	१४० ०००
४	विद्युत-शक्ति	२० ०० ०००	
५	जल-संचयन		१४० ०००
६	जल संचयन संयंत्र	१ ३५० ००	
७	साम्प्र-विकास	१ ०००	७५ ०००
		<u>१ १३ ०५ ०००</u>	<u>१५५ ०००</u>

## प्रस्तावित विकास-योजनाय

१ सिंचाई कार्य	१४५४५९४	१५१ •
मिचार्ड	१००००००	
२ डीएस संवाहक मशीनों से पानी		
बीजन का पम्प		३१ •
३ प्रशिक्षणार्थी		८५
४ राखी बाटी	१०००००	
५ मत्स्य-साधन	४३१००	
६ औद्योगिकीय (बाय ब्रीचा)	१४४०००	
७ जन-स्वास्थ्य	२,५९,०००	११० • •
	<hr/> १००४१९४	<hr/> ४३१०००

## विदेशी आर्थिक सहायता

भारत सरकार से (सिंचाई पर) —

भारत सरकार ने कोलम्बो योजना के अंतर्गत तराई और पहाड़ी प्रदेशों में छोटी प्रवाही सिंचाई योजनाओं के लिए पांच वर्षीय निश्चिंत में ५० लाख रुपये देने की स्वीकृति दी है।

इस योजना से प्राकृतिक उबारता मात्र पर अब तक निर्भर रहून वाली भूमि की न केवल सिंचाई मात्र होगी प्रत्युत बहुत सी वस्ती और आबाद जमीन भी उत्पादक बंती लायक बन जायगी। फलतः देश के आरज-उत्पादन की अत्यधिक परिमाण में वृद्धि हो जायगी।

## प्राविधिक प्रशिक्षण—

भारत सरकार ने नेपाली छात्रों और अध्यापकों को कोलम्बो योजना के अंतर्गत वर्षों तक प्रशासकीय तथा प्राविधिक विषयों का प्रशिक्षण देने की स्वीकृति दी है।

## हुवाई सर्वे—

कोलम्बो योजना के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा संपूर्ण नेपाल की हुवाई परीक्षा कराई गई है। ८३ से ८८ देशांतर रेखा के बीच पड़ने वाले क्षेत्र की परीक्षा की समाप्ति पर ही उत्तमवर्गीय व्यय की सूचना प्राप्त की जा सकेगी।

## सड़क—

भारत सरकार के सहयोग से नेपाल की हुवाई काटवायू को, भारत से पुड़ी हुई एक बूँसरी सड़क से ७० मीटर का निर्माण हो रहा है। इस पर ९० लाख रु. होने पर मध्य नेपाल और भारत —

भारत सरकार ने कोलम्बो योजना के अंतर्गत तीन बार में सी सी आई पार्टी (पड़ताल करने वाली टोफियो) को उत्तर-पश्चिम की एक बार सी सी आई मलयन चामू होने वाली (मोटर चलने सामक) सड़क की संभावित पथ-निर्माण की पड़ताल करने के लिए नियुक्त किया था। अब कई सड़कों के पथ-निर्माण की दूसरी पड़ताल भी इस वर्ष की आयगी।

अमरीकी सरकार से—

अमरीकन सरकार से तीन योजना-समझौते पर हस्ताक्षर किये जा चुके हैं जिनके अंतर्गत १० लाख-रुप १ प्रवाही सिंचाई का काम पूरा करने और चार जगहों पर सिंचाई की पड़ताल के लिए १५३ ०० हजार प्राप्त किया जा सकेगा। अमरीकी सरकार द्वारा टी सी ए योजना के अंतर्गत १९५२-५३ के लिए स्वीकृत रकम ४९० ००० डॉलरों का एक अंश अर्थात् १५३० हजार की रकम है। उप सम्पत्ति ग्राम-विकास कार्यक्रम मछेरिया-निवारण प्राथमिक प्रशिक्षण और प्राथमिकियों के उत्तर लक्ष्य की जा चुकी है। यू एस ए सरकार ने तात्कालिक रूप से टी सी ए योजना अंतर्गत एक १ ०००० डॉलरों की रकम की स्वीकृति देना मंजूर कर लिया है। रकम निम्नलिखित योजनाओं के लिए लक्ष्य की जायेगी। नेपाल और अमरीकी सरकार के सम्मिलित प्रयास से बनाई जाने वाली निम्नलिखित योजनाओं पर लक्ष्य किये जाने के लिए इस रकम की स्वीकृति हुई है।

अमरीका ने प्राप्त सहायताओं के आंकड़ों काका संक्षिप्त मध्या इस प्रकार है—

ग्राम-विकास—

	डालर लक्ष्य	रुपया लक्ष्य
ग्राम-विकास-कार्य	७० ००	१७९,०००
किसानों की कृषि-आवश्यकता-पूर्ति	७ ० ०	३०० ०००
रसायन-बाग़ा के सामान	१५,००	७५ ०
छप्पी बाटी की पड़ताल	१० ०००	२० ०००
	११५,००	२९० ०

जन स्वास्थ्य—

बीटापु सम्बन्धी कार्यक्रम	१०० ०००	१, ००००
बिफिरमा सम्बन्धी आवश्यकता-पूर्ति के अन्तर्गत कार्यक्रम	३० ०००	१०० ०००
	१३० ०००	२,०० ०००

सिंचाई—

डीजल संचालित पानी बीजन के पंख	७५,० ०	
सिंचाई की पड़ताल करने वाले वस्तु	१७ ०००	३४ ०००

मिरसिया योजना	४६०	९२०
मिलाबा योजना	६४०	१०२५००
२० लक्ष-रूप (रूप बेल)	१	३९
	१०	१०८००
	८५०	
विदेशी म प्रविष्टि	३३०	२३४९०

## विषय-सूची (५)

प्रविष्टि-सूची वर्ष

१९५१-५२

विषय	सहायता	विषय	संख्या
आर्थिक	कोलम्बो योजना	लानों की घिटा (माइनिंग)	१
"	"	मेडों की नस्स-मुबार (धीप बोडिंग)	१
भारत	"	बैमानिक यन्त्र-विज्ञान (परिगेणिक)	१
"	"	इन्जीनियरिंग)	१
"	"	कार्बिक रसायन-शास्त्र (इन्जिनेरिंग केमिस्ट्री)	१
"	"	एम बी सी एस (डाक्टरी)	२
"	"	रबिन्-निर्माण (स्पेक्ट्रस्कोपी)	१
"	"	यांत्रिक-ध्वनि-विज्ञान (मेकेनिकल इन्जीनियरिंग)	१
"	"	बैद्युतिक-विज्ञान (इलेक्ट्रिकल इन्जीनियरिंग)	४
"	"	परिणतन-शास्त्र (स्टैटिस्टिक्स)	१
श्रीलंका	"	कार्ब-व्यवस्था (पास्टर बर्न)	१
विभागत	"	सहयोगिक निरीक्षण (क्राफ्टपरेटिव इन्स्पेक्टर)	१
"	"	सहयोगिक सहायक (क्राफ्टपरेटिव असिस्टेंट)	१
आस्ट्रेलिया	"	१९५२-५३	
चीन	"	कार्बिक रसायन-शास्त्र (इन्जिनेरिंग केमिस्ट्री)	१
भारत	"	विद्युत-रोगों की द्रव्यिक न्यायिक और चिकित्सा	१
"	"	बीबी प्रोद्योग	१
"	"	सहयोगिक सहायक	१
"	"	पुगी-दुग्ध-आय	१

संयुक्त राज्य			
अमरीका	अनुसूचीय योजना	औषधि (मेडिसिन)	१
"		मजदूरी	१
"		वन-विज्ञान	२
"		मिन्टाली संशोधन	१
"		कृषि	४
"		वन प्रशासन	७
"		शिक्षा	१
"		पाना की शिक्षा (माइनिंग)	२
"		पथ-निर्माण-मिशन (राइ इन्जीनियरिंग)	१
"		वैज्ञानिक और शिक्षक प्रशिक्षण	१
"		औषधीय प्रशासन (मेडिकल एडमिनिस्ट्रेशन)	१
"		वन प्रशासन	१
"		भूमि-सुरक्षा (स्वायत्त कन्ट्रोलिंग)	१
"	"	कृषि प्रशासन	१
"	"	जीवाणिक-विज्ञान	१
"	"	समदीय प्रबन्ध	१
"	"	रेडियो प्रशासन	२
"	"	गुप्तचर (पब्लिक इन्फर्मीयस)	१
बैरक	बाघ कृषि-संस्था	कृषि	१
बिनायत	गिटिष काउन्सिल	अंग्रेजी साहित्य	१
"	"	भूमी	१
"	"	एम आर सी पी	१
"	नेपाल सरकार		
"	छात्रवृत्ति	राज-निदान (पैवोन्ग्री)	१
"		औषधि-विज्ञान	१
"		उत्तर-विशेषज्ञ (बैल्ड स्पेसिस्ट)	१
सूचीलेख	टी ए ए	परिणाम-आवृत्ति	१
कनाडा	"	पथ-संशोधन (राइ इन्जीनियरिंग)	१
बिनायत	"	बैद्युतिक-संशोधन (इलेक्ट्रिक इन्जीनियरिंग)	१
आस्ट्रेलिया	"	आय-व्यय योजना	१
भारत	सांख्यिक		
"	छात्रवृत्ति	काण्ड हिमाचल-विज्ञान (बार्नेट एकाउन्टेन्सी)	१



भारत	सांस्कृतिक छात्रवृत्ति	गुप्तनगर (इन्स्टीट्यूट)	१
		एम बी बी एस (चिकित्सा-शास्त्र)	१
		एस एल बी (कानून-शास्त्र)	१
	भारत सरकार छात्रवृत्ति	सामाजिक कार्य १९५३-५४	१
संयुक्त राज्य अमेरीका	संयुक्त राज्य सार्वजनिक सहायता	संयुक्त प्रबंध रक्षित प्रदान बनस्पति विज्ञान (प्लैन्ट पैथोलोजी) रेस्वे इंजीनियरिंग कागज और पोपक रसायनशास्त्र (फाइबर टेक्स्टाइल केमिस्ट्री)	१ १ १ १
भारत	कोलम्बो योजना	एम बी बी एस (डाक्टरी) भूगर्भ शास्त्र (जीओलोजी) उच्च वन विज्ञान प्रशिक्षण (सुपीरियर फोरेस्ट कोर्स)	११ २ २
	"	कान सम्बन्धी विषय प्रशिक्षण (माइनिंग इंजीनियरिंग)	१
	"	वनपाल प्रशिक्षण (फोरेस्ट रेन्जर कोर्स)	२
	"	नागरिक सक्षमता (सिबिल इंजीनियरिंग)	४
"	"	मानविक सक्षमता (मेकेनिकल इंजीनियरिंग)	४
"	"	वैद्यतिक सक्षमता (इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग)	४
"	"	बहार का मंत्र शिल्प (बायरलेस इंजीनियरिंग)	२
"	"	घातक इंजीनियरिंग (भूमि-निष्पत्ति)	१
"	"	वनस्पति-विज्ञान (बाटनी पोस्ट ग्रेजुएट)	१
"	"	हृदि-शास्त्र (एन्टोमोलोजी)	१
"	"	टेसीफोन इंजीनियरिंग	१
"	"	जनरल एप्रिक्शन (सामान्य हृदि)	१
"	"	एथोलोजी (घातकीय हृदि-रक्षा)	१
"	"	औद्योगिक शास्त्र (इंटीकेशन)	१
"	"	जन-प्रशासन	१

## परिनिष्ठ

बैकिंग

महयोगिक

काष्टक त्रिमास-किताब (बार्नर्ड एकाउन्टन्सी)

डिप्लोमा कोर्स

मिडिल इन्जीनियरिंग (मागरिक मॉल्फिकता)

इलेक्ट्रिकल इन्जीनियरिंग (बैद्युतिक मिस्य)

मकेनिकल इन्जीनियरिंग (यंत्र दौम्यिकता)

रूसीकोल इन्जीनियरिंग (टेसीफोम यांत्रिकता)

रेडियो रबिमणियन्स (रेडियो प्राविधिक)

बायलेंस आपरेटर (बतार का तार मचालक)

हवाई यातायात नियन्त्रक मफनर

रेडियो आपरेटर (रेडियो-मचालक)

## विषय सूची (ब)

प्राप्त प्राविधिक सहायता

वेप	संस्था	विषय	संख्या
	लाघ-वृषि संस्था	एग्रोनोमी (मास्त्रीय कृषि-कला)	१
		वन विज्ञान	१
		सिचार्ड-मिस्य (इरिगेशन इन्जीनियरिंग)	१
		तुम्भशाळा (डेट्री फार्मिय)	१
		भूमि-विकास (लैण्ड डेवलपमेन्ट)	१
		बेटीमरी	१
		कृषि-शास्त्र (एग्रोनोमोलोजी)	१
		कृषि यंत्र विज्ञान (एग्रीकल्चर इन्फ्रीमेट इन्जीनियरिंग)	१
		कृषि-विस्तार (एग्रीकल्चर एक्स्पैन्शन)	१
		वन-स्वास्थ्य (पथिक हेल्थ)	१
		मास्त्रीय कृषि (एग्रोनोमी)	१
		नान (माइनिंग)	१
		भूगर्भ-मर्बेराय	१
		मैनिक-रम भूगर्भ बेला (मिनिट्री मिशन	१
		बीप्रॉलोडीकक)	१



